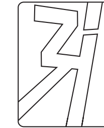
मैथिली कविताक हजार वर्ष-1

मैथिली कविताक हजार वर्ष

(भाग एक)

(आलोचना)

तारानन्द वियोगी



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-42-0
मैथिली कविताक हजार वर्ष-1

पहिल संस्करण (सजिल्द): 2023

मूल्य : दू खण्डक सेट : **1650.00 टाका**
प्रत्येक खण्ड : **825.00 टाका**

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

MAITHILI KAVITAK HAJAR VARSH-1 (Criticism) by Taranand Viyogi
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : Complete Set of 2 Volume ₹ 1650.00
Each Vol. ₹ 825.00

समृद्ध पाठक, प्रतिबद्ध विचारक
श्री राजीव राय
(वरिष्ठ अधिवक्ता, पटना हाइकोर्ट)
केँ सादर

छपबा सँ पहिनहि हमर एहि किताबक लेल
जे लिलसा अहाँ मे देखल सर, अपन
कोनहु किताबक लेल आइ धरि
नहि कतहु देखने रहियै।

भूमिका

यात्री जीक जीवनी 'युगों का यात्री' लिखबा काल हमरा बहुत जोर इच्छा जागल छल जे प्राचीन साहित्यक अध्ययन करी। संस्कृतक विद्यार्थी रहबाक दुआरे संस्कृतक प्राचीन साहित्य तँ थोड़ेक पढ़लो छल मुदा संस्कृतेतर प्राचीन साहित्यक कहियो गँहीर अवगाहन करी, से अवसर नहि भेटल रहय। यात्री जी कें ई सुयोग भेटलनि जे बहुत सुरुहे मे ओ दुन्नू प्राचीन साहित्यक गँहीर अध्ययन क' गेला। कहबाक तँ चाही जे तीस-पैंतीसक उमेर धरि हुनका मुख्यत: जे साहित्य पढ़ल रहनि से प्राचीने साहित्य छल।

एहि हिसाब सँ देखी तँ आधुनिक युग उनटा चलैत अछि। एक तँ लोक कें साधारणतया पढ़ले नहि रहैत छैक। जँ पढ़लो रहल तँ आधुनिक साहित्य पढ़ल रहैत छैक। जँ पढ़ा कने चंसगर रहल तँ आधुनिको मे भारतीय नहि, पाश्चात्य साहित्य पढ़ल रहैत छैक। प्राचीन भारतीय साहित्यक जँ गप करी, भारतीय साहित्य मे सेहो संस्कृतेतर प्राचीन साहित्य ततेक विराट छैक जे कदाचित संस्कृतो सँ बेसी व्यापक आ विविधतापूर्ण छै।

लोक कें पहिने अपन मातृभाषाक प्राचीन साहित्य सँ अध्ययन शुरू करबाक चाही। साहित्यक क्षेत्र मे, भने कोनहु रूप मे, जे क्यो सक्रिय छथि हुनका लेल तँ हम कहब, अपन प्राचीन साहित्य सँ सर्वांगत: अवगत होयब हुनकर अनिवार्य धर्म छियनि। से सब विचारैत हम निर्णय कयल जे मैथिलीक प्राचीन साहित्यक अध्ययन करी। 2019 मे हम एकर तैयारी मे भिड़लहुँ आ 2020-21 मे जखन सौंसे संसार कोरोनाक मारि सँ कुहरैत अपन-अपन घर मे बंद छल, बंद हमहू छलहुँ, हम अपन भाषाक प्राचीन साहित्यक अध्ययन मे डूबल रहलहुँ। पहिले फेज मे कोरोना सँ संक्रमित, गंभीर बीमार भ' चुकल रही। भयानक विकराल समय तँ तकर बाद आएल, से हमरो घर धरि पहुँचल। एहि सभक बादो ओहि समयक विकरालताक आगू हम अवसादग्रस्त नहि भेलहुँ। तकर एक प्रमुख कारण, हमरा लगैत अछि जे हम एतय छलहुँए नहि, हम तँ प्राचीन साहित्यक आभामंडलक बीच कतहु सन्हियायल रही, ओकरहि सुरक्षाकवच मे रक्षित।

अपन एहि अध्ययन-क्रम मे, मैथिलीक प्राचीन साहित्य कें पढ़ैत हम जे किछु पाओल, किताबक ई दुनू खंड तकर एक प्रतिवेदन थिक। इतिहास एकरा कहल जाय, ताहि मे हमरा संकोच अछि। इतिहासक जे अपन अनुशासन होइत छैक तकर अवगति तँ जरूर अछि, मुदा ओकरा लेल जे निस्संगताक माँग कयल जाइत छैक से हमरा बराबर गैरजरूरी लागल अछि। हम जे किछु पढ़लहुँ, ओहि मे डुबलहुँ, तें ओकर अनुभव बतबैत हम अपना कें एकात क' ली, से ने हम क' सकल छी आ ने से करब कतहु सँ हमरा जरूरी लागल अछि। हमरा बराबर लगैत रहल अछि जे इतिहासक जँ एक अनुशासन अछि तँ ठीक तहिना साहित्यक सेहो अपन अनुशासन छैक। संसारक अनेकानेक विचारक लोकनि साहित्य कें एक स्वायत्त शास्त्र मानलनि अछि आ भारत मे तँ से मानले गेलैक अछि। प्राचीन साहित्य आ आधुनिक साहित्यक अंतर कें बेकछबैत हजारीप्रसाद द्विवेदी कतहु लिखने छथि जे प्राचीन साहित्यकार जतय स्वयं अपना रचना सँ असंलग्न आ तटस्थ रहैत छला, ओ केवल ओहि आश्रयदाता राजा वा ओहि पार्थिव-अपार्थिव विषयक घेरा मे घेरायल रहथि, तकर विपरीत आधुनिक साहित्यकार अपन रचना सँ अपन व्यक्तित्व आ विचार कें एकात नहि राखि सकैत छथि। एकर उदाहरण मैथिलीक आधुनिक साहित्य मे भरल पड़ल अछि, एतय धरि जे साहित्यक इतिहास आ आलोचना मे सेहो। माने जे जयकान्त बाबू वा रमानाथ बाबू वा माया बाबूक व्यक्तित्व आ विचार जेना हुनकर लेखन मे, इतिहास-लेखनो मे साफ-साफ एलनि अछि, ठीक तहिना हमरो व्यक्तित्व आ विचार एहि किताब मे व्यक्त भेल अछि। मुदा निस्संगता सँ परिपूरित नहि होइतो ओ लोकनि इतिहासकार कहबै छथि, हमरा से कहेबा मे घोर एतराज अछि।

हमर एक आदरणीय गुरु कहल करथि जे जँ अहाँ कें कोनो विषय पर किछु अध्ययन करबाक अछि तँ अहाँ पहिने ओहि विषयक आथोरिटी के पता लगाउ। नहि, ओ आथोरिटी नहि, 'मास्टर्स' कहने रहथि। तँ, हमर अध्ययनक प्रक्रिया ई रहल जे पहिने हम आरिजिनल टेक्स्ट कें पढ़लहुँ, तखन ओहि विषयक आथोरिटी विद्वान जे किछु लिखने छथि तकरा पढ़लहुँ। आ तकरा बाद मैथिली साहित्यक इतिहासकार आ आलोचक लोकनि जे ओकर व्याख्या कयने छथि, तकरा पढ़लहुँ। कहब आवश्यक नहि जे ई आम रास्ता नहि छैक। लोक टेक्स्ट पढ़ै छथि आ अपन इतिहासकार वा आलोचक कें पढ़ै छथि। एतबो चीज के क' पबैत अछि? जकरा सही मे ज्ञानक भूख रहै छै सैह कि ने? अहाँ एतबो करबाक अपेक्षा कोनो मैथिलीक विद्यार्थी सँ थोड़बे क' सकै छी? एतय धरि जे प्रोफेसरो सँ नहि क' सकै छी।

मुदा, एतबा जँ क्यो क' सकथि तँ हुनका समक्ष ई तथ्य उद्घाटित भेने बिना नहि रहतनि जे वास्तव मे अपना भाषाक इतिहासकार आ आलोचक लोकनि अपन

बद्धमूल धारणा सभक प्रति कोना अन्ध बनल छथिन। कते भीषण संकीर्णता सँ गछारल छथिन जे अहाँ जँ हुनका आँखियें अपन परंपरा कें ताकय निकली तँ पक्का अछि जे अहाँ रस्ता भुतिया जायब आ सत्यक निकट किन्नहु नहि पहुँचि सकब, बरु आर कनी दूरे चलि जायब। कते आश्चर्यक बात थिक जे आरिजिनल टेक्स्ट तँ ठीक वैह अछि जकरा ओ पढ़लनि आ हमहू-अहाँ पढ़ैत छी। मुदा अर्थ कते बदलि जाइछ! दृष्टान्तक संग बात करी तँ बात बेसी साफ होयत। विद्यापतिपरक अपन एक लेख मे डा. काञ्चीनाथ झा किरण विद्यापतिक अनेको काव्यपंक्ति एहि बात कें देखेबाक लेल उद्धृत करैत छथिन जे मैथिल पुरुषक पुरुषार्थ के कते उच्च मानदंड विद्यापति लग मे रहनि। मने मैथिल पुरुष कतेक महान होइत छला। आब जँ अहाँ विद्यापतिक ओहि मूल गीत कें समुच्चा देखि जाइ जाहि ठाम सँ ई काव्यपंक्ति सब लेल गेल अछि, तँ अहाँ आकाश सँ खसब। घोर आश्चर्य सँ भरि जायब जे जाहि गीत मे विद्यापति मैथिल पुरुषक कुपुरुषता आ नीचताक कटु वर्णन कयने छथिन, ई पाँती सब ताहि ठामक छी। असल मे भेल ई छैक जे स्त्री एहन नीच पुरुष कें निर्बाहि रहल अछि तँ एहि पाछू जे ओकर अपन मनोवैज्ञानिक मजगूती छैक, उद्धृत पाँती सब तकर बखान करबा लेल लिखल गेल अछि। मुदा, किरण जी पाँती तँ वैह ल' लेलनि मुदा संदर्भ कें ठीक उनटा घुमा देलखिन। कहने छलै स्त्री अपन मनोभावक बारे मे, तकरा घुमा क' पुरुष पर लागू देखा देलखिन। एहन अनर्थ कतहु होइ? जे गीत विद्यापति मैथिल पुरुषक निन्दाक वास्ते लिखलनि तकर अर्थ उनटा क' कतहु मैथिल पुरुषक महानताक वर्णन ओकरा बता देल जाइ? (पाँती सभक, गीत सभक संदर्भ एतय नहि देलहुँ अछि। कारण ओ सब एहि किताब मे यथास्थान वर्णित छै।) मुदा, एकरा ओ लोकनि 'मैथिल आँखि' कहै छथिन। यथार्थ कें जबरन अपना पक्ष मे घीचि आनि ओकर ठीक विपरीत अर्थ लगा क' अपन विजयक झंडा फहरा ली, की एहि चतुरतेक नाम मैथिल आँखि छी?

एहि प्रकारक दृष्टान्त सब अनंत छै आ ताहि मे सँ किछु के नोटिस एहि किताब मे यथास्थान लेल गेल अछि।

सिद्धसाहित्य कें मैथिली साहित्य नहि मानल जाइत रहल अछि। ओकरे समकालीन वा सद्य: उत्तरवर्ती डाकवचन कें सेहो मैथिली साहित्य नहि मानल जाइछ। मैथिली साहित्यक शुभारंभ लेल निविष्ट कुलक कोनो ब्राह्मण लेखकक अवतीर्ण होयब कदाचित अपरिहार्य छल तें ज्योतिरीश्वर सँ मैथिली साहित्यक शुभारंभ मानल जाइछ। ज्योतिरीश्वरक काव्य कें सुनीति बाबू गद्य कहि देलनि तँ आगू ककरो मजाल नहि भेलै जे ओकरा काव्य साबित करबाक चेष्टा करितथि, भने स्वयं ज्योतिरीश्वरे ओकरा काव्य किए ने मानने होथु। वर्णरत्नाकरक सह-संपादक बबुआ मिश्र स्वयं

आश्चर्य व्यक्त करैत भूमिका मे लिखलनि जे संसारक कोनो साहित्यक आरंभ गद्य सँ नहि भेल अछि। मुदा, संसारक लेल जे असंभव छलैक से मैथिली साहित्य मे आबि क' संभव मानि लेल गेलै, जेना मिथिला-मैथिली संसार सँ बाहर शिवक त्रिशूल पर बसल हो।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ मैथिली कें अपन मौसी-भाषा मानैत छला। मने मातृस्थानीय, अपन भाषा बांग्ला सँ एक पीढ़ी प्राचीन। मुदा मैथिली साहित्यक इतिहास सब कहैत अछि जे नहि, मैथिली मे तँ कैक शताब्दीक बाद साहित्य शुरू भेलैक, ताहि हिसाबें बांग्ला तँ मैथिलीक नानी वा परनानी लागत। कहब आवश्यक नहि जे ई सब टा खुराफात आधुनिक युगक देन थिक जकरा पाछू मैथिल महासभा आ दरभंगाराज के राजनीति जिम्मेदार छल। दरभंगाराज आ मैथिल महासभाक पतन भेना सात दशक सँ बेसी समय बीति चुकल अछि। मुदा मैथिली साहित्य टस्स सँ मस्स नहि भेल अछि। बरु एकर संकीर्णता आ कट्टरता दिनानुदिन बढ़िते गेल अछि। अद्यतन उदाहरण मायानंद मिश्रक इतिहास (2013) थिक। एहि सब बातक संदर्भ सहित चर्चा एहि किताब मे ठाम-ठाम भेटत। खास तौर पर मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि उत्तरोत्तर जाहि तरहें संकीर्ण सँ संकीर्णतर होइत गेला अछि, से हमरा लेल घोर चिन्ताक विषय बनल अछि। कारण, दुनिया भरिक इतिहास समयक संग वस्तुनिष्ठ होइत गेल अछि, जखन कि मैथिलीक गति पाछू मुँहें छैक। मैथिलीक हरेक अध्येता लेल ई चिन्ताक विषय हेबाक चाही।

साहित्येतिहास आ आलोचना सृजनात्मक रचना के उपकारी विधा मानल जाइत छै। कोनो टेक्स्ट के अर्थ आ संदर्भ नहि पूरा स्फुट होइत हो तँ लोक इतिहास वा आलोचना लग जाइत अछि। मुदा, एक टा फिल्मी कहबी छै जे नैया जँ डगमग डोलय तँ मांझी पार लगाबय/ मांझिये जँ नाह डुबाबय तँ ओकरा के बचाबय? तँ, सैह परि। अर्थ आ संदर्भ स्फुट कतय सँ होयत जे उनटे अहाँ तेना ओझरा जायब जे अक्क चलत ने बक्क। उदाहरण सँ बात बेसी स्पष्ट होयत। संसारक कोनो साहित्यक आरंभ गद्य सँ नहि भेल अछि मुदा मैथिलीक भेल अछि। तँ, एक टा स्वाभाविक प्रश्न उठैत छैक जे ज्योतिरीश्वर कें एहन कोन बेगरता पड़ल छलनि जे ओ देसी भाषा मे गद्य लिखितथि, कारण प्रशस्ति तँ हुनकर कविता आ नाटक लेल छलनि। सुनीति बाबूक कहब भेलनि जे ई रचना ओ कथावाचक लोकनिक लेल लिखलनि। कथावाचक के भेला? वैह जेना आइ घनेरो कथावाचक सब कें टीवी पर भागवत वा रामकथा सुनबैत देखैत छियनि। सुनीति बाबू एक बेर जे भाखि गेला कोन मैथिलक मजाल जे कहथिन नै, प्राचीन मिथिलाक ब्राह्मण लोकनि तँ कथावाचनक पेशा मे नहि छला, हुनकर सभक पेशा तँ पंडिताइ वा पुरहिताइ होइत छलनि। नहि।

सब इतिहासकार एही बात कें दोहरबैत चलि गेला। कतबो भारी उपकार सुनीति बाबू मैथिलीक कयने होथि, मुदा ई तँ मानैए पड़त जे हुनका बंगालक परंपराक जेहन ठीक-ठीक अवगति छलनि, तेहन मिथिलाक परंपराक नहि। हुनका संग जे सहायक संपादक रहथिन बबुआ मिश्र, ओहो बेचारे चूड़ान्त संभ्रान्त पंडित। लोक, लोकपरंपरा आ लोकभाषाक हुनको ज्ञान ततबे जतबा सनातनी संस्कृतज्ञ कें भेल ताकय। तें एहि बातक दिस किनको ध्याने नहि गेलनि जे मिथिलाक लोक-परंपरा मे मौखिक महाकाव्य होइ छैक, जेना लोरिक, जकर उल्लेख स्वयं ज्योतिरीश्वरो केलनि अछि। से सब किछु नहि। गद्य तँ गद्य। सत्य सँ दूर रहथि मुदा उनटे गौरव मे झुमैत रहला मैथिल विद्वान लोकनि जे पूर्वांचलक प्रथम गद्यकृति मैथिली मे लिखल गेल। ओकर पाछू अन्हार, ओकर आगू अन्हार, मुदा बीच मे गद्यक प्रकाश टिमटिमाइत रहल। एक टा परदेसीय विद्वानक स्थापना मे चूक भ' सकै छै, तकरा फरियेबाक लेल तँ अहाँ देसीय आथोरिटी लग जायब ने? मुदा, कहबी छै जे लटकलें बेटा तँ गेलें बेटा। तँ सैह। अहाँ आर बेसी ओझरा क' परेशान भ' सकै छी।

एहन बात सब अनेको छैक। तकर विवरण संदर्भ-सहित ठाम-ठाम एहि किताब मे आयल छैक। मैथिली साहित्यक इतिहास सब मे सिद्धसाहित्यक चर्चा जरूर ठाम-ठाम भेटत मुदा कतहु इतिहासकार ओकरा प्राक् मैथिली कहि पिंड छोड़बैत देखार पड़ता, जेना जयकान्त बाबू। तँ क्यो एहि आधार पर ओकरा निरस्त करता जे ओ (सिद्धसाहित्य) मैथिली मे चलि नहि सकल, जेना माया बाबू। पं. बबुआ मिश्रक अभिमत कें स्मरण करी तँ सिद्धसाहित्य आ डाकवचन कें किएक मैथिली साहित्य नहि मानल गेल, तकर समाधान भ' जाइत अछि। सिद्धसाहित्य कें ओ मैथिली साहित्य सँ बाहर एहि दुआरे रखलनि जे ओ 'पंडितमंडली मे अद्यापि सर्वमान्य नहि भेल अछि।' कहब जरूरी अछि जे एहि निकष पर ओ पंडितमंडली मे कहियो सर्वमान्य नहि भ' सकैत अछि कारण ओहि मे तमाम बात ब्राह्मणधर्मक विरुद्ध भरल पड़ल अछि, कर्मकांड आ वर्णव्यवस्थाक धज्जी उड़ा देल गेल छै। ओ कोना सर्वमान्य भ' सकैत अछि?

ठीक तहिना पं. मिश्र डाकवचन कें खुल्लमखुल्ला एहि आधार पर मैथिली साहित्य नहि माननलि जे ई 'पंडितरचित' आ 'पंडितगोष्ठीमान्य' रचना नहि थिक। कलाकारी देखल जाय। डाकवचन ब्राह्मणधर्मक विरोधी नहि अनुगामी रचना थिक। ओही निकष पर जँ ओ एतय टिकल रहितथि तँ एकरा मैथिली साहित्य मानि सकै छला कारण ई रचना पंडितगोष्ठीमान्य रहल अछि। मुदा नहि। एतय आबि ओ अपन निकष बदलि लेलनि। हुनकर महानता कहल जाय जे ओ लिखि क' माननलि। आन विद्वान सब मानैत तँ ठीक यैह रहला, जखन कि लिखैत किछु आर रहला। एहन

देखावटी दाँत बला विद्वान सब अपेक्षाकृत अधिक अपकारी जीव थिका। मैथिलीक पर्यावरण एहन अपकारी जीव सब सँ भरल रहल अछि।

एहि किताब मे प्रायः पहिल बेर मैथिली लोकसाहित्यक अध्ययन मिथिलाक जातीय साहित्यक रूप मे करबाक प्रयास कयल गेल अछि। स्वयं रमानाथ झा एहि बात कें कहियो स्वीकार कयने छला जे मिथिलाक निजी जातीय साहित्य मौखिक रहल अछि आ प्राचीनकालक परिवेश मे राज्याश्रय प्राप्त नहि हेबाक कारण लिखित साहित्यक परंपरा मिथिला मे बहुत बाद मे जा क' शुरू भ' सकल अछि। कते आश्चर्यक बात थिक जे ग्रियर्सन कें विद्यापति आ दीनाभद्री दुनूक गीत लोककंठ सँ एक्कहि समय मे प्राप्त भेल छल जकरा ओ उद्यमपूर्वक प्रकाशित करेलनि। विद्यापति तँ मिथिलाक संस्कृतिक सिरमौर बनि गेला मुदा दीनाभद्रीक सेहो कोनो सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्य छैक वा एहि सँ मिथिलाक जातीय साहित्यशैलीक एक प्ररूप विशेषक कोना विलक्षण अभिव्यक्ति भेल अछि, एहि दिस विद्वान लोकनिक आँखि सदा मूनल रहलनि। मानू ई सोचब एक पातक करबाक तुल्य हो।

छंद मिथिलाक जातीय कविताक वस्तु नहि थिक, ई बात अलग सँ कहबाक बेगरतो हम नहि बुझैत छी। मिथिलाक वस्तु थिक राग, ताल, लय। छंद मे मैथिली कविता लिखबाक प्रथम प्रयास मनबोध केलनि आ चन्दा झा तँ मानू एकर झड़ी लगा देलनि। हुनकर मिथिलाभाषा रामायण मे अस्सी प्रकारक छंदक प्रयोग भेल अछि। एहि तरहें मैथिली कविता मे छंदक प्रयोग आधुनिक काल मे आबि क' तखन शुरू भेल अछि जखन परजीवी पंडितवर्ग कें मैथिली कें संस्कृतक पिछलग्गू बनायब अपन वर्चस्व लेल परम जरूरी बुझना गेलनि। आइ स्थिति ई अछि जे छंदहीन कविते कें विजातीय आ आधुनिक मानि ओकर अवहेलना करबाक उपदेश लिखल भेटैत अछि। सगरो यैह सुनबै जे छंद थिक मिथिलाक जातीय वस्तु, अप्पन परंपरा जखन कि छंदमुक्त कविता भेल विजातीय वस्तु। अन्हेर कहल जायत एकरा, मुदा सैह पंडितगोष्ठीमान्य छैक।

किताबक प्रथम खंड मुख्यतः जातीय साहित्य पर केन्द्रित अछि। मिथिलाक जातीय साहित्यक प्रायः समस्त शैली सब कें बुझबाक प्रयास एतय कयल गेल अछि। आ, सिद्धसाहित्य आ वर्णरत्नाकर कें मिथिलाक जातीय साहित्यक प्रथम लिखित अभिलेखक रूप मे बुझबाक कोशिश भेल अछि।

तहिना, ई किताब मैथिली आलोचनाक प्रायः पहिल किताब छी जतय मुख्यधाराक मैथिली कविताक विकास कें देखबाक लेल कबीरक मैथिली कविताक अध्ययन जरूरी बूझल गेल अछि। सतरहम शताब्दीक बाद कबीरक मैथिली पद ठीक तहिना मिथिला मे प्रचलित रहल अछि जेना मैथिली संस्कारगीत वा मैथिली लोकगाथा।

कबीर पदावलीक संरक्षणक सुचारू व्यवस्था मिथिला मे छल जतय सैकड़ोक संख्या मे कबीरमठ छलैक आ हरेक मठ लग कबीर पदावली परंपरया संरक्षित छल। ध्यान देबाक बात थिक जे एहन कोनो सौभाग्य मिथिला मे विद्यापति कें नहि भेटल रहनि। हुनकर पदावलीक संरक्षणक कतहु कोनो व्यवस्था तँ नहिये छल, दोसरो कोनो मैथिली कवि एहन नहि भेला जिनका पद कें संरक्षणक ई गौरव मिथिला मे भेटल हो। हँ, एनमेन अहिना बंगाल मे विद्यापति पदावली सेहो संरक्षित छल, मुदा ई बात मिथिलाक नहि बंगालक थिक आ बंगाल मिथिला सँ बाहर छल। बंगाल मे 'महाजन' महापुरुषक गौरव विद्यापति कें हासिल छलनि, जकर समरूप जँ मिथिला मे हमरा लोकनि खोज करी तँ एक कबीरे भेटि सकै छथि। डा. कमलाकान्त भंडारी अपन पुस्तक मे एक अध्याय इहो देने छथि—विद्यापति आ कबीर पदावलीक तुलनात्मक अध्ययन। मुदा, मैथिलीक आधुनिक विद्वान लोकनि कबीर सँ विद्यापतिक तुलना कें विद्यापतिक हेठी मानैत छथि। मुदा थम्हू। मिथिलेक एक आन आधुनिक विद्वान छथि पूर्णेन्दु रंजन। मिथिला मे कबीरपंथक इतिहास पर ओ किताब लिखने छथि। कबीर पर हुनकर आनो अनेक किताब सब प्रकाशित छनि। हुनका नजरि मे कबीरक तुलना विद्यापति सँ करब कबीरक अपमान थिक। किएक ? कारण थिक जीवनमूल्य, जे कविताक केन्द्रक होइ छैक। की कहबै एकरा ? तें हम कतहु-कतहु कहितो रहल छी जे अपना सब मिथिला जकरा कहै छियै से कोनो एक टा नहि अछि। दू अलग-अलग द्वीप मे बँटल, दुनू एक दोसर सँ सर्वथा अपरिचित, एक दोसरक प्रति घोर अवज्ञा सँ भरल। कहब जरूरी नहि जे दुनू मिथिला कें मिलेबाक ने कोनो स्वप्न मिथिलासमाज लग बचल छै ने सेहन्ता। धन्यवाद राजा लोकनि, धन्यवाद पंडित लोकनि, आधुनिक पंडित लोकनि !

जेना कि हम पहिनहु कहि आयल छी, इतिहास लिखबाक ढंग सँ हम ई किताब हम नहि लिखने छी। तें परिभाषा, परिचिति, वर्गीकरण, कालविभाजन आदिक कोनो चर्च एतय नहि भेटत। शुद्ध क' क' ई अपना समाजक प्राचीन कविता कें बुझबाक प्रयास थिक। मुदा, मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनिक दृष्टि बड़ संकुचित। मान्यता अत्यन्त जराजीर्ण। विचार संकीर्णता सँ गछाड़ल। ई सब बात जहाँ-तहाँ प्रसंगवश आयल अछि। इतिहास-पुस्तक सब राजदरबार के अनुगामी भ' क' लिखल गेल अछि, जखन कि जमीन्दारी-उन्मूलन ताधरि भ' गेल छलैक।

हम सब देखै छी जे ओइनवार लोकनि जाहि तरहें मैथिली रचनाशीलता कें संरक्षण देलनि, से युग एक बेर बितलाक बाद पुनः घूरि क' कहियो नहि एलैक। हँ, नेपाल मे आयल। नेपाल मे तँ पूरा जगजगार भ' क' आयल जे आइ मध्यकालीन

अन्हारक बीच नेपालेक मैथिली साहित्य प्रकाश-स्तम्भ बनल देखाइत अछि। तकरो एहि किताब मे देखबाक चेष्टा भेल अछि।

खड़ोरय लोकनि संगीत-प्रेमी अवश्य छला आ मैथिली कविताक ओतबे अंश हुनका सब सँ प्रोत्साहन पाबि सकल जतबा संगीत लेल वा अधिक सँ अधिक मंच लेल उपयोगी छलैक। ताहू मे ब्रजभाषा मैथिलीक प्रबल प्रतिद्वन्द्वी भ' क' सवार छल। खरोड़य लोकनिक विशेष कृपा ब्रजभाषे पर छलनि, से इतिहास देखबैत अछि। एकर प्रभूत प्रभाव हमरा लोकनि सतरहम शताब्दीक लोचन मे जगजगार देखै छी। अपन रागतरंगिणी ओ संस्कृत मे लिखलनि। भाषानुवादक प्रश्न एलै तँ मैथिली मे नहि, ब्रजभाषा मे कारिका लिखल। मुदा, राजक अनुगामी पंडितवर्ग एकरे देखि तिरपित-तिरपित रहला जे दृष्टान्त तँ कम सँ कम मैथिली गीतक देलखिन। नहिये दीतथिन तँ हम सब हुनकर की बिगाड़ि सकै छलियनि? अवश्ये एकरा राजकृपा मानबाक चाही। खरोड़य काल मे ब्रजभाषाक बढ़ती सदा बनल रहल। तें, आइयो अहाँ देखब, मिथिलाक घरानेदार गायकी सभक जे बंदिश भेटत से मैथिली मे नहि, ब्रजभाषा मे। एतय धरि जे आधुनिक संभ्रान्त मंच पर विद्यापति-गीत कें प्रतिष्ठापित केनिहार माँगनि गवैया सेहो जखन अपन गायनक बीच छवि-छटाक प्रदर्शन करय लागथि तँ बड़ी-बड़ी काल धरि ब्रजभाषा मे रचित कवित्त सब प्रस्तुत करैत रहैत छला।

केहन दुर्भाग्यक बात थिक जे एहन राजदरबार मे गेबाक लेल जे गीत सब थोड़-बहुत लिखल गेल तकरे बाद मे इतिहासग्रन्थ सब मे मैथिली साहित्यक नामें जानल गेल। समाज मे जे चीज गाओल जाइत छल, सामंतवादक विरोधी कविलोकनि जे कविता करै छला, समाजक मनोरंजन लेल ग्रामकवि लोकनि जे कविता मैथिली मे लिखलनि, से सब अहाँ कें इतिहास मे कतहु नहि भेटत। तें मध्यकालीन कविताक अध्ययन करैत इतिहास-वंचित काव्यधारा पर नजरि देब हमरा जरूरी लागल अछि। एकरा एक टा आरंभ मात्र बूझल जाय। हम एक व्यक्ति मात्र छी। हमर अनेक सीमा अछि। जखन कि ई काज सामूहिक उद्यमक अपेक्षा करैत अछि। एहन कविता सब कें ताकि निकालब एक सामूहिके प्रयास सँ संभव भ' सकैत अछि। हम शुरुआत टा क' सकल छी, सैह बूझल जाय।

कायदा सँ देखी तँ 'मैथिली कविताक हजार वर्ष' नामक एहि किताब मे एक खंड आरो हेबाक चाही। आधुनिक कालक, जे चन्दा झा सँ शुरू होइतय आ एकैसम शताब्दीक दोसर दशक धरि पहुँचितय। यद्यपि कि अनेकानेक चहलपहल, उतराचौरी, विधागत प्रतिस्पर्धा आ साहित्यक आन्दोलन सब सँ भरल ई काल बहुत जटिल रहल अछि आ एकर अध्ययनो एखन धरि ढंग सँ नहि भ' सकल अछि। मुदा, तत्काल तँ ई हमर योजना सँ बाहरक बात छल, हम तँ प्राचीन साहित्य पढ़य विदा भेल रही।

मोन मे बात जरूर अछि जे आगू जँ कहियो सुविधा भेल तँ इहो काज हम करबाक प्रयास करब।

ई किताब लिखबाक क्रम मे कैकटा मित्रक वैचारिक संबल हमरा संग बनल रहल अछि। कथाकार अशोक, केदार कानन, शिवशंकर श्रीनिवास आ मयंक विशेष रूप सँ मोन पड़ै छथि। एकर पहिल पाठक आ टाइपकर्ता रघुनाथ मुखिया एक-एक प्रसंग पर अपन प्रतिक्रिया दैत रहला, तकरो कोनो कम उपकारक नहि मानल जा सकैछ। गौरीनाथ एकर एहन सुंदर संस्करण प्रकाशित करबाक पहल केलनि, एकरा कहियो कोना बिसरल जा सकै छै!

अन्हार कने छँटय, दुनू मिथिला कें एक करबाक स्वप्न-सेहन्ता जागैक, संकीर्णता कम होइ, वस्तुनिष्ठता बढ़य, जतय धरि मैथिली साहित्य पहुँचि चुकल अछि ताहि सँ आगू जाय, खसय तँ किन्नहु नहि—मोन तँ बड़की टा अछि। तखन तँ कहलकै रहय जे जक्कर मोन बसय बड़ दूर/ तक्कर आस विधाता पूर।

—तारानंद वियोगी

सीतामढ़ी, 15 नवंबर 2022

अनुक्रम

मैथिली सिद्धसाहित्य

सब सँ पहिने तँ हम अपन दुनू कल जोड़ि माथ नबा ओहि महामना कवि लोकनिक चरण मे अपन प्रणाम निवेदित करैत छी जे पहिल-पहिल बेर अपन देसी भाषा मैथिली मे कविता लिखलनि। हजार-बारह सय बरख पुरान बात थिक। हमरा लोकनि अपन परिवारो मे देखैत छी जे दादीक भाषा सँ पोतीक भाषा मे फरक आबि जाइत छैक, जखन कि मुश्किल सँ पचास बर्ख बीतल रहैत अछि। तें, आइ जखन हम सब अपन पूर्वजक लिखल ई कविता सब पढ़ब तँ आजुक भाषा सँ स्वाभाविके बहुत फरक देखायत। मुदा भाषा थिक ओ हमरे जकरा तहियाक पंडित लोकनि अवज्ञाभाव सँ अपभ्रंश (अधलाह ढंग सँ भ्रष्ट) कहथि, मिथिलाक विद्वान लोकनि 'मिथिलापभ्रंश' कहथि। ई काज, देसी भाषा मे कविता रचबाक काज कतेक कठिन छल तकर अनुमान हमरा लोकनि एहि दृष्टान्त सँ क' सकैत छी जे एहि आदिकवि लोकनिक छओ सय बरखक बाद जे विद्यापति भेलाह, हुनको मे हठात एहि देसी भाषा कें माध्यम बनेबाक साहस नहि छलनि। ओ पहिने संस्कृत लिखलनि, तखन अवहट्ठ (अपभ्रंश) लिखलनि, तकर बादे जा क' देसी भाषा मे लिखबाक उद्यम क' सकलाह। भारतीय अध्येता लोकनिक बात मानी तँ काव्यक भाषाक स्वभावे 'प्राचीनताश्लिष्ट' आ 'कोमलीकृत' होइत अछि। आ जँ अंग्रेजी साहित्यक इतिहासकार लोकनि कें सुनी तँ 'गद्यक प्रवृत्ति जँ आगू दिस देखबाक होइत छैक तँ पद्यक पाछू दिस देखबाक।' ई भाषा-स्वभावेक बात थिक, रचयिता तँ ओकर मात्र एक उपयोक्ता होइत छथि।

लोकभाषा मे लोकक लेल रचना करब असल मे कतेक पैघ बात थिक, एकर अनुमान करब आइ एतेक आसान नहि अछि कारण हमरा लोकनि एकर अभ्यस्त भ' गेल छी। एक टा एहन परंपरा मे जतय ज्ञान, संवेदना आ धर्म तीनूक भाषा संस्कृते होइक, कतबो क्रान्तिकारी भने क्यो भ' जाथु मुदा संस्कृतक बराबरी मे तँ के कहय जे दू-चारि सीढ़ी निच्चो कोनो आन भाषा कें स्थान देबा लेल तैयार नहि हो, उचित तँ एकरे मानल जायत जे सातम-आठम शताब्दी मे आबियो क'

दण्डी आदि-सन काव्यशास्त्रकार अपभ्रंश भाषा कें आभीरादिक-गुअरबा सभक बोली कहथि। श्रेय पेबाक जँ क्यो अधिकारी छथि तँ ओ बौद्धे लोकनि छथि जे सुरुहे मे संस्कृतक बहिष्कार क' जनताक संभाव्यतम संपर्क बोली पालि मे लेखन करब शुरू केलनि। आ आगू तँ पहिल शताब्दी सँ जे महायानक महा अभियान चलल, हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखने छथि—महायानक एहि नामकरणे मे जनसाधारणक संग ओकर गंभीरयोगक आभास भेटैत अछि—जेना-जेना एकर आगू टुकड़ी पर टुकड़ी होइत गेलै, उत्तरोत्तर एकरा लोकमुखिये भेल जाइत देखल जा सकैछ।[1] आ, हजार बर्खक एहि यात्रा मे जखन वज्रयान-सहजयान के पड़ाव आएल, अन्तत: लोकमत मे घुलि-मिलि क' ओ स्वयं लुप्त भ' गेल। आरंभिक अपभ्रंश मे जे हमरा लोकनि तत्सम शब्दक नितान्त अभाव देखैत छी आ आगू उत्तरोत्तर तत्समक बढ़ल जायब देखै छी—तकरा एहि विरोध आ सम्मिलन के साक्ष्य बुझल जा सकैत अछि। विद्यापतिक अपभ्रंश आखिरी पड़ावक भाषा छल जकर कारण आन कथू सँ बेसी 'प्राचीनता-श्लिष्टि' थिक। आइ जखन अनवधान लोक सब कहि जाइत अछि जे मैथिली, संस्कृत सँ बहराएल अछि तँ एहि कहबाक पाछू अज्ञानता सँ बेसी प्राकृत-अपभ्रंश कें अबडेरि देबाक मौन मुदा चतुर कुटिलता छैक से कहबाक जरूरति नहि।

साधारण जनता जखन कहैत छी तँ मोन रखबाक चाही जे एहि शब्दक अर्थ आ कि हैसियत तहिया वैह नहि छल जे आइ हमरा लोकनि देखैत छी। आइयो साधारण के प्रतिष्ठा भ' गेल हो आ कि ओकरे उन्नति लेल विकासक मॉडल बनैत हो से तँ खैर नहिये, तखनहुँ बहुत किछु अघटित रहबाक चाहैत छल जे घटित भ' गेल अछि। हजार बरख पहिनेक पूर्ण सामंती समाज मे साधारण जनताक की हाल छल, ताहि पर अध्येता लोकनि जहाँ-तहाँ लिखलनि अछि, मने आदिकालीन कविता पर विचार करैत। अपन सुप्रसिद्ध संकलन 'हिन्दी काव्यधारा'क अवतरणिका मे राहुल सांकृत्यायन एक टा चित्र रखलनि अछि जे तहिया साधारण जनताक की जीवन-दशा छलैक। हिसाब देलनि अछि जे सैकड़ा मे बीस प्रतिशत लोक दास-दासी छल। यद्यपि कि ओकरो बगय-बानि मनुखे सन के होइ, ओ लोकनि अपन मालिकक जंगम संपत्ति मानल जाइत छल जकर आवश्यकतानुसार खरीद-बिक्री सेहो भ' सकैत रहैक। सांकृत्यायन मिथिला मे प्राप्त भेल प्राचीन दास-दासी विक्रय पत्रक सेहो उल्लेख केलनि अछि आ इहो जे नेपालक हिन्दू-राष्ट्र मे ई व्यवस्था 1925 धरि जारी छल। दास-दासी कें कोनो अधिकार हेबाक तँ प्रश्ने नहि, ओ पूर्णत: अपन मालिकक दया पर निर्भर छल। शेष मे सँ पचास प्रतिशत किसान, दस प्रतिशत मजदूर आ दस प्रतिशत शिल्पकार छल। ओकर उत्पाद सभक एक सँ एक गुणवर्णन आदिकालीन साहित्य मे भेटैत अछि, मुदा तकर उपभोगक अधिकार स्वयं ओकरा

नहि रहैक। 'वहाँ सारा शिल्प, सारा व्यवसाय, सारी कृषि मुट्ठी भर आदमियों के भोग के लिए होती थी। दूसरों को तो मुश्किल से सिर्फ जीने और ब्याने भर का अधिकार था।'[2] ताहि समय प्रचलित रेबाज सभक आधार पर राहुलजी साधारण जनताक आत्मसम्मानक की स्थिति छल, ताहू पर विचार केलनि अछि। अर्थात् आत्मसम्मान भइये की सकैत छल? सत्तर प्रतिशत जनता कें अपना घरक सुन्दर स्त्री कें वैध वा अवैध रूप सँ रनिवास मे पठेबाक लेल तैयार रहय पड़ैत छल। किछु ठाम तँ नव-विवाहिताक पहिल राति सामंतक लेल रिजर्व रहैत छल। एकर उल्लेख मैथिलीक लोकगाथा सब मे सेहो भेलैक अछि। स्वयं पंडित-पुरहितो लोकनि एकरा वैध मानबाक व्यवस्था देने रहथि—स्त्रीरत्ना दुष्कुलादपि।

एहि साधारण जनताक भाषा छल मैथिली। जखन स्वयं जनताक कोनो मोजर नहि छल तँ सहजहि अनुमान क' सकैत छी जे ओकर भाषाक की मोजर भ' सकैत छल? सिद्ध लोकनिक महान अवदान एकरा मानल जेबाक चाही जे ओ लोकनि एहि जनता मे एकात्म भेलाह, ओकर भाषा कें अपन कविताक भाषा बनौलनि। विद्वान लोकनि कहि सकैत छथि जे अपभ्रंशक एक प्रकारक प्रयोग तँ कालिदासो अपन नाटक सब मे केलनि अछि, आनो अनेक कवि केलनि। मुदा, डॉ. जयधारी सिंहक शब्द मे कही तँ 'बौद्धसिद्ध सँ पूर्व संभवत: कोनो कवि समग्र साहित्यिक चेतना कें अपभ्रंशक माध्यम सँ व्यक्त नहि कएने छलाह।'[3]

परिस्थिति आ प्रेरणा

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा मे साहित्य लिखबाक आरंभ के प्रकरण पर विचार करैत सुनीति कुमार चटर्जी लिखने छथि—'1000 इस्वीक पश्चात जखन एक नवीन युगक सूत्रपात भेल, तखन भारतीय भाषा कें सेहो एक बेर फेर भारतीय संस्कृतिक नवीन दिशा कें व्यक्त करबाक लेल नव तरीका सँ कटिबद्ध हेबाक जरूरत पड़लैक। तहियाक स्थिति ई छल जे प्राकृत भाषा सभक युग बीति चुकल रहैक। प्रादेशिक अपभ्रंशक बाट पकड़ि-पकड़ि क' प्राकृत सभ, परिवर्तित भ' क' आधुनिक भारतीय भाषा बनि रहल छल। संस्कृत मृत नहि भेल छल, एखनहु प्राचीन साहित्य भंडारक रूप मे ओकर अध्ययन जारी छल आ हरेक प्रकारक गंभीर निबंध-प्रबंधक लेल वा कि मननशील साहित्यक लेल विद्वज्जन संस्कृतेक प्रयोग क' रहल छला। किंतु जेना-जेना बोलचाल बला भाषा सब आद्य भारतीय आर्यमान सँ दूर हटैत गेल, तहिना-तहिना दुनूक बीच के बाहरी स्वरूपक अन्तर उत्तरोत्तर बढ़ैत गेल। संस्कृत मे अतीतक गौरव निहित रहैक मुदा देसी भाषा सब कें सेहो तत्कालीन जनताक आवश्यकता पूरा करबाक रहैक। पूर्वांचलक क्षेत्र मे आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक

उपयोग ओकर उदयकालहि सँ आरंभ भ' गेल। एकर असल कारण ई छल जे जनताक निकट पहुँचि क' अपन सिद्धान्तक प्रचार करबाक लेल आधुनिक भाषा विशेष उपयुक्त आ बेसी प्रबल साधन छल।[4]

एहि प्रकरण मे सुनीति कुमार चटर्जीक इहो मान्यता छनि जे जँ भारत पर तुर्की-मुसलमानी विजय नहि भेल रहितय तँ आधुनिक देसी भाषा सब मे अपन जन्मक बादो गंभीर साहित्यिक विषय सभक प्रवेश आरो देरी सँ भेल रहितय। हुनकर आशय छनि जे मुसलमानी विजय आत्मरक्षाक दबाव बनेलक जाहि सँ आधुनिक भाषाक उपयोग कें गति भेटलैक। मुदा हजारीप्रसाद द्विवेदी एहि मतक सख्त खिलाफ छथि। हुनक कहब छनि जे भारतीय आधुनिकता अपन एक खास गति-लय मे चलि रहल छल, ओकरा लग एकर अपन परंपरा छलैक, जकर स्वाभाविक विकास एहि सब रूप मे भेल, एकर संबंध मुसलमानी विजय संग जोड़ब निरर्थक थिक। जँ मुसलमानी विजय नहियो भेल रहैत तखनहु विकासक क्रम एहिना आगू बढ़ितय।[5]

डॉ. जयधारी सिंह पाल-राज्य (750-1159 ई.)क सामाजिक आ सांस्कृतिक सुव्यवस्था कें एकर श्रेय दैत छथि। पाल लोकनि शूद्र (दासजीविन:) छला। बौद्धधर्मक अनुयायी रहथि। मुदा जयधारी बाबूक शब्द मे 'सामाजिक कल्याण मे सब सँ अधिक सहायक छल कर्मणा जातिभेदक सिद्धान्त।' ओ केनेडी महाशय कें कोट करैत कहैत छथि जे 'सातम सँ दशम शताब्दीक मध्य प्राचीन जातिभेद चल गेल आ एक नवीन भेद आएल, स्थिति आओर कर्म पर आधारित।'[6] अलबरुनीक यात्रावृत्तान्तक अनुसार ताहि समय मे समाज चारि वर्ग (वर्ण नहि) मे बँटल छल—राजा-सामन्त, भिक्षु-पुरोहित-धर्मशास्त्री, वैद्य-ज्योतिषी-वैज्ञानिक आ कृषक-शिल्पी। डॉ. जयधारी सिंह एहि युगक चारि गोट महत्त्वपूर्ण विशेषता मानैत छथि—1. बौद्ध तथा ब्राह्मण कें समानरूपक प्रतिष्ठा देल जाइत छल, जे भिक्षु-पुरोहित शब्दें अभिप्रेत अछि। 2. अर्थनैतिक व्यवस्थाक मूल भित्ति छल कृषि। 3. कलाक आदर छल 4. राजा कें स्वेच्छाचारी नहि मानल जाइत छल, सामन्तवर्ग पर निर्भर बुझल जाइत छल।[7] एतेक सब किछुक अछैतो वर्चस्वी ब्राह्मण लोकनि किएक पालशासनक प्रति घृणाभाव रखैत छलाह, तकर कारण जयधारी बाबूक एहि कथन सँ बूझल जा सकैत अछि—'जखन राजा पर्यन्त गोपाल सन द्विजेतरो (दासजीवी) भ' सकैत छलाह अपन वैयक्तिक गुण पर, तखन राज्य वा समाजक अन्य क्षेत्र मे शूद्र कें अनादर भाव देखेबाक प्रश्ने नहि उठैत छल। शूद्रक उत्थानक समय छल।'[8] ताहि समयक पुरोहित वर्गक प्रवृत्ति कें देखार करैत ओ लिखैत छथि—'मीमांसा आओर बौद्धदर्शन मे मौलिक विवाद छल वेदोक्त कर्मक प्रसंग, ब्राह्मणकर्मक प्रसंग। मीमांसक धर्मकुंजी अपने हाथ मे राखि वेदोक्त, ताहू मे ब्राह्मणोक्त, विधान सँ इतर विधान कें स्वीकार

करबाक हेतु प्रस्तुत नहि रहथि। लोकमत मे शक्तिओ आएल, तथापि ओ सब आग्रह कें छोड़थि नहि, समन्वय दिस ध्यान देथि नहि। फलत: संघर्षक, अराजकताक डर छल। एहन परिस्थिति मे पालशासनक समावेश-कुशलता, सर्वदल विचार-सहिष्णुता बड़ काजक भेल।'[9]

देशी भाषाक प्रतिष्ठाक मादे तत्कालीन ब्राह्मण-वर्गक की रुख छल, तकरा बारे मे जयधारी बाबू लिखैत छथि—'पूर्वक समय मे ब्राह्मण समस्त शास्त्रक सर्वाधिकार अपनहि हाथ मे रखने छलाह, स्वत: संस्कृत कें उच्चतम स्थान दैत छलाह, संभवत: डर छलनि ओकरा संग अपनो महत्व ने घटि जाए, तें अपभ्रंशक तँ कथे कोन जे प्राकृतहु कें उत्तम-मध्यम पुरुषक भाषा नहि मानथि।'[10] एहि मान्यता अथवा डर के परिणति जे आगू भेल, पालवंशक पतनक बाद आगू जे सेन, कर्णाट, गाहड़वाल आदि शासक एलाह, से लोकनि ब्राह्मणधर्मक अनुयायी आ पुरोहित-पंडित वर्गक संरक्षक छलाह, तें देसी भाषा कें जे प्रश्रय पहिने रहैक तकर आगू अभाव रहल। मुदा, हजारी बाबूक अभिप्राय कें बूझी तँ एहि युगक प्रवृत्तिये आधुनिकतागामी छल आ तकर प्रेरणातत्त्व स्वयं समाजे मे, समाजक प्रवृत्तिये मे निहित रहैक। लोकमतक प्राधान्य, बौद्ध लोकनिक सुझाओल ओ बाट छल जाहि पर आगामी समस्त युग कें चलबाक भेलैक।

ओम्हर कविता राजदरबार सँ बहरा क' जनताक बीच जा रहल छल। राजशेखर(दसम शताब्दी)क 'काव्यमीमांसा' मे अनेक एहन प्रसंग अयलैक अछि जाहि सँ हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे कविगोष्ठी कि कविसम्मेलन जनताक बीच नगर-नगर मे आयोजित होअए लागल छल जखन कि पूर्वकाल मे ई चीज मात्र राज दरबारक शोभा छल। कोन तरहक कवि एहि सम्मेलन सब मे जमैत छलाह, राजशेखर तकरो विवरण देलनि अछि। भाषा-कविता मे गीत-विधा प्रचलन मे आबि रहल छल जखन कि संस्कृत काव्य मे एकर सर्वथा अभाव छल। एहि गीत सब कें कवि लोकनि राग-ताल-लयाश्रित क' क' गाबथि। राजशेखरक एक पाँती छनि—कण्ठे कस्यापि रक्तता। मने मंच पर एहन कवि जमैत रहथि जिनकर कण्ठ मे सुरीलापन होइन। विद्यापतिक कविता कें हमरा लोकनि राग-ताल-लयाश्रित कहैत छी। मुदा, हुनका सँ सैकड़ो वर्ष पहिने सिद्ध लोकनिक कविता कें सेहो हमरा लोकनि राग-ताल-लयाश्रिते पबैत छी। म.म. हरप्रसाद शास्त्री कें जे एहि पद सभक पाण्डुलिपि भेटल छलनि, हरेक पद मे ओकर राग-रागिणीक उल्लेख रहैक। सैह चीज राहुल सांकृत्यायन कें सेहो भेटलनि। राहुल जी लिखने छथि, एखनो बौद्धचर्या काल मे, नेपाल वा तिब्बतक बौद्ध लोकनि जखन ई पद सब गबैत छथि, ओही निर्दिष्ट राग-रागिणी मे गबैत छथि। जयधारी बाबू तँ अपन पुस्तक मे सिद्ध लोकनिक

प्रयोग कयल राग-रागिणी सभक, भविष्यक एकर विकासक संग, एक विवरण सेहो प्रकाशित कयने छथि। एकरा हुनक प्रसिद्ध पुस्तक 'बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त' मे देखल जा सकैत अछि।

मुदा, हमरा लोकनि देखैत छी जे लोकमतक दिस झुकावक जे दृष्टान्त ल' क' सिद्धसाहित्य आयल छल, आगूक बदललो परिस्थिति मे एकर महत्त्व अक्षुण्ण बनल रहल। बौद्धधर्मक लुप्त भ' गेलाक बाद जखन मिथिला राज मे राज्याश्रय मात्र ब्राह्मणधर्म कें भेटलैक, लोकमतक ई प्रतिष्ठा तखनहु अपन चमक बनौने रहल। एहि युग सँ पहिनेक संस्कृत लेखनक इतिहास की अछि? मूलग्रन्थक टीका, फेर टीको के टीका, तखन ओकरो टीका, तकर बाद ओकरो टीका। ई टीका-क्रम कैक बेर छव-छव आठ-आठ पुश्त धरि चलैत रहैत छल। ओहि युगक बारे मे हजारी प्रसाद द्विवेदीक टिप्पणी छनि—'जाहि दिन मे बौद्धधर्म उत्तरोत्तर लोकधर्म मे घुलि-मिलि जा रहल छल, ओही समय ब्राह्मणधर्म उत्तरोत्तर अलग भ' रहल छल।'[11] एगारहम शताब्दी सँ एकरा हमरा लोकनि अलग बाट पकड़ैत देखैत छी। आब जाहि प्रकारक लेखन पंडित लोकनि शुरू केलनि तकरा हमरा लोकनि निबन्ध-शैली कहैत छी। हजारी बाबू लिखलनि अछि जे बौद्धधर्मक लोपक बाद बहुत रास एहन जाति ब्राह्मणधर्मक भीतर आबि गेल जे बौद्धधर्मक प्रभाव मे छल, अपन आचार-विचार मे स्वतंत्र छल। ई जाति सब अपना संग अनेक रास व्रत, पूजा, पार्वण आदि लेने आएल जकरा लेल कोनो नियमन एखन धरि ब्राह्मणधर्म मे नहि छलैक। नव-नव लिखल पुराण आ स्मृति सब मे प्रक्षिप्त क' क' एकरा अन्तर्भुक्त करबाक प्रयास भेल। ई सब किछु एतबा बेसी जटिल आ विशृंखल भ' गेल जे पंडित लोकनि कें एकर नियमन आ व्यवस्थापन मे नव ढंग सँ भीड़' पड़लनि। निबंधसाहित्य एकरे परिणाम छल। अपन विद्यापतियो कें हमरा लोकनि 'व्याडिभक्तितरंगिणी' लिखैत देखैत छियनि। ई 'भक्ति' हुनके द्वारा लिखित विधानक अनुरूप आइयो प्रचलित अछि, जखन कि नागपूजाक अनार्य स्रोतक भक्ति छल। अपन पुस्तक 'मैथिली साहित्यक आदिकाल' मे राजेश्वर झा विस्तारपूर्वक नागपूजाक अनार्य स्रोतक विवरण देलनि अछि।

निबन्धसाहित्यक प्रवृत्ति कें रेखांकित करैत हजारी बाबू लिखने छथि—'एक विचित्र प्रवृत्ति एहि निबंध सब मे देखाइत अछि। स्तूपाकार शास्त्र-वचनक ढेर मे सँ वैह वाक्य प्रामाण्य मानि लेल जाइत अछि, जकर उपयोग प्रचलित लोक-व्यवहारक समर्थन मे भ' सकय। बाँकी वाक्य सब कें 'ननु' कहि क' पूर्वपक्ष दिस फेकि देल जाइत अछि।'[12] मने लोकमतक प्रबलता।

मिथिला मे जनविश्वास जकाँ ई बात प्रचलित अछि जे मुसलमानी आक्रमण सँ परिस्थितिवश अधिक समय धरि सुरक्षित रहबाक कारण एतुक्का पंडित लोकनि शान्तिपूर्वक शास्त्र-रचना क' सकलाह। मुदा, एहि शास्त्र-रचनाक सीमा की छल आ पृष्ठभूमि की, कहियो ताहू पर विचार करबाक चाही। तखन हमरा लोकनि देखि सकब जे सिद्ध लोकनिक मामूली सन मानल जाइबला रचनात्मक उद्यम लोकमत कें कते भारी प्रतिष्ठा द' क' अपन निसानी छोड़ने छल।[13]

स्वीकार्यता आ भाषा-विमर्श

'वर्णरत्नाकर'क सप्तम कल्लोल मे, जतय कि तीर्थवर्णना, ऋषिवर्णना, दशावतारवर्णना, अष्टवसु, एकादश रुद्र आदिक वर्णना आयल अछि, ओहीठाम ज्योतिरीश्वर 'अथ चौरासी सिद्धवर्णना' सेहो तद्वते श्रद्धापूर्वक केलनि अछि। चौरासीसंख्यक सिद्ध लोकनि मे कोन-कोन सिद्ध छला, ई प्रश्न बहुत पुराने समय सँ विवादक विषय रहल अछि आ हरेक सम्प्रदाय अपन-अपन प्राचीन गुरु लोकनिक नाम जोड़ि क' चौरासी संख्या पुरबैत रहल अछि। ज्योतिरीश्वरक सूची एहि तमाम सम्प्रदाय सब मे ककरा सँ मेल खाइत अछि ई एक अवान्तर प्रश्न थिक जाहि पर विचारक प्रसंग एतय नहि अछि। एतबे कहि देब पर्याप्त जे ओ गोरखनाथ आ भर्तृहरि कें सेहो चौरासी मे स्थान देने छथि, जाहि पर म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक कहब भेलनि जे ई सूची नाथ सम्प्रदायक सूची थिक। असल मे, तंत्र सब मे एहि 84 संख्याक विशेष महत्त्व अछि आ एकर गूढ़ तांत्रिक अभिप्राय सेहो अछि। तंत्र आ योग मे आसन सेहो 84 मानल गेल अछि, जकरा बारे मे किछु अध्येताक कहब छनि जे बारह राशि आ सात ग्रहक ई गुणनफल थिक जकर विशेष अभिप्राय छैक। ज्योतिरीश्वर जे सूची वर्णरत्नाकर मे देलनि अछि ताहि मे गिनती कयला पर 76 गोट सिद्धक नाम पुरैत छैक मुदा तखनहु एहि मे खास मिथिला-परम्पराक कैक टा नाम शामिल भेटैत अछि— नेवक, भीलो, पाहिल, पासिल आदि।

मूल बात कहबाक ई जे ज्योतिरीश्वरक वर्णना सँ मिथिला मे सिद्ध लोकनिक स्वीकार्यताक पता चलैत अछि। लोकमतक प्रबलते एकरा बूझल जाय जे 'बौद्धपक्ष अइसन आपात भीषण' कहि क' बौद्ध विचारधाराक घोर वर्जनाक अभिमत राखनिहार ज्योतिरीश्वर चौरासी सिद्धक गणना श्रद्धापूर्वक केलनि।

सिद्ध लोकनिक काल-निर्धारण जाहि तरहें राहुल सांकृत्यायन कयने छथि तदनुसार पहिल सिद्ध आठम शताब्दी मे भेला आ अन्तिम सिद्ध तेरहम शताब्दी मे। ज्योतिरीश्वरक समय चौदहम शताब्दी अबैत-अबैत मिथिलाक लोकमत ताहि तरहें सिद्ध लोकनि कें अपना लेने छल जे एहि बातक स्मरणो धरिक कोनो जरूरत नहि छल जे ओ लोकनि बौद्ध छला। मिथिला मे सिद्ध लोकनि कोन तरहें श्रद्धेय रहलाह

तकर दृष्टान्त अक्षरारम्भ काल मे 'ओनामासीधं' अर्थात् 'ओम् नम: सिद्धम्' आ कि पत्रक पहिल पाँती 'आजी सिद्धिरस्तु' के प्रचलन सँ बूझल जा सकैत अछि।[14]

सिद्ध लोकनिक प्रति आत्मबुद्धि रहल हेतनि सकल-समाज कें, ज्योतिरीश्वर कें सेहो, कारण वर्णरत्नाकर मे हमरा लोकनि कें परधार्मिक सम्प्रदाय जेना जैन, सूफी, वैष्णव, योगी लोकनिक परम्परा वा सूचीक वर्णना नहि भेटैत अछि। एहि आत्मबुद्धिक निर्माण करबा मे जे चीज सब सँ बेसी सहायक रहल हेतैक से निश्चिते एहि देसकोसक भाषा आ परंपरा रहल हेतै।

जें कि बंगाली लोकनि मे जातीय चेतना आ संरक्षणक जागरूकता बहुत पहिनहि अयलनि, सिद्धसाहित्यक खोज मे सेहो वैह लोकनि अगुएलाह। नेपालक राजदरबार पुस्तकालय सँ चर्यागीत, दोहाकोष, डाकार्णव आदि सिद्धसाहित्यक वस्तु सब म.म. हरप्रसाद शास्त्री कें 1907 मे प्राप्त भेलनि आ तकर दस बरखक बाद 'बौद्धगान ओ दोहा' नाम सँ एक बेस सुपुष्ट भूमिका तथा मुनिदत्तक संस्कृत-टीकाक संग ओ एकरा प्रकाशित करौलनि। कोनहु विमर्श आ तर्क-वितर्क सँ पहिनहि महामहोपाध्याय जी एहि गीत सभक भाषा बांग्ला मानि लेने छलाह। किछु आर पोथी सभक संगे छपल एहि पुस्तकक नाम ओ रखने छला—'हजार बछरेर पुराण बांग्ला भाषाय बौद्धगान ओ दोहा।' हमरा लोकनि अवगत छी जे चर्यागीत कोनो पुस्तकबद्ध, मृत साहित्यरूप नहि छल, अपितु बौद्ध लोकनिक धार्मिकचर्या मे एकर विधिवत सामूहिक गान होइत छल जे एखनो होइत अछि। राहुल जी बौद्ध लोकनिक समाज मे एकर प्रचलित नाम 'चच्चो' बतौलनि अछि जे कि नेपाले नहि, तिब्बत धरि मे एखनहु विद्यमान अछि।[15] एहि तरहक नियमित प्रयोग मे आब6बला साहित्यरूप मे स्थान-काल-वश, पीढ़ीक परिवर्त्तन सँ उच्चारण मे कोना-कोना भेद-प्रभेद उत्पप होइत गेल, तकर विवरण विस्तारपूर्वक राहुल जी अपन लेख सब मे देने छथि।

चर्यागीतक प्रथम-प्रथम संपादन एक बंगाली केलनि, स्वाभाविक थिक जे गीत सभक तमाम संशयजनक स्थल सभक अर्थसमाधान ओ मातृभाषानुरागी विद्वान बांग्ला मे पौलनि। ओहि संपादित पुस्तकक भूमिका सेहो बांग्ला मे छैक आ गीत सब सेहो बांग्ला लिपि मे संपादित क' क' छापल गेल छैक। एकर बाद बंगाली विद्वान लोकनि मे सिद्धसाहित्यक अध्ययन-विश्लेषणक परंपरा चलि निकलल। ई लोकनि सिद्ध सब कें तहिना बांग्लाक प्राचीन कवि घोषित केलनि जेना विद्यापति कें। एहि पर जे राहुल जी अपन लेख सब मे चुटकी लेने छथि, से सब देखबा जोग अछि।'राहुल निबंधावली' मे संकलित लेख 'चौरासी सिद्ध' मे लिखै छथि—'चौरासी सिद्ध मे सँ कतेको पर बंगाली विद्वान लोकनि प्रकाश देलनि अछि। किन्तु

एक तँ हुनका लोकनि लग मे मूल तिब्बती सामग्री पर्याप्त मात्र मे उपलब्ध नहि छनि, अनुवाद जे छनिहो से आधा-अधूरा, दोसर हुनका सभक सब सँ भारी दोष छनि जे प्रान्तीय पक्षपात सँ ग्रस्त छथि। एहि सँ तँ ओतुक्का पैघो-पैघ विद्वान बरी नहि छथि। जाहि तरहें एखन हाल धरि विद्यापति सोलहो आना बंगाली मानल जाइत रहथि, ओहिना चौरासी सिद्ध लोकनि बांग्लाक आदिकवि मानल जा रहल छथि, जखन कि सिद्ध लोकनि सँ सम्बद्ध पीठ नालंदा आ विक्रमशिलेक जँ ख्याल कयल गेल रहितय, तँ मालूम भ' गेल रहैत जे हुनका लोकनि पर बंगाल सँ कतहु अधिक दावेदारी बिहारक बनैत छैक।'[16]

पुन: 'पुरातत्त्व निबंधावली' मे संकलित अपन लेख 'प्राचीनतम कवि' मे राहुल जी लिखैत छथि—'चौरासी सिद्ध नालन्दा आ विक्रमशीला सँ संबंध रखैत छलाह। तें, जाधरि नालन्दा आ विक्रमशीला कें घीचि क' बंगाल मे नहि ल' गेल जाइत अछि, ताधरि सिद्ध लोकनिक भाषा सेहो पूर्ण बांग्ला साबित नहि हएत। रहल बात समानताक, तखन तँ मानहि टा पड़त जे समानता तँ बेसी मगही आ मैथिली सँ छैक। असल मे हमरा सब कें मोन रखबाक चाही जे अतीत-कालक भीतर हमरा लोकनि जेना-जेना अधिकाधिक घुसकल जाएब, ई समानता सेहो तहिना-तहिना अधिकाधिक बढ़ैत जाएत, कारण मगही, ओड़िया, बांग्ला, आसामी, मैथिली—सब एक्के, मागधीक सन्तान थिक।'[17] राहुल जी असल मे डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य (म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक पुत्र)क कुतर्क पर खिसियाएल छलाह जे आदिसिद्ध सरहपाद कें बंगाली सिद्ध करबा पर तुलल रहथि, जखन कि सरह नालन्दा विश्वविद्यालयक आचार्य रहथि। वैह डॉ. विनयतोष जखन लुइपाक बारे मे लिखलनि जे 'These songs written by a Bengali in the soil of Bengal, may appropriately, be called a Bengali.' तँ राहुल जी जवाब देलखिन जे 'भोटिया ग्रन्थ सब मे जेना कि लिखल भेटैत अछि, ओ लोकनि विक्रमशिला बला प्रदेश कें बंगल, भंगल अथवा भगल नाम सँ अभिहित करै छलाह, जकर चित्र एखनो हमरा लोकनि 'भागलपुर'क नाम मे पबैत छी।'[18] मने एहि तरहें निर्णय कैल जायत तँ बंगाल कें सेहो भागलपुरक अंतर्गत हेवाक प्रतितर्क गढ़ल जा सकैत अछि।

एक टा आर प्रसंग। भूसुकपा के एक गीत मे पद अबैत छैक—'बाज णाव पाड़ी पउँआ वाहिउ/ अदअ बंगाले क्लेश लुडिउ।/ आजि भूसु बंगाली भइली/ णिअ धारिणी चण्डाली लेली।' एहि मे बंगाल आ बंगाली शब्द आएल अछि। एकर व्याख्या म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक एहि कथन सँ (ग्रन्थक भूमिका मे आएल) बूझल जा सकैत अछि—'सहजमते तीनटि पथ आछे—अवधूती, चाण्डाली, डोम्बी वा बंगाली। अवधूती ते द्वैतज्ञान थाके, चाण्डाली ते द्वैत आछे——बलिलेउ हय, किन्तु

डोम्बी ते केवल अद्वैत—अइ बार तुमि सत्य सत्यइ बंगाली हइले अर्थात् पूर्ण अद्वैत हइले।'[19] भूसुक के मूल नाम शान्तिदेव रहनि मुदा देख' सुन' मे नेनमूँह, बाज' भूक' मे लटपटाह आ विचित्र भेस-भूषा धारण कयने रहलाक कारण महाराज देवपाल (809-849 ई.) हुनका मजाक मे भूसुक कहि देलकनि, तहिया सँ ओ अपना लेल भूसुके नाम धारण क' लेलनि आ एही नामें जानल जाय लगलाह। महाराज धरि हुनक अबर्जात रहनि, एहि सँ हुनकर लोकप्रियताक अनुमान कयल जा सकैए। अस्तु। भूसुकपाक एहि पद मे 'बंगाल' आ 'बंगाली' देखि क' डॉ. भट्टाचार्य लिखलनि—'It is said that Shantideva was a native of Saurashtra, but I am inclined to think that he belonged to Bengal. It is evident from his song : आजु भूसु बंगाली।'[20] एहि पर राहुल जीक चुटकी—'डॉ. भट्टाचार्य कम सँ कम अपन पिता प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्यायक लिखल भूमिका तँ देखि लीतथि। आ, जँ शब्द पर दौड़ताह तखन तँ कहथु आइ भुसूक बंगाली भेलाह, बरु काल्हि धरि नहि रहथि। तखन तँ इहो देखथु जे 'भइली' शब्द बंगाल मे कतय प्रयुक्त होइत अछि, जखन कि काशी सँ मगह धरि ई शब्द आइयो प्रचलित अछि।[21]

अंतत: अपन लेख 'मागधी हिन्दी का विकास' मे राहुल जी अपन निष्कर्ष चारि बिन्दु मे रखलनि अछि—1. सिद्ध कवि लोकनिक संबंध नालन्दा आ विक्रमशिला संग रहल अछि। 2. ई दुनू विद्यापीठ मगही आ मैथिली क्षेत्र सँ बाहर नहि रहल अछि। 3. एहि समस्त कवि लोकनिक भाषा एक समान रहलनि अछि। 4. एहि गीत सब मे प्रयुक्त शब्द मगही आ मैथिली मे, काल संबंधी आवश्यक परिवर्त्तनक संग आइयो प्रचलन मे अछि।[23]

अपन एक लेख मे डॉ. भीमनाथ झा चर्यापदक भाषा मैथिली हेबाक पक्ष मे किछु तथ्य रखलनि अछि। ओ कहैत छथि—'कोन रचना कोन भाषाक थिक, से निश्चय करबा लेल प्रधानत: दू टा तथ्यक अन्वेषण करब आवश्यक होइछ। पहिल तँ ई जे विवेच्य रचनाक रचयिता कोन ठामक छलाह। दोसर, ओहि रचनाक भाषाक शब्दावली, व्याकरण तथा शैली आदि कोन भाषा सँ साम्य रखैछ। उक्त तथ्यक आलोक मे निर्विवाद भ' चुकल अछि जे चर्यापदक रचयिता सिद्ध लोकनि छलाह जे विदेह आ विदेहक सन्निकट प्रान्तक वासी छलाह। एहि प्रान्तक भाषा निश्चय मैथिली रहल होयत, तें एकरो भाषा मैथिली थिक। सिद्ध लोकनि मैथिल छलाह, से वर्णरत्नाकरो प्रमाणित करैत अछि।'[23]

अपन तथ्यक पुष्टि मे डॉ. भीमनाथ झा किछु महत्त्वपूर्ण बिन्दुक चर्चा केलनि अछि—

1. चर्यापदक भाषाक ध्वनि आ मैथिली भाषाक ध्वनि मे अत्यन्त समता छैक। मैथिली मे अनुनासिक ध्वनि तथा 'स' क अधिकता भेटैत अछि। एहू मे तकर प्राचुर्य छैक।
2. व्याकरणक दृष्टिएँ सेहो चर्यापदक भाषाक साम्य मैथिली संग छैक। मैथिली मे करण कारक मे 'एँ' संबंध कारक मे 'क, केर, केरि' क प्रयोग होइछ। तहिना, कारकान्त मे चन्द्रबिन्दुक प्रयोग करण विभक्ति मे देखल जाइछ। एहि प्रकारक प्रयोग वर्णरत्नाकर मे सेहो भेटैत अछि। चर्यापदक भाषा एहि प्रयोग सब सँ भरल अछि।
3. चर्यापद मे सर्वनामक मैथिली स्वरूप यथा हओ, हाउं, स्वयं—अपने, तों, तोहर आदि प्रयुक्त भेटैत अछि। एहि स्वरूपक ठीक एहने प्रयोग वर्णरत्नाकर, कीर्तिलता, विद्यापति-पदावली आदि मे सेहो पाओल जाइछ।
4. मैथिली क्रिया-पद अछ, थाक (अछि, थिक) छाड़िअ, करिअ, खेलह आदि चर्यापद मे प्रयुक्त भेल अछि। मैथिलीए भाषाक ई आदिरूप थिक।
5. स्त्रीलिंग संज्ञाक संग स्त्रीलिंग क्रिया एवं स्त्रीलिंग विशेषणक प्रयोग चर्यापद मे भेटैत अछि जे मैथिली भाषाक प्रकृतिक अनुरूप अछि।
6. क्रिया-विशेषण जइसन, अइसन आदिक प्रयोग वर्णरत्नाकरे जकां चर्यापद मे सेहो भेटैत अछि।
7. अनेकानेक शब्द आइयो मैथिली मे प्रयुक्त होइत अछि जकर प्रयोग चर्यापद मे भेल अछि—आजि, तेतलि, सासु, उपाड़ि, भात, आवेश, एत, काल आदि।
8. अनेक लोकोक्ति आ वाग्धारा चर्यापद मे प्रयुक्त अछि जकरा आइयो मैथिली मे प्रयोग होइत देखल जा सकैत अछि—बड़द बिकायल गाय बाँझ रहल, हाक पाड़इ, जे-जे आयल ते-ते गेला, आदि।

उपर्युक्त बिन्दु आ आनो अनेक बिन्दु सब कें सामने रखैत आ प्राचीन मैथिली कवि लोकनिक भाषाक संग चर्यापदक भाषाक तुलनात्मक अध्ययन करैत पं. राजेश्वर झा लिखलनि अछि—'उपर्युक्त प्रसंग सँ प्रतीत होइछ जे चर्यापद कें कोनहु टा हालत मे मैथिली सँ भिप भाषा मानब भ्रमे टा होयत।'[24]

सिद्धसाहित्य आ मैथिली साहित्यक इतिहासकार

मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि अपन कतियायब आ लतिआयब बला प्रवृत्ति कें अपन परमधर्म बुझैत रहलाह अछि। हिनका लोकनिक नीयत की आ

केहन रहलनि, तकर ठीक-ठीक पता आद्य इतिहासकार डॉ. जयकान्त मिश्रक मान्यता सँ लागि जाइत अछि। हमरा लोकनि अवगत छी जे जयकान्त बाबू 1300 ई. सँ मैथिली साहित्यक आरंभ (आदिकाल) माननलि जखन कि एही चर्यागीत सभक आधार पर बांग्ला साहित्यक आरंभ पाँच सय बरख पहिनहि आठम शताब्दी मे भ' चुकल रहैक। ऊपर राहुल सांकृत्यायन कें हम एतेक बेसी उद्धृत एहि दुआरे केलियनि अछि जे सर्वाधिक पोख्ता साक्ष्यक संग चर्यागीत पर वैह विचार केलनि अछि, आ हुनकर स्वीकार्यता वैश्विक छनि। सिद्धसाहित्य पर सब सँ बेसी दावेदारी कोन भाषाक बनैत छैक तकरो उल्लेख ऊपर आबि चुकल अछि। तखन प्रश्न उठैत अछि जे स्वयं मैथिल अध्येता लोकनि कें चर्यागीत सँ एहन कोन शत्रुता छनि जे ओकर एक आँखि फोड़बाक वास्ते मानू अपन दुनू आँखि फोड़ि लैत छथि, मने अपन भाषाक पाँच सय बरखक दावेदारी एक झटका मे छोड़ि क' बहरा अबैत छथि। एकर थोड़े विश्लेषण हेबाक चाही।

दुनिया जनैत अछि आ एहि बातक पर्याप्त पुरातात्त्विक साक्ष्य मौजूद अछि जे पाल राजा लोकनि स्वयं बौद्ध धर्मक अनुयायी होइतहु ब्राह्मणधर्म कें पर्याप्त संरक्षण दैत रहला, मंदिर सब कें सहायता देलखिन, ब्राह्मण लोकनि कें गामक गाम दान केलनि, मुदा जयकान्त बाबू लिखैत छथि—'पालवंशक अंतिम राजा लोकनि विक्रमशिला विश्वविद्यालय कें संरक्षण देलथिन जतए ओ 84 सिद्ध सभ रहैत छलाह जाहि मे सँ अधिकांश मैथिली मे चर्यापद सभ लिखलनि।'[25] एहि बात सँ तँ चलू सान्त्वना भेटैत अछि जे सिद्ध लोकनिक भाषा जयकान्त बाबू मैथिली मानैत छथि। मुदा, जाहि पाल लोकनिक एतेक रास कयल काज अछि, आइयो धरि जे.सी.बी. सँ खोदला पर माटि तर सँ विष्णु अथवा सरस्वतीक प्रतिमा भेटैत अछि, खोज कयला पर पता लगैत अछि जे ओ प्रतिमा पालकालीन थिक। मुदा ओहि पाल लोकनिक समस्त कयल काज मिश्र जीक लेल एक एही अपराधक कारण समाप्त जे ओ लोकनि विक्रमशिला विश्वविद्यालय कें संरक्षण देलखिन। एहि ठाम प्रसंगवश इहो मोन पाड़ि दी जे जाहि कर्णाटकाल कें जयकान्त बाबू स्वर्णकाल कहैत छथि अथवा तकर बादोक राजा लोकनिक शासन कें 'मिथिलाक अप्पन शासन' मानैत छथि, ओहि सब मे सँ क्यो एक्को टा राजा कोनो विश्वविद्यालयक स्थापना नहि क' सकलाह। जँ कहब जे विश्वविद्यालय अधलाह चीज होइत छैक, तें नहि करौलनि, सेहो कहब अनुचित, कारण अंग्रेज लोकनि आबि क' जखन विश्वविद्यालयक स्थापना करबै गेलाह तँ ओहि मे नौकरी पेबाक बेर मे यैह महामहोपाध्याय लोकनि सब सँ बेसी लाभान्वित भेलाह। से उचित छल, ई बात के नहि मानत? सक्षम आ योग्य कें आगू हेबाके चाही।

अपन बात कें विश्वसनीयता देबाक लेल जयकान्त बाबू जोड़लनि—एहि बातक प्रमाण उपलब्ध अछि।' अर्थात बहुत शोधपूर्वक ई बात ओ लिखि रहलाह अछि। मुदा हुनकर तथ्यहीनताक फुक्का एक्के शब्द सँ फूटि जाइत अछि जखन ओ 84 सिद्धक संरक्षणदाता अंतिम पाल लोकनि कें मानैत छथि। असल मे 84 सिद्ध कोनो एक ठाम मंडली जुटा क' नहि रहैत छलाह, जेना कि जयकान्त बाबू कें प्रतीत होइत छनि, ई लोकनि अलग-अलग काल आ स्थान पर आठम सँ तेरहम शताब्दी धरि पसरल छलाह।

असल मे, जयकान्त बाबू अपन इतिहास मे मैथिली साहित्यक आदिकालीन इतिहास लिखब शुरू करबा सँ पहिने 'प्राक मैथिली काल'क अवधारणा रखलनि अछि जकर समय आठम सँ बारहम शताब्दी निर्धारित केलनि अछि आ एकरा बारे मे एक पाराग्राफ लिखलनि अछि। ई पाराग्राफ सिद्धसाहित्य आ चर्यापदक बारे मे अछि।

सिद्धसाहित्य पर बहुत मनोयोग आ अध्यवसायपूर्वक शोध केनिहार डॉ. जयधारी सिंह सिद्धसाहित्यक चारि गोट अवदान मानैत छथि—1. अपभ्रंशक अंगीकार 2. गीतक अनुराग 3. प्रतीक योजना द्वारा गूढ़ विषयक रुचिरतर अभिव्यक्ति तथा 4. एहि साधन सभ सँ साध्यभूत रसक परिपाक वा दोसर शब्द मे भाव पक्षक प्राबल्य।[26] एहि चारू मे सँ दू तँ एहि बिन्दु सँ सम्बन्धित अछि जे एहि क्षेत्रक जन-भाषा कें कोना ओ लोकनि कविता-लेखनक लेल पूर्णत: उपयुक्त भाषा बना देलनि आ इहो जे कोना चर्यापद एक परिपूर्ण कविता थिक। अपभ्रंश वा मिथिलापभ्रंशक अंगीकार ओ क्रान्तिकारी कदम छल जे संस्कृतानुगामी पंडित वर्गक वर्चस्व कें तोड़लक आ आगू एकरे देखादेखी एही सँ प्रेरणा पाबि विद्यापति अपन प्रबन्धकाव्य लिखि सकलाह, 'देसिल बयना सब मिट्ठा/ तें तइसन जम्पओ अवहट्ठा' के डाकनि द' सकलाह। मुदा सिद्ध लोकनिक जे सब सँ पैघ अवदान छलनि से छल राग-ताल-लयाश्रित गीतक आविष्कार। हमरा लोकनि कें मोन रखबाक चाही जे एहि प्रकारक गीतक रचना हिनका लोकनि सँ पहिने क्यो कवि, संस्कृतो मे, नहि कयने छलाह। यैह लोकनि एकर पहिल उद्भावक, पहिल प्रयोक्ता छलाह जकर प्रसाद पाबि विद्यापतिक प्रतिभा एकरा एक नव चमत्कार सँ भरलक आ यैह आगू मैथिली कविताक प्रधान काव्य-विधा आधुनिक काल धरि बनल रहल अछि। चर्यागीत मे हमरा लोकनि कें 24 प्रकारक राग-रागिणीक उल्लेख भेटैत अछि, मने हरेक गीत कोनो ने कोनो राग-रागिणी मे निबद्ध छैक। मिथिला-क्षेत्र संगीतप्रिय उत्सवधर्मी जन-समूहक अधिवास रहल अछि। एक सँ एक प्रतिभा के विभिप क्षेत्र मे, विभिप काल मे होइत रहलाह अछि। मुदा, देखबाक बात ई थिक जे सृजनात्मक साहित्य

मे एहि प्रवृत्ति कें पहिल-पहिल बेर अभिव्यक्ति सिद्ध लोकनि सँ भेटलैक अछि।

मुदा, डॉ. जयकान्त मिश्र लिखैत छथि—'एहि अत्यन्त गूढ़ पदावली (चर्यागीत)क जे परंपरा ई रचयिता सब स्थापित केलनि से आगू समय मे चलि नहि सकल।'[27] चलि नहि सकल? तखन ई गीत विधा कतय सँ आयल? ज्योतिरीश्वर कें देसीभाषा मे लिखबाक प्रेरणा आ प्रोत्साहन कतय सँ भेटलनि? प्रेरणा तँ कोनो शून्य सँ नहि टपकैत छैक। ओहू मे कविताक, जाहि मे अतीतक कवि-परम्पराक विशेष महत्त्व रहैछ। विद्यापतिक राग-ताल-लयाश्रित गीतक प्रेरणा ई लोकनि जयदेव (संस्कृत कवि) सँ तँ गछलनि, अनात्मबुद्धित्वक पराकाष्ठा कहबैक एकरा जे बारहम शताब्दीक जयदेव स्वीकार्य छलथिन, जखन कि निज अप्पन माटि-पानिक उपजा आठम शताब्दीक ई सिद्ध लोकनि स्वीकार्य नहि छलखिन, जखन कि हिनके लोकनि सँ प्रेरणा पाबि जयदेव संस्कृत मे गीत-रचना दिस प्रवृत्त भेल छलाह।

कोनहु साहित्यक इतिहासकार जखन एहि तरहें सोझा-सोझी गाय गीड़ि जाइत अछि, वा अपन प्रबल दुराग्रहक प्रभाववश ओ कोनो ऐतिहासिक युगक हत्या क' दैत अछि जाहि सँ ओकर निहित स्वार्थक साधन संभव भ' सकय, तँ बूझब आवश्यक भ' जाइछ जे हुनकर निहित स्वार्थ की छनि? डॉ. जयकान्तक स्वार्थ की छनि? जखन ओ एतेक भारी झूठ लिखि जाइत छथि जे सिद्धसाहित्य चलि नहि सकल, अर्थात ओकर कोनो अवदान नहि छैक, तँ तकर ओ कारण सेहो बतबैत छथि। हुनक बताओल एहि कारणे मे हुनकर पूर्वाग्रह आ निहित स्वार्थ समाहित अछि। लिखैत छथि—'मिथिला वैदिक धर्मक ततेक कट्टर देश छल जे ओतए बौद्ध विचारधाराक अभ्युदय होएबाक कोनो संभावना नहि छलैक। इएह हेतु थिक जे जँ कतेक विद्वान मैथिली साहित्यक आदिकाल एहि युग कें कहितो छथि तँ कतोक अन्य विद्वान एहि काल कें एक टा पृथक (बेसी सँ बेसी भाषाविज्ञानक दृष्टि सँ) मात्र प्राक्-मैथिली निर्माणक काल मानबाक हेतु प्रस्तुत छथि।'[28] स्वयं जयकान्त बाबू 'कतेक' नहि 'कतोक' विद्वानक कोटि मे अपना मे रखलनि अछि। आ स्वाभाविके निर्णायक रूप सँ भारी पड़ल छथि। इहो स्पष्टे कहलनि जे 'प्राक्-मैथिली' केवल भाषाविज्ञानक दृष्टिमो एक टा काल थिक, साहित्यक अथवा कविताक दृष्टिमो नहि, आ तें सिद्धसाहित्य मे किछु देखबो योग्य भ' सकैत अछि, तकर कल्पनो ओ नहि क' सकलाह अछि। प्रश्न अछि जे आखिर किएक? कारण स्वयं बतौने छथि जे मिथिला वैदिक धर्मक कट्टर अनुयायी थिक आ बौद्ध विचारधाराक अभ्युदय एकरा पसंद नहि छैक। वैदिक धर्म मने की? हमरा बूझने तत् कालीन ब्राह्मणधर्म, जकरा आइ हिन्दूधर्म कहल जाइत छैक। हिन्दूधर्मक बहुत भारी असार-पसार छैक, सैकड़ो प्रकारक सम्प्रदाय आ परंपरा छैक जाहि सब के बीच तँ कतोक बेर अकास-

पताल धरि के अंतर पाओल जाइछ। जेना अद्वैत आ मीमांसा। जेना ईश्वरवादी आ निरीश्वरवादी। एहि ठाम तँ स्वयं बुद्धो कें विष्णुक अवतार मानल गेलैक अछि। एतेक सब कथूक ख्यालो जयकान्त बाबू कें नहि अयलनि अछि। तें, ओ जखन 'वैदिक धर्म' शब्दक प्रयोग करैत छथि तँ हुनकर तात्पर्य होइत छनि वाजसनेयि आ छान्दोग्य ब्राह्मण जातिक मैथिल जनता द्वारा अपनाओल धार्मिक कर्मकाण्ड। एहि विश्वासक अनुसार बुद्ध भने विष्णुक अवतार मानल जाइत होथु, मुदा हुनकर विचार 'आपातभीषण' थिक—कारण क्यो कोना (कोन राजनीतिवश) अवतारी मानि लेल जाइत अछि आ कि नहि मानल जाइत अछि, तकर चक्र रचबाक पूरा भेद आ अनुभव हिनका लोकनिक स्मृति मे मौजूद रहैत छनि।

ध्यान देबाक बात थिक जे जयकान्त बाबू धर्मक इतिहास नहि लिखि रहल छलाह आ ने मैथिल ब्राह्मणक इतिहास लिखि रहल रहथि। ओ साहित्यक इतिहास लिखैत रहथि। साहित्य भाषा मे निबद्ध कयल गेल रहैत अछि। भाषा कोनो क्षेत्रविशेषक लोक द्वारा व्यवहृत माध्यम होइत छैक। ई लोक सब विभिप जातिक, विभिप धर्मक, विभिप विचारधाराक भ' सकैत छथि। तात्पर्य भेल जे भाषा, धर्म आ कि विचारधारा सँ पैघ व्याप्तिक वस्तु होइत अछि। साहित्य जे कि भाषा मे निबद्ध रहैत अछि ओकरो मे समावेशिता आ बहुल ग्राहिताक ई गुण अनिवार्य रूप सँ आबिये जाइत छैक। एहना स्थिति मे जयकान्त बाबूक कथनक आशय की निकालल जाय? एक्के टा आशय बहराइत छैक—मैथिली ब्राह्मणक भाषा थिक। ब्राह्मणलोकनि वैदिक धार्मक कट्टर अनुयायी छथि तें बौद्ध विचारधाराक अभ्युदय देखि नहि सकैत छथि, अतीतो धरि मे नहि। मैथिली साहित्य जें कि ब्राह्मणक सम्पति थिक तें भने सिद्ध लोकनि मैथिली मे लिखने रहथु, हुनकर वस्तु कें इतिहासक विषय नहि बनाओल जा सकैत अछि भने ताहि लेल मैथिली कें पाँच सय बरखक सीनियरिटीक बलिदाने किए ने करय पड़य। मिथिला तँ बलिदाने लेल जानल जाइत अछि, से जँ नहि तँ आइ एकर स्टेटस बंगाल, आसाम आ उड़ीसा जकाँ किएक नहि रहितैक?[29]

मैथिली साहित्यक इतिहास-लेखन मे एक टा 'क्रांतिकारी' लेखन सेहो भेलैक। 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' नामक ई पुस्तक डॉ. दिनेश कुमार झा लिखने छथि। एहि इतिहास मे मैथिली साहित्यक 'आदिकाल/आधारकाल' 800 ई. सं. 1350 ई. मानल गेल अछि। एकर अर्थ भेल जे सिद्धसाहित्य कें ओ मैथिली साहित्य माननलनि अछि। मुदा निर्णय-विचार की केहन, ताहि लेल हुनकर शब्दावलिये कें देखि लेब पर्याप्त होयत, जे ने केवल तथ्यगत रूप सँ त्रुटिपूर्ण अछि, नीयत मे सेहो संकीर्णता आ अवज्ञा सँ भरल अछि—'वज्रयानी बौद्ध सिद्ध लोकनि बिहार सँ आसाम धरि पसरल छलाह तथा अपन अलौकिक चमत्कार सँ जनता कें आतंकित

कयने रहैत छलाह। बिहारक नालंदा एवं विक्रमशिला नामक प्रसिद्ध विद्यापीठ हिनका लोकनिक अड्डा छल। बख्तियार खिलजी जखन एहि दुनू स्थान कें उजाड़लक, तँ ई सब छिड़िया लेलाह।'[30] अर्थात धन्यवाद कही बख्तियार खिलजी कें जे ओकरा सब कें उजाड़लक तँ एहि लोकक धर्म बचल। अड्डा बना लेने रहय जेना क्रिमिनल सब जबरन कब्जा क' क' बना लैत अछि!

एहि वाक्यावली सँ जे संकेत भेटैत अछि, से संकेत आनो इतिहासकारक कथन-भंगिमा सँ भेटैत अछि। अर्थात् हिन्दूसमाज मे एहि बौद्ध सिद्ध लोकनिक प्रति अश्रद्धा आ अवज्ञाक भाव छल। ई मुदा पूर्णत: गलत निष्कर्ष होयत। एकर निष्पत्ति आ प्रभाव कें ल' क' अनेक अध्ययन भेल अछि। मुदा हम एतय डा. जयधारी सिंह कें उद्धृत करय चाहब। ओ कहैत छथि—'सिद्धक आदर मे बौद्ध-हिन्दू मध्य सामंजस्ये सहायक भेल। हिन्दू सँ जँ ब्राह्मण अभिप्रेत हो तखन तँ नहि, किंतु हिन्दू सँ जँ अद्वैतवाद, शैवशाक्त तंत्र तथा आपामर जनताक मूलप्रवृत्ति लक्षित भए सकैत अछि तँ एहि मे कोनो संदेह नहि जे बौद्ध कें ताहि युग मे हिन्दूक सहानुभूति भेटि सकल तें पालराज्य धरि एकर विकासक अवधि रहल, अन्यथा बौद्धधर्म थम्हि नहि सकैत छल।'[31] कहब जरूरी नहि जे एही सहानुभूतिक अंतिम परिणति बुद्ध कें विष्णुक अवतार मानब छल आ तकरा बाद पूर्णत: समाप्ति।

मान्यताक अलग-अलग ध्रुव पर ठाढ़ डॉ. जयकान्त आ डॉ. दिनेशक अभिमत जेना हमरा लोकनि देखल, तात्पर्य जे सिद्धसाहित्य कें चाहे मैथिली साहित्य मानी वा कि नहि मानी, निर्णय बराबरे अछि जे मैथिली ब्राह्मण धर्मक भाषा-साहित्य थिक आ आनक हस्तक्षेप एतय असह्य छैक। आन-आन इतिहासकार लोकनिक राय एही दुनूक बीच कतहु ने कतहु डोलैत रहल अछि। हँ, बीचक इतिहास सब मे ई चलन पकड़लक जे सिद्धसाहित्य पर मैथिलीक पूरा अधिकार छैक तकर बिन्दुवार उल्लेख करैत गेलाह। ई सब बात अति विस्तार सँ सुनीति कुमार चटर्जी, राहुल सांकृत्यायन, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजेश्वर झा आदि अपन-अपन पुस्तक मे देने छथि। बात अछि जे मागधी अपभ्रंश सँ आधुनिक भारतीय भाषाक रूपान्तरण कोना भेलैक अछि आ चर्यापद मे कतबा एहन शब्द प्रयुक्त भेल अछि जे आइयो मैथिली मे प्रचलित अछि।

इतिहासकार लोकनिक एहि आग्रह-दुराग्रहक अन्हरमारि मे मायानन्द मिश्रक इतिहास-पुस्तक मे ई पढ़ब जे 'सिद्ध लोकनि मिथिला समाज सँ घनिष्ठ रूपें सम्बद्ध छलाह। आ तें हुनक वाणी मे मिथिलाक संस्कृति ओ विशेषताक अभिव्यक्ति भेल अछि। ओ लोकनि एहि क्षेत्रक जनभाषा मे अपन वाणीक रचना कयलनि तें प्राचीन ओ आधुनिक मैथिली सँ एतेक साम्य अछि। एहि प्रकारें सिद्धसाहित्य पर मैथिलीक

अधिकार सर्वाधिक अछि आ ओ मैथिलीक प्राचीनतम लिखित साहित्य थिक।'[32]— मायानन्द मिश्रक कलम सँ ई लिखल जायब परम आश्वस्तिजनक लगैत अछि। मुदा दू टा प्रमुख कारण देखैत छी जाहि सँ हुनकर देल ई आश्वस्ति टिकाऊ नहि भ' पबैत अछि आ आगू बढ़िते भड़भड़ा क' खसि पड़ैत अछि। पहिल तँ यैह जे जँ ई प्राचीनतम लिखित मैथिली साहित्य थिक तँ एकर सार्वकालिक अवदान की रहलैक, कोन परम्पराक ओ स्थापना केलक जे आगू चलि क' मैथिली कविता कें गति आ विस्तार देलकैक, तकर एतय कोनो अध्ययन नहि अछि। बरु तकर यत्नो धरि नहि अछि। दोसर जे अन्तत: जाहि निष्कर्ष पर ओ पहुँचलाह से हुनकर गंभीर अध्ययन, चिन्तन आ विश्लेषणक फलस्वरूप नहि छल, एकर बदला ओ बरु 'सर्वाधिकारवादी' मानसिकताक उपज छल। तकर प्रमाण जे अपन इतिहास मे ओ सिद्धसाहित्यक तेसर प्रभेद डाकार्णव कें डाकवचन सँ अभिप बतबैत छथि। लिखैत छथि—'डाकार्णवक फकड़ा ओ वचन सब व्यावहारिक जीवनक लेल ततेक उपयोगी छल जे एकर निवास कंठ-परम्परा मे भ' गेल तथा पूर्वोत्तरक विभिप क्षेत्र मे प्रचलित भेल।'[33] एहि क्रम मे ओ डाक, घाघ आ भड्डरीक नाम लेलनि अछि, मानू इहो लोकनि चौरासी सिद्ध मे सँ होथि। कथन असत्य आ भ्रामक मुदा कथन-भंगिमा परम विश्वासदीप्त!

जेना माया बाबू लिखने छथि, डाकार्णवक पद ततेक व्यावहारिक छल, मने ओहि पदक भाषा सेहो तते सुगम जे एकर निवास कंठ-परंपरा मे भ' गेल, कने टा ध्यान द' क' जाँचल जाय तँ वास्तविकता ठीक एकर विपरीत अछि। ओकर भाषा ततेक दुर्बोध अछि जे बड़को बड़का अध्येता एकर भाषा-सिद्धि मे अपना कें असमर्थ पौलनि अछि। बंगाली विद्वान सभक चुटकी लैत राहुल सांकृत्यायन जे लिखलनि अछि तकर चर्चा एखने भेल अछि। अपन भाषा कें ल' क' हुनका सभक भीतर पक्षपात रहिते टा छनि आ कुतर्क पर कुतर्को क' क' ओ कोनो रचना कें बांग्ला साबित करबाक जिद रखैत छथि। डाकार्णवक पहिल संकलन हर प्रसाद शास्त्रीक 'बौद्धगान ओ दोहा' मे भेल। ओहि मे चर्यागीत आ दोहाकोश सेहो छल आ ई तेसर प्रभेद डाकार्णव सेहो। गीत आ दोहाक भाषा शास्त्री जी निधोख बांग्ला साबित केलनि। मुदा डाकार्णवक बारे मे लिखलनि जे एकर अपभ्रंशक बारे मे ठीक-ठीक किछु निर्णय करब कठिन अछि।[34]

डाकार्णव असल मे तंत्रग्रन्थ थिक। जेना कि हमरा लोकनि हिन्दू तंत्रग्रन्थ सब मे देखैत छी, इहो ग्रन्थ 'पटल' मे विभाजित अछि। एहि ग्रन्थक द्वितीय संकलयिता-संपादक डॉ. नगेन्द्र नारायण चौधरी लिखलनि अछि जे एहि ग्रन्थ मे एकाबन गोट पटल (अध्याय) छल। शास्त्रीजीक संग्रह मे एकर मात्र पहिल, दोसर, तेसर, छठम,

दसम, चौदहम, पन्द्रहम आ तैसम पटल संकलित अछि। ग्रन्थक आरंभ संस्कृत गद्य सँ भेल अछि जखन कि फेर आगाँ कतहु गद्यक आश्रय नहि लेल गेल अछि। बीच-बीच मे संस्कृत श्लोक अछि आ तदुपरि अपभ्रंश। डॉ. चौधरीक संकलनक सीमा ई छनि जे ओ एकर अपभ्रंश भाग टा कें संकलित केलनि अछि। पटलक पुष्पिका जे भेटैत अछि सेहो मात्र सुरुहेक तीन पटल मात्रक भेटैत अछि। तेसर पटलक पुष्पिका अछि—'इतिश्री डाकार्णव महायोगिनी तंत्रराजे डाकिन्योत्पत्ति लक्षण सुख संचार कर्मतत्त्व व्यवस्थाविधि: पटल: तृतीय:।' एहि सँ अध्येता लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छथि जे डाकार्णवक पूरा नाम 'डाकार्णवमहायोगिनी तंत्रराज' थिक। डाकार्णव अर्थात ज्ञानार्णव, ज्ञानसागर। डाकिनी शब्दक प्रयोग डाकक स्त्रीलिंग रूप थिक। विद्वान लोकनि एहि 'डाक' शब्दक निष्पत्ति पर सेहो पर्याप्त मंथन कयने छथि। डॉ. चौधरीक मत छनि जे 'डाक' शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृतक शब्द नहि थिक अपितु ई तिब्बती मूलक शब्द थिक जतय एकर अर्थ अछि—ज्ञान। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा मे तिब्बती मूलक आनो अनेक शब्द जेना डोम, डोंब, डोंबी आदिक ओ उदाहरण दैत छथि, जकर अर्थ थिक बुद्धिमान अथवा बुद्धिमती। अपना युग मे एहि ग्रन्थक महत्त्व प्रमुख छल, जाहि मे वज्रयानक सम्प्रदायगत विचार शून्यवादी तर्कपद्धतिक संग राखल गेल अछि।34 मंत्र, यंत्र मुद्रा, धारणी, योग आ समाधि सब कथूक एहि मे यथातथ्य वर्णन भेल अछि।

एकर भाषा दुर्बोध किएक अछि ताहि बारे मे अध्येता लोकनिक विचार छनि जे जेना बुद्धयुग मे पालि कें विकसित कयल गेल छल, ताही तरहक एक कृत्रिम अपभ्रंश विकसित करबाक चेष्टा एकर भाषा मे भेल अछि। किछु गोटेक मतानुसार मागधी अपभ्रंशक संग एहिठाम शौरसैनी कें मिझरा देल गेल अछि। किछु लोक तँ कहैत छथि जे एहि ग्रन्थक रचयिता, जकर नामक वा कालक कतहु भूलो सँ उल्लेख नहि भेल छैक, पूर्ण अपभ्रंशक स्वरूपे सँ जेना पूर्णत: अपरिचित छलाह। किछु गोटे एकर भाषा कें 'मरणासप अपभ्रंश'क अंतिम अवशेष माननलि अछि।

बहुत विस्तारक अवकाश एहि ठाम नहि अछि मुदा तैयो भ्रमनिवारणार्थ। एहि ग्रन्थक स्वरूप की अछि? एनमेन तहिना जेना बादक हिन्दू तंत्रग्रन्थक देखैत छिऐक। मने देवी-देवता संवाद। ई सम्पूर्ण ग्रन्थ भगवान महावीर वीरेश्वर डाकिनी स्वामी द्वारा वाराही देवी कें देल गेल उपदेश थिक। ठाम-ठाम वाराही देवी अपन जिज्ञासा रखैत छथि आ वीरेश्वर तकर सविस्तर समाधान करैत छथि। हिन्दू तंत्र मे सेहो पशु, वीर आ दिव्य—तीन प्रकारक आचार मानल गेल अछि। ई ग्रन्थ वीर साधक कें सम्बोधित, वीर कें देल गेल उपदेश थिक। 'एव मया श्रुतम्' कहि क' बात शुरू होइत छैक, तकर अर्थ एकर समृद्ध परम्परा आ सम्प्रदाय सँ अछि। एहि मे जे अपभ्रंश पद सब आयल अछि तकर प्रयोगक बारे मे डॉ. विनयतोष भट्टाचार्यक कहब छनि जे बौद्धपरंपराक ई 'संगीति पद्धति'क ग्रन्थ थिक, मने एकर सामूहिक गायन होइत छल। दृष्टान्त लेल एक टा पद देखी—'वोहि सहावइ सब्भु जनु/ मोहिअ बालहु अविजनु/ जुइिप तत्तु सब्भु सारु/ जोहि सो नरु कज्जधारु/ रम रम परम महासुह वज्जु/ प्रज्ञोपायइ सिज्जउ कज्जु।।'[35]

एहि पद कें डाकवचन सँ अभिप कोना मानल जा सकैत अछि, जेना कि प्रो. मायानन्द मिश्र कहैत छथि एहि समुच्चा भ्रमक कारण यैह टा अछि जे सिद्ध लोकनिक प्रयोग सँ बहरा क' ई 'डाक' शब्द सदा-सर्वदाक लेल लोक मे चलि आएल आ संज्ञा सँ ल' क' क्रिया धरिक आवश्यकता पूरा करय लागल। एकर जड़ि ताक' लागी तँ तकर एक टा अलगे खिस्सा भेटत।

सिद्धसाहित्यक महत्त्व

मैथिली कविताक विकास मे सिद्धसाहित्यक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। कोनहु अनात्म-भावना सँ वा विधर्मी कहि क' जँ हमरा लोकनि एकर उपेक्षा करैत छी तँ से अपनहि टांग मे कुरहरि मारब आ अपनहि भाषाक जड़ि कमजोर करब थिक।

अवदान सब मे सब सँ प्रमुख थिक गीत-विधाक आविष्कार।[36] अनेको अनेक शताब्दी धरि अपना-अपना युगक मैथिली साहित्य गीते विधा मे लिखल जाइत रहल अछि। विषयवस्तु आ स्वरूप मे भने कतबो परिवर्त्तन भेल होउक, मुक्तक गीत शैली मैथिली कविताक प्रधान शैली रहल अछि। एतय धरि जे आधुनिक युग मे आबि क' जखन आचार्य रमानाथ झा मैथिली कविताक संकलन प्रकाशित करय लगलाह तँ पुरान समयक काव्य-रचना कें तँ ओ 'प्राचीन गीत' नाम देबे केलनि, आधुनिक युगक कविता कें सेहो ओ 'नवीन गीत' नाम देब पसिप केलनि, जखन कि ताधरि कविताक स्वरूप मे देखनगर अन्तर आबि चुकल रहैक।

आनो काव्य-रूप सब जे संस्कृत मे एकदम्मे नहि रहैक, तकर प्रयोग अपभ्रंश मे होअय लागल छल। जेना दोहा, चौपाइ आदि। मुदा गीतक आरम्भ सिद्धे लोकनिक साहित्य सँ भेल आ अध्येता लोकनि एकरा पूर्वी अपभ्रंशक एक गोट खास विशेषता मानैत छथि। कहुखन हमरा मन मे प्रश्न उठैत अछि जे एहि गीतक, राग-ताल-लयाश्रित गीत-रचनाक प्रेरणा हुनका लोकनि कें कतय सँ भेटलनि? एक सफल आविष्कारक पाछू हजार असफल सोच आ उद्यमक योगदान रहैत छैक। प्रेरणा कतहु शून्य सँ नहि टपकैत अछि आ ने कल्पने कखनहु सोच सँ बाहरक कयल जा सकैछ। सोचबाक बात ई थिक जे एक टा भाषा कें जकर औकात गमार लोकनिक बोली

सँ बेसीक नहि हो, क्यो रचनाकार अपना लेखनक लेल माध्यम कोना बना सकैत अछि? तमाम अध्येता लोकनि सँ सूचना हमरा सब कें यैह भेटैत अछि जे एहि जनभाषा मे पहिने सँ लेखनक कोनो परंपरा नहि छल। एहि सूचनाक आधार की? आधार यैह जे सिद्धसाहित्य सँ पहिनेक कोनो लिखित साहित्य हमरा लोकनि कें नहि भेटैत अछि। मुदा कोनहु वस्तुक अप्राप्त होयब सदा अनस्तित्वेक प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि। आइ हमरा लोकनि मिथिलाक विभिप क्षेत्र मे पसरल लोकसाहित्यक विभिप वस्तु सब कें संग्रहीत क' रहल छी आ तकरा प्रकाशित करा रहल छी। हमरा लोकनि अवगत छी जे एहि काजक श्रीगणेश डेढ़ सय बरख पहिने जॉर्ज ग्रियर्सने केलनि। मुदा हमरा लोकनि देखब, मैथिलीक आरंभिक आचार्य लोकनिक, इतिहासकार लोकनिक मन मे एहि लोकसाहित्यक लेल घोर उपेक्षाक भाव रहल। आइ एकर स्वीकार्यता अवश्य बढ़ल अछि मुदा तकरो युगधर्मवश लाचारिये बुझल जा सकैत अछि, कारण जाहि लगन आ आत्मबुद्धिक संग एकर समीक्षा अपेक्षित अछि, तकर एखनहु सर्वथा अभाव देखल जा रहल अछि।

पूर्वी क्षेत्रक लोकसंस्कृति मे संगीत-तत्त्वक व्यापक महत्त्व रहल अछि आ ई गीत नामक ई विधा मानू संगीतेक शाब्दिक शरीर होइत अछि। लोचन अपन 'रागतरंगिणी' मे गीत कें परिभाषित करैत लिखने छथि जे 'धातु-मातु समायुक्त वस्तु' गीत कहल जाइत अछि। धातु भेल नादात्मक संगीत-तत्त्व आ मातु भेल अक्षर-संचय अर्थात् शब्द-रचना। पूर्वी प्रान्तक लोक अपन संगीत-प्रवृत्तिवश अनेक काव्यरूपात्मक विधा आविष्कृत क' लेने छल। एहि विधा सब मे एक दिस जँ मुक्तक प्रकारक गीत छल, जकर कोटि-प्रकार सैकड़ो भ' सकैत अछि, कारण ओ अवसर, विध-विधान, संस्कार, हृदय-भावना, ऋतु, पर्वत्योहार, देवी-देवता, श्रम आ विश्राम आदि-आदिक लेल पृथक छल। रोचक बात इहो थिक जे एहि गीत सभक लेल अपन-अपन राग निर्धारित छल। डॉ. धर्मवीर भारती अपन ग्रन्थ 'सिद्धसाहित्य' मे अध्ययन केलनि अछि जे चर्यापदक गीत सब मे जे राग वर्णित भेल अछि से मूलत: लोकसंगीत सँ लेल गेल छल। आइ उत्तर भारत मे जे संगीत-शास्त्र प्रचलन मे अछि, मोन रखबाक चाही जे एही युगक आगू-पाछू ओकर संगठन शास्त्रीय पद्धति मे भेल छल। पूर्वागत वैदिक संगीत-पद्धति कें ओ लोकनि 'मार्ग' अथवा गन्धर्व-प्रणाली नाम द' क' तथा एकरा 'देवोचित' बता क' नवीन 'मानवोचित' संगीत कें प्राथमिकता देलनि। ओकर नामकरण भेल देसी संगीत। ई संगीत राग, ताल आ लय पर आधारित छल। अपन पुस्तक मे डॉ. जयधारी सिंह एकर सुंदर विवेचन कयने छथि।[37]

अध्येता लोकनि चर्यापद मे आ विद्यापतिक पद मे सेहो अनेकानेक ठाम मात्र-भंग, छन्द-भंग पबैत छथि। हमरा लोकनि अवगत छी जे सिद्ध लोकनि मे सँ प्राय: सब खूब पढ़ल-लिखल विद्वान लोक सब छलाह आ हुनका सभक लिखल अनेको संस्कृत ग्रन्थ भेटैत अछि।[38] तहिना विद्यापति। 'पुरुषपरीक्षा' मे उद्धृत श्लोक सब सँ हुनकर असंदिग्ध छन्दज्ञान कें बूझल जा सकैत अछि। तखन फेर गीत सब मे एहि छन्द-भंगक की कारण अछि? डॉ. वेलकरक महत्त्वपूर्ण मत कें उद्धृत करैत धर्मवीर भारती लिखलनि अछि जे हिनका लोकनिक लिखल ई छन्द गेय छल आ मात्र-वृत्तक बदला ताल-वृत्त पर आधारित छल। मुदा जखन जन-साधारण द्वारा व्यवहार कयल जाइ बला एहि गीतक व्यवहार शास्त्रीय अभिरुचि राखनिहार विद्वान लोकनि करय लगलाह तँ एकरा ''स्व आ दीर्घ मात्रवृत्त मे बान्हि देलनि। जन-साधारणक लेल से करब संभव नहि छल, कारण जन-साधारण उच्चारणक नियमानुशासन कें एहि सीमा धरि अनुपालन नहि करैत छल, ने क' सकैत छल। तालवृत्त एही प्रवृत्तिक सूचक थिक।[39] जहाँ धरि सिद्ध लोकनिक प्रश्न अछि, ओ लोकनि तँ भाषा आ व्याकरणक कठोर नियम सभक प्रति आरो कठोर विद्रोही रुख अपनौने छलाह आ एहन लोकक ओ खिल्ली उड़बथि जे संस्कृतक नियमक पालन कड़ाइ सँ करथि। ओ लोकनि तँ एतय धरि घोषित केलनि जे अपशब्द, वृत्ति-भंग, वर्णस्वर-लोपादि, ''स्व कें दीर्घ करब, दीर्घ कें'' स्व करबे हमरा लोकनिक लेल वैध अछि। किएक वैध अछि? दू कारणें, पहिल तँ जे जन-साधारण मे शामिल हेबाक अछि, दोसर वज्रयानी तांत्रिक उपासनाक कारण जाहि मे ब्राह्मणशास्त्रीय वर्जनाक कोनो मूल्य नहि होइत अछि।

हमरा लोकनि अवगत छी जे विद्यापतिक गीत बंगाल, आसाम आदि धरि कोना पहुँचल। ओहि ठामक जे शिक्षार्थी उच्च अध्ययनक लेल मिथिला आबथि से एहि हृदयरंजक पद सब कें नोट क' क' अपना-अपना प्रान्त ल' जाथि। एहि बातक सहज जिज्ञासा होइत अदि जे नालंदा आ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक स्नातक लोकनि जखन लोक-सम्पर्क लेल मिथिला अबैत हेता तँ की ओहो लोकनि ई काज नहि करैत हेता? दोसर जिज्ञासा ई भ' सकैत अछि जे बख्तियार खिलजी जखन विश्वविद्यालयक पुस्तकालय मे आगि लगौलक तँ किम्वदन्ती अछि जे छव मास धरि ओ ग्रन्थ सब जरैत रहल छल, ततेक ओकर संख्या छल। कोन ग्रन्थ छल ओ सब? की ओहि मे लोक-अध्ययन, लोक-संग्रहक पुस्तक सब सेहो शामिल नहि छल? एहि विषयक गंभीर अध्येता राहुल सांकृत्यायन 'हिन्दी काव्य-धारा'क अवतरणिका मे लिखलनि अछि—'अपसोच अछि जे हुनका लोकनिक कविताक बहुत कम अंश हमरा सब लग बचल रहि सकल। हुनका सभक सैकड़ो छोट-छोट धार्मिक पुस्तक एगारहम-बारहम शताब्दी मे कयल गेल तिब्बती अनुवादक रूप मे आइयो मौजूद अछि, मुदा ओहि सँ कतहु बहुत बेसी संख्या एहन पुस्तक

सभक हेतैक जे शुद्ध सांसारिक दृष्टि सँ लिखल गेल छल, अतएव भारत सँ बाहर नहि ल' जा गेल सकल आ बौद्धधर्मक संगहि एत्तहि नष्ट भ' गेल।'[40]

एहि स्थिति मे, कहल इहो जेबाक चाही जे विद्यापति जेना बंगाल आ आसाम मे पहुँचला, हुनका सँ पहिने सिद्ध लोकनि ई परंपरा बना चुकल रहथि। अपना युगक भावापेक्षाक हिसाबें बेगरताक कविता हुनका लोकनि कें सिद्ध साहित्य सँ भेटि जाइत रहनि। युग जेना-जेना बदलल, से ओम्हरो तहिना बदलल। परिवर्त्तित समयक भावापेक्षा विद्यापति मे हुनका लोकनि कें भेटलनि। विद्यापतिक बाद धरि ई परंपरा चलैत रहल। शंकरदेव (1449), चण्डीदास (1408)क समय। एम्हर हमरा लोकनि गोविन्ददास (1537-1612) कें देखैत छियनि। मिथिला मे मेधाक अकाल तकर बादे आबि क' भेल। तकर प्रमुखत: दू कारण। एक तँ एम्हरुका लोक युगक अनुरूप नहि चलि रहल छला। दोसर, संस्कृतक वर्चस्व मैथिली कें नेस्तनाबूद क' देलकैक।

हमरा लोकनि देखैत छी जे मिथिलाक एहि लोकरचना-संसार मे कवितोक अनेक रूप रहय, जाहि मे जँ मुक्तक रूप गीत छल तँ महाकाव्य रूप गाथा छल। लोकानुरंजक गद्य-पद्य रूप नाच छल, देखन मे छोटन लगे बला विदग्ध रूप फकड़ा आ वचन छल, अनेक-अनेक प्रकारक मैथिली मंत्र छल। एहन लगैत अछि, जन-साधारण धरि पहुँचबाक लेल सिद्ध लोकनि जनसाधारणक वृत्ति-प्रवृत्ति कें पकड़लनि आ ओकरा साहित्यरूप देलनि। हुनका सभक प्रेरणा शून्य सँ नहि टपकल छल आ ने ओहि युगक वस्तुक अप्राप्ति ओकर अनस्तित्वक प्रमाण थिक।

गीत हुनका लोकनिक प्रधान अवदानक रूप मे मैथिली मे विकसित भेल। दोहा आ चौपाइ आनदेशीय शौरसेनी वा अर्द्धमागधीक प्रभावक वस्तु छल, तें ओ मिथिला मे जड़ि नहि जमा सकल। आन कोनो काव्यरूप जें कि हमरा लोकनि लग उपलब्धे नहि अछि तें ओकर विकासक अनुमानो नहि कयल जा सकैत अछि। तखन, एक टा बात इहो होइत छैक जे कोनो महान रचना अपन रचयिता कें पाछू छोड़ैत लोकोक्तिक रूप मे, गाथा, गीत आ वचनक रूप मे जनताक स्मृति मे शामिल भ' जाइत अछि। तहिना ओकर विधि-विधान, कि ओकर मान्यता। एहि सब कथूक उचिते कालजयी होयब जरूरी थिक। एहना मे आइ जे हमरा लोकनि कें लोकपरंपरा मे बहुतो रास एहन वस्तु भेटैत अछि जकर कोनो स्पष्ट स्रोत नहि देखना जाइछ, ओहि महक बहुतो रास चीज एहि युगक रचनाशीलता सँ जा मिलैत अछि।[41]

कविता मे सामाजिक सरोकारक प्रश्न

हमरा लोकनि अवगत छी जे सिद्ध लोकनि मूलत: आध्यात्मिक साधक छलाह। अध्यात्मक स्वभावे एहन छैक जे ओ प्रयोक्ता कें अंत मे जा क' भने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड

लेल प्रेमपूर्ण बना दौक मुदा आरंभ मे ओकरा संसार सँ, समाज सँ काटि दैत छैक। सहज शून्यक अनुभूति कें गोंग लोकक गुड़ कहल गेल छैक, मने ओ अनुभव टा क' सकैए, व्यक्त नहि क' सकैए। किछु लोक जँ व्यक्तो करैत छथि तँ ओ हुनक अपन अनुभूतिक बात होइत अछि, जाहि मे सामाजिक सरोकारक सर्वथा अभाव पाओल जाइछ। आर तँ छोड़ू, आइयो काल्हुक जबाना मे जखन युवाकवि कें लगैत छनि जे कविता लिखब आबि गेल ओ निछच्छ अपन मोनक बात लिखैत चलि जाइत छथि, पूरा अहो रूपं अहो ध्वनिक एकान्तताक संग। समाज कतहु नहि रहैत अछि। अध्यात्म मे तँ वाजिबे।

एहना मे जँ उनटि क' हमरा लोकनि सिद्ध लोकनिक रचनाशीलता दिस ताकी तँ आश्चर्य लगैत अछि जे ओहि प्रकारक विद्रोही भाव राखियो क' गुह्यसाधना मार्गक पथिक भइयो क', समाजक एक अंश सँ निन्दित भइयो क' कोना ओ लोकनि अपन समाज-सम्बद्धता आ सामाजिक सरोकार बनौने राखि सकलाह।[42] ई विशुद्ध मैथिल स्वभाव, मैथिल संस्कृति थिक जकरा मैथिली कविताक प्रतिमान मे शामिल करबाक लेल हम सब सदा हुनका लोकनिक आभारी रहबनि। खास क' क' एहि स्थिति मे, जखन कि हुनका लोकनिक घोषित लक्ष्य 'महासुख' छलनि, जकर आधार 'व्यक्ति' छल, 'समाज' नहि । मुदा, मैथिल समाज व्यक्तिक 'व्यक्तित्व' सब सँ मिलि क' बनल समाज थिक। प्रसंगवश एतय हमरा समाजशास्त्री हेतुकर झाक एक स्थापना मोन पड़ैत अछि, जतय ओ मैथिल अस्मिताक दू पहचान मे सँ एक विद्या आ दोसर व्यक्तित्व कें चिह्नित करैत छथि।

क्यो कवि कविता किएक लिखैत अछि, एहि पर भारतीय काव्यशास्त्र मे बहुत विचार भेल छैक। मम्मट भट्टक ई कथन लगभग सर्वसम्मत मानल गेल छनि जाहि ठाम ओ पाँच टा वस्तु कें कविताक प्रयोजन बतबैत छथि—यश, धन, व्यवहार-शिक्षा, अकल्याण-निवारण, आ सद्य:परनिवृत्ति, अर्थात् एक टा एहन विशेष प्रकारक आनन्द जे साहित्य-लेखन आ पाठन सँ प्राप्त होइत छैक। विचारि क' देखी तँ एहि समस्त प्रयोजनक पाछू एक टा दोसर पक्ष अछि, जे 'अन्य' थिक, कवि सँ भिप 'पाठक' थिक। कविता सँ आर कथू सिद्ध हो ताहि सँ पहिने चाही जे दोसरा धरि पहुँचय। जे कविता नितान्त व्यक्तिगत प्रयोजन सँ लिखल जाइछ, जेना रोगमुक्ति लेल हनुमान जीक स्तुति अथवा स्वान्त:सुखाय लेल अपन अनुभूतिक प्रकाश, ओकरहु लेल कविक मोन मे ई सहज अपेक्षा रहैत छैक जे ई दोसरो धरि पहुँचय, ओकरो अकल्याण-निवारण होइक। कवि-हृदयक ई सहज चाहना होइछ। मुदा ई दोसर व्यक्ति, वा समाज कतय धरि ओकर कविता-विषय मे व्याप्ति पौतैक, ई निर्भर करैत छैक कविक व्यक्तित्व-निर्माण मे, सर्वाधिक तँ ओकर जीवन-मूल्य मे।

सन्ध्या बनाम सन्धा भाषा

ई सिद्ध लोकनि कतय सँ अपन जीवन-मूल्य ग्रहण करैत छलाह जाहि सँ हुनक काव्य-प्रेरणा सृजित होइन, तकर एक दृष्टान्त देखबाक चाही। हमरा लोकनि अवगत छी जे सिद्ध लोकनिक भाषा कें 'सन्ध्या भाषा' कहल गेल। से कहनिहार पहिल व्यक्ति स्वयं म.म. हरप्रसाद शास्त्री छलाह। यद्यपि कि बहुत शीघ्रे पंडित विधुशेखर शास्त्री एहि भ्रमक निवारण क' देलनि जे असल नाम 'सन्धा भाषा' छैक ने कि 'सन्ध्या भाषा'। मुदा, इतिहास मे कतोक बेर एहन होइत छैक जे हजार प्रमाणक बादो सत्यक मुँह सँ भाप नहि निकलि पबैत छैक आ झूठ सहस्रशीर्षा बनि क' चहुँदिस चतरल चलि जाइत छैक। म.म. हरप्रसाद शास्त्री तँ एहि दुआरे 'सन्ध्या' कहलनि जे नेपाल दरबार सँ जे पाण्डुलिपि हुनका भेटल रहनि ताहि मे 'सन्ध्या' लिखल छलैक। एहि अभिधानक ओ बहुत मनमोहक अर्थ कयलनि—'आलो-आन्धारी भाषा।' एहन भाषा जाहि मे आधा आलोक हुअय, आधा अन्हार। धुपछाँही। डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य एकर अंग्रेजी अनुवाद केलनि—'लैंग्वेज ऑफ ट्विलाइट।' एकर तात्पर्य कयल गेल एक एहन भाषा सँ जकर बाह्य अर्थ किछु आर होइक, आन्तरिक अर्थ किछु आर। 'मैथिली साहित्यक आदिकाल' मे पंडित राजेश्वर झा जनतब दैत छथि जे एहि भाषाक नाम 'सन्ध्याभाषा' किएक छल! 'सिद्ध लोकनि कें भ्रम छलनि जे कतहु हुनकर आचार-विरोधी कार्यकलाप जनमध्य घृणाक भावना ने उत्पप करैन्ह, तदर्थ ओ लोकनि एहन भाषाक निर्माण केलनि जकर अर्थ वामाचार एवं योगाचार दुहू मे यथार्थरूप मे लागि जाइत छल।'[43] ध्यान देबाक बात थिक जे पहिने तँ राजेश्वर बाबू सिद्ध लोकनिक चर्या कें आचार-विरोधी कहलनि, जकरा आइ-काल्हि 'असामाजिक तत्त्व' कहल जाइत छैक, आ भारतीय दंड संहिता मे जे अपराध (क्राइम) रूप मे परिभाषित छैक। तखन, हुनका लोकनिक काव्य कें छल-कपट सँ भरल आ से स्वाभाविकतया, घोषित कयलनि जे देखबा मे जेहन लगैत छल, वास्तविकता ओकर ठीक विपरीत होइत छलैक, जेना आइ-काल्हि हम सब ठक्क सब कें वा राजनेता सब कें व्यवहार मे देखैत छी। मिथिलाक लोक परंपरा भने सिद्ध लोकनि कें 'ओम् नमः सिद्धम्' अथवा 'आंजी सिद्धिरस्तु' के रूप मे अपन स्मृति मे बसा लेने होअय, मैथिलीक आचार्य लोकनिक दृष्टि मे ओ लोकनि सिद्ध हेबाक तँ कोन कथा जे स्वस्थ-सहज मनुष्यो धरि नहि छलाह, भ्रम मे जिबैत छलाह। ई घृणा असल मे ब्राह्मणधर्मक हृदय मे बौद्धधर्मक प्रति सदा सँ मौजूद घृणा थिक।

मजेदार बात ई छैक जे एहि प्रकारक समस्त आकलन एहि आधारशिला पर टिकल रहैक जे पाण्डुलिपि मे 'सन्ध्या' लिखल छल। धर्मवीर भारती अपन शोध

मे लिखलनि अछि जे नेपालक जाहि दरबार लाइब्रेरी सँ ई पाण्डुलिपि प्राप्त भेल, ओ पूर्णतः मैथिल पंडित लोकनिक प्रभाव-क्षेत्र मे छल। हुनक कहब छनि जे ई लिपिकार लोकनि 'सन्धा' कें अशुद्ध मानि एकर शुद्धीकरण 'सन्ध्या' क' देलनि। भारती जीक कथनक आधार विधुशेखर शास्त्रीक एक शोधपत्र छियनि। विधुशेखर शास्त्रीक ई लेख इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरलीक चारिम भाग मे 1928 मे छपल, तकरा हमरो देखबाक अवसर भेटल अछि। ओतय अनेक प्रमाणपुरस्सर शास्त्री जी प्रमाणित केलनि अछि जे वास्तविक शब्द सन्धा थिक जकर अर्थ होइछ—अभिसन्धि वा अभिप्राययुक्त भाषा। आगाँक अध्येता लोकनि पौलनि जे चीनी आ तिब्बती भाषा मे सेहो एकर जे पर्याय प्रचलित अछि सेहो 'सन्धा' थिक। हेवज्रतंत्र मे एहि भाषा कें 'सन्धा' कहल गेलैक अछि। सहरपा अपन भाषा कें 'गहण गुणिर भास' कहलनि। विरुपाक तँ एक पद मे एहि भाषाक अर्थ मे 'अभिसंधि' शब्दक प्रयोग धरि भेलैक अछि।[44]

हम सिद्ध लोकनिक जीवन-मूल्य आ काव्य-प्रेरणाक बात करैत रही। हमरा लोकनि अवगत छी जे ओ लोकनि रूपक आ उपमा मे बात रखबाक अभ्यासी छलाह। डॉ. जयधारी सिंह हुनका लोकनिक एहि विशिष्ट आग्रह कें एक पैघ अवदान मानलनि अछि आ एकरा ओ 'प्रतीक-योजना द्वारा गूढ़ विषयक रुचिरतर अभिव्यक्ति' कहैत छथि। की छल ई. महायान मे ई एक पुरान चीज छल, जकरा बारे मे प्रचलित छल जे स्वयं भगवान बुद्ध एहि भाषा, एहि शैली मे लिखबाक आदेश देने छलाह। उद्देश्य छल जे बौद्ध सम्प्रदाय मे अदीक्षितो लोक, जन साधारण एहि सँ बौद्ध अभिप्राय सँ परिचित भ' सकता आ एहि तरहें बोधिसत्वयान मे दीक्षित भ' सकता। हिनका लोकनिक मान्यता छल जे पृथ्वी परक जाबन्तो मनुक्ख एक टा संभावित बुद्ध थिका। एहि तरहें अत्यन्त तुच्छ जनोक लेल एक उदात्त आशावाद ओहिठाम पाओल जाइत छलैक। भाषाक प्रश्न कें दृष्टान्त सँ पकड़ल जा सकैत छैक। सिद्ध लोकनि नायक-नायिकाक कल्पना हरिण-हरिणीक रूप मे केलनि। किएक? हरिण-हरिणीक स्वभाव सँ आपामर मनुक्ख परिचित छल जे ओ संगीतलोभी होइत अछि, संगीत मे आसक्त क' क' बड़े आराम सँ ओकर शिकार कएल जा सकैत अछि। एकर आरोपण ओ लोकनि नायक-नायिका मे केलनि, कारण विषय-वासनाक प्रति ओकरो हृदय तेहने लोभी होइत छैक। तहिना, नैरात्मा कें ओ लोकनि शबरी कहलनि। शबरी शबरजातिक कन्या भेलि, जे लोकनि उच्च पर्वत-शिखर पर वास करै जाइत छथि। नैरात्माक वास सेहो शिखरे पर कल्पना कएल गेल अछि, तें।

'सद्धर्मपुण्डरीक' (महायानक एक महत्त्वपूर्ण मानक ग्रन्थ) मे कैक स्थल पर 'सन्धाभाषा'क चर्चा भेल अछि। एहि प्रतीक-योजना, जकरा ओ लोकनि 'औपम्य'

कहैत छथि, के एते बेसी महत्त्व देल गेल जे 'सद्धधर्मपुण्डरीक'क तृतीय परिवर्त्त (अध्याय) 'औपम्य परिवर्त' कहल गेल। एतय तथागत सँ ओ लोकनि प्रार्थना करैत छथि—'हे महावीर, हम सब महर्षि लोकनि द्वारा प्रयुक्त एहि सन्धाभाषा कें आदरपूर्वक ग्रहण करैत छी, हमहूँ सब लोक मे अनुत्तर बुद्ध बनी, एहन बुद्ध बोधिसत्व जे जन-जन कें सन्धाभाषा मे अनुत्तर बोधिक उपदेश दैत छथि।'[45]

देखबा मे अति साधारण लगैत एहि पद सभक मर्म कतेक गहन छैक, तकर अनुमान हमरा लोकनि पाबि सकैत छी।

परिदृश्य आ दैनन्दिन

डॉ रणजीत साहा अपन पुस्तक 'सहज सिद्ध साधन-विमर्श' मे लिखलनि अछि—'चर्यागीति एवं दोहाकोशक सामग्री सब अपन मूल रूप मे आदिम, सहज एवं लोकजीवन सँ सम्बन्धित अछि। एहि मे नगर सँ बाहर बसनिहार जनजाति, मेहनतकश, श्रमिक मजूर लोकनिक अकृत्रिम ध्वनि आ छवि भरल अछि। ई लोकनि खेती करै छथि, नाह खेबैत छथि, रुइया धुननिहार, दारू बनेनिहार-बेचनिहार, पशुपालक, शिकारी, औजार सँ ल' क' डाला-चंगेरी बनेनिहार लोकनिक जीवन-चित्र अछि। एहि ठाम जे स्त्री लोकनि आयल छथि सेहो लोकनि अपन पतिक काज मे सब तरहें मदति केनिहारि, आर्थिक सँ ल' क' भावनात्मक धरि, संग पुरनिहारि स्त्री लोकनि छथि। एहि गरीब, अभावग्रस्त आ तंगहाल लोक सभक जीविका परनिर्भर छैक।'[46]

ओहि सामंती युग मे एहन-एहन परनिर्भर आमजनक जीवन एहि कविता मे अयलैक अछि! तें कहल जाइछ जे कविता जँ अस्सल हो तँ ओ हाशियाक जीवन के पक्ष मे रहैत अछि आ प्रतिरोध रचैत अछि भने ओहि प्रतिरोधक गन्तव्य अपन युगक सीमाक भीतर सीमिते किएक ने हो।

हजार वर्ष पुरान मैथिली कविता-परंपरा कोना अपन आरम्भ केलक, तकर एक-एक चित्र एहि ठाम देखल जा सकैत अछि। चाही तँ कहि सकैत छिऐक जे ई सब ओ आदर्श थिक जकरा ल' क' मैथिली कविता अपन यात्र शुरू कयने छल। चाही तँ एहि मानदंडक आधार पर विजातीय आ प्रतिगामी कविता-तत्त्व, जे बादक युग मे एहि परम्परा मे आबि घुसियायल, तकर पहचान क' सकै छी। आश्चर्य नहि जे आधुनिक युगक आचार्यप्रवर लोकनि जाहि कविता कें प्रतिष्ठापित करबाक लेल हलकान रहला, से समुच्चा एहि निकष पर विजातीय प्रमाणित भ' जाय।

मिथिला नदीमातृक देस थिक। ठाम-ठाम नदी-नाला छैक। आवागमनक क्रम मे धार-कोन कें पार कयने बिना बाट नहि। अनेक प्रतीक रचि क' ई सब वस्तु

एहि कविता सब मे अयलैक अछि। नाह बनायब आ नाह चलायब—ई दू टा अलग-अलग पेशा छल। ताहि मे लागल लोकक जीवने केवल नहि, काज मे आबयबला उपकरण तक के विवरण एतय ठाम-ठाम आयल अछि। हाल गुण, करुआरि, पुलिन्द्र, खोल, चक्र, खुट्टी, काछि, सेउंति, टांगी, पाल—सब कथू आयल अछि। उपयोग भने प्रतीकक रूप मे भेल हो, आयल अछि वास्तविक जनजीवन सँ, आ से अपन ठीक-ठीक सन्दर्भक संग। दूर-दूर के जलमार्गीय यात्र मे जलदस्युक भय कोना रहैत छल, ओ कोना लूटपाट करै छल, तकरो उल्लेख अछि। चाटिलपाक एक पद मे नाह बनेबाक सरंजामक उल्लेख अछि जे कोना टांगी सँ एक टा उपयुक्त गाछ कटलनि आ तख्ता चिरबा क' मजगूत नाह बनौलनि जाहि सँ तितीर्षु लोकनि धार पार क' सकथि—'जइ तुम्हे लोअ हे होइब पारगामी/ पुच्छतु चाटिल अनुत्तरसामी।'

नदीमातृक देस थिक तँ स्वाभाविके जे अधिकांश भूमि वन सँ आच्छादित छल। जतय आइ दरभंगा शहर बसल अछि, ततय तहिया केहन दुर्गम वन छल, तकर खिस्सा तुगलककालीन किम्बदन्ती सब मे आयल अछि। वन अछि तँ वनवासी लोक आ जीवजन्तु सेहो अछि। वन मे सिंह, हाथी धरि हेबाक चर्चा अछि। भूसुकपाक एक पद मे शिकारीक डर सँ पड़ाइत हरिणक चित्र आयल अछि। भयक अधिकता तते छैक जे गति मे भागैत हरिण धरती पर अपन पयरक चेन्ह धरि नहि छोड़ैत अछि। भूसुकपाक कविता छनि—'अपणा मांसे हरिणा बैरी। खनह न छाड़अ भुसुक अहेरी।' कि हरिण किए बैरी? केवल एहि दुआरे जे ओकर मांस स्वादिष्ट होइत छैक। ढेण्ढनपाक एक पद मे सिंह आ सियारक युद्धक विवरण छैक। हाथीक बिम्ब मुदा सिद्ध लोकनि कें सर्वाधिक प्रिय। सहरपा अपन एक दोहा मे हाथीक स्वच्छन्द स्वभावक वर्णन केलनि अछि। ओ निर्भ्रान्त, निर्द्वन्द्व वन-भ्रमण करैत अछि आ मूल रसक लोभी ओ कमलवन मे ताहि तरहें ढुकैत अछि जेना निरभ्र आकाश मे मेघक टुकड़ा।[47] वन सँ हाथी पकड़ि क' पोसुआ बनेबाक सेहो वर्णन भेल अछि मुदा पक्ष हाथीक लेल गेल अछि। स्वच्छन्दता मे बाधा भेला पर हाथी कोना गामक गाम कें उजाड़ि दैत छैक, तकरो चित्र आयल अछि। महीधरपाक एक पद मे बताह हाथीक वर्णन अछि जतय समस्त बन्धन-विकल्प कें तोड़ि क' गगन दिस गमन करबाक दृश्य रचल गेल अछि। ओहि ठाम 'बताह' अर्थक लेल 'मातल' शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि। ई शब्द एखनहु हम सब बजैत छी।

सिद्ध-साहित्य मे मिथिलाक दैनन्दिन जीवन अनेक आयाम ल' क' प्रकट भेल अछि। माछ-भातक प्रेमी लोकनिक ई इलाका 'हांडी' मे 'भात' रखैत अछि[48] आ तरह-तरहें माछक शिकार करैत अछि। एक ठाम बेंगक वर्णन सेहो भेल अछि। परिवारक बढ़ब कें बेंग जकाँ बढ़ब कहल गेल अछि। हरिणक शिकार जँ क्यो जन

करय, तँ ओकर मांस अपेक्षित (मित्र) लोकनिक ओहिठाम उपहार मे पठाओल जाइक। धान कटबाक मास सब सँ उत्तम मास होइत छल। एहि मास मे शबर-शबरी कोना उल्लसित अछि तकर वर्णन भेल अछि।[49] मूस धानक फसिल कें कोना बेरबाद करैत छैक तकर चित्र आयल अछि। गाय आ बरद मिथिलाक सब सँ अपेक्षित पशु छल। तकर अनेक ठाम वर्णन भेल अछि। बांझ गाय के कोना उपेक्षा होइत छलैक, एहू पाखंडक चित्र आयल अछि। सहरपाक एक पद मे अछि जे गोशाला मे दुष्ट बरद सब कें राखल जाय, ताहि सँ नीक थिक जे गोशाला सुप रहय। गोशाला अर्थक लेल ओहि ठाम 'गोहाली' शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि।[50] सियार एक सुपरिचित पशु छल जकर कानब अपशकुन मानल जाइत छल। सहरपाक एक पद मे शवयात्रक समय सियारक कानबाक वर्णन भेल अछि। शव कें आइये जकाँ बांसक चचरी पर श्मशान ल' गेल जाइत छल। शवयात्रक अग्निक्रिया आ दसो दिशा कें पिण्ड समर्पित करबाक सेहो वर्णन भेल अछि।

तहिया जे मनोरंजनक साधन सब समाज मे प्रचलित रहय, ठाम-ठाम तकरो वर्णन भेल अछि। चौपड़ खेल सर्वाधिक प्रचलित छल, से भान होइत अछि। कान्हपाक एक पद मे आयल अछि जे राजा, हाथी आ घोड़ा कें कोना-कोना काटल जाइछ। राजा कें ओहि ठाम 'ठाकुर', हाथी कें 'गजवर' आ घोड़ा कें 'बड़िया' कहल गेल अछि। बलशाली वा प्रभुत्वशाली हेबाक अर्थ मे एखनो बड़िया शब्द मिथिला मे प्रचलित अछि। कान्हपा ओहि ठाम कहैत छथि जे एहि समस्त महाबली लोकनि, जे कि भव-बलक उपादान सब थिका, कें पछाड़ैत, करुणाक पीढ़ा पर बैसल ओ (कवि) परिनिवृत्ति कें जीति लैत छथि। सब सँ रोचक वर्णन अछि मधुशाला के। एकरा लेल कलाली शब्द प्रयोग भेल अछि, जे कि एखनहु प्रचलित अछि। एकर नायिका शुण्डिनी थिकी। एहन प्रतीत होइत अछि जे मद्य बनेबा आ बेचबाक काज ओहि दिन मे सूड़ी लोकनि करैत छला। विरूपाक पद मे आयल अछि जे शुण्डिनीक घरक बाहर विशेष चिह्न (मानू साइनबोर्ड) बनल छैक जाहि सँ स्पष्ट होअय जे ई कलाली थिक। ओतय चौसठ घड़ी मद्य बनाओल आ बेचल जाइत छैक। गंहिंकी सब निसां मे मत्त जहाँ-तहाँ घोलटल अछि। पियांक सब तेना उच्च स्वर मे ढकरैत अछि जे ओहि कोलाहल मे किछुओ ठीक-ठीक सुनाइ नहि पड़ैत छैक। विरूपा अचरज करैत छथि जे ई शुण्डिनी कोना दुइ घर कें (तात्पर्य छैक बहुतो घर कें) जोड़ैत छैक।[51] एहि ठाम बच्चनक 'मधुशाला'क ई पाँती अवश्ये मोन पड़ि जाइछ जे 'बैर कराते मंदिर-मस्जिद/ मेल कराती मधुशाला।'

दैनिक जीवने टा मे नहि, धार्मिक चर्या मे सेहो ओहि युग मे मद्यक बहुत महत्त्व अछि। बादक युग मे, बौद्ध धर्मक प्रभाव मे जे मिथिला मे तांत्रिक चक्रपूजा

प्रचलित भेल, राहुल जी 'हिन्दी काव्यधारा'क भूमिका मे एहि प्रश्न पर विचार केलनि अछि जे वज्रयानी सभक एहि चक्रपूजाक प्रभाव मे मिथिलाक कि बंगालोक ब्राह्मण लोकनि किएक अयलाह! वाममार्ग मे ब्राह्मण लोकनि सेहो बौद्ध सभक कान्ह सँ कान्ह मिला किए ठाढ़ छलाह—'एतय यौन-स्वातंत्र्य छल मुदा ब्राह्मण कें तकर जरूरते की छलनि? ओ एकपत्नीव्रती नहि होइत छला, बरु विभवक मोताबिक जतेक चाहथि विवाह क' सकैत छलाहे। पसिपक दासी रखबाक सेहो कोनो सीमा निर्धारित नहि छलनि। बौद्ध लोकनि पर तँ मानल जे युग-युग सँ ब्रह्मचर्यक फन्दा लटकल छल, तकरा मे ढील आनक लेल एकर जरूरत छल। मुदा ब्राह्मण लोकनि कें? मीन-मांस हुनका सभक लेल ओहुना वर्जित छलनि नहि आ मुद्रा, हाथक अंगुरी सब सँ अलग-अलग चिह्न बनायब—एतबी टा बातक लेल ओ वाम-मार्ग दिस अबितथि किएक? अन्तत: राहुल जी एहि निष्कर्ष पर पहुँचला अछि जे 'मद्य-पानक विरुद्ध जे प्रतिबंध परवर्ती स्मृतिकार लोकनि कठोरतापूर्वक लगा देने रहथि, ओही सँ मुक्तिक लेल ओ लोकनि चक्र-पूजाक आश्रय लेलनि।'[52]

चौंसठ कला मे भने काव्यकलाक सेहो गणना कयल गेल हो, मुदा मिथिला मे, हमरा लोकनि यैह देखैत छी जे सब दिन एकरा रजनी-सजनी कहि क' न्याय वा मीमांसाक सामने तुच्छे मानल गेल। दोसर दिस, महायानक आधारग्रन्थ सद्धर्मपुण्डरीक मे स्थापत्य, मूर्त्ति, कौशल आदिक संग-संग कविता कें सेहो बोधि-लाभ प्राप्त करबाक एक साधन मानल गेल अछि। वज्रयानी लोकनिक भगवती तारा अष्टसिद्धिक अतिरिक्त कविता, मेधा, वक्तृता आदिक सिद्धि देब' वाली देवी थिकी। जांगुली ताराक साधना तँ काव्य आ शास्त्रज्ञानेक लेल विहित छल। प्रमुख विशेषता ई जे ओतय कविता 'लोक' धरि पहुँचबाक प्रमुख साधन छल। गाहड़वाड़, सेन, कर्णाट आदि वंशक सामन्त लोकनि ब्राह्मणधर्मक अनुयायी आ ब्राह्मणधर्मे टा कें बढ़ावा दैत छला, तें हुनका सभक लेल पंडित, पुरोहित, पंडा आदिक मुख्यता सर्वोपरि छल। ओतय लोक वा जनता सर्वथा तुच्छ आ अगण्य छल, पाल लोकनिक सर्वथा विपरीत हिनका लोकनिक बाट छलनि। एहना स्थिति मे तँ स्वाभाविके जे जखन लोकक कोनो महत्व नहि तँ लोकभाषाक कोन महत्व भ' सकैत छल?

पालकाल के भारतीय इतिहास मे अंधकार युग तँ प्राय: एहि दुआरे कहल जाइत छैक जे बख्तियार खिलजी क आक्रमण सँ विक्रमशिलाक संगहि ओ सब टा स्रोत नष्ट क' देल गेल जे ओहि युग पर प्रकाश दीतय यद्यपि कि एखनो धरि जहाँ-तहाँ सँ प्राप्त मूर्त्ति आदि तकर गवाही दैते अछि। मुदा पुछबाक बात थिक जे कर्णाटकाल कें हमरा लोकनि स्वर्णयुग किएक मानैत छी? रमानाथ झा लिखने छथि, 'मैथिल तत्वक परिचायक एखनहु जे किछु बचल अछि से बस एही युगक

सम्पादित थिक, एकरे देल थिक। हमरा लोकनिक वर्तमान सांस्कृतिक जीवनक सूत्रपात एही युग मे भेल अछि, हमरा लोकनिक जातीय जीवनक नवीन परम्परा एतहि सँ प्रारम्भ होइत अछि, वस्तुत: वर्तमान मिथिलाक इतिहास एही युग सँ प्रारम्भ होइत अछि।'[53] एतय जे 'हमरा लोकनिक संस्कृति' शब्दक प्रयोग रमानाथ बाबू केलनि अछि ध्यान रखबाक बात थिक जे एहि मे देशी भाषा, मातृभाषा मैथिली नहि अबैत छैक। तखन? केवल ब्राह्मणधर्म। अंतिम कर्णाट शासकक काल मे लिखल वर्णरत्नाकर जे प्राप्त होइत अछि, ओ मात्र 'भाग्य सँ' प्राप्त होइत अछि। कहल जाइत अछि जे मुसलमानी आक्रमण सँ आर्त भ' क' जखन बौद्ध आचार्य लोकनिक अंतिम दल शरण माँगय कर्णाट राजाक दरबार मे हाजिर भेल रहथि तँ राजा साफे नासकार गेल रहथि। कहि नहि, ओ अंतिम दल भागि क' नेपाल वा तिब्बत पहुँचि सकल कि बाटे मे आक्रान्ता लोकनिक शिकार भेल! मुदा, हमरा लोकनि देखैत छी, राहुल सांस्कृत्यायन तँ एकर पूरे विवरण देलनि अछि जे आइ जे नेपाल वा तिब्बत मे बौद्ध धर्मक आचार पूजा आ साधना-पद्धति छैक, से ठीक-ठीक वैह छैक जे एहि सिद्ध लोकनिक छलनि। मिथिला मे प्रचलित छल।

एहि गीत सब कें चर्यागीत कहल जाइत छैक तकरो कारण यैह जे साधनाचर्या-काल मे एहि गीत सभक गायन होइत छलैक।

सिद्ध लोकनिक काव्य कें स्वरूपक दृष्टि सँ दू वर्ग मे विभाजित कयल गेल अछि—गीति तथा मुक्तक। एकर ई सब रूप अछि—चर्यापद, वज्रगीति, मुक्तक, दोहा तथा अर्द्धाली।

चर्यापद भावप्रधान आ दोहा नीतिप्रधान अछि। रामचन्द्र शुक्ल अपन इतिहास मे आदिकालीन साहित्यक चारि गोट प्रमुख प्रवृत्ति बतौने छथि—धर्म, नीति, शृंगार तथा वीरता। तात्पर्य जे अलग-अलग रचना अलग-अलग प्रवृत्ति कें ल' क' रचल गेल अछि, मुदा युगप्रवृत्ति यैह चारू छैक। भारतक आन-आन क्षेत्र जकाँ मिथिलोक साहित्यक आदिकालीन विकास मे हमरा लोकनि ई चीज देखि सकैत छी।

चर्यागीत भावप्रधान अछि आ लोकपरिचित बिम्ब सभक द्वारा एहि मे क्रान्तिकारी धार्मिकताक ताना-बाना रचल गेल अछि। लोक लेल लिखल जेबाक कारण एकर भाषा सेहो अधिकाधिक तत्कालबाध्य छैक। दोहा सभ बौद्ध-नीतिक आख्यान करैत अछि आ एकर रचना मे पारंपरिक अपभ्रंश भाषा-वितानक बेसी ख्याल राखल गेल अछि। तारनाथ लिखने छथि, एहि दोहा सभक नीतिगत प्रभाव एतेक निस्सन छल जे कतेको पैघ-पैघ राजा अपन समस्त प्रजा-सहित एकरे गायनक प्रभाव मे बौद्धधर्म मे दीक्षित भ' गेल छला।[54]

चर्यापदक गीत सब मे जे नायिका आयल छथि हमरा लोकनि देखैत छी जे

ओ मंद वर्ण, अधिकतर अस्पृश्य जाति सँ अबैत छथि। चांडाली, डोमनी, शुंडिनी, मातंगी। मुदा एक टा जे बात खास तौर पर ध्यान आकृष्ट करैत अछि से ई जे जेना आगू जा क' वैष्णव संत लोकनिक पद मे हमरा लोकनि परकीया प्रेमक महत्त्व देखैत छी, तकर एहि ठाम सर्वथा अभाव अछि। सिद्ध लोकनि स्वकीया प्रेमक पारखी छथि। ओ लोकनि बराबर नायिका कें गृहिणी, वधू आदि कहै छथि। कान्हपाक एक पद मे तँ व्यवस्थित रूप सँ बराती साजि क' परिणय-यात्रक वर्णन भेल अछि जतय पटह अछि, मादल अछि, पालकी आ दुन्दुभिनाद अछि। अपन एक दोहा मे ओ कहै छथि जे जेना नोन पानि मे जा क' अपना कें विलीन क' लैए, तहिना अपन गृहिणी कें चित्त मे धारण करू।

कान्हपाक एक पद मे डोम्बीक वर्णन अछि जे प्रतिदिन हुनका नाह सँ बिना मासूलक पार करबैत छनि। तकरा संग समागमक इच्छा वस्तुत: परकीया प्रेम नहि, स्वकीया बनेबाक दिस उठाओल डेग थिक।

स्मरण रखबाक चाही जे लोक-परंपरा मे जारकर्म निन्दित छल जखन कि ब्राह्मणपरंपरा मे ग्राह्य। जकरा संग मोन मिलय तकरा सँ बियाह क' क' घर बसाबी, यैह लोकायत मे प्रशस्त मानल जाइत छल आ चर्यापद मे सेहो तकरे आदर्श कहल गेल अछि।

तात्पर्य जे केवल ब्राह्मणेतर बहुजन द्वारा मैथिली-लेखनक आरंभ भेल, जेना कि रमानाथ झा कहने छथि, ततबे सत्य नहि अछि। इहो सत्य अछि जे एही लोकक जीवनदर्शन आ आदर्श एहि काव्यक आदर्श छियैक। यैह बात लोकगाथा मे सेहो देखबा मे अबैत अछि।

एक नायिका शुंडिनी अछि जे कलाली मे मदिरा बनबैत आ बेचैत अछि। कवि कहैत छथि, ओकर कलाली मे कैक टा द्वार छैक, ओहि मे सँ दशम वैरोचन द्वार सँ जे गाहक चिह्न देखा क' अबैत अछि तकरा ओ अपन मदिरा सँ संतुष्ट करैत अछि। गंगा-यमुनाक बीच नाह खेब' बाली मातंगी अछि जे ओहि समस्त यात्री कें बेराबेरी पार करा दैत अछि जे ओकरा नाह पर बैसैत अछि। शबरपाक शबरी संसार सँ दूर उच्च पर्वत-शिखर पर, मोरपंख सँ शृंगार कयने अबोध बालिका जकाँ निवास करैत अछि।

कुक्कुरीपाक एक पद मे वर्णित वधू जे दिन-देखार काज सँ भय खाइत अछि मुदा राति कें सासुक सुतलाक बाद अपन प्रियतम सँ मिलनक वास्ते कामरूप धरि जाइत अछि। एहि पदक भावार्थ डॉ. जयधारी सिंह लिखलनि अछि—'प्राणक आरोहक क्रम मे कुण्डलिनी-महामुद्रा कालपुरुष सँ त्रस्त रहथि, किन्तु सहस्रारस्थ भए पुन: शिव-संयोग मे उन्मुखी होथि।'[55]

कुक्कुरीपादक पाँती छनि—'दिवसइ बहुरी कागड़ें भाउ/ राति भइले कामरु जाअ।' रमानाथ झा एकर व्याख्या कयने छथि—'एखनहु मिथिला मे एक टा कहबी प्रसिद्ध अछि जे 'दिन कें धनी कागें डेराथि/ राति भेलें कामरु जाथि।' एके कहबी थिक जे कुक्कुरीपाद अपना गीत मे गौने छथि ओ जे आइ धरि मिथिला मे प्रचलित अछि। कहबीक ई आनुपूर्व्य सिद्ध करैत अछि जे कुक्कुरीपाद मिथिलाक विचारसरणि ओ वाग्धारा सँ परिचित छलाह। एहू दृष्टि सँ बौद्धगान ओ दोहाक सूक्ष्म अध्ययनक प्रयोजन अछि।'[56]

गुण्डरीपा अपन एक पद मे कहै छथि जे अपन योगिनीक संग त्रिनाड़ी कें दबा क' एक भरपूर आलिंगन चाहै छथि आ अपन विकलता व्यक्त करैत छथि जे ओकरा बिना हम एक्को छन नहि जीब। योगिनीक चुम्बन सँ ओ कमलरस पिबैत छथि आ ई योगिनी तेना क' हुनका ह्रदय पर अधिकार क' लेलक अछि जे ओकरा बिन एको छन जीब असंभव। एहि गीतक अन्त मे पाँती अबैत छैक—'नरअ नारी माझें उभिल चीरा।' (डा. जयधारी सिंह एकर व्याख्या केलनि अछि—हम आब नर-नारी दुनूक मध्य उद्धृत चीर छी, जाहि मे दुनू लीन भ' जाय, तेहन सत्व परमात्मरूप भ' गेल छी)।

चर्यापदक एक खास विशेषता अछि जे जतय कतहु प्रणय के कामना व्यक्त कयल गेल अछि, नायक दिस सँ कयल गेल अछि। एकर दार्शनिक तात्पर्य अछि जे नायक उपाय के प्रतीक थिक आ प्रज्ञोपाय प्रणय-लीला मे उपाये कें सक्रिय आ सचेष्ट मानल गेल अछि, जेना कि धर्मवीर भारती कहै छथि।56 लगभग यैह दार्शनिक स्थिति हमरा लोकनि हठयोगी लोकनिक पद मे सेहो पबैत छी।

कोनो कोनो ठाम चर्यापद मे दूतीक उल्लेख सेहो भेल अछि, मुदा ओकर अभिप्राय, विद्यापतिक ठीक उनटा दार्शनिक बेसी अछि। ओतय दूती गुरुक प्रतीक बनि क' आयल अछि।

शबरपाक शबरी मोरपंख धारण कयने रहैत अछि। गुंजामालाक ओकर गहना छैक। सघन तरु छायाक बीच ओ वज्र-कुंडल कें धारण कयने घुमैत रहैत अछि। एकर दार्शनिक अभिप्राय जे हो, अत्यन्त स्वाभाविक वर्णन छैक। ओकर जे शबर छैक, मिलनक अवसर पर कर्पूर देल ताम्बलू खयने अछि आ मिलनक वास्ते त्रिधातुक शबया बिछौलक अछि। आदिवासी जकाँ ओ धनुष-वाण धारण कयने अछि। एक कुटिया मे रहैत अछि। ओ नृत्य मे कुशल अछि। नौका सँ नदी पार क' क' ओ हाट मे सामान बेचय जाइत अछि। तन्त्री, माला, डाला, चंगेरा ई सब बिक्रीक सामान थिक। ओकरा संग समरस रतिक लेल ई महाशय कान्हपा सेहो

अपन तेहने वेश बनौलनि अछि—कापालिकक वीर वेश, हड्डीक बनल माला पहिरने आ आली-कालीक घंटा आ नूपुर आदि धारण कयने नगर मे भ्रमण क' रहल छथि।

सिद्धलोकनिक दार्शनिकता

सिद्ध लोकनि बौद्ध दर्शनक प्रतीत्यसमुत्पादक शून्यवादी सिद्धान्तक पक्षधर छलाह, जाहि मतक अनुसार वाह्य प्रकृति कें सत्य नहि मानल जाइछ। समस्त संसार कें ओ लोकनि चित्तगत मानैत छलाह। अपन साधना मे ओ लोकनि पंचमहाभूत कें चित्तक भीतरहि देखबाक अभ्यास करथि जे कि हुनका अनुसार, प्रज्ञोपायात्मक रूप ग्रहण करैत अछि।[58]

ई सब बात चर्यापद मे अनेको अनेक ठाम आयल अछि। धरती पर बह'वाली गंगा-यमुना मिथ्या थिक, असल गंगा-यमुना तँ दुनू नाड़ीक बीच बहैत अछि, जकरा मध्य सँ अवधूती पथ द्वारा सहजयान अर्थात सहज नौकाक प्रवाहन होइत अछि। समस्त तीर्थ कामरूप, उड्डीयान, जालंधर, काशी, प्रयाग शरीरक भीतर अछि। वास्तविक श्रीपर्वत तँ रीढ़क हड्डी कि मेरुदंड थिक, जकरा शिखर पर शबरी नैरात्मा निवास करैत अछि।

समस्त प्रकृति अन्तस्थ अछि। एक्के अग्नि अधोमुखी भेने वाडवाग्नि बनैत अछि तँ उर्ध्वमुखी भ' क' चंडाग्नि। सूर्य आ चन्द्र ललना आ रसना थिक। चन्द्रमा थिक बोधिचित्त। मेघ जे अछि सेहो करुणा मेघ थिक, नाह करुणा नौका थिक, जाहि मे स्वर्ण, शून्य स्वर्ण भरल अछि।

जगह-जगह कमल आयल अछि। कोनो 64 पंखुरीक अछि तँ कोनो 4 पंखुरीक। मुदा ओकर प्रस्फुटन पर बाह्य प्रकृतिक अनुशासन नहि चलैत अछि। कमल दिन मे फुलाइत अछि मुदा भूसुकपाक एक पद मे अर्द्धरात्रि मे कमल फुलायल अछि जकर पंखुरी पर 32 योगिनी लोकनि क्रीड़ा क' रहल छथि। बाह्य प्रकृतिक हिसाबें एहि वर्णन कें असंगत मानल जायत मुदा सहजयान मे यैह स्वाभाविक थिक, कारण प्रज्ञाज्ञानाभिषेकक समय अर्द्धरात्रि थिक।

भारतीय परंपरा मे वीर चारि तरहक मानल गेल अछि—दानवीर, धर्मवीर, युद्धवीर आ दयावीर। सिद्ध लोकनि एक पांचम तरहक वीरक परिकल्पना केलनि जे आगूक समस्त भक्ति साहित्य मे आ लोकायत परंपरा मे अपन अलग-अलग पारिभाषिक व्याख्याक संग मौजूद भेटत। ई थिका सुरतवीर। ई वीर मधुकररूप मे पप्रक मकरंद पीबा मे अपन उत्साह रखै छथि आ महाराग द्वारा विरागक दमन करैत छथि। कबीरलग 'सुरत' सुरति छनि। मैथिली मे सुरत आ सुरता शब्द ध्यानक

संदर्भ मे एखनहु लोकप्रचलित अछि।

सिद्धसाहित्य मे विस्मय भावक बहुत महत्त्व अछि। जाहि ठाम कार्य-कारण, विशेष्य-विशेषण अथवा वस्तु आ धर्मक एहन संबंध देखाओल जाय जेहन कि भौतिक जगत मे पाओल नहि जाइत छैक, एहन ठाम विस्मय भावक उदय होइत छैक। साधनाक गँहीर आ रहस्यात्मक स्थितिक विवरण लेल एहन रूपक वा प्रतीकक आश्रय ओ लोकनि लैत छलाह। कुक्करीपाक एक गीत मे मकरक इमली खेबाक वर्णन भेल अछि। तहिना एकठाम बताओल गेल अछि जे कच्छपीक दूध सँ पूरा बासन भरि गेल। तहिना ढेण्ढणपा अपन एक गीत मे देखौने छथि जे नगरक मध्य मे एक घर अवस्थित अछि, मुदा ओहि घरबेक क्यो पड़ोसिया नहि छैक। आजुक ग्लोबल इन्टरकान्टिनेन्टल महानगर-सभ्यता मे आइ भने एहि उक्तिक अर्थ हमरा-अहाँ कें आराम सँ लागि जाय, मुदा हजार बरख सँ ई प्रतीक विस्मयक उत्पादन करैत रहल अछि। तहिना, ओ कहैत छथि जे जे चोर अछि वैह कोतवाल थिक। एकरो अर्थ बुझबा मे भारतीय सभ्यता कें हजार बर्ष लागि गेलैक जखन कि आइ ई अर्थ उदाहरण द्वारा स्फुट अछि। तहिना ओ देखौने छथि जे बेंगक भय सँ सर्पराज भयभीत अछि, दूहल दूध फेर सँ स्तन मे जा क' भरि जाइत अछि, गाय बाँझ रहैत अछि मुदा बरद बिआइत अछि, गीदड़ सब वनराज सिंह संग तुमुल युद्ध लड़ि रहलाह अछि आदि-आदि। कहै छथि—'निते निते सिआला सिंह सम जूझअ। ढेण्ढ़णपाएर गीत विरले बूझअ।' जे ढेण्ढपाक गीतक अर्थ विरले क्यो जन बूझि सकैत अछि। आगू कबीरक पद सब मे एहन प्रयोग हमरा लोकनि बहुधा देखैत छी।

ई ध्यान रखबाक विषय थिक जे सिद्ध लोकनिक लक्ष्य निवृत्तिमूलक निर्वेद नहि छलनि। ओ लोकनि जीवन आ समाज संग रमल लोक छलाह आ महारागक साधना मे हुनक विश्वास रहनि, महासुखक उपलब्धि लेल सचेष्ट छलाह जे कि मूलतः करुणाजन्य, उपायस्वरूप, प्रवृत्तिमूलक छल। डा. धर्मवीर भारती अपन शोध मे अत्यन्त अध्यवसायपूर्वक एहि तथ्य सब कें स्पष्ट केलनि अछि। शाक्त लोकनिक मान्यताक विपरीत ओ लोकनि केवल चारि चक्र पर विश्वास करैत छलाह। ई थिक—मणिपूर अथवा निर्माणचक्र (नाभि), अनाहत अथवा धर्मचक्र (हृदय), सम्भोगचक्र (ग्रीवा) तथा उष्णीश कमल (सहस्रार)। पिंगला, इंगला (इड़ा) आ सुषुम्ना कें ओ लोकनि क्रमशः प्राण, अपान आ अवधूतीक संज्ञा देने छलाह। एही अर्थ मे ई शब्द सब चर्यागीत मे आयल अछि। हुनका लोकनिक अनुसार, प्रत्येक नारी प्रज्ञा आ प्रत्येक नर उपायक प्रतीक थिक आ साधनाक सफलता एही बात पर निर्भर छै जे प्रज्ञोपाय (नर-नारी-सम्मिलन) द्वारा ओ महासुख कें प्राप्त करय।

आन ठाम जकरा मोक्ष अथवा सिद्धि कहल गेलैक अछि, सैह हिनका लोकनिक ओइ ठाम महासुख छल।

ध्यान रखबाक बात इहो थिक जे सिद्ध लोकनिक ई समस्त अभिप्राय गहन अध्यात्मिक छल आ लौकिक वासना कें क्लेशक मूल मानैत ओ लोकनि एहि भवजाल, मोहजाल कें वज्रयान द्वारा तोड़बाक आग्रह करथि। साधारण जन एहि सब कथू कें मात्र लौकिक रति नहि बूझि लेथि ताहि लेल ओ लोकनि चमत्कारपूर्ण रूपक आ प्रतीक द्वारा चेतौनी दैत रहैत छलाह जे ई सब कथू गहन आ गुह्य रस थिक जकरा ने गुरु कहि सकैत अछि ने शिष्य सुनि सकैत अछि, एकरा तँ जे चिखने अछि सैह टा जानि सकैत अछि—'जेत ई बोलि तेत वि टाल/ गुरु बोब से सीसा काल/ भणइ कान्ह जिण रअण वि कइसा/ कालें बोब (बौक) संबोहिअ जइसा।'

नीतिवचन आदिकालीन साहित्यक एक प्रमुख गुण थिक जे कमोबेश समस्त तत्कालीन भारतीय साहित्यक प्रसंग मे देखल जाइत अछि। सिद्ध लोकनि सेहो प्रचुर मात्र मे नीतिवचनक रचना केलनि अछि। ई सब अधिकतर हुनका लोकनिक दोहा मे आयल अछि। मुदा हमरा लोकनि देखैत छी जे सामान्यतः नीतिवचन मे जतय लौकिक व्यवहार आ लौकिक सफलता प्राप्तिक हेतु संदेश सूचित रहैत छैक, एकर विपरीत सिद्ध लोकनिक नीति-वचन मे प्रमुख चिन्ता ई अछि जे कोना व्यक्ति एहि सांसारिक मोहजाल कें तोड़ि क' सहज प्रज्ञोपायात्मक पथ पर चलय आ नैरात्मज्ञानक उपलब्धि करय। हुनका लोकनिक लेल धर्म मुख्य छल, लौकिक व्यवहार गौण। तें हमरा लोकनि आरंभिक इतिहासकार सब मे ई असमंजस देखैत छी जे एहि तरहक धार्मिक रुझानक रचना कें साहित्य मानल जाय वा नहि। कहब आवश्यक नहि जे कविताक आधार ओकर मार्मिकता आ सहृदय-संवेद्यता होइत छैक ने कि विषय।[59] आधुनिक साहित्यक संग जे व्यापक विषय-विस्तार भेल अछि, से एहि बात कें आरो बेसी पुष्ट केलक अछि।

सिद्धसाहित्यक नीतिवचनक एक आर विशेषता दिस अध्येता लोकनिक ध्यान गेलनि अछि। आम तौर पर परंपरागत जे भारतीय नीतिग्रन्थ सब छैक जेना विदुरनीति, चाणक्यनीति आदि, ओ मूलतः सामाजिक व्यवहार पर केन्द्रित अछि। समाजक कोना नीकेना गठन हो, परिवार मे ककर की स्थान छैक, परिवार आ समाज कोना कर्त्तव्यनिष्ठ भ' क' लौकिक सफलता कें प्राप्त क' सकैत अछि, एहि संबंध मे स्वयं भौतिक प्रकृतिक की संदेश छैक, आदि-आदि एहि वचन सभक आधार बनल अछि। एकर विपरीत सिद्ध लोकनिक नीतिववचन पूर्णतः व्यक्तिपरक अछि आ ओ व्यक्ति कें साधना-पथ पर अग्रसर हेबाक प्रेरणा प्रदान करैत अछि।[60]

मैथिलीक आदिकालीन साहित्यक एक फूट विशेषता छैक जे परंपरागत नीतिवचन जाहि मे मूल उद्देश्य सामाजिक आ पारिवारिक भौतिक सफलता होइक, सेहो एहि ठाम प्राय: संगहि संग प्रचलन मे रहल। एकरा हमरा लोकनि डाकवचन मे देखि सकैत छिऐक। मैथिली लोकसाहित्यक आनो-आन प्रभेदक एहि दिशा मे उल्लेखनीय योगदान करैत देखल जाइत अछि। एहि पर अन्यत्र विस्तार सँ चर्चा भेल अछि। तखन, ई बात जरूर छै जे सिद्ध लोकनिक धार्मिक दोहा हुअय आ कि डाकवचनक व्यवहारपरक पद, जाहि ठाम केवल तथ्य आ सिद्धान्त आयल छैक, ओहि ठाम तद्वते काव्यत्वक हानि देखल जाइत अछि आ मार्मिकताक अभाव। चमत्कारपूर्ण मार्मिकता एहि दुनू कें समान रूप सँ काव्यत्वक उत्कर्ष प्रदान करैत छैक।

एक टा अभिनव प्रकारक शृंगारिक पदक अतिरिक्त सिद्ध लोकनिक कविता अपन जाहि दोसर विशेषता कें ल' क' प्रसिद्ध भेल ओ छल—किछु बनल-बनायल धारणा आ जीवन-पद्धतिक विरुद्ध आलोचनात्मक वा खंडनात्मक रुखि। सिद्धसाहित्यक खंडनात्मक रुखि के तीन दिशा छल। एक तँ समकालीन इतर सम्प्रदायक खंडन। दोसर, पुरातन महायानक तंत्रेतर शाखा सभक खंडन। तेसर, महासुख हासिल क' लेबाक बाद स्वयं अपनहि सम्प्रदायक अनुष्ठान-कर्मकाण्डक खंडन।

आदिसिद्ध लोकनि मे सँ एक सरहपा (आठम सदी) ब्राह्मणधर्मक कर्मकाण्डक प्रति नितान्त आलोचनात्मक छलाह। हुनकर ई पद प्रसिद्ध अछि—'ब्राह्मणहि ना जानन्ता भेद/ यों ही पढ़ेउ यइ चारू वेद/ माटि-पानि कुश लिए पढ़न्त/ घरही बैठहि अग्नि होमन्त/ कार्य विना हि हुतवह होमें/ आँखि डहाबै कड़ुए धुएँ।' एकर अतिरिक्तो घंटा बजाब'बला, मुंड मुड़ाब' बला, नग्न भ' क' अपन केश अपनहि उपाड़' बला मिथ्या साधक सभक ओ खूब खबरि लेलनि अछि आगाँ हमरा लोकनि देखैत छी जे सम्पूर्ण भक्तिकालीन साहित्य मे ई आलोचनात्मक रुखि विद्यमान रहल, यद्यपि कर्णाटकालीन स्वर्णयुगक लौह-प्राचीर मे घेरायल मिथिलाक ब्राह्मणसमाज एहि सँ बाँचल रहल, कहबाक तँ चाही जे बाँचले टा नहि रहल अपितु एकर सभक श्राद्धकर्म करैत रहल। मुदा, सिद्ध लुइपा लिखलनि—'जाहेर वाण चिह्न रुव ण जानी/ सो कइसे आगम वेद बखानी।' जाहि सहजरूप कें वर्ण, चिह्न आ रूपक अभावक कारण जानि पायब असंभव अछि, तकरा तथाकथित आगम कि वेद कोना व्याख्यात क' सकैत अछि? कान्हपाक एक पद छनि—'आगम वेअ पुराणे पंडित मान बहन्ति/ पक्क सिरिफल अलिअ जिम बाहेरिति भ्रमन्ति।' आगम-वेद-पुराण पर पंडित लोकनि तहिना अभिमान करै छथि, जेना पाकल श्रीफलक बाहर भ्रमर भ्रमण करैत रहैत हो।[61]

सन्दर्भ

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ हिन्दी साहित्य की भूमिका/ पृ. 7
2. राहुल सांकृत्यायन/ अवतरणिका/ हिन्दी काव्यधारा/ पृ. 18
3. डॉ. जयधारी सिंह/ बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ पृ. 55
4. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी/ आधुनिक आर्यभाषा और हिन्दी/ पृ. 105
5. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ हिन्दी साहित्य की भूमिका/ पृ. 2-3
6. डॉ. जयधारी सिंह/ बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ खंड-2, पृ. 38
7. डॉ. जयधारी सिंह/ उप./ खंड-2, पृ. 38
8. डॉ. जयधारी सिंह/ उप./ खंड-2, पृ. 39
9. डॉ. जयधारी सिंह/ उप./ खंड-2, पृ. 44
10. डॉ. जयधारी सिंह/ उप./ खंड-2, पृ. 54-55
11. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ हिन्दी साहित्य की भूमिका/ पृ. 11
12. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ उप./ पृ. 13
    आगू हजारी बाबू लिखलनि अछि—'इसका परिणाम यह हुआ है कि बंगाल में जो वाक्य पूर्वपक्ष का है वही महाराष्ट्र में उत्तरपक्ष का और उड़ीसा में जो वाक्य उत्तर पक्ष का है वही काशी में पूर्व का। फिर ऐसे विशेष वचन भी बहुत अधिक हैं जो किसी एक ही प्रदेश में माने जाते हैं! इन सब बातों से ही सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि उस युग का पांडित्य लोक-जीवन की ओर झुकने लगा था! बौद्ध पंडित भी लोक-मत की ओर नत हो चुके थे और ये स्मार्त पंडित भी उसी ओर झुके।' (पृ. 13-14)
13. अपन पुस्तक 'राहुल निबन्धावली' मे संकलित लेख 'चौरासी सिद्ध'क आरम्भ राहुल सांकृत्यायन एहि तरहें केलनि अछि—'चौरासी सिद्ध शब्द अब भी बिहार और युक्त प्रान्त में सर्वसाधारण में प्रसिद्ध है, तो भी चौरासी सिद्धों के नाम कोई भी नहीं बतला सकता। एक ओर ये ही चौरासी सिद्ध लोकभाषा के आदिकवि हैं, तो दूसरी ओर बौद्धधर्म में वज्रयान सम्प्रदाय की नींव डालकर भयंकर क्रान्ति करनेवाले भी ये ही हैं! भारत के साधकों में अनेक प्रसिद्ध आसनों और मुद्राओं का प्रचार करनेवाले भी ये ही थे! भैरवीचक्र तथा गुह्य समाजों को एक समय लोकप्रिय कर देने का भार भी इन्हीं को प्राप्त था। हजारों मंत्र-तंत्र और सैकड़ों वीभत्स देवी-देवताओं के स्रष्टा भी ये ही थे। इस प्रकार इतिहास, साहित्य, योग, वाममार्ग, मंत्र-शास्त्र, दर्शन आदि कई दृष्टियों से इन पर विचार किया जा सकता है। आजकल के बहुत से सम्प्रदाय यह जानकर हैरान होंगे कि उनके पारिभाषिक शब्द, उनकी रहस्य-क्रियाएं, भावनाएं जाकर इन्हीं सिद्धों में मिलती हैं।' (पृ. 90)
14. आचार्य रमानाथ झा लिखलनि अछि—'सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक रचना मे जे सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अंकित अछि तकरा हमरा लोकनि विशेष दृढ़ता सँ मिथिला-जनपदीय कहि सकैत छी। सरहपाद कहैत छथि—'सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़ियउ/ मण्ड पिवन्तें बिसरअ एमइउ।' मिथिला मे अक्षरारम्भ एखनहु एही चारि अक्षर सँ होइत अछि—सिद्धिरस्तु। केवल एक गोट यंत्र जकरा आंजी कहैत छिऐक पहिने लिखाए तखन ई चारू अक्षर लिखाओल जाइत अछि। बहुत अन्वेषण कएलहु उत्तर पता नहि लागल अछि जे मिथिला

छाड़ि अन्यत्र कतहु एखन धरि लोकक विश्वास छैक जे मांड़ पीला सँ मेधाशक्तिक ह्रास होइत अछि, लोक पढ़ल वस्तु बिसरि जाइत अछि। सरहपादक एहि दुनू पाँती मे जे सांस्कृतिक चित्र अंकित अछि से मिथिलाक थिक।' (रचनावली/ खंड-2/ पृ. 50)

15. राहुल निबन्धावली/ पृ. 92
16. राहुल सांकृत्यायन/ उप./ पृ. 91
17. राहुल सांकृत्यायन/ पुरातत्व निबन्धावली/ पृ. 167
18. राहुल सांकृत्यायन/ उप./ पृ. 174
19. राहुल सांकृत्यायन/ उप./ पृ. 177
20. राहुल सांकृत्यायनक पुस्तक 'पुरातत्व निबन्धावली' मे उद्धृत/ पृ. 176-77
21. राहुल सांकृत्यायन/ उप./ पृ. 177
22. राहुल सांकृत्यायन/ उप./ पृ. 230
23. डॉ. भीमनाथ झा/ परिचायिका/ पृ. 2
24. राजेश्वर झा/ अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास/ पृ. 36
    चर्यागीतक भाषा पर बंगाली लोकनिक जे दावेदारी छलनि तकर पटाक्षेप-सन बुझाइत ई वाक्य डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक लिखल छियनि—'भौगोलिक स्थिति, भाषावैज्ञानिक प्रमाण, परंपरा एवं इतिहास, ई समस्त सब टा एक संग एहि बात कें प्रमाणित करैत अछि जे आर्यभाषाक बंगाल मे प्रवेश बिहार प्रदेशक दिशा सँ मानू कोनो बाढ़िक प्रवाह जकां भेल छल।' (Origin and development of Bengali language) सँ 'बौद्ध सिद्धों के चर्यापद' (लेखक—आचार्य परशुराम चतुर्वेदी मे उद्धृत/ पृ. 111)
25. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 27
26. डॉ. जयधारी सिंह/ बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ पृ. 54
27. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 27
28. डॉ. जयकान्त मिश्र/ उप./ पृ. 27
29. मुसलमानी आक्रमणक बाद बौद्ध सिद्ध आ हुनक निकटवर्ती अनुयायी लोकनि नेपाल दिस भागि गेल छला आ ओतय सँ तिब्बत धरि पसरि गेलाह। नेपाल हेवनि धरि एक हिन्दू राष्ट्र रहल अछि। नेपाल मे मैथिलीक सेहो खूब चला-चलती रहलैक। मुदा जे संकीर्णता आ मजहबी कट्टरता हमरा लोकनि मिथिलाक ब्राह्मण लोकनि मे देखैत छिऐक, नेपालक संस्कृति मे प्राचीने काल सँ तकर अभाव रहलैक। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखलनि अछि—'यह लक्ष्य करने की बात है कि नेपाल के ब्राह्मण बौद्ध धर्म को शत्रु-दृष्टि से नहीं देखते। नेपाल महात्म्य के अनुसार, जो बुद्ध की पूजा करता है वह शिव की ही पूजा करता है। इसी प्रकार नेपाली बौद्धों का स्वयंभू पुराण पशुपतिनाथ की पूजा को बुद्ध की ही पूजा मानता है। बहुत सम्भव है कि काशी और मगध के प्रान्तों में भी अन्तिम दिनों में बौद्ध और पौराणिक धर्मों का पारस्परिक संबंध ऐसा ही रहा हो।' (भारतीय चिन्ता का स्वाभाविक विकास/ हिन्दी साहित्य की भूमिका/ पृ. 7)
    पारस्परिक संबंध क्रम मे हजारी बाबू मिथिलाक नाम नहि लेलनि मुदा मिथिला मे एकर प्रत्यक्ष प्रमाण हमरा लोकनिक आँखिक आगू ठाढ़ अछि। तारा, अपन अनेक नाम तथा वर्णक संग, बौद्ध धर्मक देवता थिकी मुदा मिथिला मे ने मात्र सैकड़ो वर्ष सँ ओ हिन्दू धर्मावलम्बी लोकनिक बीच प्रशस्त रूप सँ पूज्य छथि, अपितु अनेक ब्राह्मण वंशोक ओ कुलदेवी, इष्टदेवी स्वीकार कयल गेल छथि। समस्त खुराफात संकीर्ण पंडित लोकनिक कयल छनि जकर एक आधुनिक बौद्धिक प्रवक्ता डा. जयकान्त मिश्र आदि छथि।
30. डॉ. दिनेश कुमार झा/ मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास/ पृ. 46
31. डॉ. जयधारी सिंह/ बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ खण्ड 2/ पृ. 83
32. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 58
33. मायानन्द मिश्र/ उप./ पृ. 58
34. विस्तृत अध्ययनक लेल देखी—कलकत्ता संस्कृत सिरीज अन्तर्गत प्रकाशित 'डाकार्णव' (संपादक नगेन्द्र नारायण चौधरी)क सुविस्तृत भूमिका
35. विस्तृत अध्ययनक लेल देखी—तांत्रिक बौद्ध-साधना और साहित्य/ लेखक—नागेन्द्रनाथ उपाध्याय/ प्रका.-नागरी प्रचारिणी सभा/ पृ. 264-275
36. अपन शोधग्रन्थ 'बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त' मे पर्याप्त गंभीर पर्यालोचनक उपरान्त डॉ. जयधारी सिंह लिखने छथि—'समस्त भारतक जे कोनो अपभ्रंश-साहित्य प्राप्त अछि, ताहिमे परिनिष्ठित काव्यरूप मे सिद्धसाहित्य कें आदिकाव्य मानल जाएत।' (पृ. 58)
37. विस्तृत विवरण लेल देखी—बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ पृ. 58-70
38. राहुल सांकृत्यायन लिखने छथि—'सिद्धों में से भी सरहपा, तिलोपा, शान्तिपा जैसे कितने ही संस्कृत के बड़े-बड़े पंडित थे; हाँ, जब वे भाषा-कविता लिखने बैठते, तो अपने संस्कृत-भाषा के ज्ञान को भूल जाते थे। तभी वह इतनी सरल भाषा में लिखने में सफल हुए।' (अवतरणिका/ हिन्दी काव्यधारा/ पृ. 45-46)
39. डॉ. धर्मवीर भारती/ सिद्ध-साहित्य/ पृ. 297-98
40. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ अवतरणिका/ हिन्दी काव्यधारा/ पृ. 34
41. एहि ठाम राहुल सांकृत्यायनक लिखल ई वाक्य एकबेर फेर मोन पाड़बाक योग्य अछि जे 'आजकल के बहुत से सम्प्रदाय यह जानकर हैरान होंगे कि उनके पारिभाषिक शब्द, उनकी रहस्य-क्रियाएं, भावनाएं जाकर इन्हीं सिद्धों में मिलती है।'
    (राहुल निबन्धावली/ पृ. 90)
42. राहुल सांकृत्यायन लिखने छथि—'सिद्ध लोगों ने उस समय लोकभाषा में कविता शुरू की, जिस समय शताब्दियों से भारत के सभी धर्मवाले किसी-न-किसी मुर्दा भाषा द्वारा अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे, और इसी कारण उनके धर्म के जाननेवाले बहुत थोड़े हुआ करते थे। सिद्धों के ऐसा करने के कारण थे—वह धर्म, आचार, दर्शन आदि सभी विषयों में एक क्रांतिकारी विचार रखते थे! वह सभी अच्छी-बुरी रूढ़ियों को उखाड़ फेंकना चाहते थे, यद्यपि जहाँ तक मिथ्या विश्वास का संबंध था, उसमें वह कई गुनी वृद्धि करनेवाले थे। अपने वज्रयान की जनता पर विजय पाने के लिए उन्होंने भाषा की कविता का सहारा लिया। सिद्ध बनने के लिए भाषा का कवि होना, मानो एक आवश्यक बात थी। सिद्धों ने भाषा में कविता करके अपने विचारों को जनता के समझने लायक

बना दिया।' (पुरातत्व निबन्धावली/ पृ. 160)

43. राजेश्वर झा/ मैथिली साहित्यक आदिकाल/ पृ. 56
44. डॉ. धर्मवीर भारती/ सिद्ध-साहित्य/ पृ. 269, 290
45. उपरोक्त मे उद्धृत
46. रणजीत साहा/ सहज सिद्ध : साधन विमर्श/ खंड-1/ पृ. 230
47. सरहपाक दोहा छनि—

रसु परिभुंजन मूल रस, कमलवने पण मज्जइ।
बहु सन्तावे सहलें, चित्र गयंद न रज्जइ।।
आल अतरु उमलइ, हिण्डइ जग च्छछान्द।
गम्मागम्म न जाणइ, मत्तो चित्त गअन्द।।

(दोहा ?/ 135-136)

48. ढेण्ढणपाक पद मे आयल अछि—

टालत मोर घर नाहि पड़वेशी।
हाड़ीत भात नाहि निति आवेशी।।

हांड़ी मे भात अछिये नहि मुदा भोजनक आवेश (आग्रह) कयल जा रहल अछि। मुदा, डॉ. जयधारी सिंह एही पाँतीक विशिष्टार्थ एहि शब्द मे लिखने छथि—'उच्च नगर सहस्रार-मेरुशिखर हमर निवासस्थान, ओहि ठाम अद्वैत परमशिव रूप मे हम एकसरे छी, केओ पड़ोसी नहि अछि। अढ़िया मे भात नहि, अर्थात अपन शरीर मे ओझरेने परिपक्व, प्रबुद्ध चित्त नहि, चित्त चिति-तादात्म्य प्राप्त नहि क' सकय, तें योगीन्द्र कें नित्य शून्यरूपिणीक आवेश राखय पड़ैत छनि (अथवा चित्त नित्य विषयक आवेश मे डुबल रहैत अछि)। (बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ पृ. 161)

49. शबरपाक पाँती छनि—

कंगूरि पाकेला रे शबरा-शबरी मातेला।
अणुदिन शबरो किम्पि न चेबइ महासुहें भोला।।

'कंगूरि' शब्दक अर्थ डॉ. जयधारी सिंह फलविशेष केलनि अछि। डॉ. सुकुमार सेन अपन पुस्तक चर्यागीतिपदावली मे एकर अर्थ चिना केलनि अछि। वैह चिना, जकर लोककथा अछि जे एक टा चिनमा खेलियौ रे भैया। चिन अथवा चिना कें मिथिला मे कदप मानल जाइत छल, मुदा गरीब आ अकालग्रस्त लोकक ई धान छल जकर भात बनैत छल। डा. रणजीत साहा एकर अर्थ धानविशेष केलनि अछि, जाहि सँ शराब बनाओल जाइत छल। शबर-शबरी जे कंगूरि पकबाक मास मे मातल आ महासुख मे लीन छथि तकर तात्पर्य इहो संभव जे ओहि सँ बनल शराबक सेवन करैत छथि, जे शबर लोकनिक संस्कृति मे एक सामान्य बात थिक। भोजनक उपलब्धता एहि मास मे भरपूर रहैत छैक से सहज उह्य अछि।

50. सरहपाक पाँती छनि—

सरह भणन्ति वर सुण गोहाली कि मो दुठ बलन्दे।
एकेले जग नाशिअ रे बिहरहु सुच्छन्दे।।

अर्थ सवत: स्पष्ट अछि जे गोहाली बरु सुप रहय से नीक मुदा दुष्ट बरदक रहब नहि नीक। मुदा, जयधारी बाबू एकर विशिष्टार्थ लिखैत छथि—'की हमर पवित्र गोशाला (इन्द्रियशाला), शून्यक अधिष्ठान कायपीठ, बलद (बड़द वा मलिन चित्त, दुष्टक हेतु बल देनिहार चित्त) सँ दुष्ट बनि गेल? नहि। हम एकसरे विश्व (क बन्धन) कें नाश कए देब। रे चिन्मय चित्त! स्वच्छन्द भए विहार करह।' (बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धांत/ पृ. 102)

51. विरुवापाक पाँती छनि—

एक से शुण्डिनी दुइ घरे सान्धअ।
चीअण वाक लअ वारुणी बान्धअ।।

अर्थ स्वत: स्पष्ट अछि जे एक ई शुण्डिनी थिकी जे दू घर कें जोड़ैत छथि आ चिक्कन वाणी, मधुर बोलीक संग वारुणी बँटैत छथि। एकर विशिष्टार्थ जयधारी बाबू कहैत छथि—'एक ओ शुण्डिनी, शौण्डीशक्ति वा कुण्डलिनी-शक्ति दुइ घर कें वा सूर्य-चन्द्र नाड़ी कें मिलबैत अछि, विवाह द्वारा वा सुषुम्ना मे ऊठि, चिक्कन वस्त्र-ब्रह्मनाड़ी (सुषुम्नास्था) वा गुरूपदेश सँ वारुणी (सहस्रारस्थ मधु) कें बन्हैत अछि। (पृ. 151)

52. राहुल सांकृत्यायन/ अवतरणिका/ हिन्दी काव्यधारा/ पृ. 39-40
53. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड 2/ पृ. 281
54. डॉ. जयधारी सिंह अपन पुस्तक मे 'पालराज्य मे सिद्धक आदर' शीर्षक सँ एक अध्याय देने छथि जाहिठाम राजाक द्वारा सम्मान, लोककृत आदर आदि उप अध्याय छैक। लामा तारनाथ वा तारानाथक सन्दर्भ सँ ओतय ओ सूचित करैत छथि जे राजा रत्नपाल अपन पांच लाख प्रजाक संग वज्रयान मे सहरपा द्वारा दीक्षित भेल छलाह। (खंड 2/ पृ. 29) अन्य अनेक सूचना सन्दर्भ-सहित ओ अपन पुस्तक मे देने छथि।
55. डॉ. जयधारी सिंह/ बौद्धगान मे तांत्रिक सिद्धान्त/ पृ. 117
56. रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 50
57. विस्तृत अध्ययन लेल देखी—सिद्ध-साहित्य/ डॉ. धर्मवीर भारती/ तृतीय अध्याय/ पृ. 159-231
58. डॉ. जयधारी सिंहक पुस्तक एहि विषयक गंभीर अध्ययन हेतु एक उपयोगी पुस्तक थिक।
59. अपन पुस्तक मे डॉ. जयधारी सिंह चर्यागीतक प्रत्येक पद कें कम सँ कम दू बेर पढ़बाक सुझाव दैत छथि तखनहि ओकर साहित्यिक मर्म उद्घाटित होयत। हुनकर सुझाव छनि—'एक बेरि ओकरा स्वर-माधुर्य (Melody of Sound)क हेतुएं सुनल जाए आ दोसर बेरि अर्थ (Sense)क दृष्टिएं ओकर मार्मिक अध्ययन हो, जाहिमे प्रगीत-तत्व, ध्वनितत्व, भावाभिव्यंजन, स्वत: रस-निष्पत्ति, रसोत्कर्षरूप काव्यगुण आ सब मिलाए अभिव्यक्तिक प्रणाली (रीति)क विचार अनायास प्राप्त भ' जाएत। (खंड 2/ पृ. 82) अपन पुस्तक मे ओ प्रत्येक विन्दुक विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत कयने छथि। तें चर्यागीत कें साहित्य वा काव्य नहि मानबाक तर्कक कोनो औचित्य नहि अछि।
60. चर्यागीत सब मे वचन, लोकोक्ति, वाग्धाराक अनेक प्रयोग भेटैत अछि। अपन गहन आशय मे भने ई सब व्यक्तिपरक आ साधनुभवक अभिव्यक्ति हो, मुदा ओकरा संग

सामाजिक यथार्थ सेहो नीक जकां प्रस्फुटित देखाइत अछि। किछु एहन प्रयोग जे तत्काल मोन पड़ैत अछि—ससुरा निद गेल बहुड़ी जागअ (कुक्कुरीपा), हाड़ीत भात नाहि नित आवेशी (ढेण्ढणपा), जे जे आइला ते ते गेला (कान्हपा), भाव ण होइ अभाव न जाइ (लुईपा), आल माल व्यवहारे पेल्लह (सरहपा), अपणा मांसे हरिणा बैरी (भूसुकपा) आदि।

61. हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखने छथि—'जाति-वर्ण के भेद से जर्जरीभूत इस देश में जो कोई भी महासाधक आया है उसे यह प्रथा खटकी है। ऐसे बहुत-से प्राचीन ग्रन्थ हैं जिनमें जाति-भेद को उड़ा देने पर जोर दिया गया है। पर संस्कृत की पुस्तकें साधारणत: ऊँची जातियों के द्वारा लिखी गई होती है जिनमें लेखक केवल तटस्थ विचारक की भांति रहता है। स्वयं नीचे कहे जानेवाले वंश में उत्पप नहीं होने के कारण उनमें भुक्तभोगी की उग्रता और तीव्रता नहीं होती। सहजयान और नाथपंथ के अधिकांश साधक तथाकथित नीची जातियों में उत्पन्न हुए थे, अत: उन्होंने इस अकारण नीच बनानेवाली प्रथा को दार्शनिक की तटस्थता के साथ नहीं देखा।' (हिन्दी साहित्य की भूमिका/ पृ. 32)

मिथिलाक जातीय कविता

मैथिलीक आदिकालीन कविता पर विचार करैत आचार्य रमानाथ झा लिखने छलाह—'मैथिली साहित्यक परम्परा मिथिला देशवासीक जातीय परम्पराक अनुरूप थिक।' प्राचीन मैथिली साहित्यक किछु विशेषता ओ एहि तरहें गनौलनि—'आदिअहि सँ मिथिला जनपदक एक गोट अपन भाषा छल जे पूर्व मे द्विजाति सँ भिप लोक बजैत छल। क्रमश: द्विजाति सेहो ई भाषा बाजए लगलाह। एहि भाषा मे जे रचना भेल से सब जनभाषाक हेतु ओ एकर प्रचार पण्डित सँ भिप जनता मे भेल ओ वर्णरत्नाकर सँ पूर्व प्राय: एहि मे रचना सेहो पण्डित सँ भिपे लोक करथि। एहि भाषाक साहित्य तें मौखिक रूपें प्रचलित होइत रहल। राजाक आश्रय नहि रहलें कोनो पैघ ग्रन्थक निर्माण नहि भेल।'[1]

अपन एही लेख मे रमानाथ झा इहो बात लिखने छथि जे मैथिली साहित्यक आरंभ मुख्यत: ब्राह्मणेतर व्यक्ति द्वारहि भेल अछि, कारण ब्राह्मण लोकनि ब्राह्मणत्वक गौरव सँ संस्कृत सँ इतर भाषा मे रचना नहि करैत छलाह। एहि प्रवादक प्रति घोर दुख ओ व्यक्त कयने छथि जे मैथिली ब्राह्मणक साहित्य थिक। ओ लिखलनि—'एकर साहित्य ब्राह्मणक साहित्य थिक से ऐतिहासिक दृष्टि सँ कतेक असत्य, से सबहुं सहृदय व्यक्ति बूझि सकैत छथि। अवहट्टक रूप मे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यत: पंडितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जनसमाजक साहित्य थिक, यथार्थ अर्थ मे लोकसाहित्य थिक जकर रचना प्राय: डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेतर जातिक कएल थिक।'[2]

मुदा, साहित्य भने मौखिके होइक, ओकर भाषा एनमेन ओहने तँ नहि होइत अछि, जेहन आम लोक अपन बोलचाल मे व्यवहार करैत छथि। एहिठाम तात्पर्य भाषाक आलंकारिक हेबा सँ बेसी ओकर शक्तिसंपप हेबा सँ अछि जाहि सँ अर्थोपलब्धि सुगम होइक, आ कविक जे अभिप्रेत छैक ठीक-ठीक संप्रेषित भ' सकय। अपन ओहि लेख मे रमानाथ झाक ध्यान एहू दिस गेलनि अछि। श्लेष, लक्षणा-व्यंजना आदि सँ अर्थोपलब्धि, एक्के शब्दक भिप-भिप अभिप्राय मे अलग-अलग शक्तिग्रह,

एहन शब्दक चयन जे मुखसुखक संगहि श्रुतिसुख लेल सेहो उपयुक्त होइक—मौखिको कविताक लेल ई सब वस्तु आवश्यक छैक। ई गुण कोनो भाषा किछु वर्ष अथवा किछु दशक मे विकसित नहि क' सकैत अछि। एकरा लेल कैक-कैक शताब्दी धरि नियमित साहित्यिक गतिविधि चलैत रहब आवश्यक छैक।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा मैथिलीक जे प्राचीन साहित्य एखन धरि उपलब्ध भेल अछि, जेना चर्यागीत आ वर्णरत्नाकर—विद्वान लोकनि आश्चर्य करैत छथि जे ओहि युग मे एहन रचना लिखल जायब कोना संभव भेल? चर्यागीत सँ पहिने किछु नहि भेटैत अछि, मने सम्पूर्ण अन्धकार। आ ठीक तहिना, गद्यकृति मानैत जखन वर्णरत्नाकर कें लोक देखैत छथि तँ घोर आश्चर्य सँ भरि जाइत छथि! वर्णरत्नाकरक संपादक-द्वय (सुनीति कुमार चटर्जी आ बबुआ मिश्र) मे सँ एक मिश्र जी तँ वर्णरत्नाकरक रचना कें 'असंभव' कहलनि अछि। असंभव एहि लेल जे जाहि भाषा मे ई प्रौढ़ गद्यकृति ओहि युग मे लिखल गेल, ताहि मे पहिने सँ कविता लिखबाक चलन नहि छलैक, कारण कतहु किछु भेटैत नहि अछि, से असंभव थिक। बबुआ मिश्रक एक उतारा तँ रमानाथ झा देलखिन अछि जे 'अनुपलब्धि अभावक प्रमाण नहि मानल जाए सकैत अछि।' दोसर उतारा काञ्चीनाथ झा किरण देने छथिन। वर्णरत्नाकर वास्तव मे गद्यकृति नहि थिक काव्य थिक। स्वयं ज्योतिरीश्वरो एकरा काव्ये माननलि अछि। लोरिक, सलहेस आदि लोकगाथा जाहि भाषा मे गाओल जाइत छैक, ओहि मे पद्य आ गद्य दुनू संग-संग व्यवहार कयल जाइत छैक आ ओकरा वाद्ययंत्रक संग सामूहिक रूपें गाओल जाइछ। ठीक-ठीक एही काव्य-प्ररूपक कृति वर्णरत्नाकर थिक। एहि पर आगू हमरा लोकनि अलग सँ विचार करब।

रचनाक प्रेरणा शून्य सँ नहि टपकि सकैत अछि। सिद्ध लोकनि जँ चर्यागीत राग मे निबद्ध क' क' गीत-रूप मे लिखलनि, जकर चलन सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय साहित्य मे कत्तहु नहि छलैक, तँ प्रश्न अछि जे एकर प्रेरणा ओ कतय सँ अनलनि। ई विषय अति महत्त्वपूर्ण एहू दुआरे भ' जाइत अछि जे सिद्ध लोकनि श्रद्धालु आम जनता धरि अपन अभिप्राय संप्रेषित करबाक लेल गीत लिखलनि। निश्चय अछि जे जाहि जनताक बीच ओ अपन बात कें ल' जाय चाहैत छला, ओहि जनताक लेल ओ काव्य-रूप तँ सुपरिचित रहबाके चाही, ओहि मे व्यवहृत बिम्ब आ प्रतीक सेहो रेहल-खेहल हेबाक चाही। सिद्ध लोकनिक मुख्यालय भागलपुर आ नालंदा छलनि, से पूर्णतः प्रमाणित अछि। इहो प्रमाणित अछि जे किछु शताब्दीक भीतर दर्जन सँ ऊपर सिद्ध भेलाह जे मिथिला-निवासी छला। सिद्ध लोकनिक दूरगामी प्रभाव मैथिली संस्कृति पर पड़ल, से सब प्रमाणित बात अछि। स्पष्ट अछि जे जाहि जनताक लग ओ अपन अभिप्राय कें पहुँचाबय चाहैत छलाह, ओ लोकनि गीत गाबथि, गीत बूझथि

आ गीत बनबथि। एक दोसर बात जे जनता जखन हमरा लोकनि कहैत छिऐक तँ आजादी-बादक आजुक जनता नहि, सामंत-युगक ओहि जनताक हिसाब हमरा लोकनि कें मोन राखक चाही जकर हिसाब राहुल सांकृत्यायन अपन एक लेख मे देने छथि। मात्र दसे प्रतिशत लोक छलाह जिनका लग धन रहनि, शक्ति रहनि आ विद्या सेहो रहनि। ई प्रभु-वर्ग दल। बीस प्रतिशत तँ दास-दासी छल, ओ केवल देखबा मे मनुक्ख सन लागय, मुदा पशु जकां ओकरो खरीद-बिक्री होइक, ओकर जीवनाधिकार ओकर मालिकक कृपाधीन रहैक। बांकी दस-दस प्रतिशत मजदूर आ शिल्पकार छलाह, शेष रैयत। ई छल जनता। माथ झुकैत अछि ओहि रचनाकार लोकनिक स्मृति मे, जे एहि कोटिक दुर्गत जनता धरि अपन संवाद पहुँचेबाक लेल मैथिली मे गीत लिखलनि।

तहिना ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर। ज्योतिरीश्वर स्वयं पंडित आदमी छलाह, यद्यपि कि हुनकर छवि जे हुनक रचना सब सँ निकलि क' उभरैत अछि, ओ कर्मकाण्डी पंडितक बदला रंगकर्मी पंडित छलाह। वर्णरत्नाकरक मर्म कें आरंभिक पीढ़ीक विद्वान लोकनि बूझि नहि सकलाह, कारण मिथिलाक आमजनक जे लोक-संस्कृति रहैक, जे कि ब्राह्मण-संस्कृति सँ निश्चिते भिप रहैक, तकर अवगति सुनीति बाबू कें तँ बाहरी हेबाक कारण नहि भेलनि, बबुआ मिश्रो कें लोक-संस्कृति सँ अनवगत हेबाक कारण नहि भ' सकलनि। एक बेर जँ सुनीति बाबू एकरा काव्यहीन गद्यकृति कहि देलखिन तँ आगू ककर मजाल छल जे एहि पर पुनर्विचार करितय! एहि मादे आगूक अध्याय सब मे अलग सँ बात होयत।

सुनीति बाबू वर्णरत्नाकर कें काव्य नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थ माननलि, ज्योतिरीश्वरक एहि तेसर आ अंतिम कृति सँ ओ कतेक निराश छलाह से हुनकर भूमिका-लेख मे देखल जा सकैए। प्रश्न अछि, सुनीति बाबू तँ ओहि रचनाक मर्मे नहि बुझलनि, मुदा स्वयं ज्योतिरीश्वर एहन काव्य-प्ररूप किएक व्यवहार केलनि जखन कि ओ पूर्ण पढ़ल कविशेखर पंडित छलाह। स्पष्ट अछि जे हुनका आँखिक आगू कोनो काव्य रहल हेतनि जे जनता मे बहुत लोकप्रिय छल होयत। ओ ओकर प्रतिरूप अपन देसी भाषा मे लिखित रूप सँ रचय चाहने हेता, जे ओही रचना जकां लोकप्रियता हासिल क' सकय। वर्णरत्नाकर मे ओ ओहि काव्य-प्ररूपक नामोल्लेखो कयने छथि—लोरिक नाच। ओ लोक महाकाव्य छल—गद्य-पद्य मिश्रित। ओकरा सन अनेक छलैक। ओकर रंग-प्रस्तुतिक अनेक दल छलैक, विशाल प्रसार-क्षेत्र छलैक। वर्णरत्नाकर प्रबंधात्मक अछि, ठीक तेहने जेना लोरिक रहल होयत। मुदा, ओ जे लोरिक महाकाव्यक प्रस्तुति देखने-सुनने हेताह से तँ आब हमरा लोकनि लग अछि नहि। अछि केवल वर्णरत्नाकर। सेहो एक अर्द्धशिक्षित व्यक्तिक उतारल,

अशुद्ध। विद्वानो लोकनि कें ओकर ठीक-ठीक अर्थ नहि लगैत छनि तकर दुनू कारण भ' सकैत अछि—अशुद्ध उतारल गेल हो सेहो, आ ओ शब्द आब चलन सँ हटि गेल हो सेहो। एहि पर हमरा लोकनि आगुओ चर्चा करब। एतबा धरि निश्चित जे एहि सब कथू कें बुझबाक लेल पंडित नहि, लोकवादी होयब अपेक्षित छैक, जे 1340 ई. मे वर्णरत्नाकर लिखैत काल ज्योतिरीश्वर छलाह आ 1507 ई. मे एकर प्रतिलिपि कयनिहार सौरिया गामक मनिकर सेहो छलाह भने थोड़े कम्मे पढ़ल-लिखल होथि।

एक प्रश्न मौखिक साहित्य कें लिखित रूप देबा सँ सम्बंधित अछि। प्रसंगवश रमानाथ झा अपन ओहि लेख मे एहू प्रश्न पर विचार केलनि अछि। मौखिक साहित्य परंपरा सँ चलि अबैत अछि। एक पुश्तक लोक अपना पूर्वक पुश्त सँ सिखैत अछि आ बादक पुश्त बला ओकरा सँ सीखि लैत अछि। प्रत्येक पुश्तक संग ओहि साहित्यक भाषा मे किंचित परिवर्तन भेल जाइत अछि। जे गीत हजार वर्ष सँ मौखिक रूपें प्रवाहित अछि तकर आजुक रूप हमरा लोकनि कें कनेको अबूझ नहि लागत। डाकक वचन, लोरिकिक गाथा वा भगवतीक गीत आइ हमरा अबूझ नहि लगैत अछि, मुदा 'आइ जँ लोरिकिक गीतक ओ स्वरूप उपलब्ध होइत जे ज्योतिरीश्वरक समय मे छल तँ देखि सकितहुं जे ओहि गीतक भाषाक तखनुक स्वरूप आ एखनुक स्वरूप मे कतेक अंतर अछि—ओतबे अंतर अछि जतेक वर्णरत्नाकरक भाषा ओ एखनुक भाषा मे अछि।'[3]

मैथिलीक जातीय साहित्यक आन जे प्ररूप सब अछि—लोकगाथा, लोकगीत, लोकवचन—तकरहु संग हमरा लोकनि यैह स्थिति देखैत छी। डाकवचनक जाहि अंश कें मध्यकालीन पंडित लोकनि प्रमाणत्वेन अपन ग्रन्थ मे उद्धृत क' लेलनि, तकरा जँ आइ देखी तँ आजुक डाकवचन सँ सर्वथा भिन्न लगैत अछि। एहिना, मैथिलीक उक्ति-साहित्य अछि, मुक्तक साहित्य अछि जकरा फकड़ा कहल जाइछ। आदिम कथाकाव्य अछि जकरा नेनागीत सब मे आ अनेको अन्य प्रासंगिक गीत सब मे देखल जा सकैए।

मैथिलीक जातीय साहित्यक की अर्थ अछि? एहिठाम 'जातीय' के अर्थ नस्ल (Race) अथवा वर्णगत जाति (Caste) सँ नहि, अपितु 'राष्ट्रीयता' (Nationality) सँ अछि। भाषाक आधार पर जेना बंगाली, गुजराती, मराठी, उड़िया, तमिल आदि जातिक पहचान अछि, ई जातीयता तेहने प्रकारक पहचान सँ संबंधित अछि। ई भाषाभाषी प्रदेश सब राजनीतिक इकाइक रूप मे विकसित भ' सकल तकर मूल कारण छल जे भाषाक आधार पर हिनका लोकनिक जातीय-बोध सबल छल, जकर अभाव मिथिला मे रहल। मूलभूत बात ई छैक जे एक भौगोलिक भाषाई प्रदेश मे बसनिहार लोकक सांस्कृतिक रुझान, स्वप्न आ कल्पना समरूप होइत छैक। मुदा

आर्थिक पिछड़ापन आ अवरुद्ध सांस्कृतिक विकास एहि जातीयता कें संघटित नहि होब' दैत छैक। सामंतवाद आ पुरोहितवाद दुनूक स्वार्थक ई विरुद्ध होइछ कारण समाज जते खंड-पखंड रहतैक तते हिनका लोकनिक हित सधतनि। जातीय निर्माणक प्रक्रिया स्वयं अपनहि मे सामंतविरोधी होइत अछि। सामंतवाद जतय विघटन कें प्रश्रय दैत अछि ओतहि जातीय निर्माण एकीकरणक प्रक्रिया कें आगू बढ़बैत अछि। सरल भाषा मे एहि बात कें स्पष्ट करैत रामविलास शर्मा लिखलनि अछि—'भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। इन भाषाओं के अपने-अपने प्रदेश हैं। इन प्रदेशों में रहनेवाले लोगों को 'जाति' की संज्ञा दी जाती है। वर्णव्यवस्था वाली जाति-पांति से इस जाति का अर्थ बिल्कुल भिन्न है। किसी भाषा को बोलनेवाली, उस भाषा-क्षेत्र में बसनेवाली इकाई का नाम 'जाति' है।'[4] तात्पर्य जे जातिक सीधा संबंध भाषा सँ छैक। आ जातीय साहित्यक अर्थ थिक ओहि भाषा-क्षेत्रक निवासी लोकनिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, जाहि मे ओकर आत्मसंघर्ष, स्वप्न आ सेहन्ताक अभिव्यक्ति भेल होइक।

बंगाली जाति सँ हम सब पूर्ण परिचित छी। अपन भाषा कें ओ लोकनि बंगाली कहैत छथि आ बंगाली बाजय बला समस्त समुदाय, से चाहे कोनहु धर्म, सम्प्रदाय, जाति, लिंगक होथु, बंगाली जाति कहल जाइछ। धर्म, सम्प्रदाय आदि सँ कतहु बहुत पैघ जातीय संयोजक भाषा होइत अछि, एहि बातक अवगति विद्यापतियो कें छलनि। मैथिली बाज' बला समस्त समुदाय मैथिली जाति भेल। मैथिल जाति आ मैथिली जाति मे की अंतर अछि? मैथिल महासभाक कृत्य सँ हम सब गोटे परिचित छी। ओ महासभा घोषित रूप सँ दू जातिक संगठन छल—ब्राह्मण आ कर्णकायस्थक। ई कतहु सँ अनुचित नहि छल। ओहि युगक इतिहास देखी तँ आनो आन जातिक अपन-अपन जातीय संगठन बनि रहल छल। अनुचित एतबे भेल जे ओ लोकनि मैथिली कें अपना संग जोड़ि लेलनि। एहि आधार पर कि हमहू लोकनि मैथिली बजै छी तें हमहू सब मैथिल छी, आन जातिक लोक यथा यादव महासभाक सदस्य जखन मैथिल महासभाक सदस्यता चाहलनि तँ तकरा अवज्ञापूर्वक अस्वीकृत कयल गेल। आइ हम सब गोटे अनुभव क' सकैत छी जे मैथिली बाज' बला लोकक जँ जातीय साहित्य होइ आ ओहि पर मात्र ब्राह्मण आ कर्णकायस्थक दावेदारी होइ तँ से अवैज्ञानिक आ अनैतिहासिक तँ अछिये, विवेकहीन आ मूर्खतापूर्ण सेहो अछि। मुदा, शक्ति-लाभ आ धन-लाभ, यश-लाभक वास्ते विवेकहीन आ मूर्खतापूर्ण होयब जरूरी होइ तँ ताहू मे हर्ज नहि रहैत छैक। आइ तँ एना करब सांस्थानिक रूप सँ वैध आ मान्यताप्राप्त अछि। तें, ई नहि हो जे एहि दिस क्यो संकेतो करब छोड़ि देथि। कालक न्याय सब सँ पैघ न्याय होइछ। ओहिठाम सय-पचास वर्षक कोनो मानि नहि। व्यक्तिक तँ आरो नहि, जँ ओ कोनो पैघ अवदान नहि द' गेल होथि।

ताकि हेरि क' अहाँ बहार क' सकैत छी जे विद्यापति कोन गोत्र-मूलक छलाह, से गोविन्ददास धरिक क' सकैत छी, मुदा सिद्ध लोकनिक की करबनि, ओहि अज्ञात लोककविक कोना करबनि जे भाषा मे रहस्योद्घाटन कयने छलाह जे असुरक हत्याक षडयंत्र-क्रम मे भगवती असुर संग विवाह क' वैवाहिक जीवन बितौने छली, तखन जा क' ओ ओकर हत्या करबा मे सफल भेल छली। मने, दुर्गासप्तशती मे जेना कहल गेल अछि से झूठ थिक। हमरा लोकनिक संस्कृति पर सिद्ध लोकनिक प्रभूत प्रभाव अछि। आइयो हमरा लोकनि बौद्ध सब जकां चैत्य-पूजक छी। आइयो हमर-अहाँक माय-बहीन ओ भगवती-गीत गबै छथि जाहि मे भगवतीक विवाह सँ हत्या धरिक विवरण छैक।

जातीय साहित्यक रूप मे लोकसाहित्यक विवेचन मैथिली साहित्यक कोनहु इतिहास मे नहि भेटत। लोकसाहित्य कें इतिहासकार लोकनि साहित्ये नहि मानैत छथि। लिखित साहित्य मात्र हुनका लोकनिक लेल साहित्य भेल। मुदा एहू मे अराजकता अछि। लिखित साहित्य तँ चर्यागीत सेहो अछि, मुदा राहुल सांकृत्यायन भने एकरा मैथिली कहथु, मुदा मैथिल पंडित लोकनि नहि मानताह जे सिद्धसाहित्य सँ मैथिली साहित्यक आरंभ भेल। बंगाली लोकनि, ताहू मे हुनका सभक मूर्द्धन्य रवीन्द्रनाथ ठाकुर भने कहथु जे 'मैथिली हमर मौसी-भाषा थिकी', अर्थात मातृ-स्थानीय, एक पीढ़ी ऊपर, मुदा हमरा लोकनि देखब जे बंगाली साहित्यक आरंभ जतए आठम शताब्दी मे भ' जाइत अछि, मैथिली साहित्यक आरम्भ लेल छौ सौ वर्ष कें आरो बितय द' देल जाइछ जाहि सँ ज्योतिरीश्वरक आगमन भ' जाउक जे निविष्ट गोत्र-मूल बला मैथिल ब्राह्मण छलाह, कारण विधर्मी कुवर्ण सँ माँ मैथिलीक आरम्भ कोना कयल जा सकैत अछि। मुदा, दुनिया आश्चर्य करय तँ एक बातो—अपने आश्चर्यो करै जाइत छथि जे ई कोना भ' सकैत अछि? गद्य सँ कोनो साहित्यक आरंभ कोना भ' सकैए? एना तँ संसार मे कतहु नहि भेल अछि। जे कतहु नहि होइत हो, तकरा हमरा लोकनि मैथिली साहित्य मे घटित होइत अपना आँखियें देखि सकैत छी। बड़भागी छी हमरा लोकनि।

जहाँ धरि लिखित साहित्यक प्रश्न अछि, सब गोटे अवगत छी जे विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत तँ जरूर भेटल मुदा एक्को टा गीत नहि। संभव भ' सकैत छल जे ओही भागवतक कोनो पात पर अपन एक्को टा गीत पादटिप्पणिये मे सही, ओ लिखि दैतथि, कारण हुनक राधाकृष्ण-विषयक अनेको गीत भागवतक वर्णन सँ साम्य रखैत अछि। ग्रियर्सन जखन विद्यापति-गीतक खोज करैत विद्यापतिक वंशधर लोकनिक दुआर धरि गेल छलाह, बड़ भारी अचरज सँ भरि गेल छलाह जे हुनका लोकनिक लग मे विद्यापति-गीतक पांडुलिपि नहि छनि। मिथिला मे घर-घर मे गीतक रजिस्टर (कौपी) रखबाक चलन रहलैक। गीतक प्रेमी लोकनि जे एहने अपन पोथा बनौने छलाह जाहि मे विद्यापतियोक गीत भेटल, सैह थिक तरौनी पदावली आ रामभद्रपुर पदावली। नेपाल मे यैह काज सांस्थानिक रूप सँ भेल, कारण राजाक संरक्षण मैथिली कें भेटल। जँ मिथिलो मे एहन संरक्षण भेटल रहैत तँ विद्यापति-पदावली कें तँ दरभंगाराजक पुस्तकालय मे भेटल रहबाक चाही, जेना कि संस्कृतक सैकड़ो पांडुलिपि भेटल, विद्यापतिक भागवत सेहो। ग्रियर्सन जे विद्यापतिक गीत संकलित कयने छलाह से दरिद्र भिखारी सब सँ, जे ट्रेन मे विद्यापति-गीत गाबि-गाबि क' भीख मंगैत छलाह। विद्यापति आइ प्रामाणिक मैथिल महाकवि छथि। मुदा, वैह ग्रियर्सन, ओहने अबल-दुबल गौनिहार लोक सब सँ दीनाभद्री, सल्हेस आदिक गाथा, नागपूजा आदिक गीत, सैकड़ोक संख्या मे फकड़ा, वचन आ कवित्त संकलित कयने रहथि। ई समस्त घटना 1880क आगू-पाछूक थिक। मुदा आइयो ई रचना सब मौखिक साहित्य थिक, लोक साहित्य थिक, मुदा मैथिली साहित्य नहि थिक। कोनो इतिहास मे एकरा विवेचनक विषय बनैत नहि देखबैक। जकरा हमरा लोकनि आधुनिक युग कहैत छिऐक आ जकर प्रवर्तक चन्दा झा बताओल जाइत छथि, कते अराजक, अन्यायपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण अछि—तकर परिणाम आर की देखब? मिथिला आ मैथिलीक निरंतर अधोगति कें देखिये रहल छी।

जातीय साहित्यक रूप मे लोकसाहित्यक अध्ययन कयने की लाभ अछि? पहिने तँ यैह देखबाक चाही जे दुहू मे अंतर की छैक। की वाम की दक्षिण, कोनो पंथक विचारक लोकनि होथि, कि हुनक भक्तमंडली, 'लोक'क संबंध मे अधिकतर सभक यैह मत रहलनि जे सुविधाजीवी लोकनिक मनोविनोदक ई ('लोक') साधन छी। मने ओकर नृत्य, गान, चित्रकला, उत्सव, रीति-रेबाज, सब कथू। म्यूजियम सब मे ओकर आकर्षक नमूना सब टांगल, गूथल भेटि जाएत। एहि बात कें देस-बिदेस मे ततबा प्रचारित क' देल गेल अछि जे एहि सब कथू कला-रूप मे 'लोक'क संघर्ष, उत्पीड़न, त्रसदी, सेहो अन्तर्गथित छैक, एहि बात कें मानू समुच्चा सभ्यता बिसरि गेल। जखन हम लोकसाहित्य कें जातीय साहित्यक रूप मे देखैत छी तँ ओकर साझी विरासतक संग-संग ओकर स्वप्न आ सेहन्ता, संघर्ष आ उत्पीड़न दिस सेहो हमर ध्यान जाइत अछि। इतिहासक विषय मे अक्सरहाँ हमरा ई. एच? कार के कहल ई बात मोन पड़ैत रहैत अछि जे इतिहासकारक लेखन मे तथ्य तँ मुश्किल सँ दस प्रतिशत होइत छैक, शेष ओकर मंशा होइत छैक जे ओ की देखबय चाहैत अछि। मिथिलाक इतिहास देखू तँ भव्य, शुभ्र-शाभ्र देखार पड़त। जखन कि हमर-अहाँक माय-बहीन विद्यापतिक ई गीत आइयो गबैत छथि जे पिया मोर बालक हम तरुणी गे। पूरा परिदृश्य बदलि गेल छैक मुदा गीत मे इतिहास आइयो धरि हुलकी मारिये

रहल अछि। मुदा, दोसर दिस देखी तँ ठीक एकर विपरीतो होइत अछि। मैथिली लोकगीत मे पिता कें बाबा कहबाक चलन रहलैक अछि, मुदा हाल-सालक गीत सब गितगाइन कें गबैत सुनू तँ बाबाक स्थान पर पापा शब्दक प्रयोग भेटत। जेना एक्के भारतवर्ष मे बैलगाड़ी आ जेटविमान दुनू प्रचलन मे बनल अछि मानू तहिना लोकक संसार मे अतीत आ वर्तमानक आबाजाही संग-संग होइत देखार पड़त। मुदा एकर इतिहास-पक्षक अतिरिक्त मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र आ समाजशास्त्र प्रमुख तत्व सब छैक जे लोकसाहित्य सँ मिथिला आ मैथिली जाति कें जते नीक जकां बुझल जा सकैत अछि ततेक शिष्टसाहित्य, जकर कि इष्टभाषा संस्कृत छैक, सँ तँ कदापि नहि।

मिथिलाक तत्कालीन समाजक हलचल कें बुझबाक एक अन्य स्रोत धर्मशास्त्रीय निबंध-ग्रन्थ सब थिक, जे मिथिला मे लिखलो खूब गेल आ परिस्थितिक प्रति मुखर सेहो खूब रहल। मुदा, शास्त्रीय लेखनक एक स्पष्ट सीमा होइत छैक। समाज कें वा स्थिति कें केहन हेबाक चाही, निबन्ध-ग्रंथक विचारक विषय से होइत छैक, ई नहि जे ओ वास्तव मे केहन अछि। जेहन अछि, ताहि मे बदलाव लेल ओ नियमन आ व्यवस्था दैत छैक। प्रभुताशाली वर्ग लेल नियम आ कानूनक परवाह करब कतेक यादृच्छिक होइत छैक से हम सब वर्तमानो भारतीय समाज मे देखि रहल छी, जखन कि आजुक राज-व्यवस्था कें संवैधानिक कानूनक व्यवस्था कहल जाइत छैक। एकर पर्याप्त प्रमाण अछि आ से स्वत: अनुमेय अछि जे ताहि दिनुका प्रभुवर्गक लेल ई सब कतेक यादृच्छिक (मनमाना) होइत छल होयत। तें धर्मक नाम पर भय बनौने रखबाक हेतु मानू एकरा धर्मशास्त्र कहल जाइत होअय! एहना स्थिति मे जखन कि वैज्ञानिक अध्ययनक लेल पूरा जोर एहि बात पर देल जेबाक पद्धति छैक जे वास्तव मे की केहन छल, ने कि एहि पर जे ओकरा केहन हेबाक चाहैत रहय। हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे एहना मे लोकसाहित्यक अध्ययन अपन जातीय अतीत कें बुझबाक लेल कतेक आवश्यक अछि।

मैथिली कविताक आधुनिक काल भने हम सब कहियो सँ मानी, एहि विषय पर बहुत भारी विवाद छैक आ तकर चर्चा हम यथास्थान करब, एतबा हम सुनिश्चित मानैत छी जे मैथिली मे आधुनिक कविता तहिये सँ लिखब प्रारंभ भेल जखन यात्री जीक काव्य-प्रभाव पूर्णरूपें मैथिली कवि-समाज कें आच्छादित क' लेलक। आइ भने मैथिल ब्राह्मण कवि-समाज अपन थेथरइ बरकरार रखने रहबाक लेल एहि प्रकारक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' (लेखक मायानन्द मिश्र) लिखि रहल हो जाहि मे यात्री-युग नामक कोनो युगे नहि हेबाक स्थापना एहि आधार पर देल गेल हो कि 'यात्री जी अपन युगक अपवाद छथि, नियम नहि।'[5] आ इतिहास नियम पर

आधारित होइत अछि, तात्पर्य से। भविष्यदृष्टि-हीन, विवेकहीन आ कुसंस्कारग्रस्त एहन-एहन मान्यताक हश्र वैह हेबाक होइत छैक जे आइ वास्तव मे मिथिला आ मैथिलीक अछि आ एहिना रहल तँ भविष्य आराम सँ बुझल जा सकैत अछि, कारण वर्तमानेक जड़ि सँ भविष्यक जन्म होइत छैक। सामंतवाद आ सांप्रदायिकता मे पति-पत्नीक संबंध छैक आ एहि दुनूक मुख्य कार्य समाज कें विखंडित करब थिक, कहबे कयलहुँ। यात्री जीक समुच्चा जीवन जातीय साहित्यक खोज करैत, ओकर प्रतिष्ठापना करैत, ओकर पक्ष मे संघर्ष करैत बीतल छलनि, से बात जगजानित अछि। मैथिलियोक कवि लोकनि, यथा भीमनाथ झा अपन कविता मे लिखलनि अछि जे जतय-जतय यात्री जी गेला, जाहि-जाहि भाषा मे लिखलनि, ततय-ततय मिथिला आ मैथिलीए अपन विस्तार पौलक। अस्तु।

आधुनिक काल मे आबि क' जखन कविता कें छन्द सँ मुक्ति भेटलैक, अनेक प्रकारक संकट सब आबि क' ठाढ़ भेल। कते आश्चर्यक बात थिक! मैथिलीक जातीय कविता छन्दक बंधन मे बान्हल कविता नहि छल। मिथिलाक प्राय: सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य छन्दक बंधन सँ मुक्त कविता छल। स्वयं विद्यापति छन्दक नियमन मानैत कोनो मैथिली कविता नहि लिखलनि। मैथिली मे छन्दक कोनो परिपाटिये नहि कहियो रहल। एतय जे परिपाटी रहल से राग, ताल, लय छल। सम्पूर्ण जातीय साहित्य, प्राचीन साहित्य, विद्यापतिक कविता लय पर आधारित कविता छल। मुदा, चन्दा झाक जबाना सँ मैथिली कविता कें संस्कृत जकां छन्द मे बान्हबाक जे प्रस्ताव आयल आ परवर्ती पंडित कवि लोकनि महाकाव्य आदि छान्दस निर्मितिक तेना पथार लगा देलनि, यात्री जीक बाद छन्दक टूटब तेहन हाहाकारक संग उपस्थित कयल गेल मानू छन्दक टूटब मैथिली कविताक मरणक प्रमाण होइक। जखन कि वास्तविकता एकर ठीक विपरीत अछि। जातीय कविताक अध्ययन सँ हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे हमरा लोकनिक भाषा-क्षेत्रक अन्य कवि लोकनि कविता लेल कोन-कोन प्ररूपक व्यवहार केलनि। ओ सब प्ररूप हमरा लोकनिक जातीय कविता-प्ररूप होयत।

गाथा, गीत, वचन आ उक्ति—यैह चारि गोट मुख्य जातीय प्ररूप थिक जकर प्रयोग मैथिलीक जन्मेकाल सँ हमर पुरखा कवि लोकनि करैत रहला अछि। एहि खंड मे एहि चारू प्ररूप पर हमरा लोकनि विस्तार सँ चर्चा करब।

मैथिलीक जातीय कविताक एक प्रवृत्ति हमरा लोकनि देखैत छी जे पद्य आ गद्यक जे मान्यताप्राप्त आरि-धूर छैक, तकरा कवि लोकनि शुरुहे सँ तोड़ैत रहलाह आ तकर कहियो परवाह नहि केलनि। कविताक उद्देश्य रहल ओहि लोक धरि पहुँचब जकर स्वप्न, सेहन्ता आ संघर्ष कें ओहि मे वाणी भेटल होइक। एकरा लेल लयात्मक

होयब टा जरूरी रहलैक, गद्य छैक वा पद्य ई कहियो परवाहक विषय नहि रहलैक। एकर निर्वाह हमरा लोकनि गाथा-साहित्य मे देखैत छी। आइयो जखन सल्हेस कि धर्मराजक गाथा गाओल जाइछ, गद्य हो कि पद्य—ओकरा गाओले जाइछ। लय ओहि मे मुख्य होइत छैक। मैथिली मे जे पहिल पुस्तक लिखल गेल—ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर—ओहि मे ठीक-ठीक एही काव्य-प्ररूपक उपयोग भेल अछि। विद्यापतिक गीत ठीक-ठीक ओही जातीय प्ररूप मे ग्रथित अछि जाहि मे सिद्ध लोकनि गीत लिखने छलाह आ आइयो धरि हमर-अहाँक घर-आंगन मे मैथिली गीत गुंजैत अछि। वचन आ उक्ति कविता गेय नहि छल, काव्योक्तिक रूप मे प्रयुक्त होइत छल। मैथिली समाजक एहि दुनू कविता-प्ररूपक लेल एकमात्र अनुप्रासक ग्रहणक आवश्यकता रहलैक। हमरा लोकनिक जे आदिम कथाकाव्य सब अछि, ताहू पर एहि खंड मे चर्चा कयल गेल अछि, ओहू मे एकरे आश्रय लैत, कतहु कतहु नहियो लैत देखल जाइछ।

पंडित कवि लोकनि जे महाकाव्य लिखलनि, हरेक महाकाव्यक एक टा कथा होइत छैक। काव्यशास्त्र मे बाकायदा नियम बनल छैक जे ओ कोन कथा होयत, केहन कथा होयत। प्राय: हरेक महाकाव्य मे हमरा लोकनि देखैत छी जे कतिपय एहन अंश रहैत छैक जतय मात्र कथा चलैत छैक, ओहिठाम काव्यत्व वा कविता-तत्व ताकब निरर्थक होयत। काञ्चीनाथ झा 'किरण' अनेक भाषाक अनेक महाकाव्यक पैघ-पैघ अंश अपन पुस्तक 'वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन' मे एहि बात कें देखेबाक लेल उद्धृत कयने छथि जे कहू, एहि मे कविता कतय छैक? मात्र कथा चलैत रहैत छैक, अन्तर केवल एतबे जे कथा छन्द मे चलैत अछि। छन्द कविता हेबाक भ्रम बनौने रखबाक औजार थिक। मैथिलीक जातीय कविता, उचिते एहन भ्रम बनौने रखबाक विरुद्ध अछि। एहिठाम हमरा राजकमल चौधरीक ओहि कविता 'तथाकथित परंपरावादीक प्रति'क ओ अंश मोन पड़ैत अछि जतय ओ देखौने छथि जे महाकवि लोकनि जें कि जीवन-संघर्ष सँ कटल, आत्मलीन, अतीतजीवी होइत छथि तेँ छन्दक संग बचकाना खेल खेलाइत रहैत छथि। मैथिलीक जातीय कविता जें कि एहि ठामक लोकक जीवन-संघर्ष आ स्पष्ट स्वप्न-सेहन्ताक जनमल छी, एहन खैलौड़ एतय नहि भेटैछ। एहना ठाम लोककवि सीधा-सीधी लयात्मक गद्यक आश्रय लैत छथि, आ कथासार सीधा-सीधा अपन श्रोता धरि संप्रेषित क' दैत छथि।

समाजशास्त्री लोकनिक मतानुसार 'आधुनिकता'क एक अर्थ 'असतत' सेहो थिक। ई अधिकतर ओहि सांस्कृतिक अवस्था वा अभिव्यक्ति लेल प्रयुक्त होइछ जखन नवाचार एक प्राथमिक शर्त्त-सन बनि जाइत अछि। आधुनिक मैथिली कविताक चर्चा तँ हम यथास्थान करब, एतय मात्र एतबा कहबाक अछि जे विमान बिहारी मजूमदार सन विद्वान आ रामविलास शर्मा सन आलोचक विद्यापति कें 'आधुनिक' कहने छथि। ठीक यैह बात वर्णरत्नाकरक संगे अछि, जतय एहन-एहन बिम्ब-प्रयोग घनेरो अछि जे आधुनिक प्रयोगवादी कवियो बुतें संभव नहि भ' सकल अछि। ठीक यैह बात हमरा लोकनि मैथिलीक मौखिक जातीय साहित्य मे अनेको ठाम देखि सकैत छी। आ तकर विस्तार वस्तु सँ विचार धरि छैक। अज्ञानतावश आइ एहन बहुतो प्रयोग वा प्ररूप कें हमरा लोकनि 'विजातीय' कहि दैत छिऐक जे हमरा लोकनिक जातीय साहित्य मे कैक-कैक शताब्दी सँ मान्यताप्राप्त आ प्रचलित रहलैक अछि। हमरा लोकनि कें देखबाक अपन नजरिया बदलबाक चाही। वा, ई कहब पसिप नहि हो तँ कहब, देखय अयबाक चाही।

सन्दर्भ

1. आचार्य रमानाथ झा/ प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा/ रमानाथ झा रचनावली/ खंड-2/ पृ. 55-56
2. उपर्युक्त/ पृ. 53
3. उपर्युक्त/ पृ. 37
4. रामविलास शर्मा/ निराला की साहित्य-साधना/ खंड-2/ पृ. 68
5. मायानन्द मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 190

मैथिली समाजक सांस्कृतिक हलचल आ जातीय महाकाव्य

सिद्ध-साहित्यक बाद हठात हमरा लोकनि मैथिली कविताक मार्ग कें अवरुद्ध भेल देखैत छिऐक। ठीक तहिना जेना आगाँ विद्यापतिक बाद ठमकल देखार दैत अछि। कविताक ई धारा वास्तव मे अवरुद्ध भेल कि तकर आन कोनो कारण छैक, एहि प्रश्न पर थोड़-बहुत विचार हेबाक चाही।

हमरा लोकनि देखैत छी जे ज्योतिरीश्वर अपन वर्णरत्नाकर मे जे चौरासी सिद्ध लोकनिक सूची देलनि अछि ओहि मे गोरक्षनाथ सेहो छथि। एतय धरि जे हुनक गुरु मीननाथ कें प्रथम स्थान देल गेल अछि।[1] ओहि सूची मे आरो नाथ लोकनिक नाम छनि—सीलनाथ, चौरंगीनाथ, चामारीनाथ। इहो मोन रखबाक थिक जे एहि सिद्ध सभक नामोल्लेख ओ श्रद्धापूर्वक केलनि अछि। एहि सभक की अर्थ अछि?

बौद्ध लोकनिक बीच प्रचलित किम्बदन्तीक अनुसार गोरखनाथ मूलत: वज्रयानी साधक छलाह जे पछाति शैव भ' गेल रहथि। तारनाथ हुनकर नाम 'अनंगवज्र' बतबैत छथि, जखन कि म.म. हरप्रसाद शास्त्री कें 'रमणवज्र' नाम सुनबा मे आयल छलनि। ओ लिखने छथि जे नेपालक बौद्धलोकनि हुनका पर बेस खिसियायल रहैत छथि कारण मान्यतानुसार ओ आरंभ मे बौद्ध साधक रहथि पछाति बौद्धविरोधी भ' गेल रहथि। सिल्वां लेबी तँ पूरा किम्बदन्ती उद्धृत कयने छथि तदनुसार यवनक भय सँ गोरख निरीश्वरवादी वज्रयान कें त्यागि ईश्वरवादी शैवमार्गक पंथ पकड़ने रहथि। ओना, विद्वान लोकनिक बीच कहल तँ एक टा इहो बात जाइत अछि जे सिद्ध-गुरु कान्हपाक बहुतो रास बौद्ध अनुयायी बौद्धधर्म छोड़ि नाथपंथ मे शामिल भ' गेल रहथि। कान्हपाक समय राहुल जी नवम शताब्दी (840 ई.) निर्धारित कयने छथि।

वास्तविक स्थिति ई थिक जे सिद्ध-साहित्यक उत्तरवर्ती रचना सब मे 'नाथ'क प्रयोग गुरुक अर्थ मे, सिद्ध ओ वज्रसत्वक अर्थ मे, लामाक संस्कृत पर्यायक रूप मे होब' लगैत अछि। अध्येता लोकनि बिटिया क' पकड़लनि अछि जे एकर तात्पर्य की सब भ' सकैत अछि। डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल स्पष्ट देखौलनि जे कोना सिद्धे लोकनिक कालखंड मे नाथ-सम्प्रदायक उद्भव भ' चुकल छलैक। कैक सिद्धक संबंध मे हुनकर विचार छनि जे ओ नाममात्रेक बौद्ध बचि गेल छलाह। हुनका अनुसार तँ अधिकांश सिद्ध अपन विचारधाराक अनुसार नाथपंथी छलाह जखन कि साम्प्रदायिक परंपराक अनुसार बौद्ध। डॉ. जयधारी सिंह अपन शोधग्रन्थ मे एहि स्थितिक सांगोपांग विवरण उपस्थित कयने छथि। दोसर दिस इहो अछि जे कैक विद्वान गोरखनाथ आ हुनका सम्प्रदाय कें 'वज्रयानक शैव शाखा' मानैत छथि, आ एहनो लोकक कमी नहि अछि जे सिद्ध लोकनि कें 'प्रच्छप नाथपंथी' मानैत छथि। एकर तात्पर्य भेल जे एक्कहि भूभाग मे ई दुनू सम्प्रदाय, दुनू विचारधारा संग-संग समानान्तर रूप सँ चलि रहल छल। स्वाभाविक थिक जे ई मिथिलाक धर्मधारणा आ रचनाशीलता कें अनेको रूप सँ प्रभावित कयने छल होयत।

ध्यान रखबाक थिक जे गोरखनाथ नाथ सम्प्रदायक प्रवर्त्तक नहि छलाह। ओ एक एहन सबल प्रचारक छलाह जे अपन क्षमता सँ एहि सम्प्रदाय कें शून्य सँ सौ धरि पहुँचा देलनि। हजारीप्रसाद द्विवेदीक शब्द मे कही तँ 'अपन निर्मम हथौड़ा सँ ओ से वार केलनि जे साधू आ गृहस्थ दुनूक कुरीति सब कें चूर्ण क' देलनि। बाँकी एहि सम्प्रदायक मूल प्राचीन पाशुपत लाकुलीश मत मे पाओल जा सकैत अछि।'

भारतीय धर्म-धारणाक इतिहास मे गोरखनाथक अवदान पर अनेक विद्वान लोकनि विचार कयने छथि। ओ गोरखनाथे छलाह जे योगमार्ग कें एक व्यवस्थित रूप देलनि। काया-योगक साधन सब कें शैव प्रत्यभिज्ञा दर्शनक सूत्र सब कें पकड़ि व्यवस्थित केलनि आ निज अनुभूति तथा शैव परंपराक आधार पर चक्र सभक संख्या कें नियत केलनि। गोरखनाथक मूल स्वर शील, संयम आ शुद्धतावादी छलनि। तांत्रिक उच्छृंखलताक ओ सबतरि विरोध केलनि। बौद्ध तांत्रिक प्रभावक विरोध ओ कठोरतापूर्वक केलनि आ वामाचार कें ल' क' अपन गुरु धरि सँ गंभीर मतान्तर सार्वजनिक रूपें व्यक्त केलनि। हुनका पर ब्राह्मण-प्रभाव सुस्पष्ट छल। हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखने छथि—'ओहि दिन मे अत्यन्त प्रचलित वज्रयानी पारिभाषिक शब्द सभक सांवृत्तिक अर्थ कें ओ बलपूर्वक पारमार्थिक रूप देलनि आ अब्राह्मण उद्गम सँ बहराएल संपूर्ण ब्राह्मण-विरोधी मार्ग सब कें ओ एहि तरहें संस्कृत केलनि जे ओकर रूढ़िविरोधी रूप तँ एनमेन पहिने सन बनल रहल, किंतु ओकर अशिक्षाजन्य प्रमादपूर्ण रूढ़ि सब परिष्कृत भ' गेल।'[2]

एहना मे हमरा लोकनि अनुमान पाबि सकै छी जे बदलल स्वर आ रूपक संग नाथ लोकनि कोना मिथिलाक जन-समूह मे ग्राह्य भेल हेता आ अपना संग-संग सिद्ध सम्प्रदाय कें सेहो ग्राह्य बनौने हेथिन। एही ग्राह्यता-स्मृतिक आधार पर ज्योतिरीश्वरक देल 84 सिद्धक सूची मे हमरा लोकनि मीननाथ कें पहिल सिद्धक स्थान पर अंकित पबैत छी। अपन गहन शोधक आधार पर राहुल सांकृत्यायन जे

चौरासी सिद्धक सूची तैयार कयने छथि, ताहि सँ एहिठाम बहुत भिपता छैक।

अपन सम्प्रदायक पुनर्गठन मे लागल गोरखनाथ पूर्व सँ चलि आबि रहल अनेक धार्मिक (नाथ) सम्प्रदाय कें अपन पंथ (योगमार्ग) मे अंगीकृत क' लेने रहथि। एहि मे दू तरहक सम्प्रदाय छल। एक, जे योगमार्गी तँ छल मुदा शैव वा शाक्त नहि छल। दोसर, जे शैवागमवादी तँ जरूर छल मुदा योगमार्गी नहि। आगू तँ ई क्रम निरंतर बढ़िते चलि गेल। एहि मे वाममार्गी, शाक्त, बौद्ध, अघोर, अवधूत आदि अनेक सम्प्रदाय आबि मिलल। स्वाभाविक थिक जे ई सब नवागन्तुक जे आबि-आबि मिलल, अपना संग अपन मूल सम्प्रदायक कैक तांत्रिक प्रवृत्ति आ साधना सेहो संग लेने आयल। गोरखनाथक कृति 'हठयोग प्रदीपिका' मे महामुद्राक जाहि तरहें उल्लेख भेल अछि आ वज्रोली, सहजोली आदि साधनाक वर्णन कयल गेल अछि, स्पष्ट अछि जे ई सब वज्रयानक प्रभाव छिऐक।

एहि बात पर विश्वास करब बहुत कठिन अछि जे एत्तेक पैघ धार्मिक आन्दोलनक किछुओ टा प्रभाव मैथिली कविता पर नहि पड़ल।[3] खास क' क' एहना मे जखन कि साधनाक संग-संग काव्य-लेखन संत लोकनिक दिनचर्या मे शामिल छल आ मिथिला मे हिनका लोकनिक गतिविधि, अबरजात सब दिन बनल रहलनि। आधुनिक युगक आरंभ-बेला मे मिथिला मे लक्ष्मीनाथ गोसाँइ (1793-1872) होइत छथि। नाथ सम्प्रदाय एतय धरि अबैत-अबैत अपना कें कते बदलि लेने छल, तकर दृष्टान्त हमरा लोकनि लक्ष्मीनाथक जीवन आ लेखन मे पाबि सकै छी। सर्वधर्म-समभाव आ वर्णाश्रमी कट्टरता—ई दू टा परस्पर विरोधी गुण तँ हुनक जीवनचर्ये मे शामिल रहनि। हुनक प्रधान शिष्य लोकनि मे सँ क्यो मुसलमान रहथि तँ क्यो क्रिश्चियन, से कहल जाइत अछि। जीवनक अंतिम समय मे अपन जाहि कुटी क्रें ओ आश्रय बनौलनि, तकर सटल मुसहर लोकनिक टोल, मुसहरटोली बसबौलनि, सेहो कहल जाइत अछि, मुदा रचनाक गवाही सब सँ पैघ गवाही होइत छैक। रचनाशीलताक जतय धरि प्रश्न अछि, ज्ञानमार्गी निर्गुण पद, आ योगमार्गी उपदेश-पदक अतिरिक्त विद्यापतियेक समय सँ कवि-परिपाटी मे शामिल राधा-कृष्णक गीत लिखलनि, मुदा रामकथा-विषयक गीत सेहो हुनके जबाना मे आबि क' मिथिला मे प्रवेश पौलक। अपन रचना लेल जाहि भाषाक ओ निर्माण केलनि ताहू मे पर्याप्त नवीनता छलैक। ओ मैथिलीक कथ्य कें सधुक्कड़ी भाषा मे प्रकट केलनि, जाहि मे हृदयग्राहिता ततेक छलैक जे हुनक पदक पंक्ति सब लोकोक्ति-रूप मे विवेकीजनक बीच प्रचलित भेल। एहि सब कथू कें हमरा लोकनि नाथ सम्प्रदायक उत्तरवर्ती मिथिला-शाखा क' क' बूझि सकैत छी।

मैथिलीक प्राचीन कवि लोकनिक सूची मे नाथ नामधारी कैक गोट कवि, विद्यापतिक उत्तरवर्ती, भेटैत छथि, जेना लखिमीनाथ, रामनाथ, काशीनाथ, गोपीनाथ आदि, मुदा हिनका सभक नाम मे लागल 'नाथ' ठीक तेहने अछि जेना काञ्चीनाथ, रमानाथ वा भोलानाथ। तात्पर्य इहो जे 'नाथ' उपपद कें मिथिला एहि तरहें अपनौने चलल। एकर एक भिप आशय कोनो ऐतिहासिक स्मृतिक अनुवर्तन सेहो भ' सकैत अछि।

शताब्दीक प्रथम दशकक लगाति जे मिथिलाक अवस्था छल, ताहि बारे मे काञ्चीनाथ झा 'किरण' एक ठाम लिखने छथि—'जहिया सँ देखबाक ज्ञान भेल चारू दिस गरीबे गरीब लोक देखैत रहलियै। धनिक लोक बड़-पीपर जकाँ ब्रह्मस्थान वा ककरो सारा पर टा देखार पड़ल। ताहि दिन मे गरीबीक मारल आ शोषणक हारल कतेको लोक साले-साल गुदरिया बबाजी भ' क' घर सँ भागि जाइत छल।'[4] के छल ई गुदरिया बबाजी? हमरा लोकनि मे सँ जे मध्य वयक लोक छी, जरूर गाम मे गुदरिया बबाजी सँ निर्गुण सुनने होयब। ई लोकनि राजा भरथरी आ गोपीचन्दक गाथा गाबथि। मोन पाड़ू जे ओहि निर्गुण आ गाथा सभक भाषा की होइत छलैक? मिथिला मे मैथिली, भोजपुर मे भोजपुरी। ककर लिखल होइत छल ई गीत सब? एकर रचनाकार के छलै आ रचनाकाल की छलै? की एहि गीत सभक कोनो संकलनो कतहु भेल? पंडित गोविन्द झा 'मैथिली साहित्य विमर्श' मे एक ठाम लिखैत छथि—'सरहपादक शिष्य-प्रशिष्य मे एक छलाह गुण्डरीपाद। एहि गुण्डरी शब्दक अर्थ जानि नहि की छलए लोक बीच एकर अर्थ बुझल गेल गुदड़ी। एहि सम्प्रदायक एक शाखा गुदड़ी भीख माँगब अपन धार्मिक साधना बूझए लागल।'[5] गुण्डरीपाद नवम शताब्दीक एक प्रसिद्ध सिद्ध छलाह आ चर्यागीत मे संकलितो छथि। हुनक पद 'जोइनि तइं बिनु खनहि न जीबमि/ तो मुह चुम्बि कमल-रस पीबमि' प्रसिद्ध अछि। सिद्ध लोकनिक आचार-व्यवहार मे बहुतो विचित्रता। एक लुचिकपा छला जे जतय कतहु रहथि, सदा अपन दुनू हाथ कपार पर रखने ठाढ़ वा चलैते रहथि, हुनका बैसल वा सूतल क्यो कतहु देखिनहि नहि छल। वीणापाक संग मे एक टा वीणा होइनि जकरा ओ सदरि काल बजबैत रहैत छला। चर्पटीपा एक टा बरद रखने रहथि, ओकरा चराबथि, ओकरे पूजा करथि आ कतहु एबा-जेबाक होइन तँ ओकरे सवारी करथि। चंपकपा जतय कतहु बैसथि, चंपा फूलक एक ठाढ़ि जाहि मे फूलक घौदा लटकल, आगू मे गाड़ि लैत छलाह। जानि नहि बारहो मास कतय यँ हुनका फुलायल चंपा भेटि जाइत छलनि। गुदरियाक इतिवृत्त एहि सब कथू संग जोड़ल गेल अछि। गुदरिया सारंगी बजा क' वैराग्यक गीत गबैत गुदरी मंगैत, मुदा अपन आदिगुरु गोरखनाथ कें आ मुख्यालय गोरखपुर कें बतबैत अछि।

मैथिली गुदरिया गीतक कोनो संकलन हमरा नजरि सँ नहि गुजरल अछि।

मुदा सुनबाक अनेको अवसर बेर-बेर भेटल अछि। तकरा ध्यान मे रखैत कहि सकैत छी जे एहि गीतक महत्व कें कम क' क' आंकब मैथिल विचारक लोकनिक सांस्कृतिक दरिद्रताक अतिरिक्त आर किच्छु नहि भ' सकैत अछि। कारण, चर्यागीतक जे उत्तरकालीन विकास बंगाल मे बाउल संगीतक रूप मे भेल, तकरे सन मिथिलादेसीय संस्करण ई गीत सब थिक। राजा भरथरीक एक गीत मे वर्णन आयल अछि जे बारह बरस धरि बैराग धारण कयलाक बाद जखन ओ सिद्ध जोगी बनि क' अपन नगर घुरलाह तँ प्रकृति कोन तरहें हुनकर स्वागत कयने छल—'जेहि दिन नग्र पधार्यो राजा भरथरी/ मंजरल बगियन मे आम/ फुलवा जे फूले कचनार राजा/ लाली उड़े आसमान/ लाल लाल सेमरी के बाग फूले/ धरती धरल धेयान/ तीसी फूल चदरी बिछाय।' फेर आगू बढ़ला पर प्रसंग अबैत छैक—'जब चौबटिया पर धमकल राजा/ बांस वन हंसल हहाय/ सुखल पटेर पर धामन भागल/ जोगी सुनैए चित लाय/ पिपरक कोपड़ हंसैए हो राजा/ राजा गयए रिसिआय/ गुनमा के जोर राजा, ताकि ताकि मारे/ करय बात के जवाब।' ई सब 'बात' आ 'जवाब' भरथरीक गाथा मे खूब अबैत छथि जकरा गुदरिया लोकनि सारंगी पर, गाम-गाम घूमि गबैत छथि।

गाथा गोपीचन्द

गुदरिया लोकनि मुख्यत: तीन टा गाथा गबैत छथि—भरथरीक गाथा, गोरखनाथक गाथा आ गोपीचन्दक गाथा। ई तीनू गाथा अत्यन्त प्राचीन छैक आ पूर्वांचलक प्रान्त सब मे अपन-अपन भाषा मे हजार वर्ष सँ प्रचलित छैक। एहि मे सँ मुदा मिथिला मे जे गाथा सब सँ बेसी लोकप्रिय भेल से गोपीचन्दक गाथा थिक। सामान्यत: मिथिला मे गुदरिया लोकनि जे गाथा गबैत छथि, से यैह थिक।

गोपीचंदक गाथाक उद्धारक सेहो जॉर्ज ग्रियर्सन छथि। मिथिला मे अयबा सँ पहिने जखन ओ उत्तर बंगालक रंगपुर मे पोस्टेड छलाह, तखनहि जोगी लोकनि सँ सुनि क' एहि गाथा कें लिपिबद्ध करबौने छलाह जे 1878 ई. मे बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक जर्नल मे 'Songs of Manikchandra' 'माणिकचंद राजार गान' शीर्षक सँ प्रकाशित भेल छल। मूल पाठक संग छपल हुनक भूमिका सँ पता चलैत अछि जे रंगपुर सँ वापस आबि सुपौल (तत्कालीन भागलपुर जिलाक अन्तर्गत) मे ओ एकरा लिखने रहथि। माणिकचंद राजा छलाह। हुनकर पत्नी मैनावती नाथ सम्प्रदायक बड़ पैघ साधिका, जिबैत-जी डाकिनीक स्थान प्राप्त केनिहारि, सहजज्ञानक अप्रतिम स्वामिनी स्वयं गोरखनाथक साक्षात शिष्या छलीह। हुनकर पुत्र छलाह गोपीचन्द, अथवा गोपीचन्द्र, जिनकर एक आर नाम गोविन्दचन्द्र सेहो छलनि। 'माणिकचंद राजाक गान' मे नाम तँ अवश्य माणिकचंदक छनि, स्वयं ओ साधक

नहि रहथि सामान्य राजा रहथि, ओहि मे गाथा जे संकलित छैक से रानी मैनावतीक आ हुनकर पुत्र राजा गोपीचन्दक।

पं. राजेश्वर झाक पुस्तक 'लोक गाथा विवेचन' (1974) मे जाहि पांच गोट लोकगाथा पर आलेख संकलित छैक ताहि मे सँ एक गाथा राजा गोपीचन्दक सेहो अछि। बाद मे कटिहारक एक युवा अध्येता सदानंद पाल 'पूर्वांचल ' की लोकगाथा गोपीचंद' नाम सँ एक पुस्तिका 2019 मे प्रकाशित करौलनि अछि। लोकगाथा विषयक आर अनेक पुस्तक मैथिलीतर भाषा मे अछि जाहि मे आन-आन गाथाक संग गोपीचन्दक मैथिली गाथाक सन्दर्भ देल गेल अछि। मैथिलीक संभ्रान्त लोक-संग्राहक लोकनिक संग्रह मे हमरा लोकनि कें ई गाथा नहि भेटैत अछि, तकर कारण तँ प्राय: यैह जे आन गाथा जकां एकर प्रस्तोता सहज सुलभ ग्रामीण नहि, दलित आ मुसलमान वर्गक संन्यासी गुदरिया जोगी होइत अछि, तकर संगति करब एवं तकर निर्लिप्त सूफियाना अंदाज मे मैथिलत्व ताकि पायब कने विजातीय टाइपक काज थिक। एहन पानि के डंगबितथि!

मैथिली मे गोपीचन्द गाथाक लोकप्रिय होयब अनेक कारण सँ बहुत महत्त्वपूर्ण अछि। ऐतिहासिक महत्व एहि ल' क' छैक जे चौरासी सिद्ध लोकनि मे सँ तीन-तीन गोट सुपरिचित सिद्ध एहि गाथाक पात्र छथि, गाथा मे हुनका लोकनिक क्रिया-कलापक वर्णन भेल अछि। एहि तरहें एहि गाथा कें मैथिलीक प्राचीन गाथा सब मे सँ एक अवश्ये मानल जेबाक चाही। दोसर एक विशेषता थिक जे आध्यात्मिक विषयवस्तु भेने एहि गाथाक स्वभाव मैथिलीक आन समस्त गाथा सँ नितान्त भिप छैक। वज्रयानी सिद्ध लोकनिक अनेको विचार, अनेको मान्यता अत्यन्त सरलतापूर्वक आम जनक भाषा मे एहि ठाम व्यक्त भेल अछि। तेसर बात जे जेना सिद्ध लोकनिक स्मृति मैथिली संस्कृति मे पूरा घुलल-मिलल छैक ठीक तहिना एहि गाथाक अनेको पात्र मिथिलाक लोक-समाज मे पूर्ण परिचित, लोकोक्ति जकां, प्रतीक जकां प्रसिद्ध छैक। पहिल तँ स्वयं गोपीचन्दे। गोपीचन्द पर एक कहबी छैक जे 'गोपीचन के बाना धेलहुँ/ जीबा ले की की नै केलहुँ'। गोपीचन्दक दू पत्नी क्रमश: अदुना आ पदुना छली। गाथा मे पद अबैत छैक—'अदुना सँ ब्याह कइले पदुना कें पाओल दान'। बंगाल मे सेहो एहि दुनू बहीन, जे कोनो राजा हरिश्चन्द्रक पुत्री छलीह, यैह नाम प्रसिद्ध छैक, यद्यपि कि आन प्रान्त मे किछु दोसर नाम प्रचलित छैक। राजेश्वर झा मैथिल स्त्रिगण मे प्रचलित एहि कहबीक उल्लेख कयने छथि जे 'मिथिलाक लोक-जीवन मे अदुना आ पदुना लोकोक्तिक रूप मे बड़ प्रख्यात अछि। प्राय: सासु-पुतहु मे झगड़ा होइछ आ लोक जँ स्त्रीक कथा कें सत्य मानि माय पर दोषारोपण करैत अछि तँ माय कहितहि अछि जे अदुना-पदुनाक बात तों पतिअबैत छह! इत्यादि।'[6]

माय आ पत्नीक बीच मे पुरुषक दुविधाग्रस्त होयब, एहि लोकगाथाक एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग थिक तकर चर्चा आगां करब। गोपीचन्द भोग-विलास मे डूबल राजा छलाह। बहुत कठिनता सँ मैनावती हुनका संन्यास लेल तैयार कयने छली। गोपीचन्दक जे दीक्षा-गुरू भेलाह, हुनकर नाम मैथिली गाथा मे हड़ीफ वा हड़ीफा भेटैत अछि। ई हड़ीफ के छलाह ? पं. राजेश्वर झा लिखैत छथि—'मिथिलाक जीवन मे हड़ीफ शब्द कृतघ्न, दुष्ट, बद आदिक अर्थ मे प्रयुक्त होइछ। एहि शब्दक उद्‌भवक आधार गोपीचन्दक गाथा थिक। प्राय: गोपीचन्दक प्रति कठोर व्यवहारक हेतुएं कृष्णाचार्य (कान्हपा)क ई नाम समाज मध्य विख्यात भेल हेतनि।'[7] राजेश्वर झाक तथ्य मे एहि ठाम त्रुटि छनि। हड़ीफ वा हड़ीफा कान्हपाक नाम नहि छलनि, जालन्धरनाथक नाम छलनि। प्राचीन नाथ-साहित्यक विभिप स्रोतक अध्ययन क' क' डॉ. शशिभूषण दासगुप्त अपन पुस्तक मे कहलनि अछि जे जालंधरनाथक प्रचलित नाम हाड़ीपा वा हाड़ीसिद्ध छलनि—'Jalandharpa or Hadisiddha iniciated King Gopichand to the Yogic order.'[8] गोपीचन्दक दीक्षा-गुरु जालंधरनाथ रहथि। बंगाल मे प्रचलित एहि जनविश्वास, जकर उल्लेख प्राचीन नाथ-साहित्य मे सेहो अनेको ठाम भेल छै, के उल्लेख डॉ. दासगुप्त करैत छथि। तदनुसार नाथ-संप्रदायक आदिगुरु शिव छलाह, जिनका सँ कुल्लम दुइये गोटे दीक्षित रहथि—मीनपा वा मत्स्येन्द्रनाथ तथा दोसर जालंधरनाथ। मीनपा वा मीननाथ सँ गोरखनाथ दीक्षा लेलनि, जकर लंबा कथा गाथा मे आयल छैक। गोरखनाथक शिष्या गोपीचन्दक माय मैनावती छलीह। जालंधरनाथक प्रमुख शिष्य भेलखिन कान्हपा अथवा कृष्णाचार्य। गोपीचन्दक गाथा सँ संकेत भेटैत अछि जे जालंधरनाथ वा हाड़ीपा आ कान्हपा एक्कहि क्षेत्र मे, प्राय: संग-संग रहैत रहथि। प्रसंग अछि जे अपन माइक मुँहें हाड़ीपाक प्रशंसा सुनि-सुनि क' जखन विलास मे डूबल राजा गोपीचन्द अकच्छ भ' गेल तँ हाड़ीपा कें गिरफ्तार कए, तरहरा खूनि जीवित गड़बा देलनि। ओहि परिस्थिति मे कान्हपाए छलाह जे रातुक अन्हार मे तरहरा सँ माटि निकालि हाड़ीपा कें जिन्दा बाहर कयने छलाह।

गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह एवं अन्य प्राचीन स्रोतक आधार पर डॉ. दासगुप्त प्रमुख नाथ-गुरु लोकनिक कैक गोट सूची प्रस्तुत केलनि अछि। एहि मे सँ एक सूची हुनका लोकनिक परवर्ती अधिवासक स्थिति पर प्रकाश दैत अछि। तदनुसार आठ मार्ग-प्रवर्तक लोकनि आठ दिशा मे जा क' वास लेलनि। ताहि मे गोरखनाथ पूर्व दिशा मे जगपाथपुरीक वन-प्रान्त मे, जालंधरनाथ उत्तर दिशा मे ज्वालामुखीक वनप्रान्त मे, नागार्जुन दक्षिण गोदावरी नदी-तटक वन मे, दत्तात्रेय पश्चिम मे सरस्वती नदीक तटीय वन मे। तहिना देवदत्त दक्षिण-पश्चिम, जड़भरत उत्तर-पश्चिम, आदिनाथ

मध्यदेश (कुरुक्षेत्र) तथा मत्स्येन्द्रनाथ दक्षिण-पूर्व मे समुद्रतटीय कोनो वनप्रान्तक अधिवासी भेलाह। एहि सँ स्पष्ट भ' सकैत अछि जे गोरखनाथक शिष्या होइतहु अपन पुत्रक शुभेच्छु मैनावती जालंधरनाथ सँ गोपीचन्द कें दीक्षा किएक आ कोना दियौने हेथिन।

एक सूची नौ नाथक अछि, जिनका लोकनि कें मृत्युंजय मानल गेलनि अछि आ विश्वास कयल जाइछ जे ई लोकनि आइयो विद्यमान छथि। एहि सूची मे छथि—गोरक्षनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, चर्पटनाथ, मंगलनाथ, घूगोनाथ, गोपीनाथ, प्राणनाथ, सुरतनाथ आ चम्बानाथ। डॉ. दासगुप्त लिखैत छथि—'These Naths are believed to be immortal demigods and preacher of the sect for all ages, and it is also believed that they are still living in the Himalayan region ; some times they are regarded as the guardian spirits of the Himalayan Peaks.'[9]

मैथिली लोक-समाज मे मैनावती कें आदर्श माइक दरजा देल जाइछ। ई जनविश्वास अछि जे मैनावती चिर अमर छथि, जेना पौराणिक साहित्य मे अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान आदि कें चिर अमर मानल जाइत छनि। हुनकर अवदान छनि जे शीर्ष यौगिक साधनाक पथ पकड़ा क' ओ अपन पुत्र गोपीचन्द कें सेहो चिर अमर बनौलनि। गाथा मे वर्णन अबैत अछि जे पति राजा माणिकचन्द सँ मैनावतीक संबंध कटु छलनि। हुनकर व्यक्तित्व मे जे नारीत्वक तेज रहनि, एकरा स्वाभाविको कहल जा सकैछ। हजार वर्ष बाद आइयो भारतीय परंपरित पुरुष नारीक सतेज व्यक्तित्व कें स्वीकार करबा योग्य नहि बनि सकल अछि, से हमरा लेकनि अपन चतुर्दिक देखिते छी। गाथा मे पद अबैत छैक—

राजा राज करै, भोगइ सुख रजधानी अंदर
मैना के घर बान्हि देल फरुसा के अंदर
राजा राज करै, नाना पदारथ खाये
मैनावती चरखा काटि जीवन बिताये

फरुसा अथवा फरुसानगर राजधानी सँ दूर ओहि स्थानक नाम थिक जतय मैनावती एकाकी रहि चरखा काटि क' अपन जीवन गुदस्त करैत छलीह। आगूक कथा अछि जे माणिकचंदक मृत्युक दिन लगीच आबि गेल। सब किछु बूझि-समझि मैनावती पति कें सुझाव देलनि जे ओ महाज्ञानक दीक्षा हुनका सँ ल' लेथु, मृत्यु सँ बचि जेताह। मुदा राजा अपन पत्नी सँ दीक्षा लेबाक हेतु तैयार नहि भेला। नियत समय पर यमदूत राजाक प्राण लेबय आयल मुदा मैनावती अपन प्रभाव सँ ओकरा वापस हेबा लेल बाध्य क' देलनि। ई प्रसंग लंबा चलैत छैक। जेना सरकार मे टोपी

ऊपर टोपी होइत छैक तेहने नियम प्राय: यम-व्यवस्था मे सेहो छैक। अन्तत: सब कें जखन वापस घुरय पड़लैक तँ यमराज स्वयं पहुँचला आ मैनावतीक परोक्ष मे प्राणहरण क' घुरि गेला। लगले मैनावती कें बुझबा मे अयलनि आ ओ अपन योगबल सँ यमपुरी पहुँचि भारी अफरातफरी मचा देलनि। यमराज आदिशिव लग पहुँचला मुदा ओतहु पंचैती नहि भ' सकलनि। मैनावतीक एक तर्क रहनि जे हुनका-सन स्त्री कें संतान एखन धरि नहि भेलनि अछि तँ पतिक मृत्यु कोना उचित ठहराओल जा सकैत अछि? गाथानुसार, तखन समस्त देवतागण गोरखनाथक शरणागत भेलाह। गोरखनाथ निर्णय देलखिन जे मेनावती हाड़ीपा सँ ब्रह्मज्ञानक दीक्षा ल' लेथि, ततबे सँ हुनका तेजस्वी पुत्र भ' जेतनि। वैह पुत्र भेला गोपीचन्द।

अठारह वर्षक अवस्था मे गोपीचन्दक विवाह भेलनि आ तकर बादक हुनक समय लगातार भोग-विलास मे डूबल रहलनि। एकठाम गाथाकार कलियुगक वर्णन करैत कहैत छथि—

कलिकाल मंदकाल टूटल सब असिया
परार धन परे खाय अपने रहु बसिया
राजा भये ना करे राज्य के विचार
पुत्र भये ना करे पिताक उद्धार
स्त्री भये ना करे स्वामीक अनुरक्ति
शिष्य भये ना करे गुरु के भक्ति

मैनावती साधिका छली, सामान्यत: जे गुण-विद्या सब परमहंसो कें अप्राप्य रहैत छनि, गुरु गोरखनाथक कृपा सँ ओहि दुर्लभ सम्पदाक ओ स्वामिनी रहथि। भोग-विलासक अंतिम परिणाम की होइत छैक, से भला हुनका सँ बेसी के बुझि सकैत छल, तें ओ अपन पुत्रक भविष्य कें ल' क' चिन्तित रहल करथि। माताक सिखावन कें पं. राजेश्वर झा एहि तरहें निबद्ध कयने छथि—'पुरुष केहन अधम आ नासमझ होइत अछि! बिनु किछु लेने ओ स्त्रीक सेवा-टहल करैत अछि तथा अपना अन्त:करणक अमोल महारस कें व्यर्थ गमाय मोहपाश मे आबद्ध भए ओकर अधीनता स्वीकार करैत अछि। स्त्री तँ ओ सिंहनी थिकी जे पुरुषक हाड़-मांस कें छोड़ि ओकर महारस कें पीबि ओकरा नीरस बना दैत छैक। पुरुष अपन हर, बड़द आ बीया सँ मानू जिनगी भरि आनक खेत जोतैत रहि जाइत अछि। केराक गाछ कें कीड़ा खा जाइक तँ ओहि मे केराक घौर कोना फुटतैक?'[10] मातृ-शिक्षाक पद गाथा मे एहि तरहें अबैत छैक—

विषम काल बन्दे मन के दिए ढाई
मन कें बान्हनहि बौआ सकल पदारथ पाई

संसार मांझ मन बड़ ढकरैत अछि
पिपरक पात सन हर घड़ी डोलैत अछि
मन राजा मन प्रजा मन माया फंदा
मन बान्हु तन चिन्ता सुन गोपीचन्दा।।

मुदा, मायाक प्रपंच कते भारी होइत छैक! मातृ-शिक्षाक विपरीत प्रभाव गोपीचन्द पर पड़ल। स्त्री-लोकनि ओकरा यैह समझौलकैक जे हाड़ीपा के जाल मे फंसलि मैनावती गोपीचन्द कें व्यर्थ मे कलंकित क' रहलैक अछि। क्रोध मे राजा तरहरा खुनबाय हाड़ीपा कें जिन्दा गड़बा देलक आ अपन माय के जे दशा केलक से तँ वर्णनातीत अछि। मैनावती कें ओ धधकैत ज्वाला मे फेकबा देलक, मुदा योगबली ओहि स्त्रीक साड़ियो धरि नै जरलै। बोरा मे बान्हि धार मे बहा देलक, तैयो नहि मुइलीह। परीक्षा लेबाक लेल हुनका केश-निर्मित पुल पर चलि क' नदी पार करय कहल गेल, छूरीक धार पर नंगटे पयरें चलबाओल गेल, भुस्साक बनल नाह पर चढ़ि अगम नदी पार करय कहल गेल। सब परीक्षा मे मैनावती सफल उतरलीह। आ अन्तत: गोपीचन्द कें बाध्य भ' क' हाड़ीपा सँ योगमार्गक दीक्षा लेब' पड़लनि। गोपीचन्द प्रतिश्रुत भेला—

एक सत्य, दुइ सत्य, तीन सत्य हरी
तोहर कहल जौं काटी महापापें मरी

आब वैह सब कथू गोपीचन्द सँ करेबाक पार गुरु हाड़ीपाक छलनि। हुनकर दुनू कान कें चीड़ि ओहि मे कुंडल पहिराओल गेल। कहल जाइछ जे कनफटा जोगीक आदिप्रवर्तन एही प्रकारें भेल छल। राज-पाट, घर-द्वार तँ छुटबे केलनि, भिक्षा मांगि भोजन आ कठिन साधना लेल जंगल-जंगल पहाड़े-पहाड़ बौआय पड़नि। एक प्रसंग अछि जे एक बेर बखत पर गुरु कें चिलम नहि पेश क' सकबाक दंडस्वरूप बारह वर्षक लेल गोपीचन्द कें एक वेश्याक घर बंधक बना क' छोड़ि देल गेल। ई सब यौगिक साधनाक कठिन मार्गक हिस्सा छल जकरा गोपीचन्द मनोयोगपूर्वक पूर्ण केलनि। अंत मे कहल गेलनि जे अपन पत्नी लोकनि कें माता कहि हुनका सँ भिक्षा मांगि आनथि। एहि प्रसंग मे स्त्रिगणक विलापक लंबा वर्णन गाथा मे आयल अछि। अन्तत: ओ एहू मे सफल भेला आ अपन सफल साधना सँ नाथपंथक प्रमुख साधक लोकनि मे सँ एक बनलाह। गोपीचन्द पत्नी सँ भिक्षा प्राप्त कय जखन आखिरी बेर नगर सँ प्रस्थान क' रहल छला ओहि कालक वर्णन अछि—

हाय हाय काने रानी धुला मे लेटाय
अदुनाक रोदने पखान गलि जाय
कानय नगरवासी राजा पड़ायल जाय

बालवृन्द युवा कानय आर शिशु माय
रानीक क्रन्दने नदी उठि भेल सागर
शाला मे कानय अश्व सहित कुंजर
शारि सुग्गा पंछी कानय ने करय अहार
दासी सब कानय राजा कहि हाहाकार।।

ध्यान देने हमरा लोकनि देख सकै छी जे सहज साधना, सूफी साधना आ नाथयोग साधनाक सम्मिश्रित रूप एहि गीत सब मे कते स्पष्टता संग व्यक्त भेल अछि।

एहि ठाम इहो चर्चा अप्रासंगिक नहि जे मैथिल संस्कृतिक बारे मे जे हमरा लोकनि गौरवपूर्वक कहैत रहल छी जे बाहरी प्रभाव सँ ई सैकड़ो बरस तक बचल रहल, सेहो गलत थिक। एकर तथ्य-सत्य-निरुपण विस्तापूर्वक हेबाक चाही। एहि ठाम तँ हमरा सूफी साधना मोन पड़ैत अछि जकर संबंध इस्लाम धर्मक संग अछि। इस्लामेक प्रभाव सँ बचल रहब आचार्य लोकनिक गौरवक प्रधान अभिप्राय थिक। हमरा लोकनि आँखि खोलि ताकी तँ वास्तविकता किछु आओर भेटत। बिहारी लाल 'फितरत' अपन पुस्तक 'आईना-ए-तिरहुत' (1883) मे 43 गोट मैथिल सूफी संत लोकनिक विवरण देलनि अछि आ जनश्रुति आ जनविश्वास मे बसल हुनका लोकनिक अकबालक वर्णन केलनि अछि। जखन कि ई उपैसम शताब्दीक अंतक बात थिक आ एहि मे तिरहुतक गनल-चुनल जिले टा कें शामिल कयल गेलैक अछि। कतेको सय बरखक अविरल परंपरा मे, दस्तावेजीकरणक अभाव मे कतेक एहन अकबाली लोकसब हेता जे विस्मृतिक गर्भ मे समा गेल हेता तकर अनुमानो लगायब कठिन अछि। मुदा सब क्यो जनैत छी जे एहन प्रश्न उठला पर आचार्य लोकनिक की उत्तर हेतनि। उत्तर हेतनि जे ओ लोकनि मुसलमान छलाह, अर्थात् मैथिल नहि छलाह। मुदा, जखन हमरा लोकनि पबैत छी जे हिन्दू मिथिलावासी लोकनिक पूजित देवता लोकनि मे मीरा साहेब, सैयद बालापीर आदि सेहो छथि, हिनका लोकनि पर लिखल ने केवल बहुतो मैथिली भक्तिगीत अछि अपितु महाकाव्यात्मक स्वभाव बला गाथा सेहो अछि, तखन तँ आचार्य लोकनिक यैह टा समाधान हेतनि जे ओ सब 'छोटका लोक' थिक, अर्थात् मैथिल नहि थिक। इतिहास साक्षी अछि जे सब तरहें एक राष्ट्रीय अभिज्ञान राखनिहार एहि मिथिला-भूमि कें हमर श्रद्धेय पुरखा लोकनि कोन तरहें खंड-पखंड, नष्ट-भ्रष्ट करैत रहला!

वास्तविकाता ई थिक जे परिस्थितिवश जखन धार्मिक अंतरण होइतो छैक तँ नव धर्म-धारणा मे दीक्षित लोक अपन पुरान धार्मिक परंपरा कें संग लेनहि ओहि नव धर्म मे प्रवेश करैत छैक आ से ओहि नव धर्मक परंपरा मे दुनू दिस सँ परिवर्त्तन घटित करैत छैक। ओकर परंपरा कें आदान करब, आ अपन परंपरा ओकरा प्रदान करब। एहि बातक पर्याप्त ऐतिहासिक साक्ष्य अछि जे मुसलमानी आक्रमणक समय जखन बहुतो रास एहन सम्प्रदाय सामूहिक रूप सँ मुसलमान भ' गेल रहैक जे तांत्रिक साधना मे विश्वास करैत छल, तँ इस्लाम कबूल केलाक बादो ओकर ई गुप्त तंत्र-साधना अनवरत चालू रहल। फीरोजशाह तुगलकक जबानाक एक वृत्तान्त भेटैत अछि जाहि मे एक एहन मुस्लिम सम्प्रदायक वर्णन भेल अछि जे तंत्र-साधक छल। एतय धरि जे निकट संबंधी महिला लोकनि कें भैरवी बना क' चक्रपूजा धरिक परंपरा मुसलमान लोकनि मे छल। विवरण भेटैत अछि जे तुगलक ओहि समस्त लोक कें फाँसी चढ़ा देलक। फाँसी अहाँ चढ़ा दियौ मुदा मनुष्यक वृत्ति आ स्वभाव कें नहि बदलि सकैत छिऐक!

मध्यकाल मे जोगी नामक एक जाति छल। ई लोकनि हिन्दू छलाह। मुदा धीरे-धीरे मुसलमान होइत गेलाह। मिथिला मे एहि जातिक बसावट एक नीक संख्या मे छल, से बुकाननक रिपोर्ट सँ पता लगैत अछि। कबीरक बारे मे एक अनुमान इहो कयल जाइत छनि जे एही जोगी सम्प्रदायक कोनो परिवार मे हुनकर जन्म भेल रहनि। जोगी लोकनिक पेशा गायकी आ भिक्षाटन छल। बाद मे ई लोकनि बुनकरक पेशा अपनौलनि। देशक किछु भागक जोगी सम्प्रदायक बारे मे तँ इहो तथ्य अछि जे ओ लोकनि मुसलमान होइतो तांत्रिक देवी कालीक उपासक होइत रहथि। मंद जातिक सूची मे ज्योतिरीश्वर सेहो जोगी जातिक उल्लेख केलनि अछि। जोगीक बारे मे एक रोचक खिस्सा हजारीप्रसाद द्विवेदी अपन पुस्तक 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' मे एहि टिप्पणीक संग लिखलनि अछि जे 'एही सँ बूझल जा सकैत अछि जे हिन्दू रहितहु हिन्दू समाज मे हिनका लोकनिक की स्थान छल।' खिस्सा अछि जे 1921 ई.क जनगणना मे जखन एक हिन्दू जोगी परिवार स्थानीय प्रचलन आ आत्मचेतनाक वशीभूत 'जोगी'क स्थान पर 'योगी' लिखबाक आ अपन स्त्रिगणक नामक पाछू 'देवी' लिखबाक आग्रह केलक। गणना-लेखक ब्राह्मण छलाह। ओ कलम पटकि देलनि। बजलाह—'हम अपन हाथ कटा देब उचित बूझब मुदा 'जोगी'क स्थान पर 'योगी' नहि लिखि सकब, आ ने एकरा सभक स्त्रीक नाम मे 'देवी' लगा सकब।' ई मिथिलाक पड़ोसिया बंगालक घटना थिक जतय 'जोगी' कें 'जुगी' कहल जाइक। 'जोगी' मुदा एम्हर मैथिल लोकनि सेहो छलाह आ एहि सँ भिप स्थिति हुनको लोकनिक नहि भ' सकैत रहनि।

धर्मसम्प्रदाय आ मैथिली गाथा

मैथिलीक प्राचीन काव्याध्ययनक एक समस्या रहल अछि जे वर्चस्वशाली ब्राह्मणधर्मक प्रभाव मे जे कविता लिखल गेल, तकरे हमरा लोकनि कविता मानलहुँ। हमर आचार्य

लोकनि ववर्चस्वशालियेक पक्ष मे ठाढ़ बनल रहलाह। जखन कि 'लोक देवी-देवताक उदय ब्राह्मणवादक खिलाफ भेल छल। हिनक सभक पूजोपासना मे कर्मकाण्डीय आडम्बरक अभाव थिक हिनक अपन परिचिति सहजोपासना थिक।'[11] एहन अध्येता लोकनिक एहि ठाम सर्वथा अभाव रहल, जेहन मैथिलीक सखी-भाषा सब मे भेला। शशिभूषण दासगुप्त 1940 के दशक मे Obscure Religious cults : As back ground of Bengali Literature लिखलनि। 1946 मे एकरा कलकत्ता यूनिवर्सिटी छापलक। मिथिलाक आचार्य लोकनि एम्हर ई निर्णय करबा मे लागल छला जे विद्यापति शैव छला कि पंचदेवोपासक ? मने कहुना एहि ठामक वर्चस्वशाली धार्मिक सम्प्रदाय मे हुनका फिट क' ली। हम पहिनहु कतहु कहने छी एहि हिसाब सँ विद्यापति अपना जबानाक बागी छला आ हुनकर बगावत चलिये एहि दुआरे सकलनि जे शिवसिंह सनक रसिया मित्र हुनका भेटल रहनि। रसिया सँ मतलब अछि नवाचारी।

धर्मसम्प्रदायक उल्लेख शशिभूषण दासगुप्त केलनि अछि। ई छोटका लोक सभक सम्प्रदाय छल। अद्भुत बात ई अछि जे वज्रयान आ नाथसम्प्रदाय सँ अलग, मुदा दुनूक सत्व ग्रहण करैत ई एक टा तेसर सम्प्रदाय छल जे निर्गुणवादी छल। एकर आद्य प्रयोक्ता रमाई पंडित (दसम शताब्दी) 'शून्यपुराण' लिखलनि जे बांग्ला मे प्रकाशितो अछि। हालो मे हम उड़ीसाक ढेंकानाल मे स्थित शून्यमंदिरक दर्शन क' आयल छी, जतय महान शून्यवादी संत भीमा भोईक समाधि छनि। के छला भीमा भोई. अपन 75 हजार अनुयायी संग ओ जगपाथक पंडा सब सँ भिड़ान कयने छला जे एहि मंदिर मे मूर्त्ति राखि क' जे अहाँ सब अन्हेर मचौने छी, एकरा हँटाउ, ई शून्यमन्दिर थिक। एकर पर्याप्त साक्ष्य भेटैत अछि जे वास्तव मे जगपाथ मंदिर शून्यमंदिर (निर्गुणपंथी) छल। मुदा राजा वर्चस्वशाली सम्प्रदायक संरक्षक छला, भीमा भोईक आन्दोलन कें निर्ममतापूर्वक कुचलि देल गेल। एकर कथा हजारीप्रसाद द्विवेदी सेहो लिखने छथि। एहि रमाई पंडित के मिथिला-प्रवेश जहिया आ जेना भेल होअय, मुदा बुकाननक रिपोर्ट देखने पता लगैए, अठारहम शताब्दीक मिथिला मे जाहि देवपुरुष लोकनिक पूजा प्रचलन मे छलनि, मने निम्न वर्ग मे, ताहि मे एक राम ठाकुर सेहो छलाह। ठाकुर अर्थात् ईश्वर। एतय हुनका ईश्वरत्व प्रदान कयल गेलनि से स्पष्ट अछि। हुनकर अनुयायी लोकनिक गाथा आइयो गाओल जाइत अछि, जकर शैली 'भगैत' होइत अछि। निर्गुण परमात्माक आराधना एकर मूल मे छैक।

अख्यास कयने से हमरा लोकनि देखब जे एहि निर्गुणवादी धर्मसम्प्रदायक अनुयायी एम्हर मिथिलो मे भारी संख्या मे छला। आइयो छथि। बस मूल बात कें बिसरि गेल छथि। धर्मराज असल मे के छला से हुनका लोकनिक स्मृति सँ ओझल भ' गेल छनि। बस एतबे बूझल छनि जे हुनका घर मे धर्मराजक सेवा छनि। धर्मराज

पीड़ीक रूप मे पूजल जाइत छथि। हुनकर एक सहायक देवी-देवताक वर्ग छनि। 'चौदहो देवान' नामक ई देवपरिवार कहिया आ कोना अंतिम रूप सँ निर्धारित कयल गेला, तकर एक अलगे इतिहास भ' सकैत अछि मुदा हम तकर विस्तार मे नहि जायब। ई सब अलग-अलग सम्प्रदायक प्रधान पूज्य भ' सकैत छथि, जिनकर अलग-अलग गाथा छनि। समेकन ओही प्रकारें भेल जेना दशावतारक आ कि दशमहाविद्याक। ई दस किएक आ ओ चौदह किएक, तकर एक अलग अध्याय भ' सकैत अछि। मुख्य बात मुदा ई अछि जे बंगाली, ओड़िया आ असमिया अध्येता लोकनि जे किछु अंश बचा सकला अछि तकर सूचना हमरा लोकनि धरि पहुँचि पबैत अछि। हमरा लोकनि किछु नहि बचा सकलहुँ। जिनका हाथ मे कलम छलनि से एहि लोक कें पराया बुझलनि आ एहि विषय कें तुच्छ। ताहि दिनक बंगाल मे किछु होइत छल तँ मिथिला पहुँचैत छल, मिथिला मे किछु भेला पर बंगाल-आसाम। डॉ. जयदेव मिश्र अपन एक लेख मे तहियाक भौगोलिक अवस्थितिक चर्च करैत कहने छथि जे आसाम जेबाक लेल तहिया गंगो धरि कें पार करबाक आवश्यकता नहि छल।

धर्मसम्प्रदायक एक मैथिल उपाख्यान हमरा लोकनि कें ज्योति अथवा जोतिक पजियारक आ कारिख पजियारक गाथा मे भेटैत अछि। हिनका लोकनिक प्रभाव-क्षेत्र कहू कि पूजा-क्षेत्र बाँटल छलनि। पूर्वी मिथिला मे जोतिक प्रचलन मे रहला। पश्चिमी भाग हुनक बालक कारिख पजियारक अनुयायी भेल। कारिखक पुत्र कालिदास कें गंडक-पार मगह धरिक इलाका भेटलनि। कारिख आ जोतिकक गाथा पर तँ मूल पाठक अतिरिक्त शोध-ग्रंथ सेहो प्रकाशित भ' चुकल अछि। दुर्भाग्यवश ई शोध दुर्व्याख्या सँ मूर्च्छित अछि। जोतिकक गाथा पर सेहो मैथिली मे शोध भेल अछि से मुदा एखनहु अप्रकाशिते अछि। मूल बात ई जे एहि दुनू गाथाक भाषा मैथिली थिक। ई मैथिली महागाथा धार्मिक चर्या मे अपन निर्धारित विधि-विधानक संग एखनहुं प्रयोग मे अछि। एहना स्थिति मे एहि गाथा-रचना कें हमरा लोकनि मैथिली काव्य किएक नहि मानी ? खास क' क' तखन जखन हमरा अपन समाज मे प्रचलित जातीय कविताक स्वरूप कें चिन्हबाक हो।

जोतिक आ कारिख धर्मसम्प्रदायक अनुयायी छला। अपन प्रबल साधना आ संघर्ष सँ ओ ओहि पदवी कें हासिल केलनि जे हुनकर जीवन, गाथा मे गाओल जेबा योग्य भ' सकलनि। ओ धर्मराजक सेवक छला। जेना सत्यनारायण कथा मे वास्तव मे सत्यनारायणक कोनो कथा नहि रहैत अछि, तहिना धर्मराजक एहि भगैत मे धर्मराजक कोनो कथा नहि अछि। कथा अछि जोतिकक, आ कथा अछि कारिखक। मुदा महागाथा थिकनि धर्मराजक।

डॉ. महेन्द्रनारायण राम जाहि तरहें कारिख गाथाक प्रस्तुति कयने छथि, ओहि

मे दुनू कथाक संयोजन अछि। पृष्ठभूमि मे जोतिकक कथा अछि आ तकर बाद विस्तारपूर्वक तीन अध्याय मे कारिखक। जोतिकक जे कथा पूर्वी मिथिला मे प्रचलित अछि ताहि मे नायक जोतिक छथि आ हुनकर जीवन-कथा बहुत विस्तार मे आयल अछि। पश्चिमी मिथिलाक पाठ मे एहि विस्तारक अभाव अछि। जोतिक कोना धर्मराजक अनुयायी बनला, संक्षिप्त कथा मे एहि पर बहुत अल्प सामग्री देल गेल अछि आ सेहो अस्पष्टता सँ भरल। निर्विवाद ई बात धरि जरूर अछि जे ओ ठीक कबीरे जकाँ एक नि:संतान दम्पती कीर्त्ति पासवान के जोतल खेत मे भेटल रहनि। अपन कर्त्तव्य जानि कीर्त्ति ढोलहो दियौलनि मुदा ओहि बच्चाक दावा केनिहार क्यो आगाँ नहि आयल। अंततः ओकर पालन-पोषण ओही परिवार मे होअय लागल, जकर पेशा छलैक सुग्गर-पालन। दस बरखक भेला तँ जोतिक सुग्गर चरबय बरैला चर जाय लगला। ई बरैला चर जोतिकक गाम पुहपीपरक पड़ोस मे छल, जकर अवस्थिति अध्येता लोकनि नेपाल मे जनकपुर धामक आसपास मानैत छथि। गाथा मे जाहि ऐतिहासिक स्थान सभक उल्लेख भेल अछि से समस्तीपुर सँ पूर्णियाँ धरि सौंसे मिथिलाक अतिरिक्त आसामक कामरु-कामाख्या धरि पसरल अछि। गाथा मे आयल अछि जे नेनपन मे जखन जोतिक सुग्गर चरबय जाथि तँ ओहि ठाम करमी फूल, चिचहोरि, माटिक लड्डू, नरकटिक ध्वजा आ सितुआक झालि सँ धर्मराजक भजन करथि। फेर आयल अछि जे जुआन भेला पर ओ बारह बरखक कठोर तपस्या सँ ओहि ठाम धर्मराजक गहबर बनौलनि। एहि तपस्याक दिन मे हुनकर आहार होइन दूभिक रस। हुनकर तपस्या सँ ओ गहबर एहि तरहें शक्तिसम्पप भ' गेल जे ओहिठाम नि:संतान लोक संतान पाबय लागल, कोढ़िया काया पाबय लागल आ सभक मनोकामना पूर्ण होबय लगलैक। एहि गाथा मे आगू कथा अबैत अछि जे स्वयं जोतिक कें कुष्ठरोग भ' गेलनि आ केदली बोन मे बारह बरखक बनवास भोग' पड़लनि। एहि विपत्तिकाल मे हुनकर परिवार आ समाज धरि हुनकर संग छोड़ि देने रहनि। एहन विपरीतो परिस्थिति मे हुनकर संग देने रहनि मात्र एक टा पंछी, कोइली। चराचरक ई साहचर्य-प्रसंग एहि लोकधर्मक परिप्रेक्ष्य मे विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। समस्त प्रकारक लोक-सम्प्रदाय मे हमरा लोकनि देखब जे कतहु काग, कतहु कुकूर, कतहु कछुआ मनुष्यक संग देलक अछि, ओकर सहायक बनल अछि।

अपन कठोर तपस्या सँ अन्ततः जोतिक धर्मराज कें प्रसप क' ने केवल निर्मल काया प्राप्त केलनि अपितु ओहि समस्त चर-अचर कें नवजीवन प्रदान केलनि जे लोकनि विपत्तिक बेर मे हुनकर सहायता नहियो कयने रहथिन।

जे जोतिक नितान्त आरंभिके साधनाकाल मे एते प्रभावशाली भ' गेल छला जे हुनकर निरमाओल गहबर मे कोढ़िया कें काया भेटै छल, से अपने कोना कुष्ठग्रस्त

भ' गेलाह, ताहि संबंध मे पूर्वी आ पश्चिमी मिथिलाक पाठ मे दू नितान्त भिप-भिप कारण बताओल गेल अछि। पूर्वी पाठ मे अबैत अछि जे तीर्थयात्र-क्रम मे जोतिक कामरु कामाख्या गेल छला आ ओहि ठाम एक जोगिनक शाप सँ हुनकर ई दशा भेलनि। जोगिनक शाप-प्रसंग सँ हमरा लोकनि अनुमान क' सकैत छी जे भिप-भिप सम्प्रदायक बीच चलैत प्रतिस्पर्धाक ई नतीजा रहल छल होयत। कोढ़ियाक कायाधारी जोतिक कें एहि बेर जाहि ठाम एकाकी तपस्या करय पड़लनि, ओहि केदली बोनक अवस्थिति अध्येता लोकनि (प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, महेन्द्र नारायण राम आदि) आसाम मे मानलनि अछि। हमरा लोकनि देखैत छी जे बंगाल आ मिथिलाक गाथा सब मे ई केदली बोन बारंबार आयल अछि, कतहु देशनिकाला देवाक लेल तँ कतहु तपस्या करबाक लेल। पश्चिमी मिथिलाक पाठ मुदा एहि सँ भिप अछि। ओहि ठाम अबैत छैक जे स्वयं धर्मराज ब्राह्मणक भेस धय जोतिकक परीक्षा लेबय एलखिन। जोतिक ने हुनका चीन्हि सकला आ ने हुनकर सम्मान क' सकला फलस्वरूप शापक शिकार भेला। एक पाठ मे कारण इहो बताओल गेल छैक जे उसराडीह मे छप्पन करोड़ देवी-देवताक वास छलनि, ताहि डीह कें जोतबा मे जोतिक 101 हर आ हरबाह ल' क' भीड़ि गेला, से स्वयं धर्मराजे कें नहि देखल गेलनि आ ओ हुनका शापित क' देलखिन। कहब व्यर्थ जे एहि पाठ मे ब्राह्मणधर्मक जटिल मिलावट सोन्हियायल छैक जे भयंकर रूपें एकर मूल पाठ कें दूषित कयने छैक। ई दूषणता कतेक भयानक छैक तकर अनुमान हमरा लोकनि एही सँ क' सकैत छी जे मूलतः धर्मराजक अनुयायी लोकनिक जे गाथा थिक, तकरा अध्येता लोकनि सूर्योपासनाक गाथा बूझि लेलनि अछि। एना किएक भेल ताहि पर जँ माथ लगाबी तँ मैथिली क्षेत्रक विद्वत्ताक भीषण दरिद्रता सामने अबैत अछि। कारिख-गाथा पर पी-एच.डी.प्राप्त डॉ. महेन्द्र नारायण राम एकरा सूर्योपासनाक गाथा मानैत छथि आ हुनकर देखादेखी हुनके अनुगमन करैत डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन सेहो सैह मानैत छथि। प्रमाण की ? प्रमाण यैह जे गाथा मे बारंबार इष्टदेवताक लेल 'दीनानाथ' शब्दक प्रयोग छैक आ लोकप्रचलित धारणाक अनुसार दीनानाथ सूर्यक नाम छियनि। एक। दोसर जे जोतिक कें कुष्ठ फूटल रहनि आ ओ बाद मे ठीको भ' गेल रहथि, लोकधारणाक मोताबिक ई चमत्कार मात्र सूर्ये टा क' सकैत छथि। जखन कि हमरा लोकनि देखैत छी जे धर्मराजक जतेक कोनो गाथा छनि—बेनीराम, उदय साह, हरिया-हरिनियां आदि, सबठाम धर्मराज कें दीनानाथ सेहो कहल गेलनि अछि। असल मे ओ जग्रनाथेक एक जीवंत रूप छथि, जे कि वास्तव मे निर्गुण, निराकार छथि।

लोक मे आ अध्येता मे भिपता होइत छैक, ई बात हमरा लोकनि कें कहियो नहि बिसरबाक चाही। लोक कें कोनो पी-एच ?डी ? नहि करबाक रहैत छैक। परंपरा

सब जुग मे आबि क' किछु-किछु नवीन प्रभाव ग्रहण करैत चलैत छैक आ वर्चस्वशाली धार्मिक सम्प्रदाय अनिवार्य रूप सँ एकरा प्रभावित सेहो करैत छैक। एकर विश्लेषणक खगता लोक कें नहि रहैत छैक। 'लोक'क समस्त मान्यता अग्रगामिये होइक सेहो क्यो मूढ़मतिये मानि सकैत अछि, प्रतिगामी वा समन्वयात्मक हेबाक संभावना सेहो ओहिठाम बराबर बनल रहैत छैक। मुदा ई सब चीज अध्येता कें जरूर देख' पड़ैत छैक। 'लोक'क आ अध्येताक वैचारिक स्तर भिप-भिप होइक, हमरा बुझने एकर खगता बराबर बनल रहतैक। मिथिला मे सेहो, मैथिली मे सेहो।

धर्मराज-गाथाक दू टा बात हमरा बहुत महत्त्वपूर्ण लगैत अछि। एक तँ धर्मराज, जिनका एहि गाथा मे कतेको नाम सँ संबोधित कयल गेल छनि। एक टा नाम दीनानाथ छनि। निरंजन सेहो कहल गेलनि अछि, दाता आ नारायण सेहो। विशेष ध्यान देबा योग्य एक बात ई अछि जे अधिकतर हुनकर नाम लैत काल 'निर्गुण' विशेषणक प्रयोग कयल गेल अछि। महेन्द्र नारायण रामक गाथा मे दीनानाथ नाम बहुलता मे आयल अछि। एकरा ओ सूर्यक पर्याय मानैत छथि। मुदा मुश्किल ई छनि जे जतय-जतय दीनानाथ आयल अछि तकर विशेषण रूप मे निर्गुण सेहो आयल अछि। साक्षात् दृश्यमान सूर्य जे कि वैदिक देवता छथि से निर्गुण कोना होथि? महेन्द्र जीक पाठ सँ किछु उदाहरण—'सुमिरन करै छी गे अपरा/ निर्गुण दीनानाथ के', 'परगट भेल निर्गुण दीनानाथ', 'बोली बोलै छै निर्गुण दीनानाथ', 'देलकै श्राप हे दोस/ निर्गुण दीनानाथ' आदि। कतहु-कतहु जँ धर्मराज शब्द आयल अछि तँ ओकरो पदवी 'निर्गुण धर्मराज'क रूप मे देल गेल अछि। गाथा बंदगीए एही ठाम सँ शुरु होइत अछि जे 'प्रथम बंदगी करै छी नारायण हौ/ निर्गुण धर्मराज के।' हमरा नहि लगैत अछि जे मैथिल अध्येता लोकनि मे प्रचलित मैथिली आन कोनो गाथा होयत जाहि मे सर्वशक्तिमान परमेश्वर कें निर्गुण कहल गेल होइक। कहबाक चाही जे तें ई प्रचलितो बहुत नहि भ' सकल अछि। ऋषि लोकनिक कहल छनि—एक: शब्द: सम्यक् ज्ञात: सुप्रयुक्त: स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति। प्रश्न अछि जे निर्गुण शब्द की ताहि कोटिक शब्द नहि थिक?

शशिभूषण दासगुप्त अपन पुस्तक मे ई पता लगेबाक पूरा कोशिश कयने छथि जे ई धर्मराज के थिका जे निर्गुण छथि। यमराज आ युद्धिष्ठिर मे तँ हुनका ओ लक्षण सब नहिये भेटलनि, महादेव शिव मे जँ भेटबो केलनि तँ सेहो बड़ थोड़। बेसी बौद्ध (वज्रयान) मे भेटलनि, किछु नाथो मे। एतय धरि जे सूफीक मान्यता धरि एतय तक चलि आएल छल। असल मे धर्मसम्प्रदाय एक सर्वचिन्तन-सम्पप सम्प्रदाय छल, जकर सृष्टि-उद्भव दर्शन धरि अपन स्वतंत्र छल जे ब्राह्मणधर्मक मान्यता सँ सर्वथा भिप छल। ओहिठाम सृष्टि प्रजापति ब्रह्मा द्वारा नहि भेल छैक, निरंजन द्वारा मायाक

सहयोग सँ भेल छैक। 'निरंजन' एहन शब्द थिक जकर प्रयोग सिद्धो लोकनिक काव्य मे भेल अछि आ आगू कबीरो धरिक काव्य मे। रमाई पंडित बीच मे छथि जे 'शून्यपुराण' लिखलनि। हुनकर परमात्मा धर्मराज छथिन। नाम देने छथिन—धर्म ठाकुर। 'ठाकुर' ताहि अर्थक नहि जेना विद्यापति ठाकुर, बच्चा ठाकुर आदि। ठाकुर मने पैघ, विशाल, मालिक। रामकृष्ण परमहंसो कें लोक ठाकुरे कहनि। मिथिलो के गाम सब मे ठाकुरबाड़ी अछि। मिथिला मे जे एखनो ठाकुर लोकनि छथि से अपना जीन मे कोनो पैघ स्मृति कें रखने छथि। धर्म ठाकुर जीव रूप मे कहियो धरती पर अवतार लेने रहथि कि नहि, एहि विषय मे ई गाथा सब मौन अछि। हुनकर अपन जीवनक कोनो कथा एहिठाम नहि छनि, असल अछि ओ धर्मचर्या, ओ सिद्धान्त जकरा ओ अपन जीवन सँ सिद्ध कयने छथि। धर्म ठाकुरक शक्ति-रूप शीतला देवी कें मानल गेलनि अछि, जे हुनकर पत्नी रहथिन। मिथिलाक गाम-गाम मे शीतलाक पूजा एखनो कयल जाइ छनि। ओ आब महामारी सँ लोकक रक्षा करै वाली देवी मानल जाइत छथिन।

बांग्ला मे मध्यकालीन साहित्यक एक पैघ भंडार धर्म-साहित्यक नामें अभिहित छैक, जकर आदिकृति 'शून्य पुराण' कें मानल गेल अछि। 'धर्ममंगल' शृंखला मे अनेक कवि अनेक कविता-संग्रह बनौलनि। 'धर्मपूजा-विधान' लिखल गेल, 'गोविन्दविजय' लिखल गेल। एहि सभक उद्धार केलनि वैह महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री (1853-1931), जे वर्णरत्नाकरक उद्धारक सेहो रहथि। डॉ. दासगुप्त लिखने छथि, म.म. हरप्रसाद शास्त्री अपन एहि विषयक अध्ययन कालक समय मे साफ-साफ ई अनुभव कयने छलाह जे बंगालक पंडित लोकनि धीरे-धीरे धर्मठाकुर कें शैव आ वैष्णव देवताक रूप देने चलि जा रहल छथि। आगू कोना की भेल होयत तकर हमसब सहजहि अनुमान क' सकैत छी। बंगालक तँ ई सौभाग्य रहलैक जे एहि प्रकार वैकल्पिक धर्म-साधना सँ उद्भूत साहित्यक रक्षा कयल जा सकल। मिथिला मे महामहोपाध्याय लोकनिक तँ कोन कथा, छोटो-मोट कोनो पंडितक ध्यान एहि दिस नहि गेलनि। आइ मिथिलावासी, जिनका घर मे धर्मराज पूजित छथिन, एहि बातक लेल अचंभित भ' सकैत छथि जे ओ लोकनि ओही वैकल्पिक देवताक पूजा क' रहल छथि, जिनका पर हुनकर हजार बरख पुरान पुरखा लोकनिक विश्वास रहनि आ से तेहन अखंड जे ब्राह्मणधर्मक तमाम वर्चस्वकामी प्रयासक बादो ई धर्मसाधना अपन अस्तित्व बचा क' राखि सकल छल।

दोसर जे महत्त्वपूर्ण वस्तु अछि से थिक एकर पूजाविधान। एहि विधान कें ल' क' कि एकर कोनो आनो पक्ष ल' क' मैथिली मे कोनो प्राचीन पाण्डुलिपि उपलब्ध नहि अछि। तें संक्रामक समायोजनक मारि सहैत जतबा जे ई अपन प्राचीन

परंपरा कें मौखिक रूप मे बचा क' राखि सकल अछि, तकरे टा हमरा लोकनि विधान-रूप मे प्रचलित देखि सकैत छी। एहि मे प्रमुख अछि जे ई पूजा कखनहु व्यक्तिगत नहि हो। कोनो एक्को व्यक्तिक प्रयोजनार्थ जँ एकर एकर आयोजन भ' रहल हो तँ एहि मे सौंसे समाज कें शामिल क' लेल जाइछ। सामूहिक रूपें भजन गाबि क' चर्या होइछ, ओहि मे खास लय आ संगीतक संग गाथा आ भजन गाओल जाइछ। जते लोक एहि मे शामिल भेल रहैत छथि, सबहक बेराबेरी गोहारि होइछ। अकारण नहि थिक जे डॉ. दासगुप्त लिखलनि, सहजयानी महामुद्रा साधना अथवा वज्रयोगक कोनो प्रभाव बचल हो कि नहि बचल हो, किन्तु ओकर क्रिया-संग्रह आदि वज्रयानी ग्रन्थ मे उपलब्ध तांत्रिक अनुष्ठान-पद्धति सँ बहुत मिलैत-जुलैत अछि। हुनका लोकनिक जे चक्र-साधना विधि छलनि, तकरो पर्याप्त अवशेष हम सब एहि पद्धति मे देखि सकैत छी। हजार वर्ष पुरान वज्रयानी पूजा-पद्धतिक आइ जे रूप, तमाम मिलावट आ समन्वयन के बादो, प्रचलित अछि तकर विवरण युवा लोकविद रामबहादुर रेणु एहि शब्द मे दैत छथि—'आयोजनक समय भगैतिया लोकनि कोनो पवित्र स्थान कें कार्यक्रमक हेतु चुनि क' गोलाइ मे बैसि जाइ छथि। पंजियार गोलाइक अंदर बैसैत छथि। आयोजनक दौरान जाहि व्यक्तिक शरीर मे वर्णित देवपुरुषक प्रवेश होइछ, ओ भगता कहबैत छथि। भगैत शुरू भेला पर भगैतिया लोकनि बीच-बीच मे अपन कान मे अंगुरी द' क' बहुत ऊंच स्वर साधै छथि, जाहि सँ एक विशिष्ट प्रकारक मुद्रा बनैत अछि। गायनक क्रम मे भगताक शरीर मे वर्णित देवपुरुषक प्रवेश होइछ तँ भगताक शरीर कांपय लगैत अछि, क्रियाकलापक छटा अलौकिक आ असामान्य भ' जाइत अछि। ओ देवपुरुषक रूप मे अपन व्यवहार अभिव्यक्त करए लागैत छथि। हुनका आगू मे धूप-दीप, अक्षत-बेलपात, फल-फूल-मधुर आदि राखल रहैत अछि। उपस्थित जनसमूह कें भगता भभूत, तुलसीपत्र, बेलपात, फूल आदि द' क' कल्याणक आश्वासन दृढ़तापूर्वक दै छथि। कोनो-कोनो भक्त सँ ओ अपन अप्रसपता सेहो व्यक्त करै छथि आ कानय सेहो लगै छथि। उपस्थित दर्शक ओहि काल भगता कें अपन देवपुरुषक रूप मे देखै छथि। मानल जाइछ जे भगताक लेल योग आ उपासनाक विशेष महत्व होइत अछि। देवपुरुषक रूप मे अपन विश्वसनीयता देखेबाक हेतु भगता अपना मुँह मे आगिक गोला ल' लै छथि, दीपक आंच मे अपन जीह तपाबै छथि, हाथ मे अंगोरा ल' क' खेलै छथि, आगि पर चलै छथि। एहि प्रकारक अद्‌भुत ओ रोमांचक क्रिया प्राय: प्रत्येक भगैत-कार्यक्रम मे देखबा मे अबैत अछि। ई सब बात असत्य प्रतीत भ' सकैछ, मुदा एहन होइत अछि। ई चाहे ओहि व्यक्तिक शारीरिक-मानसिक कारण सँ होइत हो अथवा आन कोनो अज्ञात कारण सँ।'[12]

अपन भ्रमण-क्रम मे बुकानन, पूर्णियां जिलाक एक गाम नाथपुर मे राहुक भगैतक आयोजन देखने छलाह तकर बहुत रोचक वृत्तान्त ओ अपन रिपोर्ट मे लिखने छथि। लिखने छथि, भगता जखन आगि पर निर्द्वन्द्व भाावें चलब शुरू केलनि, छोटका मे सँ क्यो एक व्यक्ति ब्राह्मण दर्शक सब दिस अंगुरी देखबैत बुकानन कें कहय लगलनि—हिनका सब के कोनो देवता मे छनि एते पावर ? क्यो एना क' क' देखेता ? 'It was evident however, that the whole spectators, who were numerous, believed in the influence of this God, and at least all the Dosads and probably most of the others considered the interposition of the diety as what enabled the fellow to resist the effects of the fire, His followers exultingly challenged the Brahmans who were in my company to imitate this priest.[13]

डॉ. दासगुप्त अपन अध्ययन मे पौलनि जे शीतला देवी असल मे बौद्ध देवी हारीति छथि जिनकर नाम, बदलि क' हुनका धर्मसम्प्रदाय मे शामिल क' लेल गेल छलनि। दसम शताब्दी मे जखन रमाई पंडित एहि सम्प्रदायक संयोजन क' रहल छलाह, ओहि समय मे जनता मे प्रचलित तमाम तरहक अनुष्ठान, विश्वास, देवी-देवता, पूजा-पद्धति आदि कें एक नियमित शृंखला द' क' एहि मे शामिल क' लेने छला। आगू लोकधर्म बनि क' ई ने केवल बंगाल अपितु सौंसे पूर्वांचल मे पसरि गेल जाहि सँ मिथिला सेहो फराक नहि छल। हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे कर्णाट आ ओइनवार कालक ब्राह्मण निबंधकार लोकनिक लग मे कते भारी लक्ष्य रहल छल होयत आ ई निबंध-लेखन, व्यवस्थापन किएक निरंतरतापूर्ण प्रयासक संग जारी राखय पड़ल। तात्पर्य जे बौद्धधर्मक खात्माक बादो वज्रयानक सामूहिक पूजा-पद्धति ने केवल तहियाक मिथिला मे विद्यमान रहल, अपितु आइयो हमरा लोकनि धर्मराजक भगैत पूजा मे एकरा जीवन्त देखि सकैत छी।

एक प्रश्न लोकगाथाक साहित्यिकता ल' क' उठैत रहल अछि। मने लोकगाथा, लोकगीत, लोकवचन आदि साहित्य थिक आ कि नहि थिक। कमोबेश सब भाषा मे ई प्रश्न रहल अछि मुदा, मैथिली मे ई प्रश्न आतंककारी बनल रहल। सुनैत छी जे युगधर्मक प्रभावें आधुनिकबोध रखनिहार डॉ. जयकान्त मिश्र जखन अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास' लिखैत छलाह तँ ओकर एक भरिगर खंड लोकसाहित्य पर दिय' चाहैत छलाह। मैथिलीक आचार्य लोकनिक आतंक एतेक जबरदस्त छल जे चाहियो क' हुनका से नहि क' भेलनि। आब आधा शताब्दी बाद हुनकर ई किताब अंग्रेजी आ मैथिली मे अलग सँ प्रकाशित भेलनि अछि।

धर्मराजक गाथा जाहि शैली मे गाओल जाइत छैक ओ कहल जाइए—भगैत।

ई मिथिलाक अपन खास धार्मिक गायन शैली थिक, जकर भाषा थिक पूर्णत: मैथिली आ विषयवस्तु धार्मिक महापुरुषक चरित-वर्णन। गायन, नाट्य आ दर्शक—ई तीनू एकर अंग थिक जे अपन समान प्रभाव रखैत अछि। गद्य मे संवाद चलैत छैक आ पद्य मे मार्मिक वर्णन। मुदा ने गद्य गद्य सन होइत अछि ने पद्य छन्दोबद्ध, मुदा दुनू समान रूपें काव्यात्मक आ गेय। दुनू गाओले जाइत अछि। भगतिया दल के अगुआ पंजियार कहबैत अछि।'पंजीकार' संग एहि शब्दक संबंध हमरा लोकनि जोड़ि सकैत छी, मुदा एकर असल तात्पर्य थिक—अपना समयक मुख्य साधक। पहिनहि कहि आयल छी जे सामूहिक पूजा-उत्सवक ई शैली हजार वर्ष पुरान धर्मचर्याक एक धरोहर थिक। अपन लेखक समापन डॉ. रामबहादुर रेणु एहि शब्दें केलनि अछि—'भगैतक अध्ययन क' क' हमरा लोकनि अपन सांस्कृतिक धरोहर आ अस्मिताक पहचान मे एक आर कड़ी जोड़ि सकैत छी।'[14] से सत्ते। मिथिला देसक ततेक कड़ी सब टूटल-छिड़ियायल अछि जे आइ स्वयं एकर अस्मिते अलोपित अछि, एक-एक कड़ी कें जोड़ने बिना तँ कोनो टा तकनीक काज नहि आबि सकैत अछि।

डाँ महेन्द्र नारायण राम अपन पुस्तक मे रसशास्त्रक दृष्टि सँ एकर अध्ययनक एक प्रयास केलनि अछि। स्वयं लोकमहाकाव्यक दृष्टि सँ एकर सर्वांगीण अध्ययन पहिने भ' जाय सेहो एखन अवशेषे अछि। तखनहु कोनो अध्ययनक तँ अपन महत्व होइते छैक। महाकाव्यक मूल स्वभाव होइछ व्यापकता। ओ जीवनक समस्त अंगोपांग कें अपना तरहें परिभाषित करैत चलैत छैक। यैह कारण थिक जे कबीरक बानी मे जे प्रतिरोधी तेवर हमरा लोकनि देखैत छी, से एहि ठाम नहि भेटैत छैक। नहि भेटब सकारण थिक। एहि ठाम ओकर जरूरति नहि छैक। जीवन मे मात्र संघर्षे टा नहि होइत छैक। संघर्षक स्वभाव थिक गतिमयता। मुदा जीवन मे स्थैर्यक लय सेहो होइत छैक जे बानी कें गाथा-रूप मे व्यापकता दैत छैक। एहि ठाम आबि क' समस्त प्रकारक भाव-विचार उदात्तीकृत भ' जाइत अछि। से कोना, तकर दृष्टान्त हेतु हम धर्मराज-गाथाक एक पाँती एतय उद्धृत करब। जोतिक कें छलियारूप ब्राह्मण द्वारा देल गेल श्रापक प्रसंग थिक। हमरा लोकनि सहजहि अनुमान क' सकै छी जे ई प्रसंग ब्राह्मणधर्म द्वारा लोकधर्म कें छल-बलपूर्वक आहत-विहत करबाक एक दारुण प्रसंग थिक जे 'लोक'क स्मृति मे एखनो ओहिना खचित छैक। ब्राह्मणक द्वारा देल गेल श्राप मे घृणाक ओ अस्सल तीक्ष्णता नहि छैक, जे कि वास्तव मे हृदय मे रहैत छैक। महाकाव्य एकरा उदात्तीकृत क' देलक अछि। शिष्ट साहित्ये टा मे केवल उदात्तीकरण होइत हो, एहनो बात नहि होइछ। 'लोक'क सेहो अपन उदात्तीकरण होइत छैक। लय एतय घृणाक तीक्ष्णता कें धोइ-धोखारि क' शीतल क' देलक अछि। ब्राह्मण श्राप दैत छैक—

मैया तोरा रोबतौ रे जोतिक
तिरियो रोबतौ कोबरा घर मे आब
बारहे बरीस रे जोतिक केदली बोन रहिहें
ओतहि बनिहें दीबरा के भीर।

भगैत गायन मे दर्शक सेहो प्रस्तुतिक एक अनिवार्य अंग होइत अछि। दर्शक सुनैत अछि आ ओकर आँखि पनिया जाइत छैक। आँखिक ई पनियायब दू कारण सँ बहुत विशेष अछि। एक तँ ई जे एकरा पाछू युग-युगान्तरक पुरखाक स्मृति छैक जे कोन-कोन भोग भोगि क' ओ लोकनि आइ हिनका लोकनिक भेस मे एतय प्रकट छथि। दोसर जे धर्मक अपन मार्ग पर हमरा कोना डटल रहबाक चाही, तकर संकल्प सेहो भीतर कतहु नुकायल अछि। हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे एहना प्रकारक धार्मिक लोकक आचरण ओहि लोकक आचरण सँ सर्वथा भिप अछि जकरा लेल धर्म केवल एक टा व्यवसाय छैक। आ एहि व्यवसाय कें लाभकारी बनौने रखबाक लेल समस्त प्रकारक छल-छ्प्र छैक।

धर्मसम्प्रदायक धार्मिक अवधारणाक पता पेबाक लेल दू टा विधान टा पर गौर क' ली तँ दृश्य साफ भ' जाइत अछि। एक छांकी जनार, दोसर सुसार। 'छांकी जनार' एक खास विधान थिक जे कोनो भक्त अपन कबुला पूरा हेबा पर उत्सवस्वरूप भगैतक क्रम मे करैत अछि। एहि विधान मे छैक जे धर्मराजक समक्ष भक्त पांच जातिक एक एक व्यक्ति कें भरिपेट दूध पियाबैत अछि। ई पांच जाति कोन-कोन, तकरो नियम छैक। चमार, दुसाध, कमार, यादव एवं मुसलमान। ब्राह्मणधर्मक विधानानुसार जँ पूजा होइत तँ ओ दूध पाथरक मुरूत वा शिवलिंग पर ढारल जाइत। तहिना 'सुसार' भगैतक अंत मे होइत अछि। सुसारक अर्थ थिक—समापन। एकर नियम छैक जे धर्मराजक भगैत तखनहि पूर्ण मानल जा सकैत अछि जखन अंत मे मीरा साहेब (मुसलमान देवपुरुष)क गाथा गाओल जायत। मीरायन गौने बिना सुसार नहि भ' सकैत अछि। मानवकेन्द्रित धर्मविधान जँ होयत तँ स्वाभाविके जे ओहि मे साम्प्रदायिक सद्भाव पाओले जायत।

शिष्ट समाजक बनाओल एहि सामाजिक हृदयहीनताक प्रति गाथाकार सेहो साकांक्ष अछि आ अवसर एला पर एकरा देखार करबा मे संकोच नहि करैछ। चराचर जगतक संग जे एहि ठाम गहन तादात्म्य देखैत छी तकर एक कारण कतहु इहो अछि। छलिया ब्राह्मण सँ शापित भ' क' कुष्ठ फूटल शरीर लेने जखन जोतिक अपन समाज सँ सहायता मंगैत अछि तँ क्यो सहायता देबा लेल तैयार नहि होइत अछि, एतय धरि जे ओकर सहोदरा बहीन आ सर-कुटुम्ब धरि नहि। एहनो परिस्थिति मे मुदा जोतिकक

पालित कोइली ओकर संग दैत अछि। गाथा मे कोइली जे वचन जोतिक कें कहैत अछि, से सहृदय हृदय कें हिला देब' बला छैक—

बोन केरी हम पंछी छी हौ गुरू
हम्में नै छी लोक आ कि हौ मनूख
बिपती के बेर नै हम छोड़बह हौ गुरू
जैबह तोरे संग केदलीबोन

मनुक्ख आ पंछी मे की भेद होइत छैक, तकर मर्म कें एहि ठाम सँ उठा क' हमरा लोकनि गुनैत रहि सकैत छी। मनुक्ख कृतघ्न, विश्वासघाती, हृदयहीन भ' सकैत अछि, मुदा पशुपक्षी नहि।

धर्मराज-गाथा मे लोक-स्वभावक किछु बहुत अद्भुत झाँकी सब चित्रित भेलैक अछि। लोक-स्वभाव मे काल आ कालातीत के बीचक अन्तर मेटायल सन देखायत। ओतय विगत आ आगत संग-संग विहार करैत अछि। पुरखा लोकनि हुनका सभक दैनिक जीवनक एक अनुपस्थित भागीदार जकाँ होइत छथिन। बनवास भोगबाक लेल जोतिक जखन केदलीबोन पहुँचला तँ शवासन लगा क' दंड भोगबाक निर्णय लेलनि जाहि सँ दिबराक एक पैघ भीर बनि सकय। कोन दिशा मे माथ क' क' ओ शवासन लगबथु, गाथावाचक पंजियार जोतिकक मोनक असमंजसक चित्र घिचैत छथि। जोतिक सोचैत छथि—

उत्तर सिरमा करै छी, गंगा कहत लात मारैए
दछिन सिरमा करै छी, राजा भीमसेन कहत लात मारैए
पुरुब सिरमा करै छी, दीनानाथ कहत लात मारैए
पश्चिम सिरमा करै छी, मीरा कहत लात मारैए

अभिप्राय जे ओइ-ओइ दिशा मे ओ-ओ महामान्य लोकनि छथिन जे जोतिकक पूज्य छथि। एहि मे सँ किनकहु लेल ओ अमर्यादित आचरण नहि क' सकैत छथि। गंगा एक नदी छथिन, ओ दक्षिण दिस बहै छथि। राजा भीमसेन एहन पूज्य छथि जे गाथाक बंदगी धरि मे हुनका प्रणाम कयल जाइत छनि। ओ उत्तर हिमालय दिस रहैत छथि, जरूरी नहि जे सदेह रहैत होथि, कारण देहक अर्थ मे देह जकरा कहल जाय से तँ गंगो कें नहि छनि, ओहो एक नदिये छथि। हिमालयक राजा भीमसेन निश्चिते हस्तिनापुरक भीमसेन सँ अलग व्यक्ति रहल हेताह। भीमसेनक विषय मे बुकानन अपन रिपोर्ट मे लिखलनि अछि—'Bhimsen is a very common object of worship in Mithila, and still more so in Nepal. The Rajputs and higher shudras seem to have the utmost regard for his memory,

and songs concerning him are in everyone's mouth.'[15] मीरा मुसलमान छथि, पूज्य एतेक छथि जे हुनकर गाथा गाओल जाइत छनि। शुद्ध मैथिली लोकगाथा। हमरा लोकनि लोक-स्वभाव कें चीन्हि सकै छी जे एकरा लग पूज्य हेबाक लेल स्वधर्म आ परधर्मक कोपहु विचारो टा नहि अछि। मतलब, पूज्य लोक हेबाक लेल परधर्मियो कें ओतबे अधिकार छैक जतबा स्वधर्मी कें। हमरा लोकनि चीन्हि सकै छी जे मिथिलाक धार्मिक समझ के असली दायरा कतय छैक आ ब्राह्मणधर्म सँ ई कोन-कोन अर्थ मे भिप अछि। दीनानाथ पूब देस मे रहै छथि। दीनानाथ अर्थात धर्मराज। एखनहु एक पैघ समुदायक स्मृति मे ई बात कायम छै जे पुरीक जगपाथमंदिर असल मे धर्मराजक मंदिर छनि। पूब मे सूर्य सेहो उगैत छथि। ओहो धर्मराजक तुल्य छथि कारण हिनक प्रताप तँ नित अनुभव होइए। लोकक स्मृति मे छैक जे धर्मराजक महिमा सूर्यो सँ अनन्त बड़ बेसी छनि। हमरा लोकनि मे सँ ओहि लोकक पीढ़ी एखनहु शेष नहि भेल हेतनि जे ई गीत सुनने हेता—

'खेलैत रहियै धूपैत रहियै रोपैत रहियै धान
मोनेमोन बिचारैत रहियै जेबै जगरनाथ धाम
बोलो भैया रामे-राम हौ भाइ
बाबा जे बिराजै ओड़िया देस मे।

ओड़िया देस अर्थात उड़ीसा, जतय जगपाथमंदिर अछि। पुरी कें एहि ठाम एहन देस कहल गेलैए जतय बाबा बिराजै छथि। सोचबा योग्य बात एहि ठाम ई अछि जे की कृष्ण कें मिथिला मे कहियो बाबाक दरजा भेटलनि? स्पष्ट अछि जे कहियो नहि। तकर एक पैघ उदाहरण विद्यापतिक गीत सब अछि जाहि मे कृष्ण एक चतुर, रसिक 'पुरुष' छथि। बाबा ओ किपहु नहि भ' सकैत छथि। बाबा भ' सकैत छथि धर्मराजे, जे पूब देस मे बसै छथि मुदा जिनका हमरा लोकनि अपन गोसाउनि-घर मे पीड़ी बनाय नितप्रति पूजैत छी। मुदा हमरा लोकनि दोसरो दृष्टान्त देखै छी। जे बाहर-बाहर पूरा कर्मकाण्डी छथि हुनको भगवतीघर मे धर्मराज अथवा हुनकर देवपरिवारक कोनो दोसर देवी-देवताक पीड़ी पुजाइत छनि। ई रोचक थिक जे ई सम्प्रदाय मिथिलाक तँ गह-गह मे पैसि गेल।

धर्मक कौल पूरा करैत जोतिक अपन बनवासक अवधि पूरा केलनि। हुनको घर बसलनि, आबाद भेलनि। हुनकर बालक कारिख जुलुम के वीर, आ धर्मक कौल पुरबा मे सेहो तेहने। तहिना जोग-टोन मे माहिर। कारिखक पीढ़ी अबैत-अबैत कामरुराज के महिमा बढ़ि गेल छल। ओ 'राज' कहाब' लागल छल। तन्त्र प्रमुखता मे आबि गेल छल। तंत्रशक्तिक प्रदर्शन कयनहि सँ ककरो वरीयता भेटि सकैत छल,

तखनहि क्यो पूज्य भ' सकैत छल। धर्म सम्प्रदाय पर शाक्त सम्प्रदायक बढ़तीक कालक रूप मे एकरा हमरालोकनि देखि सकैत छी। जोतिकक बालक कारिख एहू कसौटी पर खरा उतरला आ तखनहि ओ वरीयता आ पूज्यता हासिल क' सकला। अपन शक्ति-प्रदर्शन लेल कारिख कामरुराज मे की-की लीला केलनि तकर वर्णन करैत गाथावाचक कहैत छैक—

बड़-बड़ लिल्ला कामरु मे केलकै
घाट-घाट मे बाघ बैसेलकै
अस्सी हाथ तरहरा खुनेलकै
ताही बीच मे घर बनेलकै
गहुमन साँपक कोरो देलकै
धामन साँपक बत्ती बनेलकै
हरहरा के बन्हनमा केलकै
गिरह-गिरह मे बिढ़नी देलकै
बड़-बड़ लिल्ला कामरु मे केलकै

हमरा लोकनि स्पष्ट देखि सकै छी जे एहने प्रकारक जातीय कविता-रूप जखन शिष्टसाहित्य मे अबैत अछि, से खाहे प्रबन्धात्मक काव्य मे वा मुक्तक मे, ओकर खूब चर्चा कयल भेटैत अछि, कालजयी लेखन ओकरा कहल जाइत छैक, मुदा तकर असली स्रोतक दिस सँ हमरा लोकनि बेसोह बनल रहैत छी।

धर्मराज-गाथा मे जे गद्य प्रयोग भेल अछि सेहो अद्‌भुत अछि। पहिनहि कहलहुँ जे एकर कोनो लिखित रूप नहि छैक, समकाल मे आबि क' जँ छैको तँ ओकरा पढ़ि क' वा यादि क' क' गाथागायनक परंपरा नहि अछि। समुच्चा दारोमदार एहि ठाम गाथागायकक स्मृति, मेधा आ भावकता पर निर्भर करैत छैक। तथापि गद्यक सौन्दर्य अनेको ठाम देखल जा सकैए। कारिखक विवाह-प्रसंगक मूल बतबैत गाथागायक कहैत अछि—'राजा गोनर के हाथ देख जोगी बजैए—तोरा एक टा अपसगुन देखै छी, तोरे जानी जनमल एक टा जबान बेटी देखै छी, ओकर बियाह परौली निवासी जोतिकपुत्र सँ हेतै, लिखैए।' कहब अनावश्यक जे ओ जोगी क्यो आन नहि, कारिखक हितसाधक दूत थिक जे प्रेमविवाहक विरोधी पिता कें एहि विवाह लेल प्रेरित करय आएल अछि। गाथागायक कहैत अछि जे ओ जोगी स्वयं धर्मराज थिका। इहो कहब अनावश्यक जे एहि गद्य मे जे प्रवाह छैक से लय सँ आयल छैक जकरा पाछू चर्याक जाबन्तो कारक जिम्मेदार छैक।

सन्दर्भ

1. वर्णरत्नाकरक संस्करण सब मे मीननाथ कें कतहु पीतनाथ तँ कतहु शीलनाथ मुद्रित कयल गेल अछि। शुद्ध नामक खोज करैत पं. गोविन्द झा एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छथि—'पहिल नाम लिपिवाचनभ्रमें पीतनाथ छपल अछि। निस्संदेह ई मीननाथ थिक।' (मैथिली साहित्य विमर्श/ पृ. 12)
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ नाथ सम्प्रदाय/ पृ. 98
3. गोरख-सम्प्रदायक ऐतिहासिक उपेक्षाक जे दूरगामी प्रभाव मैथिली साहित्य पर पड़ल, तकरा संबंध में पं. गोविन्द झा लिखलनि अछि—'प्रश्न उठैछ जे जाहि गोरख-सम्प्रदाय पर विद्यापति नाटक लिखल (गोरक्षविजय), से एना लुप्त किएक भ' गेल ? हमरा जनैत एकर कारण भेल कृष्ण सम्प्रदायक प्रबल बिहारि। महादेवक प्रस्तर-स्तम्भ तँ नहि हिललए परंतु से छोड़ि सर्वम् कृष्णमयम् जगत् भ' गेल। महाभारत, श्रीमद्‌भागवत, श्रीमद्‌भगवतगीता आ ताहि संग नाना पुराण इएह सब दीर्घकाल धरि मैथिली शिष्ट साहित्यक अनन्य आ अनंत स्रोत रहल। एकर विपरीत लोक बीच आ लोक साहित्य मे निरंतर शिवः शक्त्या युक्तः विराजमान रहलाह। कहि सकैत छी जे विद्यापतिक शिव हिनक नाटकक गोरखनाथहिक प्रतिमूर्त्ति भोग-सह-योग थिकाह।

   'गोरक्षविजयक पश्चात् मैथिली साहित्य पतनोन्मुख भ' गेल। राधा जहिना अकस्मात अइलीह तहिना अकस्मात चलि गेलीह। विद्यापति सँ भिप एहि पर्वक एको कवि हिनक नाम नहि लेलनि। मैथिली साहित्य क्रमशः बिलाए लागल। सए सँ अधिक कवि जे हजार सँ अधिक गीत लिखल ताहि मे अधिक अलक्षित होइत गेल। अनको लिखल गीतक भनिता मे विद्यापतिक नाम जोड़ाइत गेल।' (मैथिली साहित्य विमर्श/पृ. 46-47)
4. काञ्चीनाथ झा किरण/ किरण समग्र/ पृ. 278
5. पं. गोविन्द झा/ मैथिली सहित्य विमर्श/ पृ. 12
6. राजेश्वर झा/ लोकगाथा-विवेचन/ पृ. 52
7. उपर्युक्त/ पृ. 53
8. डॉ. शशिभूषण दासगुप्त/ ऑब्सक्योर रेलिजियस कल्ट्स/ पृ. 209
9. उपर्युक्त/ पृ. 207
10. राजेश्वर झा/ लोकगाथा-विवेचन/ पृ. 51
11. डॉ. विश्वनाथ झाक पुस्तक 'चौपाल जाति का सच' सँ 'लोकविमर्श' (लेखक-पंचानन मिश्र) मे उद्धृत/ पृ. 174
12. डॉ. रामबहादुर रेणु/ जनकविताक कालजयी शिल्पः भगैत/ देशज-2001/ सम्पादक-तारानंद वियोगी, अविनाश/ पृ. 10
13. फ्रांसिस बुकानन/ एन एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णियां इन 1809-10/ पृ. 252
14. डॉ. रामबहादुर रेणु/ देशज-2001/ पृ. 11
15. फ्रांसिस बुकानन/ उपर्युक्त/ पृ. 264

मैथिली लोकगाथा : महाकाव्यक जातीय विकास

धर्मराजक गाथा मिथिलाक धर्मचर्याक धर्मधारणा-विकासक दृष्टिमो सब सँ आदिम गाथा ठहरैत अछि। मुदा, जेना कि मणिपप्र अपन एक लेख मे प्रश्न उठौने छथि, आ से सही प्रश्न उठौने छथि जे लोकगाथा सभक घटनाकाल आ रचनाकाल दू भिप-भिप बिन्दु थिक आ एकरा फराके फराक देखल जेबाक चाही। धर्मराजक गाथा कें जखन हम आदिम कहैत छी तँ ओकर रचनाकालक दृष्टिमो। कारण, एहि ठाम हमरा लोकनि देखैत छी जे तीर्थ मे सर्वाधिक महत्त्व जगपाथपुरीक छैक जे धर्मसम्प्रदायक मुख्यालय छल। अगिला युग मे हमरा लोकनि एहि स्थान पर कामरु कमाख्या कें महिमाशाली होइत देखैत छिऐक। विद्वान लोकनि अपन अध्ययन मे ई निश्चय पौलनि अछि जे धर्मसम्प्रदाय हो कि तंत्रसम्प्रदाय, दुनूक जड़ि आत्यन्तिक रूप सँ वज्रयान आ सहजयानक बौद्धचर्या मे निहित अछि। धर्मसम्प्रदायक पूजापद्धति, हमर तात्पर्य लोकगाथागत तांत्रिक पद्धति सँ अछि, मे सेहो एकरा देखल जा सकैत अछि। अन्तर जँ कोनो अछि तँ यैह जे धर्मसम्प्रदाय जतय जीवदया आ आत्मबलिदान, आत्मपरिष्कार कें सबसँ पैघ स्थान दैत छल, तँ ताहि स्थान पर आगू हमरा लोकनि मारक तांत्रिक शक्ति कें विराजमान देखैत छिऐक।

कमलागाथा आ लोकधर्म

मणिपप्र अपन लेख 'मैथिली लोकगाथाक इतिहास' मे लिखलनि अछि—'हमरा संकलन मे जतेक लोकगाथा भेटल ओइ मे सभ सँ आदिम बुझाइत छैक 'दुलरा दयाल।'[1] स्पष्ट अछि जे हुनका संकलन मे धर्मराजगाथा नहि छलनि, कम सँ कम ओ अंश तँ नहिमो जे पूर्वांचल मे प्रचलित छल।'दुलरा दयाल' कें मणिपप्र महागाथा, एतय धरि जे गाथाधिराज कहलनि अछि। से सही। मुदा, तकर कारण एकर प्राचीनतम होयब नहि थिक अपितु मिथिलाक एक स्वतंत्र, स्वायत्त धर्मचर्याक स्थापना थिक। ई ओ समय छल जखन कामरु कमाख्याक प्रभाव सँ मिथिला उबरि रहल छल आ अपन स्वायत्त धर्मचर्या विकसित क' लेने छल। ई स्वायत्त धर्मचर्या की छल, ताहि

लेल हमरा लोकनि कें 'दुलरा दयाल' गाथाक अन्तस् मे प्रवेश करय पड़त। दुलरा माता कमलाक भक्त थिका। हुनका ई श्रेय छनि जे हिमालयक दुर्गम शिखर पर जा क' ओ कमला कें सिद्ध कयने छला आ अपना संग हुनका, आ हुनकर पूजापद्धति कें मिथिला मे अनने छला। विद्वान लोकनि एही कारणें हुनका 'अपर भगीरथ' कहैत छथि। पहिल भगीरथ गंगा कें अनने छला। आब जँ हमरा लोकनि ध्यान दी तँ पायब जे ई कमला जे कि भौतिक रूप मे एक नदी थिकी, अपना संगें एक महापरिवार आ सुव्यवस्थित साधनापद्धति रखने छथि। आगू जखन दशमहाविद्याक परिकल्पना कयल गेल, जकर उद्देश्य मूलत: शाक्त लोकनिक विभिप सम्प्रदाय, विभिप प्रान्त मे पूजित देवी लोकनिक समन्वयन छल। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे हमरा लोकनि पबैत छी जे दशावतारक वर्णन तँ जरूर अछि मुदा दशमहाविद्याक कोनहुं चर्च नहि अछि। ताहि सँ स्पष्ट प्रतीत होइछ जे चौदहम शताब्दी धरि दशमहाविद्याक अवधारणा मिथिला नहि पहुंचल छल। दशमहाविद्या मे जाहि कमला कें हमरा लोकनि देखैत छी, पायब जे मिथिलाक कमला सँ हुनका लोकनिक परिकल्पना सर्वथा भिप थिक। ओतय कमला महालक्ष्मीक एक रूप प्रतीत होइत छथि, जखन कि एतहुक कमलाक जे वर्णन लोकगाथा मे आयल अछि— कमला कें चारि हाथ छनि। एक हाथ मे धानक जुट्टी, दोसर मे कमल, तेसर मे कलश छनि आ चारिम अभयमुद्रा मे। हुनकर वाहन रोहु माछ छियनि। हमरा लोकनि सहजहि अख्यास क' सकै छी जे मिथिलाक रैयत सँ ल' क' राजा धरि मे एहि रोहु माछक केहन महान दबदबा रहलैक अछि। आइयो जखन मिथिला राजक झंडाक हमरा लोकनि कल्पना करी तँ किनसाइते रोहु माछक आकर्षण सँ बचल रहब संभव होयत।

दुलरा दयालक गाथाक एक पैघ अंश दुलारक अपन सासु बहुरा गोढ़िन संग संघर्षक कथा थिक। ई संघर्ष वस्तुत: मारक तंत्र आ तकर बचावक प्रतितंत्रक संघर्ष थिक। बहुरा ओहि धर्मसाधनाक साधिका थिकी, जकर मुख्यालय कामरु कमाख्या रहैक। बहुराक बेटी अमरावतीक साधना एक भिपे ढंगक साधना छलनि। ओहि मे लोककल्याण आ आत्मपरिष्कारक थोड़ेक तत्त्व रहैक। एकरा दू पीढ़ीक बीच विकसित मिश्रित परंपराक रूप मे सेहो देखि सकैत छी। अमरावतीक संग दुलारक विवाह मे जे अपमान दुलार कें भोगय पड़लनि—सात सै बरियाती कें बहुरा मारक तंत्र सँ हत्या क' देने रहैक वा पाठान्तरक अनुसार साँप योनि मे कायान्तरित क' देने रहैक आ दुलारक प्रिय मामा भीमल कें एक आँखि अगिनबान चला क' फोड़ि देने रहैक,— एहि अपमानक बदला लेल ओ स्वयं कामरु कमाख्या गेला, ओहि ठामक सिद्धि घटनाक्रमक सेहो अपन अध्याय छैक, आ ओकरे अस्त्र कें सीखि दुलार ओकरा

(बहुरा कें) पराजित करैत छथि आ अमरावती कें दुरागमन क' क' अपना संग अनबा मे सफल होइत छथि।

एहन प्रतीत होइत अछि जे दुलरा दयालक एहि गाथा मे धर्मधारणा कें, सुव्यवस्थित करबाक मंशा सँ, पूर्णत: अद्यतनीकृत कयल गेलैक अछि आ पछिलुका समस्त साधनाक बीजरूप एहि मे ग्रहण क' लेल गेलैक अछि। मणिपप्र लिखने छथि—'दुलरा दयाल-गाथाक भाषा पर सिद्धकालीन मैथिलीक बेसी रंग आ एकरा आध्यात्मिक पटभूमि पर बौद्ध महायानक बेसी प्रभाव अछि। एहि मे वर्णित नृत्य सभ ठाम-ठाम गम्भीर तांत्रिक रूप ल' लैत छैक।'[2] एहि कालक धार्मिक परिस्थितिक आकलन करैत हजारीप्रसाद द्विवेदी बहुत सटीक एक ठाम लिखलनि अछि जे 'एहि युग मे आबि क' भारतक विदेश संग संबंध शिथिल भेल जाइत अछि। इस्लाम-सन नव शक्तिशाली आ संघटित धर्म सम्प्रदाय सँ सम्पर्क होइत अछि, टीकाग्रन्थ आ निबन्धग्रन्थ पर आश्रित होयबाक प्रवृत्ति बढ़ल जाइत अछि, शास्त्रीय मतवाद सब कें लोकधर्मक सामने झुक' पड़ैत छैक आ अन्तत: लोकधर्म प्रबल भाव सँ शास्त्रमत कें अभिभूत क' लैत अछि।'[3] ई एक चित्र थिक जाहि मे हमरा लोकनि ब्राह्मणधर्म आ अन्य धर्म-सम्प्रदायक जाबन्तो हलचल कें देखि सकैत छी। मणिपप्र दुलरा दयाल गाथाक गंभीर अध्ययन केलनि अछि आ दू टा बात कें ल' क' एकर बहुत महत्त्व मानलनि अछि। पहिल एकर तांत्रिक अभिप्राय कें ल' क' अछि। ब्राह्मणधर्मक नियन्ता लोकनि कें जतय हमरा लोकनि बौद्धक समाप्तिक बाद नवागत जाति सभक नियमन आ व्यवस्थापन मे हलकान देखैत छी ततहि लोकधर्म मे उल्लास आ उत्साहक वातावरण छैक। दुलरा दयाल नृत्यक एक महागाथा थिक, जाहि मे, मणिपप्र देखौलनि अछि जे कोना सात प्रकारक नृत्य—मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, हांस-चकेव, संजीवनी आ महानृत्य—कुण्डलिनीक सात चक्रक जीवन्त प्रस्तुति भेल अछि। दयाल एक बेर जखन अपन सासुक प्रहार सँ प्राणत्याग क' दैत छथि तँ अद्भुत छैक जे हुनकर पत्नी अमरावती कें संजीवनी नृत्य सिद्ध छनि आ ओ से नाचि क' दयाल कें पुनर्जीवन प्रदान करैत छथि। महानृत्यक गुरु कमला छथि, जिनकर सर्वाधिक प्रिय दयाल छथिन आ हुनका ओ समस्त नृत्य-विद्या मे निपुणता प्रदान कयने छथि। एहि गाथा मे सात संख्याक बहुत महत्त्व। सप्तनृत्य, सप्तमण्डल, सप्तदेवी, सप्तचक्र। स्वयं कमलाक जे देव-परिवार छनि सेहो सातटा देवी सँ मिलि क' बनैत छनि—'एहि गाथा मे भगवती कमला सहित सात टा नारी पात्र छथि। तीन-तीन टाक संख्या मे दू टा गुच्छ अछि। प्रथम गुच्छ मे छथि बहुरा, फूलमती आ अमरावती आ दोसर मे छथि मंगला, मोहिनी आ मुंगिया। भगवती कमलेश्वरी सर्वोपरि छथि। कहबाक आवश्यकता नहि होयत जे ई सातो नारी नृत्यनिपुण छथि

आ नृत्य द्वारा हिनका सभक विशिष्ट अभिव्यक्ति ओ कार्य-साधन होइत अछि।'[4]

प्रसंगवश, इहो स्मरण रखबाक चाही जे जाहि जातिक ई साधना-व्यवस्था छल ओ लोकनि कहियो अनार्य छलाह आ हिनका लोकनि कें आर्यक संग, बितलाहा कोनो युग मे बहुत भारी संघर्ष करय पड़ल छलनि। हजारी बाबू लिखै छथि—'असुर, दैत्य, नाग, यक्ष, राक्षस आदि जातिक संग आर्यजातिक कठोर संघर्षक ढेर रास कथा अछि। ई लोकनि धीरे-धीरे आर्य-भाषा आ आर्य-विश्वास कें स्वीकार तँ क' लेलनि मुदा हुनका लोकनिक अप्पन भाषा आ विश्वास भीतर ढुकि क' निच्चां सँ आक्रमण केलक। आर्यभाषा ऊपर सँ आर्य बनल रहल लगैतो हिनका लोकनिक भाषा आ विश्वास सँ प्रभावित होइत रहल। हिनका सभक विश्वास ने मात्र हमरा लोकनिक धर्म-साधना आ सामाजिक रीति-नीति कें प्रभावित केलक, अपितु नैतिक परंपरा कें सेहो भरपूर आलोड़ित केलक। आर्य लोकनिक परंपरागत धर्म-साधना आ तत्त्वचिन्ता आब वैह नहि रहि गेल छल जे पहिने छल। धीरे-धीरे समुच्चा उत्तरी भारत आर्यभाषी तँ भ' गेल मुदा आर्यभाषी बनल जाति सभक सम्पूर्ण मूल संस्कार सेहो ओहि मे ओहिनाक ओहिना बनल रहल।'[5]

दुलरा दयाल गाथाक दोसर जाहि विशेषता कें ल' क' मणिपप्र एकर बहुत महत्त्व मानलनि अछि से थिक निज देस, निज लोक आ निज भाषाक सौन्दर्यक अनुपम प्रेम, जे संभवत: आन कोनो ठाम ताकनहु नहि भेटत। एहन लगैत अछि जे गाथाकार मिथिला-प्रेमक चासनी मे आकंठ डूबल अछि आ भरि-भरि आंजुर अपन श्रोता सब कें उदारतापूर्वक पिया रहल अछि। ई तँ जरूर मैथिलीक अभाग कहल जेतै जे दुलरा दयाल गाथा, जकरा वास्तविक अर्थ मे कमला गाथा कहल जेबाक चाही, के विभिप विशेषता सब कें ल' क' मणिपप्र दर्जन भरिक करीब लेख लिखलनि, तखन उपन्यास लिखलनि। निश्चित रूप सँ एकर मूल पाठ हुनका संकलन मे रहल हेतनि, आ से पाठ निश्चिते कोनो काबिल भावकक कंठ सँ लेल गेल हेतैक, मुदा ओकरा ओ प्रकाशित नहि करा सकला। अपन लेख सब मे ठाम-ठाम जे उद्धरण सब ओ देलनि अछि, दुख अछि जे सेहो मूल पाठ सँ नहि अपन गद्यानुवाद मे देलनि अछि, ताहू मे एतबा सौन्दर्य संवेद्यता आबि सकलैक अछि जे ओ अपने लिखै छथि—'ई लोकगाथा मिथिलाक ऋतु-वर्णनक मने बारहमासा छिऐक। कोनो-कोनो स्थल ततेक सूक्ष्म आ मनोहारी बनि पड़लैक अछि जे बुझाय लगैत छैक जेना ई कालिदासक ऋतुसंहारक पृष्ठभूमि बनबैत हो।'[6] गाथाक प्रकृति-वर्णनक एक झांकी मणिपप्र जीक शब्द मे: 'बालुका-राशि पर बहैत नदी बूझि पड़ैक जेना कोनो विशाल नील साड़ी रजत-भूमि पर, उमतल दक्षिण पवनक झोंका सँ लोटा गेल हो आ उधिया रहल हो। जलराशि पर हेलैत लालसर आ नीलसरक हेंज ओहि साड़ी परक लाल-

सोनहुला गोटा जकाँ लगैक। सहसा तट पर एक पयर पर ठाढ़ सारस घेंच नमरा क' पाँखि फटौलकैक आ ककर कांक करैत सुदूर बालुका द्वीप दिस उड़ि गेलैक। बसात पर माटिक फूल के सुगन्धि अधिक गदगर भ' अयलैक आ उत्तर पहाड़ दिसक शृंग पर सौदामिनी खेला लगलैक। धाराक रंग आब सिलेबी भेल जा रहल छैक। डाक पक्षी आहू-आहू शब्द क' उठलैक अछि आ टिटहीक हेंज आकाश मे चकभाउर दैत आकुल स्वर मे टिटकारि रहल छैक। हे नाविक सब, अपना-अपना नाहक पाल उतारि क' सावधान भ' जाह। आकाशगंगा मे सान्ध्यस्नान कयने भगवती पार्वती पुरबा बसातक ककबा सँ अपन केश झारतीह तँ बड़का-बड़का बूंदक वृष्टिक संग प्रचण्ड बिहाड़ि जैह ने जूमल अछि।'[7]

एहि ठाम ई कहि देब आवश्यक जे वर्णन लेल जाहि शब्दावलीक प्रयोग मणिपद्म कयलनि अछि से गाथाकारक शब्द नहि थिक, भइयो नहि सकैत अछि। गाथाकारक भाषा नितान्त विश्लिष्ट अछि आ नितान्त देशज, ओहि ठाम भाव तँ अवश्य गूढ़ अछि आ दृश्य मनोहारी मुदा भाषा ततेक सरल, संवेद्य आ बिम्बात्मक जे कोपहु टा श्रोता कें बुझबा मे भांगठ नहि रहि जाइत छैक। उदाहरणक लेल—'घर-घर मैया सपना दैए/ बल्ली नदी मे मांझ धार उजहिया चलैए।' अथवा 'जेठ-बैसाख मे गोड़ पकैए/ जिबाजन्तु सब छटपट करैए।' हम आनो कोनो ठाम कहने छी जे मणिपद्म जी ठेठ गमैया लोकक वस्तु कें अपन लेखन द्वारा ब्राह्मणीकरण क' देलखिन अछि, जखन कि ब्राह्मणधर्मक लोक ताहि काल की क' रहल छलाह तकरा लेल हम सब निबंधग्रन्थ, दर्शनग्रन्थ सब कें देखि सकैत छी आ हुनका लोकनिक कठिन बेचैनीक अख्यास क' सकैत छी। क्यो कहि सकैत छथि जे नहि, कोनो बेचैनी नहि छल, मात्र नियमन आ व्यवस्थापन के प्रयत्न छल। मानल जे सैह छल मुदा ओतय मिथिलाक लोकक जागन्त जीवन आ जीवन्त पर्यावरण तँ नहि छल, ओतय तँ एक अखंड आर्यावर्त्तक आदर्श छल जकरा लेल सै-सै मिथिला कुर्बान कयल जा सकैत छलैक।

मिथिलाक लोक आ एकर पर्यावरण सँ कमला कें कतेक गहींर नेह-छोह, तकर एक प्रसंग मणिपद्म अपन एक लेख मे देलनि अछि। प्रसंग अछि जे कमला जखन हिम शृंग हिमालय सँ चलि क' समतल पर पहुँचली तँ हुनका एक टा कमल-सरोवर भेटलनि। ओ ततेक प्रसप भेली जे सरोवर मे पैसि गेलीह। वर्णन कमला आ हुनकर सेवकक संवादशैली मे अछि। सेवक कहैत छैक—'हे कमला दाइ, एहि दह मे सहस-सहस कमल फुलायल छैक। जुनि पैसियौक। सब औना जयतैक। कमलाक उतारा—'गे मालिन बेटी, कमल-फूल तँ हमर ग्रिमहारक शोभा थिक।' सेवक—'हे पदुमसुपरि, एहि दह मे नागिन सब खेलाइत छैक से अहाँक पैसबा सँ छिड़िया जेतैक।' कमला—'गे मालिन बेटी, नागिन सब तँ हमर मणिमय केशक बन्हना थिक।' सेवक—'हे कमलेश्वरी, एहि दह मे हांस-चकेबा खेल करैत रहैत छैक, से उजबुजा क' उड़ि जेतैक।' कमला—'गे मालिन बेटी, हांस-चकेबा तँ हमर जूड़ाक शोभा छी।' सेवक—'हे कमलमुखी, एहि सरोवर कें अकुलयला सँ लालसरक जोड़ी बिछुड़ि जयतैक।' कमला—'गे मालिन बेटी, लालसरक जोड़ी तँ हमरा दहिना-बामा कानक कणर्फूल छी।' सेवक—'हे नृत्यमयी, दह मे नहाइत धीया सभ अहाँक हिलकोरक आगम सँ डेरा क' ऊपर भ' जेतैक।' कमला—'नहि गे मालिन बेटी, हम ओकरा सब कें भरल खरिहान देबैक, फोका मखान देबैक, खोइंछा मे धान देबैक, मुँह मे पान देबैक, सिपूर सँ मान देबैक, कोरा मे चान देबैक। ओ हमरा पांचो परकार देत (नेवैद्य, अर्घ्य, दीप, धूप, फूल) देत, दूधक ढार देत, अंचरी मे फुदना देत आ बेरिया फूल देत।'[8]

एक बेर फेर कहब जे हमरा लोकनिक अभाग थिक जे मणिपद्म एकर मूल पाठ प्रकाशित नहि करौलनि। उनटे लिखैत रहला जे 'आइ आवश्यकता छैक जे एहन कंठसाहित्य कें आलोक मे आनि क' ओहि युगक पृष्ठभूमि मे एकर वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कयल जाय।' आ कि 'आइ आवश्यकता एहि बातक अछि जे मिथिलाक स्वर्ण-परम्परा मे जटित एहि गर्वरत्नी धरोहरिक अधिकाधिक खोज आ शोध हो।' ई लिखैत मानू हुनका पूरा भरोस छलनि जे गाथाक जे पाठ हुनका सुनबा लेल भेटलनि, से सदा अजर-अमर रहतैक। लगैत अछि जे मैथिल संस्कृतिक भविष्य सँ ओ सर्वथा बेसोह रहथि। मुश्किल सँ दशक-दू दशक बाद जखन डॉ. विश्वेश्वर मिश्र कें समस्तीपुरक एक गाम मे दयाल सिंहक गाथा गौनिहार लड्डूलाल सहनी सँ एकरा सुनबाक अवसर भेटलनि—संक्षेप मे, विस्तार ल' क' ओ की करितथि, विश्वविद्यालय कें अकादमिक होयबा सँ मतलब, सांस्कृतिक सौन्दर्य सँ कोन मतलब!—आइ ई पाठ प्रकाशित अछि तँ हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे एक्के पीढ़ीक बितने सँ सब टा सौन्दर्य कोना मेटा गेलैक! कहबे केलहुँ, गाथावाचक कते काबिल भावक अछि, समूचा दारोमदार एही पर निर्भर करैत छैक।

मैथिली लोकगाथाक वर्गीकरण

मिथिलाक विभिप भाग मे पसरल लोकगाथा सभक कुल संख्या कतेक अछि, ताहि पर अध्येता लोकनिक बीच पर्याप्त मतान्तर अछि। एहि विषयक आदि अध्येता जॉर्ज ग्रियर्सन छथि, जिनका तीन गोट गाथा सँ साहचर्यक अवसर भेलनि आ ओ तीनू कें प्रकाशित करौलनि—गीत सल्हेस, गीत दीनाभद्री आ गीत नेवारक। ई. 1881-85क घटना थिक। पंडित गोविन्द झा एहि विषय कें नोटिस कयलनि अछि जे ग्रियर्सन

एकरा गाथा नहि कहलनि, गीत कहलनि अछि। हमर आकलन अछि जे मैथिली लोकसाहित्यक अध्ययन जखन जोर पकड़लक, आ अनेक आकार-प्रकारक, अनेक स्वभावक गीत सब समक्ष आयल तँ आपस मे भिपता देखेबाक लेल महाकाव्यात्मक-कथात्मक स्वभावक गीत कें गाथा कहल जाय लगलैक, अंग्रेजीक बैलेडक अर्थ मे, आ से संभवत: सब सँ पहिने मणिपप्रे कहलनि। यद्यपि कि गाथा एक ऋग्वेदकालीन विधा थिक आ आगुओक ललित संस्कृत साहित्य मे, प्राकृतो मे गाथा लिखल जयबाक चलन रहलैक। मूल प्रश्न जहाँधरि एहि अर्थ मे, एहि सन्दर्भ मे 'लोकगाथा' शब्दक प्रयोगक अछि, हमरा लोकनि देखैत छी जे डॉ. जयकान्त मिश्र सेहो अपन अध्ययन मे एकरा 'लोकगाथा' नहि, 'गाथाकाव्य' कहैत छथि। अपन पुस्तक 'मिथिलाक लोकसाहित्यक भूमिका' (2011) मे ओ दस गोट गाथाक संक्षिप्त परिचय देने छथि। ताहि मे विशेष बात दू टा। एक तँ ओ गोपीचन्दक गाथा कें स्थान देने छथि जखन कि बांकी प्राय: समस्त अध्येता एकरा छोड़ि देने छथि। दोसर जे दुलरा दयालक गाथा कें ओ मूलत: कमलागीत मानने छथि। अपन पुस्तक मे ओ आन 19 गोट गाथाक उल्लेख कयने छथि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद सँ प्रकाशित 'लोकगाथा परिचय' (1959) मे मिथिला-क्षेत्रक बीस गोट लोकगाथाक संक्षिप्त परिचय देल गेल अछि। मणिपप्र कुल सात टा लोकगाथाक जड़ि धरि पहुँचलाह आ एकरा विवेचनक विषय बनौलनि। राजेश्वर झाक पुस्तक 'लोकगाथा-विवेचन' (1974) मे पांच गोट तथा विश्वेश्वर मिश्रक 'मैथिली लोक गाथा विवेचन' (2007) मे अठारह गोट गाथाक विवेचना अछि। डॉ. मिश्र 2014 मे अपना संकलनक पन्द्रह गोट लोकगाथाक मूल पाठक संग्रह 'मैथिली लोकगाथा' नाम सँ प्रकाशित करौलनि। प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन कुल मिला क' अड़तीस गोट लोकगाथाक विवेचन कयने छथि। डॉ. रामदेव झाक सूची मे बहत्तर गोट गाथाक उल्लेख अछि जखन कि चन्द्रेश अपन लेख मे एक सौ नौ लोकगाथाक चर्चा करैत छथि। तहिना लोकविद् ओमप्रकाश भारती सेहो मैथिली मे 109 लोकगाथाक उपलब्धता स्वीकार करैत छथि। रामदेव बाबूक सूची एहि प्रकारें अछि—(1) अमर सिंह (2) अर्जुन समर (3) आजुर कथा (4) उतिमाक लगनी (5) कनक सिंह (6) कारिख पजियार (जोतिक पजियार) (7) कारू भुइयां (कारू खिरहरि) (8) कालिदास (9) कालू राम (10) किसना राम (11) केबल महराज (12) गनिनाथ-गोविन्दनाथ (13) गरीबन भुइयां (14) गांगो देवी (15) गोपीचन्द-मैनावती (16) छेछन-मनसाराम (लुकेसरी देवी) (17) जग्रनाथक सम्मर (18) जमुना बढ़िअरि (19) जय सिंह (20) जलेछ (जलच्छी) (21) जिबाइ (22) जिरबाक लगनी (23) झंगरू (24) झुरइ (25) ढोलाकुमर-मरुअनि (26) दामोदर सिंह (27) दीनाभद्री (28) दुलरा दयाल सिंह

(29) धनपाल (30) नूनाचार (31) नैका बनिजारा (32) फेकूराम (33) ब्रजभान-सट्टी कुम्मरि (34) बंशीधर बाभन-श्याम सिंह (35) बखतर सिंह (बखतौर) (36) बसाओन भुइयां (37) बिच्छु (38) बिजयमल (39) बिहुला (40) बेनीराम (41) बुलाकी गोप (42) भरथरी (43) भाजा (44) भैरवधामि (45) मनसा गोप (46) मरछुआ (47) महली सुल्तान (48) माधो सिंह (माधो लाल) (49) मीरा बालापीर (मीरा/मीरायण/नूजागढ़/सती मांजरि) (50) मोती दाइ (51) राय रणपाल (घुघली घटमा/गुगुलिया) (52) रघुनाथ सिंह (राघोनाथ) (53) रानी ढोरुअनि (54) रानी सुरुंगा (55) लक्ष्मी सम्मर (56) लवहरि-कुशहरि (57) लालबन बाबा (लालाजी/लाला महराज) (58) लोरिक मनियार (59) सम्भू बनिजारा (सोभाबनिजार/गीत नेबारक) (60) सरबनपूत (61) सरबनियां गोआर (62) सरियो (63) सलहेस (64) सीत-बसन्त (65) सीता बनसार (66) सीताहरण (67) सुदामा सम्मर (68) हंसराज-वंशराज (69) हरसों कथा (70) हरिचन्दर दानी (राजा हरिचन) (71) हिरनी-बिरनी (नटिनियां) (72) हसल-हुसैल।

वास्तव मे ई लोकगाथा सब कतेक संख्या मे अछि, तकर निर्णय करब कठिन अछि। तकर कारण थिक जे अलग-अलग परिसर मे अपन-अपन महापुरुषक कीर्त्ति-रक्षा लेल आ हुनकर विभूति-प्राप्तिक लेल एकर निर्माणक प्रक्रिया एखनहु जारी अछि। दीनाभद्री गाथा अठारहम शताब्दीक थिक। लक्ष्मीनाथ गोसांइ (1793-1872)क समकालीन कारू खिरहरिक गाथा बीसम शताब्दीक आरंभ मे आबि क' चलन पकड़लक अछि। खेदन महाराज आ घोघन महाराजक गाथा सेहो एही लगपास निर्मित भेल अछि।

अध्येता लोकनि मैथिली लोकगाथा कें कैक तरहें वर्गीकृत करबाक प्रयास केलनि अछि। डॉ. रामदेव झा भौगोलिकताक आधार पर एकर दू वर्ग करैत छथि—मिथिलाजनपदीय आ बहुजनपदीय। लोरिक गाथा मिथिला मे बहुत लोकप्रिय रहल अछि मुदा बंगाल मे सेहो, एतय धरि जे छत्तीसगढ़ मे सेहो ओतुक्का भाषा आ पाठ मे लोकप्रिय रहल अछि। तहिना नागदेवी मनसा आ विषहरि तथा नाथपंथी गुदरिया गोपीचन्दक गाथा। ई दुनू बंगाल आ आसाम मे सेहो प्रचलित रहल अछि। एहन गाथा कें ओ बहुजनपदीय कहलनि अछि। युवा लोकविद् ओमप्रकाश भारती दू वर्ग मे विभाजन प्रस्तावित करैत छथि—(1) भगैत (भक्ति-संबंधित) (2) महराइ अथवा गीत (वीर गाथा)। डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन अपन पुस्तक 'मैथिली लोकगाथा-अनुशीलन' मे किछु आर वर्गीकरणक उल्लेख केलनि अछि। विषयवस्तुक आधार पर पौराणिक-अर्द्धपौराणिक, वीरकथात्मक तथा प्रेमकथात्मक वर्ग मे बांटल गेल अछि। नायकत्वक आधार पर सेहो वर्गीकरण कयल गेल अछि। मैथिलीक किछु

लोकगाथा अछि जाहि मे युगल नायकत्व अछि, जेना दीना-भद्री, लवहरि-कुशहरि, बसावन-बख्तौर, हंसराज-वंशराज आदि। यैह मूलत: एहि वर्गीकरणक आधार थिक। मौन जी अपन पुस्तक मे मैथिली लोकगाथाक वर्ण्य विषयक एक टा सूची सेहो देलनि अछि। से ई अछि—1. शौर्य-पराक्रम, बाहुबल विक्रम औदात्य, मल्लयुद्ध एवं रणक्षेत्र 2. प्रेम (शृंगारबोधी) विषयक रसार्द्रता, कलामंडित कोहबर, सोलहो शृंगार-बत्तीसो आभरण 3. सिद्धि आ साधनापरकता—मोरंग, मिथिला, कामरूप, बंगाल 4. भौगोलिक पृष्ठभूमि, प्राकृतिक सुषमा, नदी ओ वन-प्रान्तर, पशु-पक्षी 5. कृषि ओ पशुपालन सँ सम्बद्ध यदुवंशी देवलोक एवं हुनक गाथा 6. वाणिज्य व्यापारक उपक्रम, द्वीप-द्वीपान्तर धरिक नौकायन 7. राजन्य एवं लौकिक परिवेश 8. धर्मस्थल एवं धार्मिक आचार 9. कलात्मक पृष्ठभूमि ओ परम्परा, थान-गहबर, भगैत, आनुष्ठानिक पात्र 10. धार्मिक सद्भावक संदेश, सामाजिक सामरस्य, सहअस्तित्व 11. दलित चेतनाक भास्वरता। एकरा विद्वान लोकनि वर्गीकरण नाम दैत छथि मुदा ई सब हमरा मैथिली लोकगाथाक विशेषता देखाइत अछि।

महागाथा, गाथागुच्छ आ गाथाचक्र

मैथिली लोकगाथा सभक अंतरंग मे प्रवेश करी तँ अध्येता लोकनि कें एक नवीन स्थिति सँ सामना होइत छैक। उदाहरणक लेल दुलरा दयाल गाथाक अध्ययन कयलाक पछाति जँ बहुरा गोढ़िन, केवल महराज, अमर सिंह आ जय सिंहक गाथाक अध्ययन करी तँ सभक पृष्ठभूमि मे एक समान लय बजैत सुनाइत छैक आ परिवेश आ विधान मे सूक्ष्म प्रकारक एकसूत्रता आ एकतानता देखाइत छैक। ठीक यैह स्थिति तखन होइत अछि जखन हम राय रणपालक गाथा देखलाक बाद गांगो गोढ़िन आ गुगुलियाक गाथा देखी। वा, जोतिक पजियारक गाथा देखलाक बाद कारिख आ कालिदास, अन्दू मालि, बेनी महराज, उदय साहु, हरिया-हरिनियांक गाथा देखी। स्थिति दू प्रकारक बनैत अछि। एक तँ ई लगैत अछि जे कोनो ज्ञात वा अज्ञात महागाथा अछि, जकर ई सब टा गाथा अंग थिक। उदाहरणक लेल जोतिक पजियार आदि समस्त गाथा धर्मराज गाथा थिक आ कारिख-गाथा आदि तकर अंश मात्र थिक। एहि तरहें, महागाथाक अस्तित्व दिस हमरा लोकनिक ध्यान जाइत अछि। मणिपद्म दुलरा दयाल गाथा कें महागाथा कहलनि अछि। वस्तुत: हुनका दुलरा दयाल नहि, कमला-गाथा कहबाक चाहैत छलनि जकर अंग ओहि संवर्गक समस्त गाथा अछि।

दोसर स्थिति बनैत अछि जे एक संवर्गक सब टा गाथा एक गाथा-गुच्छ बनबैत अछि जे भीतरे-भीतर एक्कहि कथा-सूत्रक संग जुड़ल रहैत छैक। जोतिक धर्मराजक सेवक छलाह, बहुत यशस्वी भेला तँ हुनकर गाथा बनलनि। जोतिकक पुत्र कारिख सेहो पिते समान यशस्वी सेवक भेला, हुनकहु गाथा बनलनि। तेसर पीढ़ी मे तेहने कालिदास भेला। एहि तरहें ई सब टा गाथा एक गुच्छक रूप ल' लैत अछि। रोचक बात ई अछि जे स्वयं एहि गाथा सब मे अपन मूल गुच्छ हेबाक संकेत उरेहल भेटैत छैक। श्याम सिंहक गाथा छनि, मुदा हुनक बालक बालारामक सेहो गाथा छनि। रोचक बात ई जे श्याम सिंहक हत्यारा बंशीधर बाभनक सेहो गाथा छनि, जिनकर हत्या क' बालाराम अपन पिताक हत्याक बदला चुकौलक। स्वाभाविक थिक जे ई तीनू गाथा एक गाथा-गुच्छक अंग थिक।

सामान्यत: गाथाक प्रवृत्ति देखल जाइछ जे कोनो गाथा जेना-जेना प्राचीन होइत जाइत अछि, ओकर आकार समयक संग ओतबे बढ़ल जाइत अछि। एकर एक हालिया उदाहरण हमरा लोकनि दीनाभद्री गाथा मे देखि सकैत छी, जकर प्राचीन पाठ ग्रियर्सनक उपलब्धि अछि तथा अद्यतन पाठ एकैसम शताब्दीक सेहो उपलब्ध अछि।

कोनहुं महागाथा जखन भिप-भिप गाथाक रूप मे विकसित होइत अछि, तँ एहि सम्पूर्ण प्रक्रिया कें गाथा-चक्र कहि क' बूझल जा सकैत अछि। मैथिलीक अध्येता लोकनिक ध्यान एहि दिस नहि गेलनि अछि। मुदा, आश्वस्तिक बात थिक जे अपन संकलित पुस्तक 'मैथिली लोकगाथा'क भूमिका मे डॉ. विशेश्वर मिश्र गाथा-चक्र पर थोड़ेक प्रकाश देलनि अछि।

गाथाक विश्वप्रसिद्ध अध्येता लोकनि उचिते मौखिक साहित्य कें संतरणशील साहित्य (Floating Literature) कहलनि अछि। ओ उड़ियाइत वा बहैत रहैत अछि आ ओकर प्रत्येक प्रस्तोता मानू ओहि गाथाक एक नव संस्करण ल' क' उपस्थित होइत अछि। एक्कहि गोट गाथा अपन मनभावन आख्यानक कारण दूर-दूर क्षेत्र धरि पसरि जाइत अछि आ स्थानीय रूप धारण क' लैत अछि। जेना जोतिकक कथा जाहि तरहें कोशी-क्षेत्रक गाथा मे आयल छैक, मधुबनीक कारिख गाथा मे जे जोतिकक विवरण देल गेल भेटैत अछि ताहि मे भिपता अछि। ई तँ एक प्रान्तक बात भेल। जँ बंगाल सँ आबि क' मिथिला मे कोनो गाथा अपन विकास प्राप्त करत तँ ओकर भिपताक अनुमान कयल जा सकैत अछि। दोसर बात, गाथागायक अपन रुचि आ श्रोता-समुदायक स्तर कें देखैत कतोक बेर एहन करैत अछि जे अपन प्रस्तुति कें चमत्कारिक बनेबाक लेल भिप-भिप गाथाक समरूप प्रसंग एकठाम आनि लैत अछि। जेना कि कहबे केलहुँ, हरेक प्रस्तुति ओहि गाथाक एक संस्करण होइछ, ओहि गाथाक आगामी विकास पर एकर असर देखल जाइत अछि। रोचक बात ई थिक जे कोनहु गाथाक विकास मे सम्मिलन आ विखंडनक प्रक्रिया संग-संग चलैत रहैत छैक आ तकर परिणाम अयबा मे सैकड़ो वर्ष लागि सकैत अछि।

अपन लेख 'मैथिली लोकगाथाक इतिहास' मे मणिपद्म आठ गोट गाथा कें माहगाथाक दरजा देने छथि—दुलरा दयाल, राजा सल्हेस, लोरिकाइन, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, राय रणपाल, लवहरि-कुशहरि आ अनंग कुसुमा। महागाथा कहबाक आधार बतबैत ओ एतबे कहैत छथि जे एहि सब लोकगाथाक आधार पर मिथिलाक लोकइतिहास (पिपुल्स हिस्ट्री) लिखल जा सकैत अछि।[9] डॉ. विश्वेश्वर मिश्रक सूची एहि सँ थोड़बे भिन्न अछि। ओ सात टा गाथा कें महागाथा मानलनि अछि—दुलरा दयाल, नैका बनिजारा, बिहुला सुपरि, लवहरि-कुसहरि, लोरिक मनिआर, विजयमल्ल आ सुरमा सल्हेस। महागाथा मानबाक पाछू कारण यैह बतौलनि अछि जे एहि सब गाथाक अपन-अपन गाथा-चक्र छैक।[10] कहब आवश्यक नहि जे दुनू गोटेक कथन मे अव्याप्ति छनि, कारण मिथिलाक लोकइतिहास जाहि गाथा सभक आधार पर लिखल जा सकय, तेहन गाथा एतबे नहि छैक, आरो छैक। दोसर, जाहि गाथा सभक अपन गाथा-चक्र होइक, सेहो गाथा सब एतबे नहि अछि, आरो अछि। तखन ई बात धरि अवश्य जे 72 कही कि 109, एहि संख्या मे गाथा-गुच्छ सब अलग-अलग क' क' शामिल क' लेल गेल छैक। महागाथा आ गाथा-गुच्छ कें अलग-अलग चिह्नित करबाक आवश्यकता छैक, ताहि सँ ई अध्ययन आरो आगू बढ़ि सकत।

कविताक संबंध मे कोनो समुदायक जातीय रुझान, सौन्दर्य-दृष्टि आ शिल्प-शैली की अछि, तकर पता हमरा लोकनि कें लोकसाहित्य सँ लगैत अछि। हजारो बात मे सँ ई एक बात थिक, जकर सही अवगति पेबाक लेल लोकसाहित्य कें देखब जरूरी होइछ। समुदायक प्रत्यक्ष कारबार, से चाहे दुनियादारी हो कि सांस्कृतिक, लोकभाषेक मारफत चलैत छैक। ई 'लोक' शब्द बड़ व्यापक। ऋग्वेद मे बेसीतर तँ जन शब्दक प्रयोग भेल छैक मुदा ठीक एही अर्थ मे लोक शब्दक सेहो प्रयोग भेल छैक। तत्कालीन लोकसाहित्यक नमूना धरि ऋग्वेद मे उपलब्ध अछि, जखन कि अथर्ववेद तँ बुझू लोकसंस्कृतियेक दस्तावेजीकरण थिक जाहि मे लोकसाहित्य सँ बाहरोक तमाम लोकसरोकारी विषय विवेचित भेल छैक। पाणिनिक हिसाबें देखी तँ 'लोकृ दर्शने' क्रियापद सँ धमा् प्रत्यय कयला पर लोक शब्दक उत्पत्ति होइत अछि जकर अर्थ थिक देखनिहार, द्रष्टा। 'पब्लिक है, ये सब जानती है'—जे कहल गेलैए से एही दुआरे जे पब्लिक (लोक) कें सब कथू देखल रहैत छैक। ध्यान देबाक बात थिक आ कवि लोकनि एहि पर कवितो लिखने छथि जे राजा मरि जाइत अछि, पंडित सेहो मरि जाइत अछि मुदा पब्लिक (लोक) कहियो नहि मरैत अछि, ओ अजर-अमर होइत अछि। एहि 'लोक'क महत्त्व कतेक भारी छैक ताहि बारे मे महाभारतक एक कथन मोन पड़ैत अछि जे 'प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेपर:।' मने जे व्यक्ति लोक कें अपना चक्षुएँ (तात्पर्य अछि गहिराइपूर्वक) देखने रहैत अछि, सैह सर्वदर्शी भ' सकैत अछि। वा कहू जे एहन लोक सर्वदर्शी भ' जाइत अछि। आधुनिक युगक महान कवि यात्री कें जखन सुभाष चन्द्र यादव परिपक्व वय मे पुछने रहथिन जे अहाँ कोन-कोन कविक कविता पढ़ब पसिन करै छी तँ जवाब देने रहथिन जे हमरा धोबीघाट पर सब सँ बेसी मोन लगैत अछि जतय श्रमक संग वार्त्तालाप सेहो चलैत रहैत छैक आ गीतनाद सेहो। हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे एहि कथनक की मर्म छैक। लोक जीवन सँ कटल कविताक कोनो अर्थ नहि अछि। ताहि सँ तँ नीक थिक सीधा लोक लग जायब।

लोक के थिक? एकर की परिभाषा? एहि विषय पर बहुतो अध्येताक ध्यान गेलनि अछि। हमरा बुझनें, सर्वाधिक सटीक परिभाषा ई भ' सकैत अछि जे लोक ओ भेल जकर व्यावहारिक ज्ञानक आधार पोथी-पतरा नहि होइछ। हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखने छथि—'ई 'लोक' परिष्कृत, रुचिसम्पप, आ सुसंस्कृत बूझल जाइ बला संभ्रान्त लोकनिक तुलना मे अपेक्षाकृत अधिक सरल आ अकृत्रिम जीवनक अभ्यस्त होइत अछि। एतबे नहि, परिष्कृत रुचिबला सभक सम्पूर्ण विलासिता आ सुकुमारता कें जीवित रखबाक लेल जाहि-जाहि वस्तुक खगता होइछ, ताहि समस्त वस्तुक उत्पादन यैह 'लोक' करैत अछि।'[11] एहि 'लोक'क मानसिक सम्पपताक भीतर जे कोनो वस्तु आबि सकैत अछि, ओ चाहे दर्शन हो, विज्ञान हो, अथवा साहित्य आ कि अंधविश्वास, टोना-टोटका, जादू-मंत्र, भविष्य कथन, उक्तिविशेष—सब कथू लोक-संस्कृतिक क्षेत्रन्तर्गत अछि। पाश्चात्य लोकसाहित्यविद्, सोफिया बर्न बड़ सुन्दर ई दृष्टान्त देने छथि जे 'लोकसंस्कृति किसानक हरक आकृति नहि थिक अपितु ओ उपचार आ अनुष्ठान थिक जकर प्रयोग किसान हर जोतबाक क्रम मे करैत अछि, जाल अथवा बंसीक बनावट नहि थिक अपितु ओ टोना-टोटका थिक जकरा गोढ़ि लोकनि शिकारक काल मे करैत छथि, पुल वा बांधक निर्माण अवश्य इंजीनियरिंग के विषय थिक मुदा ओकर आरंभ करैत काल जे पशुबलि आदि देल जाइछ, से अवश्य लोकसंस्कृतियेक विषय थिक।'[12] हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे सोफियाक संकेत छनि जे लोकसंस्कृति एहि दृश्यमान दुनियादारीक देह नहि थिक, ओकर आत्मा थिक।

मैथिली लोकगाथाक विशेषता

डॉ. रामदेव झा अपन पुस्तक 'मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य' मे मैथिली लोकगाथाक किछु विशेषता सभक उल्लेख केलनि अछि। से निम्नलिखित थिक—

1. लोकगाथाक रचयिता आ रचनाकाल दुनू अज्ञात रहैत अछि। श्रुतिपरंपरा सँ एक

कंठ सँ दोसर कंठ मे हस्तान्तरित होइछ। ई कोनो व्यक्तिविशेषक सम्पत्ति नहि होइछ अपितु सामूहिक सम्पत्ति होइत अछि। 2. लोकगाथाक कोनो सुस्थिर पाठ नहि होइछ। 3. लोकगाथाक कथानक अत्यन्त लघु, लघु अथवा दीर्घ भ' सकैछ। 4. एकर नायक कोनो प्रतापी पुरुष रहैछ जकरा देवत्व प्राप्त रहैत छैक। नायक सँ इतर पात्र-पात्रीक अतिरिक्त एक पात्र देवता आ पशुपक्षी सेहो रहैछ। 5. लोकगाथा मे सर्वत्र अतिरंजना तथा अतिशयोक्ति पाओल जाइछ। 6. लोकगाथाक ऐतिहासिकता तथा घटनाकाल सर्वथा संदिग्ध रहैत अछि। 7. लोकगाथाक भाषा पाण्डित्य सँ रहित सर्वथा सरल ओ लौकिक होइछ। 8. लोकगाथा गेय तँ अवश्य होइछ मुदा एहि मे संगीतक शास्त्रीयताक सर्वथा अभाव रहैछ। 9. ओना तँ लोकगाथा मे समस्त रस ओ भावक परिपाक रहैछ तथापि वीर, शृंगार, करुण, शांत ओ अद्‌भुत रसक प्रमुखता रहैत अछि।[13]

ध्यान देबाक बात थिक जे उपर्युक्त समस्त विशेषता लोकगाथा विधे मात्रक होइत अछि भने ओ कोनहु भाषा मे लिखल गेल हो। 'हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास' खंड सोलहक भूमिका मे संपादक डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय किछु आओर विशेषता सभक उल्लेख कयने छथि। लिखलनि अछि जे लोकगाथा मे संगीत तथा नृत्यक अभिप साहचर्य रहैत अछि। संगीतक बिना वस्तुत: लोकगाथाक पाठे संभव नहि भ' सकैछ। एकर अपन खास वाद्ययंत्र सब सेहो होइत अछि। जाहि गाथा सभक संग भाव आ भगति जुड़ल रहैछ, ओहि ठाम भजनी कें तँ हमरा लोकनि नाचि-नाचि गबैत देखितहि छी भगता सेहो भाव एला पर विचित्र दशाक आचरण करैत अछि जकर अपन खास नृत्यशैली होइछ। जट-जटिन वा सामा-चकेबाक गाथा स्त्री लोकनि सामूहिक रूपें नृत्य संगे गबैत छथि। विश्वक समस्त देश सब मे कोनो ने कोनो रूपें गाथागायन प्रचलित रहल अछि आ से संगीत आ नृत्यक संगहि। चारण आदि एक गायकवर्गक अस्तित्व समस्त सभ्यता मे हमरा लोकनि देखि सकैत छी। मिथिला मे सेहो पमरिया विधिवत एक जाति रहल अछि जकर पेशा विविध गाथा आ गानक नृत्यक संग गायन छल। मुदा, चारण सन जाति अलग सँ हो, तकर अभाव मिथिला मे रहल अछि। गाथा आ गीत आम गृहस्थक जीवन मे शामिल रहल अछि। तहिना गुदरिया कें हमरा लोकनि ल' सकैत छी। आन गाथाक गायनक लेल जाति विशेषक विरासतक चर्चा तँ जरूर रहल अछि, मुदा देखैत छी जे समस्त जातिक लोक मे गुरु-परंपरा सँ ई गुण सिखबाक प्रवृत्ति रहलैक अछि आ जे व्यक्ति गाथागायन मे दक्ष भेल तकर मूल कार्य गाथागायने भ' जाइत अछि। एहि कारणें गाथागायकक अधिकतर परिवार गरीबी मे गुदस्त करैत देखल गेलाह अछि। फणीश्वरनाथ रेणु एहन लोकक जीवन-दशा पर मार्मिक कथा सब लिखने छथि।

जेना कि हरेक गाथाक अपन-अपन संगीत आ नृत्य होइत छैक, अपन-अपन एक खास टेक पद सेहो होइत छैक। ई सौंसे संसारक गाथा-साहित्यक विशेषता थिक आ एकरा मिथिलाक गाथा सब मे सेहो देखल जा सकैत अछि। 'नैका बनिजारा' गाथा मे 'रामा रौ—' ओकर टेक पद छिऐक। कोनहु गाथा मे 'रे, आब' के टेक देखबैक तँ कोनहु मे 'आब यौ', 'यौ भैयाजी' 'आब', आदि-आदि। अध्येता लोकनि एहि बातक अध्ययन केलनि अछि जे एना ई पद किएक अबैत छैक? निष्कर्ष छैक जे ई टेक पद सब (बर्डेन आ रिफ्रेन) श्रोता-समुदाय कें अपना संग संलग्न करबाक कला छिऐक। श्रोताक ध्यान जँ कोम्हरो दोसर दिस गेल हो तँ टेक पद ओकरा प्रकृत प्रसंग मे घीचि अनैत अछि। सम्प्रेषण-कलाक दृष्टि सँ ई टेक पद प्रत्येक पाँती कें ओकर मर्मक संग अलग-अलग बुझबा मे मदति करैत अछि, पाठ कें सम्प्रेषणीय बनबैत अछि। जँ ध्यान द' क' देखी तँ आवृत्तिक ई स्वभाव समुच्चा लोकसाहित्ये मे होइत छैक। गीतो सब मे अधिकतर हमरा लोकनि दोहराव देखैत छी। अध्येता लोकनिक कहब छनि जे ई श्रमगीतक स्वभाव थिक। ओ सामूहिक रूप ध' क' अपन गान मे उद्‌भूत होइत अछि। मुदा जेना 'नैका बनिजारा' मे होइत छैक, गाथाक प्रत्येक पद 'रामा रौ' के टेक सँ शुरु होइत अछि। अंग्रेजी मे एकरा 'रिफ्रेन' नहि 'बर्डेन' कहैत छैक। हम सब बूझि सकैत छी जे एहि पदक प्रत्येक वाक्य मे दोहराव रहला सँ केहन सम्मोहक प्रभाव हेतैक! 'रामा रौ' शब्द सँ कोनो अवतारी पुरुषक आशय नहि अछि, भक्ति आदियो सँ एकर आशय नहि अछि। ई बस, एक पवित्र शब्दक दोहराव मात्र थिक जकरा द्वारा गाथागायक अपन लोक कें, अपन श्रोता कें अपना बीच संलग्न करैत छथि। स्वाभाविक थिक जे एहि तरहें ई गाथागायन लोकरंगकर्म सेहो छिऐक। तें हमरा लोकनि देखैत छी, कतेको एहन गाथा अछि जे मंच पर प्रस्तुत कयल जाइत रहल अछि। ओकर अपन 'नाच' होइत छैक। लोरिक नाचक चर्चा तँ ज्योतिरीश्वरो केलनि अछि। दुलरा दयाल के नाच छैक, सल्हेसक नाच छैक। गुगुलियाक नाच छैक, सल्हेसक नाच मे 'बर्डेन' के एक उदाहरण थिक—तैयो ने राजा सल्हेस दरसन दै छै हो।'

मौखिक होयब लोकगाथाक एक प्रमुख विशेषता थिक। अध्येता लोकनिक कहब छनि जे कोनो गायिका ताबे धरि सुरक्षित रहैत अछि जाधरि ओकर परंपरा मौखिक रहैछ। लिपिबद्ध करितहि ओकर गति आ प्रगति रुकि जाइत अछि। लोकगाथाविद् फ्रेंक सिजविक तँ एतय एतय धरि लिखलनि अछि जे जँ अहाँ कोनो गाथा कें कागत पर उतारबाक प्रयास करैत छी तँ मानू जे ओकर हत्या क' रहल छी—'इन द एक्ट ऑफ राइटिंग इच वन डाउन, यू मस्ट रिमेम्बर दैट यू आर हेल्पिंग टु किल द बैलेड।'[14] एक विशेषता ई बताओल गेल अछि जे गाथा मे उपदेशात्मक

प्रवृत्तिक सर्वथा अभाव रहैत अछि। तकर कारणो स्पष्ट छैक। ओकर वितान महाकाव्यात्मक होइछ आ समस्त कथू एक दृश्यात्मक लय मे चलैत रहैत छैक। एहना मे कथाक बीच मे भने नायक अपन आप्तजन कें उपकारक दू-चारि बात प्रसंगवश उपदेशात्मक कहि दिअय, मूल कथाक प्रवृत्ति कदापि उपदेशात्मक नहि रहि सकैत छैक। उपदेश ओकर सार सँ बहराइत छैक। जेना, योगवाशिष्ठ मे एक ठाम ऋषि पुछैत छथि जे ई संसार/ सृष्टि की थिक? उत्तर दैत छथि—समुच्चा गाथा सुनलाक बाद ओकर जे प्रभाव श्रोताक मोन मे बचल रहि जाइत छैक, सैह ई सृष्टि थिक!

लोकगाथा रचनाविधान (टेकनीक)क दृष्टि सँ बेसी समृद्ध नहि रहैछ, कारण अलंकृत शैली सँ सर्वथा भिप ओकर शैली होइत अछि। अध्येता लोकनि ओकरा जनकविता (पोएट्री ऑफ द पिपुल) कहलनि अछि। तें, स्वाभाविक रूप सँ कोनो गाथा मे हमरा लोकनि कें कवि-व्यक्तित्वक सर्वथा अभाव भेटैत अछि। कहल जाइछ जे कवि (अर्थात रचयिताक) व्यक्तित्व कोनो-ने-कोनो रूप ध' क' ओकर रचना मे अवश्य चलि अबैत अछि। एखन हाल मे कवि-आलोचक ललितेश मिश्र एही आधार पर विद्वज्जन सँ अनुरोध कयने छलाह जे अध्यवसायपूर्वक एहि तथ्यक अन्वेषण कयल जाय जे कोन गाथाक रचयिता के कवि छलाह। समुच्चा दुनियाक अध्येता लोकनि मे एहि बात पर बेस घमर्थन भ' चुकल अछि जे गाथाक रचयिता व्यक्ति होइत अछि आ समूह! अन्ततः निष्कर्ष अद्यावधि यैह बहरायल अछि जे आरंभिक सृजन-चेष्टा भने कोनो व्यक्ति-कविये द्वारा कयल गेल हो, एकर विकास सदति सामुदायिक प्रयास सँ होइत अछि। लोकगाथा कें मौखिक रहब किएक जरूरी होइछ आ कोना ई कोनो एक कविक रचना नहि भ' सकैत अछि, तकर अनेको सटीक दृष्टान्त हमरा लोकनि लग मे उपलब्ध अछि।

दीनाभद्री गाथाक मर्म

'दीनाभद्री' गाथा कें सर्वप्रथम ग्रियर्सन लिपिबद्ध कयने छलाह आ 1885 मे ई पहिल बेर प्रकाशित भेल छल। वस्तुतः ग्रियर्सने ओ व्यक्ति छला जिनका मैथिली गीत ओ गाथा कें संसारक नजरि मे अनबाक श्रेय जाइत छनि। हुनक संकलित दीनाभद्री गाथा मे सात अध्याय छैक। वर्ष 2007 मे साहित्य अकादेमी महेन्द्र नारायण राम आ फूलो पासवानक संपादन मे 'दीनाभद्री लोकगाथा'क प्रकाशन केलक। एकर संपादक लोकनि कें बुझलो नहि छलनि जे सवा सय बरख पहिने ग्रियर्सन एहि गाथा कें प्रकाशित करा गेल छथि, एहि सँ स्वतः अनुमान क' सकैत छी जे जाहि वर्गक जे लोकनि ई गाथा गबैत छल हेता, हुनका लोकनिक समझ आ अवधारणा कें बुझबाक प्रश्ने कतय उठैत रहैक! ग्रियर्सन भने छपा देने होथु, गाथाक गति-प्रगति नहि रुकल। से, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित एहि गाथा मे तेरह अध्याय छैक। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे मूल कथा मे साम्य रहितहु कथानक समयक संग अपन विस्तार कोना पबैत गेल आ नव-नव प्रसंग सब आबि क' जुड़ैत गेल अछि। कथा-विस्तारक एहि प्रवृत्तिक जँ हमरा लोकनि विश्लेषण करी तँ पाबि सकैत छी जे अपना-अपना युगक जनताक हरेक भय, हरेक अस्मिता-विमर्श, हरेक महत्त्वाकांक्षा आ अभीप्सा एहि मे आबि क' मिलैत जाइत छैक आ समाज सँ अपना हिसाबें अपन समाधान पबैत अछि।

आ, एखन साल भरि पहिने दीनाभद्री गाथाक तेसर पाठ छपलैक अछि। रमेश रंजनक संपादन मे एकरा नेपाल सरकारक संगीत तथा नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठान काठमाण्डू प्रकाशित केलक अछि। एहि मे आरो बेसी विस्तार छैक, 'समकालीन समयक' अपन समस्त दाहकताक संग, यद्यपि कि एहि मे अध्याय विभाजित नहि छैक। दीनाभद्रीक जनम जाहि जोगिया जाँजर गाम मे भेल रहैक आ जाहि कटैया बोन मे ओ शिकार खेलायल रहथि, ताही परिसरक खुरखुरिया (जिला सप्तरी) गामक निवासी गाथागायक सातैन राम एहि गाथा कें गाबि सुनौलनि आ रोशन जनकपुरी अत्यन्त सावधानीपूर्वक एकरा लिप्यन्तरित केलनि, हम अपनहु ओहिठाम उपस्थित रही। तें ई बेस प्रामाणिक सेहो अछि। प्राचीन परंपराक विद्वान लोकनि गाथागायक सँ गाथा ल' लेथिन मुदा ओकर नामक उल्लेख नहि कतहु करथिन। ग्रियर्सन समेत नहि केलनि अछि। 'देशज-2001' मे जे धर्मराज, गहील आ मीराक गाथांश छापल गेल रहय ओहि मे गाथागायकक नाम-गाम देल गेल रहैक। आगू विश्वेश्वर मिश्रक कंठप्रति-संकलन (2004) मे गायकक नाम-गाम देल गेलैक अछि। रमेश रंजन ने मात्र नाम-गाम देने छथि अपितु गाथागायकक फोटुओ छापने छथि। एहि संकलनक द्वारा हमरा लोकनि जानि सकैत छी जे एकैसम सदीक एहि दोसर दशकक अन्त मे दीनाभद्रीक परिसरक लोक अपन नायकक गाथा कोन रूप मे गायब पसिप करैत छथि।

एहिठाम एहू विषयक संक्षिप्त चर्चा क' लेब अनावश्यक नहि हेतैक जे बदलैत समयक संग समकालीन मनुष्यक जीवन-संघर्ष आ अस्मिता-विमर्श कोना लोकगाथा मे आबि क' मिलि जाइत छैक। दीनाभद्रीक गाथा आर्य-अनार्यक आदिम संघर्ष आ आर्यीकरणक कठोर प्रक्रियाक जनतब दैबला मैथिलीक विरल लोकगाथा थिक। ई गाथा एक सांच-सांच बात इहो बतबैत अछि जे अस्सल संघर्ष धर्मक नहि छल। धर्म ककरो किछु भ' सकैत छैक। निर्णायक बात ई थिक जे ओ आक्रान्ता थिक आ कि आक्रान्त। एहि गाथा मे कनक सिंह धामी आ ताहिर मियां दुनू आर्य थिक, ओ लोकनि कृषिजीवी छथि आ गोपालक सेहो। ताहिर मियां तँ एक टा कामधेनु पोसने अछि जकर ख्याति गाम-गाम मे प्रसिद्ध छैक। मने हिन्दू हो कि मुसलमान, धर्म कें ओ राजाक अनुकूलताक हिसाबें जनउ जकाँ ऊपर सँ पहिरि लैत अछि, बाँकी

स्वभाव ओकर अपनहि रहैत छैक, आक्रान्ताक। दीनाभद्री मूलवासी, शिकारजीवी, जंगल ओकर पालक आ मित्र थिक। असल संघर्ष एहि बातक छैक जे आर्य लोकनि जतेक जमीनक कब्जादार भ' गेलाह अछि, सब टा कें आबाद करबाक लेल आब हुनका आर अधिक जन-मजदूर चाही। मिथिला मे बोइन करब प्रकारान्तर सँ दासता गछब सेहो थिक। जाहि-जाहि जातिक आर्यीकरण भ' चुकल अछि, सभक यैह हश्र भेलैक अछि। सब आब मालिकक खेत मे बोइन करैत अछि। दीनाभद्री गिरहथक खेत मे बोइन करब गछथि ताहि लेल हुनका माय कें जुत्ता ल' क' पीटल जाइत छैक। दीनाभद्रीक खून एही बात पर खौललैक अछि। ओ दुनू भाइ विद्रोह क' दैत छैक। दुनू भाइ कें मारल जाइत छैक छलपूर्वक, कारण बल मे ओकरा सँ जीतब कठिन छैक, अपनहु बलशाली अछि आ भारी जन-बल सेहो ओकरा संग छैक। एहि गाथा मे एक टा बात अद्‌भुत आयल अछि जे दीनाभद्रीक हत्या मे प्रमुख हाथ सल्हेसक रहैत छनि। सल्हेस जाहि जातिक छला तकर आर्यीकरण पहिनहि भ' चुकलैक अछि फलत: पौराणिक देवता दुर्गा कि महादेव जकाँ ओहो आब आक्रान्ता वर्गक जी-हजूरीक लेल विवश छथि। अद्‌भुत बात इहो अछि जे दीनाभद्रीक कुलदेवता सेहो स्वयं सल्हेसे छथिन। हुनका घरक पीड़ी मे सल्हेस निवास करै छथि। वैह मायापूर्वक भद्री कें कटैया बोन चलबाक दुर्बुद्धि प्रदान करैत छथिन, जखन कि धीर-गंभीर जेठ भाइ भद्री ओकरा बरजै छथिन। दीनाभद्री ओही बोन मे फोटरा गीदरक आघात सँ मारल जाइत छथि। फोदरा गीदर कें कतय सँ एतेक बल आबि गेलैक? असल मे ओ बल देवता सल्हेस द' रहल छथि। ओ दुनू भाइ मारल जाइत छथि। मुदा समाज एकरा स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि भेल। ओ न्यायक पथगामी, सभक रक्षक, महायोद्धा एहि शैतान सभक हाथें मारल नहि जा सकैत छथि, लोकमत सैह रहलैक। दीनाभद्री फेर सँ जी उठैत छथि। गाथाक बहुलांश कथा हुनका दुनूक पुनर्जीवनक बादे चलैत छैक। मुसहर लोकनि मे एखनहु विश्वास छनि जे सूक्ष्म रूप मे ओ एखनहु जीवित छथि आ जरूरी भेनें कारनीक रक्षा करैत छथि, लोक मे सद्‌बुद्धि दैत छथि आ माथ उठा क' जीबाक सहारा दैत छथि। मुसहर लोकनि एखनहु हुनका दादाजी कहैत छथि। दीना आ भद्री ट्रेड यूनियनक लीडरक रूप मे शहीद होइत छथि। ईसा मसीह जकाँ ओ जीबि उठैत छथि आ मुसहरक अधिकार लेल संघर्षरत भ' जाइत छथि।'[15]

लोकगाथा मे मिथक आ समकाल

लोकगाथा मे समकाल कें घिसिया अनबाक जे प्रवृत्ति होइत छैक, तकर उदाहरण प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पाठ मे पर्याप्त मात्र मे विद्यमान अछि। एहन एक उदाहरण।

जखन सल्हेस सपना मे भद्रीक दिमाग मे दुर्बुद्धि भरि देलखिन तँ भद्री अपन भाइ कें कहलकै—'चलह कटैया बोन शिकार करै लेल। जंगल मे शिकार सब उमड़ल आएल छैक। तों सुतले सुतल कोना बुझलिही रौ, तँ सपना मे देखलियैए।' दीना सपनाक सत्यताक खंडन करै छथिन। एहि ठाम थोड़ेक सगुन-विचार सेहो अयलैक अछि। ग्रियर्सनक पाठ मे अबैत छैक— (1.) आजु कटैया देखियौक बड़ भेयाओन (2.) कहियो ने देखल गहुमनक फेंच पर खंजन फहराइत (3.) बादिल कौआ बोलैत अछि मरन मरन (4.) आन दिन भरि छावा उतरलहुँ पार आजु देखै छी अगम अथाह। ई सभ अपसगुनक लक्षण थिक। मने दीना कें ताहि तरहक संकेत छैक। सातैन रामक पाठ मे अयलैक अछि जे एही क्रम मे ओ (दीना) भद्री कें एक उपकथा सुनबै छथि। उपकथा एहि संबंध मे अछि जे सपना वास्तव मे सत्य होइत छैक कि झूठ! एक बेर एहन भेलैक जे हाथी सब पूछि देलकैक सिंह कें जे सरकार, अहाँ हमरा सब कें एना मारै छी बेकसूर, से किए मारै छी? सिंह कहलक-सपना मे देखै छी। हाथी सब एहि बात पर अड़ि जाइए जे नहि, सपना झूठ होइत अछि। आब एकर फैसला कोना हो? महादेव कें पंच बनाओल गेल। हुनका पर दुनू वर्गक विश्वास। मुदा महादेव सबल के मान राखलनि आ कि जेना भेलनि, सिंहक पक्ष ल' लेलखिन। सपना सत्य होइत अछि। हाथी लोकनि पूर्ववत मारल जाइत रहला। मुदा ओ सब अपन संघर्ष नहि छोड़लनि, बुद्धि लगबैत रहला। एक दिन एक टा हाथी अड़ि गेल 'कहलकै, हम नै मानबौ। अइ गाम के पंच तोरा कहलकौ तँ हमरो गाम मे पंच छै। हम जाइ छी लाबेला!' ओ पंच के छल तँ एक टा चोंचा पंछी जे हाथी सभक उपद्रव सँ परेशान रहैत रहय। मुदा न्याय तँ न्याय होइ छैक। हाथी सब कें पूरा विश्वास जे बेर अयला पर ओ जरूर न्याय करतै। हाथी जखन ओकरा लाबै लेल गेल तँ ओकरे मस्तक पर बैसि क' ओ आयल। बाट मे अबैत-अबैत ओकरा निप पड़ि गेलैक आ हाथी जखन सिंह लग पहुँचल, चोंचा सूतल छल। ओकरा झमारि क' जगाओल गेल। चोंचा खिसियाइत उठल—'भाग सार, जुलुम क' देलही तू। अखनी भरखरे नीन पड़लियै हम, आ सपना मे की देखलियैए जे आइ पार्वती जी सँ हमरा बिध-बेबहार सब भ' गेलै, आब सिन्दुरदान टा मात्रे बाँकी छै।' महादेव छाती पिटैत उपस्थित भेला जे 'नइं-नइं-नइं', राम-राम, राम-राम, एना नै भ' सकैए। सपना संसार मे केकरो सांच नइँ होइ छै, आ ओइ दिन सँ सपना झूठ भेलै आ सब कें छुट्टी भेटलै।'[16]

महादवेक विपथगामिताक ई कथा थिक। देवता छथि तें दासता नहि कहल जाय, विपथगामिता तँ अवश्य कहल जेतैक। महादेव अनार्य लोकनिक लोक रहथि मुदा पूर्ण आर्यीकरण हुनको भ' चुकलनि अछि। पार्वती हिमालय-परिसरक बेटी

थिकी तें हुनका मे एखनहु न्यायबुद्धि बचल छनि। मैथिलीक समस्त लोकसाहित्य मे पार्वती कें महादवे सँ परेशान होइत आ हुनका मे सद्बुद्धि आबौन, तकर चेष्टा करैत देखल जा सकैत अछि। ई कथा एक साधारण जीव द्वारा महादेव कें धूरा चटा देबाक कथा थिक। कथा थिक जे वंचित वर्गक संघर्ष सदा अजेय रहत। मुदा देखबाक बात ई थिक जे ई उपकथा ने ग्रियर्सनक पाठ मे अयलनि अछि जे महेन्द्र नारायण राम, फूलो पासवानक पाठ मे, ई सातैन रामक पाठ मे आयल अछि। एकर व्याख्या अनेक तरहें भ' सकैत अछि, स्थानिकता सँ ल' क' वाचकक भावकता धरिक आधार पर। भ' इहो सकैत अछि जे ग्रियर्सनक सुनबाक काल गाथाक ई 'टेक्स्ट' साइलेन्ट (अनुपस्थित जकाँ) भ' गेल हो। यैह अगिलो बेर भेल हो। बारंबार एना हेबाक व्याख्या सेहो अनेक तरह सँ कयल जा सकैत अछि। मुदा, सातैन रामक गाथा मे आबि क' ओ मुखर भ' उठल हो। मुदा असल वास्तविकता ई थिक जे ओ समकाल थिक जे मिथकक संग आबि जुड़ल अछि। सातैन रामक गाथा जाहि तरहें व्यक्त भेल अछि ओ सम्पूर्णत: गद्य थिक आ कदाचिते कोनो पदक उपयोग टेकक रूप मे कयल गेल अछि। मुदा, सातैन राम जखन ओकरा प्रस्तुत कयने रहथि, मृदंग पर गाबि क' कयने रहथि। आ गद्य एहन जकर एक-एक पाँती मे कविता डग-डग भरल छैक। एहन गद्य मैथिली मे लिखल गेल अछि जे पूर्णत: गाओल जाइत छल, एकर अर्थ इहो जे ओ कविता छल। काञ्चीनाथ झा किरण अपन शोधग्रंथ मे जे वर्णरत्नाकर कें गद्य नहि, कविता प्रमाणित करैत छथि, से अकारण नहि थिक, असंगत तँ किपहु नहि। सल्हेस गाथा कें समुच्चा गद्य मे पाबि ग्रियर्सन कें बहुत आश्चर्य भेल रहनि आ ओ लिखने रहथि 'Although a song it is written in prose, and is chanted, rather than sung.'[17]

लोकगाथा आ पुराण

डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन अपन पुस्तक 'मैथिली लोकगाथा-अनुशीलन' मे अपेक्षाकृत अधिक सटीकताक संग मैथिली गाथा सभक विशेषताक उल्लेख केलनि अछि, यद्यपि कि ओ सम्यक् रूप सँ तकर विवेचन नहि क' सकलाह अछि। हुनक अभिमत विन्दुबार एहि तरहें अछि—1. धर्म-केन्द्रित 2. दलित-चेतना 3. समन्वयात्मक उपक्रम। एकरा अंतर्गत—(क) जनसामान्य आ अभिजात्य वर्गक बीच सेतु (ख) पारिवारिक एवं सामाजिक सामरस्य (ग) लोककल्याणक आग्रही (घ) धार्मिक सद्भावक चेष्टा (घ) दैवीशक्ति ओ लोकशक्तिक बीच सामंजस्यक स्थापन (च) प्राकृतिक परिवेश एवं जीवन-जगतक मध्य सूत्रबद्धता (छ) समन्वित सामाजिक सहभागिता। मूलत: डॉ. मौन मैथिली लोकगाथाक तीन टा विशेषता मानलनि अछि—

ओकर धर्मकेन्द्रित होयब, दलितचेतना सँ युक्त होयब आ समन्वयक लेल प्रयत्नशील होयब। एकरा बहुत हद धरि सटीक मानल जा सकैत अछि।

मुदा, धर्मकेन्द्रित हेबाक जे विवेचना डॉ. मौन केलनि यथा मिथिलाक जीवन धर्मकेन्द्रित अछि, गहबर आ थान सब ठाम छै। दैनिक आ नैमित्तिक पूजा होइत रहैत अछि, गाथा सब मे अतिरंजनापूर्वक देवताक अगे-बगे आ महिमाक वर्णन भेलैक अछि आदि-आदि। अर्थात् स्पष्ट दृष्टि आ कमजोर विवेचनाक कारण ओ एहि बातक पता नहि लगा सकलाह अछि जे एहि ठाम ई सब एना-एना किऐक छैक!

हमरा लगैत अछि जे मिथिला मे जे कोनो गाथा प्रचलित छैक, थोड़-बहुत उपभाषिक अन्तरक अछैत, ओ समस्त कोनो-ने-कोनो प्राचीन धार्मिक सम्प्रदाय संग सम्बद्ध छैक। पहिने हम सिद्ध लोकनिक बौद्धसम्प्रदाय, गुदरिया लोकनिक नाथसम्प्रदाय, पंजियार लोकनिक धर्मसम्प्रदायक चर्चा क' आयल छी। समयक संग कोना पौराणिक देवताक स्थान घटैत गेलैक आ स्थानीय लोकदेवताक महिमा जोर पकड़ैत गेलैक तकरहु थोड़-बहुत उल्लेख पहिने आयल अछि। एहि सभक समेकित नाम कें 'लोकायत' क' क' बूझल जा सकैत अछि। आगू चलि क' ब्राह्मणधर्मी लोकनिक धर्माश्रय बनलनि मंदिर। मुदा लोकायतधर्मी लोकनिक आश्रय गहबर छल। अपन एक लेख मे पंडित गोविन्द झा लिखलनि अछि—'ई मंदिर आ गहबर मानू समाजक बीच विभाजक रेखा बनि गेल। शिष्टजन मंदिर धयलनि तँ सामान्यजन गहबर। राम, कृष्ण, बुद्ध आदि साकार देवताक चरित सूत, व्यास, मुनि आ विविध धर्माचार्य सभ रचल जे शिष्टजन मे प्रचलित देवभाषा मे लिपिबद्ध होइत गेल आ आइ बढ़ैत-बढ़ैत रामायण, महाभारत, पुराण आ विविध धर्मग्रन्थक रूप मे ढेर लागल अछि। एहिना गहबर मे स्थापित निराकार दिव्य प्रेतात्मा लोकनिक चरितगाथा अज्ञातनामा लोकसभ सामान्य जनक मौखिक भाषा मे रचैत गेलाह जकरा आइ हमरा लोकनि लोकगाथा कहैत छिऐक।'[18]

बौद्ध साहित्यक साक्ष्य अछि जे लिच्छवि लोकनि चैत्यपूजक छलाह। चैत्य भेल माटिक ओ थुमहा, जे हमरा लोकनि मृतकक अंत्येष्टि कयलाक बाद हुनका सारा पर बनबैत छिऐक आ ओहि पर तुलसी रोपि दैत छिऐक, आनो-आनो वृक्ष रोपल जाइछ। तुलसीक पवित्रता एक उत्तरकालीन विश्वास पर आधारित अछि, तकर चर्चा अलग सँ उचित। भगवान बुद्धक परिनिर्वाणक बाद जे हुनका समाधि पर स्तूप बनल आ बाद मे आरो अनेक ठाम बनल, ओ सब असल मे चैत्य छल। कहल जाइत अछि, भगवान बुद्ध कहने रहथिन जे जाधरि लिच्छवि लोकनि मे चैत्य-पूजनक ई परंपरा जीवित रहत आ जाधरि ई लोकनि मेल सँ रहै जेताह, ताधरि हिनका लोकनि कें क्यो हराय नहि सकैत अछि। (विदेह लोकनि चैत्यपूजक छलाह कि ने, कहि

नहि, मुदा एहन प्रतीत होइत अछि जे एहि भूमिक मूलवासी लोकनि अवश्ये चैत्यपूजक छलाह। मनुक्खक देह कोनो एक ठाम डाहल वा गाड़ल जाइत छैक मुदा यदि ओ महिमाशाली रहल तँ कालान्तर मे ओतय चैत्य पूजास्थल बनि जाइत छैक आ समयक संग जँ हुनकर महिमा आरो बढ़लनि, जेना बुद्धक संग भेल रहनि, तँ अनेक-अनेक ठाम थुम्हा बना क' हुनक पूजा होअय लगैत अछि। ओ देव-परिवारक सदस्य भ' जाइत छथि आ गहबर मे पूजल जाय लगैत छथि। धर्मराजक चौदह देबान, सितलाक सात देवीपरिवार, कमलाक सात देवीपरिवार आदि एकर उदाहरण थिक।

हमरा लोकनि देखैत छी जे मिथिलाक प्रत्येक गाथा लोकायतक अन्तर्गत अबैत कोनो-ने-कोनो धार्मिक सम्प्रदायक संग सम्बद्ध अछि। जँ भक्तिमार्गी गाथा रहलैक तखन तँ प्रत्यक्षत: संबद्धता प्रमाणिते रहैछ, वा जँ वीरगाथा वा प्रेमगाथा भेलैक तँ देवता आ पंथक महिमा एहि बात मे निहित रहैत छैक जे ओकर नायक वा नायिका कोन देवताक पूजक छलाह, सही शब्द मे कहल जाय तँ सेवक छलाह।

एहि लोकदेवता लोकनिक प्रभाव कते बढ़ल छल जे कतोक बेर ओ लोकनि अभिजातवर्ग द्वारा पूजित पौराणिक देवता लोकनि कें सेहो अपना प्रभाव सँ बेबस क' दैत छलाह। उदाहरणक लेल हमरा लोकनि 'बंशीधर बाभन' लोकगाथाक एक प्रसंग कें देखि सकैत छिऐक। वंशीधर ब्राह्मण तँ जरूर छलाह मुदा पूजा-पाठ, अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन-मनन के काज मे नहि लागल छलाह। ओ छलाह जमींदार। आ जेना कि आमतौर पर जमींदार होइते छल, क्रूर आ अत्याचारी छलाह। मामूली-सन बात पर ओ श्याम सिंह कें मारि देलखिन जखन कि श्याम सिंह अपनो प्रतापी लोक, गाथाक नायक आ विचारक धनी। श्याम सिंहक बेटा बालाराम लोकदेवी गहीलक सेवक। गहीलक प्रेरणा सँ ओ बंशीधर बाभन सँ लड़' चलला। बंशीधर बलिष्ठ केहन जे दू-दू टा मोस्टंड बनैया सुग्गर पोसि क' रखने आ प्रतिदिन ओही दुनूक संग खतरनाक कुश्ती लड़बाक शौकीन। बालाराम कें गहील सहाय मुदा ओम्हर बंशीधर दुर्गाक भक्त। दुर्गा पौराणिक देवी। बंशीधरक भक्ति तते हठी जे सात घैला दूध नित रोज दुर्गा कें चढ़बैत ओ तते लीन होअय जे दुर्गा अपन एहि भक्त कें नाम-गाम संगें चीन्हैत रहथिन आ हरदम एकरा पर सहाय रहथिन। आब स्थिति ई बनलैक जे एक दिस गहील दोसर दिस दुर्गा। गहील स्वयं दुर्गा सँ जा क' भेंट केलनि आ कानि-कानि सब वृत्तान्त सुनेलखिन। बात प्राय: यैह रहल हेतनि जे बंशीधर अन्यायक पथ पर अछि तें अहाँ ओकर मदति करब बंद करियौक। आ दुर्गा कें हारय पड़लनि, बंशीधर बाभन मारल गेलाह। तहिना बहुरा गोढ़िनक कामाख्या आ दयाल सिंह कमला। कामाख्या कें पराजित होअय पड़लनि।

पंडित गोविन्द झा लिखलनि अछि जे लोकगाथाक महत्त्व पुराण सब सँ कनेको कम नहि, प्रत्युत कहि सकैत छिऐक जे कतोक दृष्टिमो लोकगाथा पुराणो सँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि। तकर ओ कारण बतबैत छथि—'पहिल ई जे पुराणक ऐतिहासिकता बड़ सन्दिग्ध मानल जाइत अछि, जखन कि लोकगाथाक ऐतिहासिकता वा सत्यता मे सन्देह करब कठिन। ई नहि कहब जे लोकगाथा मे कल्पना नहि अछि। एकर कल्पना पुराणक कल्पना जकाँ अविश्वसनीय नहि लगैत अछि। दोसर, पुराण मे जे किछु विश्वसनीय वा अविश्वसनीय बात सभ भेटैत अछि से संस्कृत साहित्यक भंडार मे बहुतो ठाम भेटि जाइत अछि, किंतु लोकगाथा मे जे किछु भेटैत अछि से आन कोनहु स्रोत सँ कदाचिते भेटत। लगैत अछि जे हमरा लोकनि युग-युग सँ एक ठाम रहितहुँ जेना दू भिप-भिप दुनिमााक लोक होइ। एक दुनिमााक लोक दोसर दुनिमााक लोक सँ एकदम अनचिन्हार, अनभुआर। तेसर, लौकिक जीवनक जे यथार्थ आ रोचक झलक लोकगाथा मे भेटैत अछि से ने पुराण मे भेटत ने कतहु अन्यत्र।'[19]

मुदा, पुराण आ लोकगाथाक आगामी भवितव्य अलग-अलग रहलैक। पुराण कें तीन गोट महान संबल भेटल—पहिल अक्षर, दोसर संस्कृत भाषा आ तेसर आर्यधर्म। एहि बल पर ओ वर्चस्व प्राप्त क' लेलक आ ओकर चरित-चर्चा सृष्टि-प्रलय धरि व्याप्त भ' गेलैक। एम्हर लोकगाथा मे हमरा लोकनि पबैत छी जे एहि तीनू शक्ति सँ उपेक्षित, हीन ओ क्षेत्रीय व्याप्ति धरि सीमित रहि गेल। गोविन्द बाबूक शब्द मे—'एहि पौराणिक परंपराक विपरीत लोकगाथा केवल एक पुरुष, एक पीढ़ी, एक छोट-छीन क्षेत्रीय-जातीय आ सामाजिक खंड धरि सीमित रहल। सल्हेस तँ चिन्हार रहलाह, मुदा हुनक गाथा सँ ने हुनका सँ पूर्वक हाल जनैत छी ने हुनका सँ बादक।'

लोकगाथा आ चराचर जगत

चराचर जगतक संग सहअस्तित्व मैथिली लोकगाथा मे हमरा लोकनि सबतरि देखैत छी। प्रकृतिक संग, पर्यावरणक संग सब ठाम एकलयता छैक। लय जतय कतहु टुटैत छैक ततय की होइत छैक, तकर अनेको दृष्टान्त अनेको गाथा मे आयल अछि। पर्यावरणक जे पानि-पहाड़ छै, जीव-जन्तु सब छैक, सेहो सब अपन-अपन रूप मे आयल अछि।

'लोकगाथा मे प्रत्यंकित नदी देवी गंगा, कोशी ओ कमला-बलान हुनक स्रोत धौलागिरि, मैनीमठ गहबर, हिमगिरि, देवतुल्य गाछ-वृक्ष, अग्निदेवता, उनचास पवन ओ देवलोक सदृश अंतरिक्षक भूमिका द्रष्टव्य अछि।'[20] 'मिथिलाक पशुपक्षी, पुष्प-लता, ऋतु-चक्र, तन्त्र-मन्त्र, रीति-नीति, संगीत-नृत्य, देवी-देवता आ नर-नारीक एतेक आलोकित वर्णन-विवरण कतहु अन्तय संभव नहि।'[21] 'बाजिल कौआ एक

टा विलक्षण पात्र अछि। केहनो-केहनो बाझ कें ई खेहारि दैत छल तें एकर नाम बाजिल पड़ल। हमरा बुझने समस्त भारतीय वाघ्मय मे महागाथाक पात्रक हैसियत सँ काक-भुसुण्डीक उपरांत एही कौआक स्थान छैक। लोरिकाइन मे तँ एकरा नाम पर एक टा अध्याये छैक जकर नाम थिक—'बाजिल खण्ड।'[22] जोतिक-गाथा मे कोइली एक टा एहन आत्मिक शुभचिन्तक छिऐक जे जखन सौंसे समाज जोतिक कें त्यागि दैत छैक तखनहु ओ ओकर संग बनल रहैत छैक।

मिथकक व्याख्याकार लोकनि एहि बात पर प्रकाश देने छथि जे मनुक्खक आदिम स्मृति एहि मिथक सब मे कोना नुकायल रहैत छैक। कोनो एक टा पशु-पक्षी रहत जे आवश्यकतानुसार कोनो अन्य प्राणी, अर्द्धमानव, अर्द्धपराप्रकृतिक जीवक रूप मे परिणत हेबा मे सक्षम रहत। ई मनुष्यक आदिम विश्वास छिऐक जे लोक मे एखनहु चलि रहल छैक। एकर दू तरहक उपयोग हमरा लोकनि मैथिली लोकगाथा मे देखैत छी। दीनाभद्री गाथाक नायक-द्वय अजेय छथि, मुदा हुनका मारलक के तँ फोटरा गीदर। गीदर मे पराप्राकृतिक शक्ति छैक, ओकरा भीतर सल्हेस लड़ि रहल छैक। सल्हेस देवता थिका, हुनका सँ कोन मनुक्ख जीति सकैत अछि! एहि तरहें समाजक समाधान होइत छैक। आ, दीनाभद्रीक महा हृदयविदारक घटना ओकरा लेल विश्वास करबा योग्य, स्वीकार करबा योग्य बनैत छैक। लोकगाथाक नायक सब पुरुषार्थी होइत छथि, समस्त जीवन-संग्राम हुनके जितबाक रहैत छनि मुदा विपत्ति-काल मे हुनकर जँ क्यो सहायक होइत छथि तँ से मनुष्ये टा नहि, कैक बेर तँ मनुष्य नहिमो। मुदा ई जीव-जन्तु हुनका लेल असंदिग्ध रूप सँ सहायक होइत छथि। मिथकक अध्येता लोकनिक कहब छनि जे एहन प्राणी जखन गाथा मे अबैत अछि तँ प्राय: दू टा विशेषता लेने अबैत अछि—1. ओ इच्छानुसार योनि-परिवर्त्तन क' सकैत अछि आ सब तरहक प्राणीक संग संवाद क' सकैत अछि। 2. ओ जाहि कोनो रूप मे मनुष्यक संग रहैत हो दुनूक बीच मे किछु करार, किछु शर्त्त भेल रहैत छैक। ई दुनू बात हमरा लोकनि गाथा सब मे पबैत छी। जँ नहि पबैत होइ तँ गाथागायक कें पूजा-चर्या आदि सँ बाहर सहृदय जनक बीच मे बैसाबियनु। तखन जे ओ गाथा सुनौता ओहि मे ओ अवश्य देखार पड़य लागत।

लोकगाथा आ मैथिली लोक

मणिपद्म जीक एक अध्ययन दिस हमर ध्यान गेल जतय ओ कहैत छथिन जे पड़ोसी बंगाल मे तीन टा कि चारि टा लोकगाथा छैक। पड़ोसी आसाम मे तँ ओहू सँ कम छैक। हमरा लोकनि कें सोचबाक चाही जे मिथिला मे एखन धरि ज्ञात गाथाक कुल संख्या सौ सँ ऊपर किएक छैक? स्वयं मणिपद्म एहि पर सोचबाक अवकाश नहि

पाबि सकलाह। क्यो आनो विद्वान नहि पाबि सकलाह अछि। हमरा लोकनि कें प्रयास करबाक चाही। सब सँ पहिने तँ हमर ध्यान लोकगाथाक रचना-काल पर जाइत अछि। अठारहम सँ उनैसम शताब्दीक बीचक समय एहन समय थिक जखन मैथिली मे बीस टा सँ ऊपर गाथा रचल गेल। कारू खिरहरि, घोघन महराज आदि एही युगक गाथा थिक। एहू गाथा सब मे ओ समस्त विशेषता छैक जे मैथिलीक आन गाथा सभक थिक। ई कालखंड कम्पनी सरकारक आ ब्रिटिश सरकारक कालखंड तँ मात्र कहबा टाक लेल छल, असल मे तँ ई स्थानीय जमींदारक बराहिल, गुमाश्ता, जेठरैयत आ तहसीलदारक अन्याय आ अत्याचारक समय रहय, जखन साधारण लोक सब दिस सँ सकपंज रहय। स्वामी सहजानन्द सरस्वती कतहु लिखने छथि जे देश भरिक जमींदारक अपेक्षाकृत दरभंगाक जमींदारक शोषण बेसी भयावह रहैक कारण कोनहु-ने-कोनहु बहपें ओकर कर्मचारी सब किसानक कुल उपजाक 87 प्रतिशत धरि भाग हथिया लैत छल। एहना समय मे जिबैत लोक जकरा शिक्षा नहि, पीठ पर ककरो हाथ नहि, माथ पर क्यो सहाय नहि, स्वस्थ रहि क' कोना जीबि सकैत अछि? आ अस्वस्थ भेला पर ककरा सँ निदान पाबि सकैत अछि? लोकगाथाक सृजनक लेल साइत एहने कालखंड उपयुक्त होइत छैक।

गाथा-रचनाक पूर्वी सीमाक गप करी तँ देखैत छी जे हमरा लोकनि जकरा अपन 'स्वर्णकाल' कहैत छी अर्थात् कर्णाटकाल, जे कि वास्तव मे ब्राह्मणधर्मक वर्चस्विताक कारणें ओकरा टा लेल स्वर्णकाल छलैक, मुदा ओतहि सँ मैथिली मे लोकगाथाक अग्रतर विकास आरंभ होइत अछि। संगीत सदा सँ सुख आ दुख दुनू मे मिथिलाक लोकक साथी रहल अछि। अपन उत्पीड़नोक समाधान, तात्कालिके सही, संगीते मे ई लोक पबैत रहल अछि। मैथिलीक आद्य गाथा लोरिकाइन थिक। ई राजाक गाथा थिक तें एहि मे अप्रतिम ऐश्वर्य आ भव्यता छैक। वरिष्ठ अध्येता लोकनि यथा हजारीप्रसाद द्विवेदी, मायानन्द मिश्र आदिक आकलन छनि जे एकर नायक पालवंशक संस्थापक गोपाल थिकाह। एहि गाथा कें बंगाल सँ मिथिलाक पहुँचबा मे किछु समय अवश्य लागल होयत मुदा पालवंशेक होती मे ई एतय अवश्य पहुँचि गेल होयत। मिथिलाक राजदरबार मे जाहि जबाना मे 'गीतगोविन्द'क आनन्द लेल जाइत रहल हेतैक, जनताक चौपाल मे लोरिक नाच पूरा चलती मे रहल छल होयत। ज्योतिरीश्वरो तकर साक्ष्य देने छथि। कहबी छैक जे 'सात खंड रामायणक, लोरिकाइनक खंड अनन्त।' लोरिक राजा जे कि न्यायक पक्षधर, जनताक रक्षक छलाह तें लोकप्रिय छलाह। जें कि ओ अपनहुं शूद्र छलाह, एहि लोकक अस्मिताक एक बुलंद आवाज जकां छलाह। मुदा सभक सब केवल मनोबलवर्धके हो सेहो नहि, एहि गाथाक अनन्त खण्डात्मक होयब एकरा स्वार्थी वर्गक लेल भेदनशील सेहो ओही

मात्र मे बनबैत जाइत छैक। मिलावट चलैत रहैत छैक आ सत्व पतराइत जाइत अछि।

राजाक गाथाक समानान्तर जे साधारण जनक लोकपद्धतिक गाथा थिक ओ थिक दुलरा दयाल। एहि मे सब कथू हमरा लोकनि कें बदलल भेटैत अछि। लोरिक जतय पौराणिक देवी दुर्गाक सेवक छलाह, आब लोकदेवी कमला उदय प्राप्त करैत छथि। एकर संघर्ष जखन कि आपसीक संघर्ष छिऐक, ओकरा पाछू सम्प्रदायगत विचारधारा छैक। दुलरा दयाल मे साधारण जनताक हबगब छैक। साधारणक प्रतिष्ठाक स्वीकार्यता छैक। सामान्यत: जे सामुदायिकता आ उदारताक भावना साधारण जनक पहिचान थिक, से सबठाम एतय अभरैत छैक। अपन भूमि, अपन भाषा, अपन परंपरा कें प्रतिष्ठित करबाक उत्साह छैक। मणिपद्म लिखलनि अछि—'भारत मे जखन-जखन स्वर्णयुग रहलैक एहि शक्तिक बल पर विशेषत: बौद्ध आ जैन संस्कृतिकालीन गाथा मे तराजू, तरुआरि आ करुआरिक ऐश्वर्यक बड़ छवि-छटा। प्रथम शती सँ ल' क' बारहम शती धरिक सिक्का आ भित्तिचित्र जलपोत, तुला आ योद्धाक शोभा सँ भरल। दुलरा महाकाव्य मे तत्कालीन मिथिलाक एहि त्रिशक्ति योगक स्पष्ट ओ गीतात्मक वर्णन आयल अछि। कतहु-कतहु एहि योग कें अपना मे शोभित होयबाक सेहो विवरण आयल छैक।'[23]

राय रणपाल एहि दुनूक बीच एक तेसर प्रमुख गाथा थिक। मध्यवर्ती लोकक। जे राजा तँ नहि अछि मुदा साधारण जनता जकाँ अल्पधन सेहो नहि अछि। ओ बनियाँ थिक, अर्थात् वैदिकालीन पणि। ई पणिलोकनि ताहू दिन मे धनिक, मुदा हिनका संग आर्य लोकनि कोना बैर साधने रहथि, कोना लूटनि, ठकनि वा कि प्रताड़ित करनि, तकरा कथा वैदिकगाथा सब मे गूँजैत अछि। मुदा आर्यीकरणक बाद सब सँ पहिनें यैह लोकनि खपलाह। राय रणपाल एक प्रेमगाथा थिक आ संवेदनाक बाट पर चलैत अछि। अनिश्चितता बहुत छैक, ताहि लेल पराभौतिक सहायक तिलंगा बाछा सेहो छैक। एहि गाथाक द्रष्टा एक नीकतर कवि छलाह जे कथा कें एहि घुमान सँ रचलनि जे कतबो अल्पभावक गायकक हाथ मे भने पड़ि जाउक, एहि महाकाव्यक कविताक लय नहि टुटतैक। आजुक जे प्रौढ़ लोकनि छथि, भ' सकैए जे नेनपन दिनक अपन गाम मे कोनो अनचिन्हार गायक कें ई प्रसंग गबैत सुनने होथि—

रम्मा रौ, लाल पलंग पर मणिक दीया झिलमिल करै ना
रम्मा रौ, सोन कमल सन धनी फुलेसरी सूतल रहै ना
रम्मा रौ, धनिक हीया भालरि जकाँ थर-थर काँपै ना
रम्मा रौ, चिन्ताक बदरी चानक मुँह कें रहि-रहि झाँपै ना

यैह थिक एहि गाथाक शैली। एहिना कथा बढ़ैत चलैत छैक। मनुष्यक चित्त के अनेको तरहक भाव-विचार, मानव-सत्यक अनेको रास विडंबना-चित्र, पारिवारिक जीवनक सुख-दुख सभक कथा विस्तारपूर्वक चलैत रहैत छैक। एकर एहन संक्रामक काव्यशैली छै जे वस्तु कें ल' क' बढ़ू तँ ओ अनवधाने सुंदर कविता बनैत चलि जायत। कहि नहि, मैथिली मे महाकवि तँ ढेरो भेला मुदा एहि परम मैथिल शैली कें किए ने क्यो उठा सकला। एतय तँ कथा सँ कथा बनल जाइत छैक आ कविता मे ढरि-ढरि क' चतरल जाइत छैक जेना।

पुराण सभक शैली थिक जे प्रसंग जखन चुकि जाइत छैक तँ ऋषि कि काकभुशुण्डी कि जे क्यो, कोनो एक टा प्रश्न करैत छथिन आ तकर उतारा देबा मे एक टा कोनो नव प्रसंग शुरु भ' जाइत छैक। एहि गाथा मे ई काज बीध-विधाता करैत छथि। ओ एहन देवता छथि जे मनुष्यक संग सहजीवन बना क' रहै छथि। मैथिलीक गाथा-संसार मे देवता लोकनि कोनो आन लोक मे नहि बसैत छथि। ओहो सब मनुष्ये लोकनिक बीच नाना भेस बना क' विचरण करैत रहैत छथि। एहि गाथा मे बीध-विधााता पंछी रूप मे गाछ पर बैसल रहैत छथि आ तरह-तरहक मनुष्य-लीला देखैत रहैत छथि। जखन एक टा प्रसंग ओर पर अबैत छैक तँ गाथागायक सुर दैए—

रम्मा रौ, ओही बाग मे गाछ एक अशोकक छलै ना
रम्मा रौ, ओही गाछ पर छलै बीध बिधिनिया छलै ना
रम्मा रौ, जब बिधिनिया पूछै आब विधाता से ओ ना
स्वामी हौ, बड़ बड़ बेर मे जान दुनिया संसारक बतिया ना
स्वामी हौ, एक हम बड़ अजगुतबा लालबाग नगरिया देखियै ना

आ एकर बाद, लालबाग नगर मे की अजगुत घटना एहि निशा-भाग राति मे भ' रहलैक अछि, तकर वर्णन शुरू भ' जाइत छैक। एक सँ एक अद्‌भुत दृश्य, एक सँ एक अजगुत घटना। 'विश्वमिथक सरित्सागर'क भूमिका मे रमेश कुंतल मेघ मनुष्यक दू टा आदिम स्वभावक उल्लेख केलनि अछि—(1) अपन देवता लोकनि कें प्रसप करबाक आ हुनका सब सँ लाभ प्राप्त करबाक आदिम स्वभाव आ, (2) संगी-साथी मनुष्य, अपन समाज कें अजगुत लागय, तेहन 'प्राकृतिक यथार्थताक लोकेतर, जड़ात्मवादी अभिग्रहण' करबाक आदिम स्वभाव।[24] मैथिलीक लोकगाथा सब मे विद्यमान अतिरंजनाक प्रवृत्ति पर अनेक विद्वान प्रकाश देलनि अछि। तकर सार यैह जे कोनहु वस्तु एहि ठाम अपन वास्तविक यथार्थता मे नहि भेटत। तकर एकमात्र जे अपवाद अछि से यैह राय रणपाल अछि। मणिपद्म लिखने छथि—'एहि महाकाव्य मे कोनो अलौकिक चमत्कार अथवा परीकथा बला चमत्कार नहि छैक। पारिवारिक परिसर आ बनिजाराक यात्रक एक टा मनोहर अँटाबेस मे ईर्ष्या द्वन्द्व आ चारित्रिक दृढ़ता कें समटैत ई गाथा तत्कालीन मिथिलाक भौगोलिक,

ऐतिहासिक, व्यापारिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक स्थितिक एक टा अमिट दस्तावेज अछि।'[25]

लोकगाथा सब मे जाहि महानायकक चरित-वर्णन रहैत छैक तकर तँ एक कथा भेल, सैह मुदा संपूर्ण कथा नहि भेल। असल कथा तँ ओहि समाजक होइत छैक जे अपन एहि महानायक सँ अनुप्राणित भ' क' अपन समाधान ताकै छथि आ ताहि क्रम मे गाथाक निर्माण करैत छथि। गाथा मे जे हमरा लोकनि अनन्त विस्तारक संभावना देखैत छी आ तकरा निरंतर घटित होइत सेहो देखैत छी, ओकर कारण यैह थिक जे समाजक जीवन संघर्ष कहियो थस्स नहि लैत छैक। अलग-अलग काल मे आयल समाज अलग-अलग चुनौती सँ जुझैत अछि। तें हमरा लोकनि देखि सकैत छी, गाथा मे दू वस्तु अन्तर्लय जकाँ पृष्ठभूमि मे सतत चलैत रहैत छैक—एक तँ असुरक्षा-बोध आ दोसर दलित-चेतना। अपन असुरक्षा-बोध कें नुकयबाक लेल समाज अपन महानायकक संग कतहु पशु-पंछी कें, ओकर मामा कि ओकर भागिन कें, कतहु विविधरूपधारी बीध-बिधाता कें लगा दैत अछि। चमत्कारक आस सदति बनल रहैत छैक, जखन कि वास्तविक जीवन मे चमत्कारक संभावना न्यूनतम पाओल जाइत छैक। असुरक्षा-बोध सँ जनमल चरम हताशा, आ ओही संग उद्दाम आक्रोश कैक ठाम गाथा सभक गीत मे पाओल जा सकैत अछि। गीत सँ तात्पर्य अछि—पद्यभाग। गाथा गद्य-पद्य मिश्रित होइत अछि। एहन रचना कें संस्कृत काव्यशास्त्र मे चम्पू कहल जाइत छैक। गद्य तँ सेहो काव्यात्मक रहिते अछि, गीत अनेको ठाम बहुत मार्मिक, बहुत बेधक भ' जाइत अछि। छेछन महराजक गाथा गबैत समाज मे जखन क्यो घोर विपत्ति मे पड़ि जाइत अछि तँ ओहिठाम छेछन महराज कें डाक देल जाइ छै—

आरे छेछन बाबू रे डोमरा
कते नीन सुतलय रे छेछन
बाबू रे लाली सेज पलंगिया
आ जल्दी सय आबियौ
देरी नै लगाबियौ ने रे
छेछन वीर डोमरा।

छेछन डोम छला तें हुनका डोमरा कहल गेलनि अछि। मुदा, रे संबोधन? हम-अहाँ तँ अपन बाप धरि कें रे नहि कहि पबैत छिऐक, आ छेछन तँ तीनू लोकक तारनिहार पूज्य थिका! आ एतबे नहि, छेछन एही लोकक संग सहजीवन रखैत छथि, बीध-विधाता जकाँ। बड़ बेसी दूर कतहु हेता तँ तीन कोस पर। एहि सँ बेसी दूरीक कोनो धारणा लोकसाहित्य लग मे नहि छैक। प्रेमी हृदय लग मे एहि सँ बेसी दूरी

चाहबो नहि करी। मुदा तखनो जखन छेछन कें पहुँचबा मे देरी होइत छैक तँ गायक कहैत छैक—

टूटले जे खटिया हौ छेछन
आ फाटले रजैये रे की
कते नीन सुतल हौ छेछन
माय-बहीन सेजिए रे की!

की एहि तरहक 'अवाच्य' बजबाक दृष्टान्त अहाँ शिष्टसाहित्य मे ताकि सकै छी? मुदा गाथा-क्रम मे भेटत। अपन आराध्य देवता कें ओ तामस चढ़ला पर माय-बहीन के गारि पढ़ि सकैत छैक। अहाँ हँसब जे यैह असभ्यता तँ लोकसाहित्य कें शिष्टसाहित्य सँ हीन बना क' रखने छैक। मुदा, विचारबाक इहो थिक जे माय कें अपन बच्चा संग जेना रहैत छैक, सेवक कें अपन आराध्य संग ताही प्रकारक आत्मीय भाव ओतय देखार पड़ैत अछि। शिष्ट लोकनिक जीवन मे एहन घनीभूत भक्ति-भाव अपन आराध्यक लेल नहि भ' सकैत छनि, कारण हुनका बहुतो रास अवलम्ब छनि। छेछन डोम लोकनिक आराध्य थिका। डोम लोकनि एहन मनुष्य होइत रहथि जे मनुष्य हेबाक बादो दोसर मनुष्य लेल एहि दुआरे अमनुष्य (अस्पृश्य) बनल रहैत छला जे एकरा छुआ गेने पाप लगैत छैक। ओहि लोकक क्यो नहि, ने कोनो देवता, ने कोनो देवदूत। ओकर एकमात्र अवलम्ब छेछन महराज। वैह अवलम्ब। कारण, बैदजी दवाइ तँ देता ने देता, अस्पृश्यता बरति क' सौ दुख देता। एहन असुरक्षा-बोध जाहि मे लोको मे रहैत लोक नहि रही, निष्ठुर अस्पृश्यता दुआरे आ कि जाहि कोनो दुआरे, ओइ भोग के नाम थिक दलित-भोग। ओतय अपन देवताक सिवाय क्यो अपन नहि होइत छैक। ओतय तन के तँ कोनो ठेकाने नहि, कखन अछि, कखन नहि अछि, मुदा जाबे छी ता मन सँ मजगूत बनल रही। बस एतबे प्रार्थना कुल्लम प्रार्थना छैक। जेना-जेना शिष्टता बढ़ैत छैक एहि अस्पृश्यताक स्थान दोसर-दोसर कारण ल' लैत अछि। मुदा मूल भाव बनल रहैत छैक—अकारण बैरीभाव। अपन एक लेख मे डॉ. सुभाष चन्द्र यादव कहैत छथि—'छेछन अतीतक एक टा ओझा आ मनोचिकित्सक बुझाइत अछि।'[26] मनोचिकित्सक एक टा सही शब्द भ' सकैत अछि, ओहि देय कें ध्वनित करबाक लेल जे एहि सेवक लोकनि कें अपन आराध्य सँ भेटैत छलनि। दीनाभद्रीक जीवनक जे संघर्ष छलनि ओ तँ निज हुनका जीवनक छलनि, हुनके संग चलि गेलनि, मुदा हुनकर गाथा ई लोक किएक गबैत अछि? मनोचिकित्साक लेल। मैथिली मे एक पैघ संख्या एहन गाथाक अछि जकर नायक प्रतापी संत थिका आ ओ अपन सेवकक गोहारि करै छथि। महराज आ बाबा शब्द लागल गाथा सब कें एहि क्रम मे देखि सकैत छी।

लोकगाथा आ जाति-संबद्धता

साहित्यसृजन करैत काल रचयिताक निजी भावना उदात्तीकृत भ' जाइत अछि, ई बात शिष्ट साहित्यक संबंध मे बहुत पुरान समय सँ मान्यताप्राप्त अछि। देखबाक बात थिक जे ई सिद्धान्त लोकसाहित्यो पर पूरे लागू होइत अछि, कारण ई रचयिता मात्रक सृजनचेतनाक बारे मे कहल गेल छैक। ओतय साहित्य होयब प्राथमिक थिक—लोक हो कि शिष्ट हो। लोकसाहित्यो मे क्रोध क्रोधक रूप मे नहि, घृणा अलगट्टे घृणाक रूप मे नहि, ओ अपन एक खास लय, खास नैरेटिवक रूप मे प्रकट होइत अछि। ओकर भावात्मक परिशोधन भ' गेल रहैत छैक आ ओ एक कथाक रूप धारण क' लैत अछि। कथा मे परिणत भेने ओहि मे सर्वांगता अबैत छैक। आगामी पीढ़ीक प्रयोग लेल ओहि मे अनेक ठाम जगह छोड़ल रहैत छैक। तें हमरा लोकनि पबैत छी जे लोकआदर्शक बहुतो रास रूप हमरा लोकनि कें गाथा सब मे प्राप्त होइत अछि। माय केहन हो तँ मैनावती-सन के, पत्नी हो तँ फुलेसरी-सन, प्रेमिका हो तँ चनैन कि दौना मालिन-सन के, बेटा हो तँ कारिख-सन के, जेठ बहिन हो तँ जलेसरी-सन के। अपना तरह सँ ई सब चरित्र अपन प्रतिरोध सेहो रचैत अछि। एक अध्येता महेन्द्र हजारी ठीक लिखने छथि जे 'अपना बोनि-मजूरी, मेहनतक कमाइ सँ शुद्ध अपक भोजन सँ दलित वर्ग मे एक सँ एक ऐश्वर्यशाली बालकक जन्म भेलनि जे सभ अपना-अपना बाहुबल, बुद्धिबल, शौर्यबल सँ प्रबल अत्याचारी, कामी, व्यभिचारी, अर्थवादी, अहंकारी सभक चुनि-चुनि क' नाश क' क' भयग्रस्त समाज कें त्रण आ मान दियौलनि।'[27] तात्पर्य जे समस्त प्रकारक संकट सँ लड़ैत ओतय एक आदर्श स्थापित करबाक उत्साह छैक। डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक एक कथन कें रेवती रमण लाल अपन पुस्तक 'मिथिलाक सांस्कृतिक परंपरा' मे एहि आशय लेल उद्धृत केलनि अछि जे लोकगाथाक नायक कुलीन अथवा इतिहासप्रसिद्ध लोक नहि भ' क' जनसामान्य लोक होइत छलाह जे अपन कृत्य आ कीर्त्ति सँ लोकप्रसिद्ध भ' गेलाह। मौन जी कहैत छथि—'एहि सत्य कें स्वीकार करैत कहल गेल अछि जे वीर पुरुष आ सती नारी मात्र ऊँचे जाति मे नहि होइ छथि प्रत्युत सरोसोलकन्ह मे जन्म ग्रहण क' मानवताक उच्च आदर्शक टेक निबाहि कल्याणक अद्भुत काज कएलनि अछि।'[28] एकर पुष्टि एहि बात सँ होइत अछि जे कतेको शताब्दी बीति गेलाक बाद आइयो समाज हुनकर गाथा गबैत अछि आ ओहि मे अपना युगक संकटक समाधान पबैत अछि। मने अपन अपन मानसिक स्तर पर।

पंडित गोविन्द झा अपन लेख मे एकठाम कहलनि अछि—'मनुष्य मे केओ-केओ बाहुबल, बुद्धिबल, आदि असाधारण गुण सँ बहुतो लोक कें मोहित कए लैत छथि। ई गुण सभ जँ शुद्ध लौकिक रहैत अछि तँ जनसामान्यक बीच ओ व्यक्ति

राजा जकाँ आदरणीय भ' जाइत छथि आ जँ अलौकिक रहैत अछि तँ देवता जकाँ पूजनीय।' राजा जकाँ आदरणीय आ देवता जकाँ पूजनीय दुनूक एक संग उदाहरण छथि सल्हेस। ओ मोरंगक राजा भीमसेन के सुरक्षा विभागक अधिकारी रहथि, मात्र एक टा अधिकारी जिनका पर कुपित भ' राजा कारागार धरिक सजाइ देने छलनि। मुदा लोक मे ओ स्वयं 'राजा जी' कहि क' आदरणीय छथि। एतय धरि जे शिष्टसाहित्य मे हुनका पर महाकाव्य लिखल जाइत अछि—मतिनाथ मिश्रक 'राजा सल्हेस' तँ ओहि मे 'राजा' शब्द जोड़ल भेटैत अछि। मौन जीक संपादित एक आलेखसंग्रहक नाम थिक: 'राजा सल्हेस: साहित्य और संस्कृति।'

अपने सल्हेस कोन जातिक छला से कहब मुश्किल अछि कारण, पंजी-प्रबन्ध सनक कोनो साक्ष्य हमरा लोकनि लग मे उपलब्ध नहि अछि, जेना कि विद्यापति आदिक छनि। प्रहरी लोकनिक हेड छलाह, आगू जा क' यशस्वी भेला तें प्रहरी लोकनि हुनका अपन अस्मिताक संग जोड़ैत छथि आ तकर प्रतीक मानैत छथि। अंग्रेजक जबाना मे आबि क' प्रहरीक जिम्मा एक जातिविशेष, दुसाध कें देल गेलैक तँ प्रहरी-कार्यक ई विशेष अस्मिता दुसाध जातिक संग जोड़ि देल गेलैक। दुसाध लोकनिक देवता भेला सल्हेस। सल्हेसक जाति-मूल ताकब बहुत कठिन। हमरा लोकनि देखैत छी जे सोलहम शताब्दीक बादक जे लोकगाथा सब अछि तकर तँ सूत्र भेटैत अछि, कारण, हुनकर वंशधरक पीढ़ी एखनहु मौजूद छथि जिनका मे अपन पुरखाक स्मृति बांचल छनि। लोकसंस्कृति मे विस्मृतिक बहुत महत्त्व छैक। जखन वंश बिसराइत छैक तखनहि नायकक महिमा के असल माहात्म्य शुरू होइत छैक।

मैथिली मे गाथानायक लोकनि कें एक टा जातिविशेष संग जोड़ि क' लीखल जाइत छैक। थिक तँ आपत्तिजनक मुदा शिष्टसमाज मे स्वीकृति पौने अछि। सलहेस कें दुसाध संगें, लोरिक कें यादव संगें, नैका बनिजारा कें तेली संगें, बिहुला कें बनियाँ संगे, तहिना दुलरा दयाल कें मलाह संगें, जोतिक पंजियार आ कारिख पंजियार कें दुसाध संगें जोड़ल गेल अछि। एहना मे दीनाभद्री तँ उचिते मुसहरक नायक छथि। मणिपद्म जी एहि तरहक परिचय-वाक्य लिखने छथि: 'राजा सल्हेस दुसाध जातिक छथि।' 'लोरिक स्वयं यादव छला।' 'दीनाभद्री मुसहरक महापुरुष छला।' मिथिलाक महापुरुष क्यो होथि, एहन क्यो नहि भेलाह अछि। कारण, मिथिलाक महापुरुष छला कर्णाट, ओइनवार आ खड़ोरय के राजा लोकनि, जे समयक संग अपन-अपन अंत कें प्राप्त केलनि। हुनकर जे जीवनकथा अछि, से एक तँ लोक कें बूझल नहि अछि आ जतबा बुझलो अछि ताहि मे रस नहि अछि, प्रेरणा नहि अछि। ओ गाथा नहि बनि सकैत छथि। तें कहल जाइत अछि जे गाथा शासिते वर्ग के भ' सकैत अछि। ओकरे जीवन मे प्रेरणा छैक। रस छैक।

साहित्य अकादेमी जे मैथिली लोकगाथा सभक मूलपाठ प्रकाशित कयने अछि—'दीनाभद्री', 'सल्हेस' आ 'सती बिहुला' आदि, ओहि मे गाथागायकक कोनो उल्लेख नहि अछि। एकरा दुखद मानबाक चाही। ग्रियर्सनक संग्रह मे तँ नहि छनि जे कतबो किछु होइतो ओ शासक जातिक छलाह, हाकिम छला। मुदा, एक टा संपादक जे अपनहु दलित छथि, हुनको यैह दृष्टि राखब कोना उचित ? जतबा गाथाक मूलपाठ गाथागायकक उल्लेख संग प्राप्त होइत अछि तकरा देखी तँ एहि धारणाक पुष्टि नहि होइत छैक जे कोनो नायकक गाथा एक जातिये विशेष टा मे प्रचलित अछि। विश्वेश्वर मिश्रक संकलन मे हमरा लोकनि कें नामोल्लेख भेटैत अछि आ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक संकलन सँ सेहो। नैका बनिजारा कें तेलीक गाथा कहल गेलैक अछि मुदा एकरा हरिपुर गामक सरोवर यादव गबैत छला। तहिना, बिहुला (तेली)क गाथा सोमन मुखिया (लगमा), लोरिक (यादव)क गाथा असमा (मनीगाछी) गामक फचन दास आ बाहुरलाल हजाम गबैत छलाह। ग्रियर्सन कें सल्हेस (दुसाध)क गीत एक टा डोमक कंठ सँ भेटल रहनि आ दीनाभद्रीक गीत एक नेत्रहीन दलित सँ। एतय धरि जे दुसाधक पाबनि मे गाओल जाइबला गाथा-गीत सब ओ एक टा डोमक मुँहें सुनने छलाह।

कलाकारक दृष्टि सँ देखी तँ एहि मे गाथागायकक प्रतिभाक भूमिका भ' सकैत अछि जे एक्कहि व्यक्ति बहुत किछु सिखबाक उत्साह रखैत होथि मुदा एकर असल कारण थिक जे विस्मृतिक सहयोग सँ कोनो नैरेटिव समस्त शासित समाज लग पहुँचि जाइत छलैक आ ओ सर्वस्वीकृत भ' जाइत छल। लोकायत मे बहुतो प्रकारक सम्प्रदाय कें एक संगें जारी रखबाक सुविधा छलैक। ब्राह्मणधर्म मे ई सुविधा बहुत बाद मे आबि क' देल गेल मुदा तकर बादो लोकायत ओम्हर आबाद रहल। निरंतरता लोकसंस्कृतिक एक आवश्यक गुण थिक। क्यो ठीक ई आकलन देने छथि जे गाथा कें निरंतर विस्तारक अवसर दैत रहबाक चाही। अर्थात् ओकरा लिखबाक नहि चाही। रमानाथ बाबू कतहु अपन इहो ठीक मंतव्य देलनि अछि जे 'वर्णरत्नाकर'क भाषा हमरा लोकनि कें भिप केवल एहि दुआरे लागि रहल अछि जे बीचक फाँक भरबाक लेल हमरा सब लग पुस्तक नहि अछि। आजुक मैथिली तखनुक मैथिली सँ एकदम अलग देखाइत छैक। कहल जा सकैत अछि जे भाषाक विकासक जे प्रगति होइत छैक ठीक ओही तरहक प्रक्रिया लोकगाथाक विकासक प्रक्रिया थिक। लिखि लेने लाभ यैह टा होयत जे कोनो खास वर्ष मे कोनो खास ठाम ई गाथा कोना गाओल जाइत छलैक। बस, दस्तावेजीकरण।

मुदा, मणिपद्म जखन एहि गाथा सब मे आयल समाज कें 'मिथिलाक लोक' कहैत छथि तँ एक ठीक बात कहैत छथि। लोकायतोक लोक मिथिलाक लोक छथि, सत्य तँ सैह थिक। देवता जकाँ पूज्य हेबाक योग्यताबला लोक एम्हरो भेलैक अछि, आ से लोक कें स्मरण सेहो छैक। तकरा ओ लोकनि अपन अस्मिता बनबैत छथि, आ कोन जातिक के लोकनि आगू चलि क' हुनकर गाथागायन सिखैत छथि, ई एक अलगे प्रश्न थिक। ओतय सब कथू मिलजुमला छैक। कतोक ठाम देखाइत अछि जे आपसी जातीय अनेकता के परिस्थिति कें कम कम करैत एकीकरणक मंशा बिल्कुल स्पष्ट छैक। एहि ठाम विभिप सम्प्रदाय कें, एतय धरि कि जातियो कें एक दोसराक संग मिलबाक सुविधा छैक। लोरिकक 'क्रांतिकारी दल' मे जे युवक सब शामिल छला तिनका सभक नाम मणिपप्र देलनि अछि—'बंठा चमार, राजल धोबी, वारू दुसाध, सावर यादव।' की एहन कोनो उदाहरण कर्णाट सभासदक भेटैत अछि ?

मैथिली लोकगाथाक आदर्श

हमरा लोकनि अवगत छी जे ब्राह्मणधर्मक स्मार्त्त व्यवस्थाक तहत जे नैतिक आदर्श शिष्टसमाजक लेल विहित छल, ताहि सँ एकदम अलग नैतिक आदर्श लोकायतक रहैक। आदर्शक निर्माण कोनो साधारण घटना नहि होइत छैक। एहि लेल पुस्त-दर-पुस्त के लंबा सिलसिला चाही तखने कोनो आदर्श निर्धारित होइत छैक। मैथिली लोकगाथाक विशेषता अछि जे एकर नैतिक आदर्श लोकायतक आदर्श छियैक। एहि मामिला मे दुनू-ब्राह्मणधर्म आ लोकायत-बराबर-बराबर पर छल। दुनूक अपन-अपन नैतिक आदर्श छल जे परंपरानुमोदित, परंपरासमर्थित छल।

लोकगाथा जें कि कोनो समुदायक जातीयसाहित्य होइत अछि, ओकर आदिम विश्वास, ओकर धार्मिक प्रवृत्ति आ ओकर नैतिक आदर्श सब कथू ओहि मे स्थान पबैत अछि। एतय हमरा लोकनि देखैत छी जे स्त्रीक उपति यद्यपि कतहु सँ कम नहि छल, मुदा पर्याप्त साक्ष्य भेटैत अछि जे विवाह एकाधिक करब मान्यताप्राप्त कयने छल। एहि मे देखल जाइक मात्र ओकर पुरुषार्थ। स्त्री लोकनि सेहो श्रमजीवी होइत छलीह। स्त्री कें अर्द्धनारीश्वर-समरूप बराबरीक दरजा ब्राह्मणधर्म मे भने स्वीकृत नहि छल, लोकायत मे बहुत हद धरि लागू रहैक। चनैनक पति नपुंसक छल तें ओ ओकर त्याग क' अपन पसिपक सुपुरुष लोरिक पर लुबुधल छल आ अपन प्रेम-साधना सँ ओकरा हासिल केलक। नैका बनिजाराक पत्नी फुलेश्वरी पतिक परोक्ष मे अनेक प्रकारक लांछन, अनेक अपमान सहलक। एतय धरि जे ओकर बदमाश ननदि ओकरा स्त्रीदेहक व्यवसायी कुम्भा डोमक हाथें बेचि लेलक। वेश्यावृत्ति जखन ओ नहि स्वीकारलक तँ दासी बना कहुना बेचि कुम्भा अपन पूजी ऊपर केलक। मुदा, जखन नैका अभियान सँ आपस घुरला, पत्नीक ऊपर लागल लाँछन कें कात करैत ने केवल ओकरा पत्नी-रूप मे अपनौलनि अपितु अपन बहीन कें सजाइयो

मुकर्रर केलनि। ओ तँ फुलेश्वरीक उदार स्वभाव रहैक जे ननदियोक रक्षा वैह केलक। एकर तुलना मे जँ ब्राह्मणधर्मक आदर्श देखी—सीता कें जे रावण ल' गेल छल ओ स्त्रीदेहक कोनो व्यवसायी नहि छल, एतय धरि जे स्त्रीक गरिमाक प्रति संवेदनशीलो छल। तखनहि ओ सीताक सहमतिक प्रतीक्षा करैत रहल, जेना रामायण बतबैत अछि। एकर बादो राम, सीता कें माँफ नहि क' सकलाह कारण परपुरुषक हाथ पड़ल स्त्री कें अपनायब नीति-विरुद्ध छल। ब्राह्मणधर्म मे जारकर्म स्वीकृत छल, जखन कि पुनर्विवाह प्रतिबंधित। अध्येता लोकनि एकरा पाछू सम्पत्तिक विखंडन कें बचेबाक प्रयास कें सबल कारण मानलनि अछि। तात्पर्य जे अंतिम महत्त्व सम्पत्तियेक छल, नारी तुच्छ छल। फुलेश्वरी जेना बड़े प्रयत्न सँ अपन ननदि कें दंडमुक्त करौलनि, महाभारतक द्रौपदी होइतथि तँ ओकर कटल मूड़ी देखलाक बादे संतुष्ट होइतथि, ई एक अलगे दृष्टान्त थिक। दोसर दृष्टान्त हमरा लोकनि बंशीधर बाभनक गाथा मे देखि सकैत छिऐक जतय ओ श्याम सिंह कें कुश्ती लेल आमंत्रित कयने छल, मुदा अपना बदला दू-दू टा मुस्टंड बनैया सुग्गर सँ भिड़ा देलकैक, ताहू सँ नहि भेलैक तँ कच्छा तर मे नुकायल खुखरी भोंकि क' मारि देलकैक। राम कोना बालि कें मारने छलाह तकर वृत्तान्त सर्वज्ञात अछि। वामन कोना अधर्मतापूर्वक बलि कें पदच्युत कयने छलाह, तकर कलंक मेटौने नहि मेटायल जा सकैत अछि। मुदा, समयक संग एहू समुदायक कोना आर्यीकरण भेलैक तकर उदाहरण देखैत छी जे श्याम सिंहक बेटा बाला जखन बापक बदला लेबा लेल आयल तँ बंशीधर खुखरी तँ एहू बेर नुकौने छलाह, मुदा चतुराइ आ चुमकी बाला मे बेसी छलैक। ओ पहिनहि ओकरा खुखरी भोंकि मारि देलक।

एहि लोकक देवी-देवताक सेहो अपन उच्च आदर्श रहैक। कमलाक गाथा मे आयल छैक जे कमला जखन हिमालय सँ मिथिला अयबाक बाट मे छली, मोरंगक मनबढ़ू बदला चमार बाटे मे हुनका घेरि क' बलजुमरी विवाह क' लेबाक एलान कयने छल। ओहि आततायी सँ हुनकर भक्त अमर सिंह हुनकर रक्षा कयने रहनि। मुदा आगू हमरा लोकनि देखैत छी जे अमर सिंह स्वयं जखन आततायी भ' जाइत अछि आ अपने बेकसूर सहकर्मी केवल महराजक ईर्ष्यावश जान मारि देबा पर बित्त भ' जाइत अछि तँ एहि अन्याय कें देखैत स्वयं कमला केवलक रक्षाक लेल अमर सिंहक हत्या करैत छथि। दोसर दिस, पौराणिक देवी दुर्गा कें हमरा लोकनि देखि सकैत छियनि। बंशीधर बाभन हुनके आराधक छलाह। जखन कि श्याम सिंह आ बाला लोकदेवी गहीलक। बाला जखन अपन पिताक अन्यायपूर्ण हत्याक हवाला दैत सहायत लेल गहील सँ प्रार्थना केलनि तँ ओ दुर्गा लग जाय, हुनका समस्त जनतब दैत बंशीधरक मदति नहि करबा लेल मनाओल। आर्यीकरण अभियानक प्रगतिवश

लोकायतक देवतो लोकनिक चरित्र मे कोना ह्रास भेलनि तकर वृत्तान्त हमरा लोकनि दीनाभद्री मे देखि सकैत छी। दीनाभद्री सल्हेसक उपासक रहथि आ हुनकर शत्रु जोरावर सिंह कि कनक सिंह सेहो। सातैन रामक पाठ मे आयल अछि जे अपन बेकसूर सेवक दीनाभद्रीक हत्याक लेल बाधित सल्हेस, अपराध-बोध मे, सूतल भद्रीक पयर पकड़ि क' कनैत छथि। मुदा जें कि आर्यीकरणक एक अर्थ प्रकारान्तर सँ दासता गछब छल, कनितो सल्हेस दुनू भाइ सेवकक हत्या करैत छथि।

दोसर दिस, मैथिली लोकगाथा सब मे निहित संदेश पर जँ ध्यान दी तँ एक सँ एक उच्च जीवन-मूल्य अनुस्यूत देखार पड़ैत अछि। अतिप्राचीन धर्मराजगाथा कें देखी वा नवीनतम कारूगाथा कें, समाज कें उच्च नैतिक बल प्रदान करब, भोगक तुलना मे त्याग के वरीयता, व्यक्तित्व के महनीयता स्थापित करब काम्य थिक। भने कतबो कष्ट किएक ने भोगय पड़य, सत के बाट पर चलब नहि छोड़ी, ई संदेश प्रत्येक धार्मिक गाथा मे निहित अछि। तहिना, वीरगाथात्मक आख्यान सब कें देखी तँ सदैव अन्यायक विरोध करब, निर्बलक पक्ष मे ठाढ़ होयब, अपन विरोध कें संघबद्ध क' क' अन्यायीक विरुद्ध संघर्ष करब विधेय मानल गेल अछि। लोरिक गाथा कें जे हमरा लोकनि एते लोकप्रिय देखैत छी, विद्वान लोकनि एकरा सामंती व्यवस्थाक खिलाफ भारतीय इतिहासक पहिल जनक्रान्ति कहलनि अछि। बटकर, पथकर आदि अन्यायपूर्व करारोपण तथा स्त्रीक अपहरण आदि सामंती अत्याचारक विरुद्ध ओतय एक संघबद्ध संघर्ष देखाइत छैक, जकर उद्देश्य सत्ताप्राप्ति नहि थिक, अन्यायपूर्ण व्यवस्था कें बदलब थिक। दीनाभद्रीक संघर्ष दासप्रथा, बेगारप्रथाक विरुद्ध छैक। मैथिली गाथा सब मे स्त्रीपुरुष-संबंधक जे वृत्तान्त सब आयल छैक, सगरे स्त्री कें बराबर के गरिमा देल गेलैए—शिष्टसमाज जकां एतय दोहरा मापदंड नहि भेटैत जे कहबा लेल तँ पूज्या छथि मुदा वास्तविकता लोमहर्षक। प्रकृति आ सम्पूर्ण चराचरक प्रति एक मैत्रीभाव छैक। कतहु यदि तथाकथित विकास लेल वा स्वार्थान्धतावश प्राकृतिक संसाधनक नाजायज दोहन छैक तँ ई लोक प्रकृतिक पक्ष मे, दोहनक विरुद्ध संघर्ष करैत अछि।

मैथिली लोकगाथा आ इतिहासकार लोकनि

'मैथिली लोकगीत' (सं. रामइकबाल सिंह राकेश)क भूमिका मे डॉ. अमरनाथ झा मैथिली लोकसाहित्यक मादे लिखने छथि—'एहि सरल पद सब मे देशक यथार्थ दशा वर्णित अछि, एहिठामक संस्कृति एहि मे सुरक्षित अछि। सभ्यता तँ मात्र वाह्य आडम्बर थिक, काल्हि तुर्क लोकनिक शासन छलनि, आइ अंग्रेज लोकनिक छनि। भारतीयता तँ गाम मे बसनिहार लोक सभ मे छनि, जे एखनहु शहर सभक क्षणभंगुर

आभूषण सँ अपन स्वाभाविक रूप कें नुका नहि लेने छथि, जिनका मे युग-युग सँ वेदना सहन करबाक शक्ति छनि, जे सुख-दुख मे, हर्ष-विषाद मे, जगत्स्रष्टा कें बिसरैत नहि छथि आ जे खेत मे, चाहे जाड़ हो गरमी हो, सदति प्रकृतिदेवीक निकट अपन समय बितबैत छथि।' [29] क्षेत्रीयता मे जे राष्ट्रीयताक जावन्तो गुण मौजूद रहैत छैक, तकरा संबंध मे ई एक महत्त्वपूर्ण कथन थिक। यात्री अपन एक कविता मे एही लोकक विषय मे कहलनि अछि—'जननि, तोहर प्राण, तोहर शक्ति/ धन्य थिक ओ व्यक्ति!!!'

एहि प्रकारक 'मातृभूमिक शक्ति' बला लोक सभक मोन मे जे स्वप्न आ सेहन्ता रहनि से मैथिलीक लोकगाथा मे व्यक्त भेल अछि। ओ अनिवार्य रूप सँ मिथिलाक जातीयकविता थिक। महाकाव्यात्मक भेलाक कारण ओहि मे कविताक साधंस आ ओकर परिणति दुनू आबि जाइत छैक। आदिकालीन मैथिली साहित्यक एक खास विशेषता छिऐक जे ओ अपन पूरा जीवनशैलीक संग उपस्थित अछि। अमूर्तता ओहि मे नहि छैक, जेना हमरा लोकनि प्राचीन साहित्यक आदिकालीन कविता मे पबैत छी। हमर तात्पर्य उपनिषदक कविता सँ अछि। एकर कारण थिक कथात्मकता। कविता पूरा कथात्मक छैक। कथा कें चाही विस्तार। विस्तारक लेल ओहि ठाम पूरा गुंजाइश छोड़ल गेल छैक। सिद्धसाहित्य तँ बचल रहि सकल जे ओकर प्रयोग धार्मिकचर्या मे शामिल रहैक। ओ बचल रहलैक तँ इहो बचल रहि सकल। तकरा क्यो अँखिगर तकनिहार ताकि निकाललनि। असल जे आदिकालीन साहित्य थिक से लोकगाथा थिक। ओ ततबा प्रवाह मे रहैक जे ओकरा क्यो लिखि लेबाक हिम्मत नहि जुटा सकलाह। अथवा के जानय, ओकरो लिखल गेल हो, तकर संरक्षणक एकमात्र जगह विक्रमशिला महाविहार भ' सकैत रहय, मुदा ताहि महान पुस्तकालय कें अभागल लोकनि जरा देलनि।

मैथिली लोकगाथाक अनेक अध्येता एहि निष्कर्ष पर पहुँचला अछि जे जें कि लोकगाथाक वर्णनीय विषय मिथिला जनपदक समस्त चराचर छिऐक, तें 'मैथिलीक लोकगाथा सब मे मिथिला जनपदक संस्कृति सम्पूर्ण रूपें स्वरूपायित भ' उठल अछि।' स्पष्ट आशय अछि जे मिथिलाक इतिहास मे मैथिली लोकगाथाक हिस्सेदारी हेबाक चाही। दोसर दिस, तथ्य जे हमरा लोकनिक सामने अछि, से निराशाजनक अछि। मिथिलाक एक्कहु टा इतिहासकार एकर जतन नहि क' सकलाह अछि। ओ लोकनि राज्याश्रय मे पोसायल लोकक अभिलेख सब मे ओझरायल रहि गेलाह। अथवा, दोसर भाषा मे कहिऐक तँ मिथिलाक जन इतिहास-लेखन एखनहु अपन गर्भावस्थे मे अछि। परंपरागत इतिहासकार लोकनि सामंतक समानान्तर चलैत जीवन-संघर्ष कें अंधकारकाल कहि क' छुट्टी छोड़ा लेलनि अछि। प्रकाशक प्रतीक्षा एखनहु छैक।

मैथिलीक प्रमुख लोकचिन्तक मणिपद्म एहि सीमा सँ कने आगू बढ़ला अछि। अंधकारकाल कें कोना क' चीड़ल जाय? एक ठाम मणिपद्म लिखैत छथि—'आवश्यक छैक जे मैथिली लोकगाथाक आधार पर मिथिलाक लोक इतिहास (पिपुल्स हिस्ट्री) लिखल जाय। एखन धरि चलि अबैत इतिहासक रूपरेखा, क्रम आ मान्यता बदलि जायत। ई महागाथा सब जँ अपन सब टा स्वरूप (वर्सन) सहित मूल मे प्रकाशित भ' जाय तँ ई काज मिथिलाक सब टा सांस्कृतिक सम्पूर्णता कें समेटि लेतैक।'[30] सब टा सम्पूर्णता कें समेटि लेबाक अर्थ की थिक? यैह थिक मैथिल राष्ट्रीयता, जकर हम सब नामे टा सुनैत आयल छी आ एतबे टा जनैत छी जे तकरा जमींदार लोकनि, मठोमाठ लोकनि धो-पोछि क' खा गेलाह।

साहित्यकार लोकनि, तात्पर्य साहित्यक इतिहासकार लोकनि सँ अछि, लोकगाथा कें साहित्य नहि मानैत छथि। एकरे अनुगमन करैत आगूक माननिहार एकरा कवितो नहि मानैत छथि। साहित्यक राजनीति सँ कविता कें कोन काज? ओकर पहचान राखैबला लोक तँ ओकरा मानबे करतैक। मूल प्रश्न इतिहासक गलत होयबा पर जा टिकैत छैक। इतिहासकार लोकनि तँ मानैत छथि जे ऋग्वेदक एक-एक ऋचा सुन्दर कविता थिक। ओहि कविता कें ओ लोकनि अपन आदिस्रोत बनौने छथि! ओकरा तँ अपने 'श्रुति' कहल जाइत छैक। इतिहासकर लोकनिक ई अक्षमता कहि सकैत छिऐक जे एकठाम तँ ओ श्रुतिसाहित्य कें स्रोत बनबैत छथि, दोसर ठाम छोड़ि दैत छथि। तर्क ई छनि जे ओकर आब लिखित रूप छैक। अक्षमता ई छनि जे एखनहु जे 'श्रुति' अछि तकरा लिखि जाथि आ तखन ओकरो स्रोत बनबथि। मुदा से संभव एहि दुआरे नहि जे ओ पराया वस्तु थिक, ओकरा प्रति हुनका मे आत्मबुद्धि नहि भ' सकैत छनि। एवम्प्रकारें कहि सकैत छी देवते लोकनि जकाँ इतिहासकारो लोकनि आर्यीकरणक दासताभाव सँ मारल रहलाह अछि। प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक एक कथन कें एतय स्मरण कयल जा सकैछ जतय ओ कहैत छथि जे लोकगाथा एक जीवन्त काव्य थिक, कारण एहि गाथा सभक जीवन्तताक एकमात्र आधार छैक लोकधर्मिता, जकरा बलें ई गाथा सब अहुखन एक टा विशाल जनसमुदाय कें उद्वेलित करबा मे समर्थ बनल अछि।'[31] अहाँ मानू कि नहि मानू लोक स्वयं मे समर्थ अछि।

कविताक मूल ध्येय थिक उद्वेलन। उद्वेलनक अर्थ थिक एहन दशा जखन भावावेगता प्राण कें धक्का दियय लगैछ। मनुष्यक सब भाव एहि मे आयत—क्रोध, करुणा, प्रेम आदि-आदि। ई एहन विषय थिक जकर विश्लेषण काव्य-शास्त्रक जाबन्तो सिद्धान्तक आधार पर अलग-अलग कयल जा सकैत अछि। रसवादी आ ध्वनिवादी एकरा अपना तरहें करता तँ मार्क्सवादी आ विखंडनवादियोक लग मे एकर विश्लेषण लेल टूल्स रहतैक। यैह काव्यक काव्यत्व थिक। मैथिलीक लोकगाथा

अनिवार्य रूपें मैथिलीक जातीयकविता थिक। जातीय अर्थात ? जकर विपरीतार्थक विजातीय होइत छैक। एहि आधार पर अगिला युगक कविता कें हमरा लोकनि चीन्हि सकब जे ओ मैथिली जातिक कविता थिक कि विजातीय! स्वीकारभाव सभक लेल छैक मुदा निजता सेहो कोनो चीज थिक!

आखिर कोन कमी अछि जे लोकसाहित्य कें साहित्य नहि मानल जाय ? एकर असली कारण थिक संस्कृत काव्यशास्त्र। काव्य कें सब दिन दोयम माननिहार पंडितसमाज जखन काव्यशास्त्र कें विषय बनौलक तँ चिन्तन करैत-करैत ताहि उँचाइ धरि पहुँचा देलनि जे मुक्तकाव्य वा कि शुद्धकाव्य जकरा कहल जाय, तकर भेटनाइए मोश्किल। एकर परिणाम हमरा लोकनि संस्कृत महाकाव्यक इतिहास मे देखि सकैत छी। जे महाकाव्य अश्वघोष आ कालिदास सन नैसर्गिक महाप्रतिभ कविक शुद्धकविता सँ शुरू भेल छल से श्रीहर्ष धरि पहुँचैत-पहुँचैत विद्वत्ताक लोहा मनबायब के कलाकारी धरि सीमित भ' गेल। काव्यक अर्थ बुद्धिविलास भ' गेलै।

लोकसाहित्य एहन कविता थिक जकरा बनौनिहार कें ईहो नहि बूझल रहैत छैक जे कविताक कोनो शास्त्रे होइत छैक। काव्यशास्त्र पढ़बाक तँ प्रश्ने कतय ? कविता बनौनिहार कें लिखबाक सेहो नहि सुविधा। ओकरा लिखबा के लूरिये नहि। ओकरा तँ जाइत-अबैत कतहु चमकलै आ तकरा ओ एक टा खास पैटर्न मे यादि क' लेलक। मानि लेल जाय जे अपन समुच्चा जीवन मे ओ पचास गोटे कें ओ कविता सुनौलक, सकार्थ ओतबे टा भेलै जतबा क्यो श्रोता यादि क' लेने रहय। निश्चिते ओ श्रोता अपनो कवि छल होयत। ओ अगिला पीढ़ी धरि पहुँचौलक तकरे प्रसादात् आइ हमरो लोकनि धरि पहुँचि सकल अछि। यात्री जी कहल करथि जे लोकधारा तँ ओ धारा थिक जतय कतेको कतेक कविता रोज जनमै अछि आ रोज मरैत अछि। काव्यक जँ क्यो घमंड करै छथि तँ बेकार करैत छथि। बचत वैह टा जे आगाँ पहुँचि सकत।

लोकसाहित्यक माँग रहैत अछि जे कविताक अध्येता कें काव्यशास्त्रक ऊपर द' क' गमन करबाक लूरि हेबाक चाही। ओकरा शास्त्रक शिकार नहि बनबाक चाही। विहगावलोकन जकरा हमरा लोकनि कहैत छी, चिड़ै ऊपर सँ देखैत अछि। छोट तँ ओकरा जरूर देखाइत देतै चीज-वस्तु, मुदा तैयो तँ अपना काजक वस्तु ताकिये लैत अछि। शब्दकारक प्रयोजन छनि जे ऊपर सँ देखने ओकरा विस्तार देखाइत छैक। ओहि विस्तार मे सँ ओ, ओ जगह निश्चित क' लैए जतय ओकरा काजक वस्तु भेटबाक संभावना भ' सकैत अछि। तखन ओ उतरैत अछि। कविताक की, विद्यामात्रक अध्येता कें एहिना देखि क' उतरबाक चाही।

लोकगाथाक संरचना आ भास

ध्यान रखबाक बात थिक जे मैथिली समाज मे लोकगाथा कें 'लोकगाथा' वा 'गाथा' नहि कहल जाइत छैक। ई आधुनिक शब्द थिक जकर प्रचलन हेबनि मे भेलैक अछि आ प्रमुखत: मणिपप्र एहि शब्दक बहुश: प्रयोग कयने छथि। लोकगाथाक अभिधान रूप मे तीन गोट शब्द मिथिला मे प्रचलित छैक—महराइ, भगैत आ गीत। ई तीनू अभिधान गाथा-वस्तुक प्रकृति आ स्वभावक अनुरूप होइत अछि। महराइ अधिकतर वीरगाथा तथा प्रेमगाथा प्रकृतिक गाथा लेल व्यवहृत होइछ। जेना लोरिक गाथा कें महराइ कहल जाइछ, सल्हेस गाथा कें महराइ कहल जाइछ। हमरा लोकनि इहो पबैत छी जे महराइ कालान्तर मे 'नाच'क रूप मे विकसित भेल जे किरतनियां नाचक समानान्तर मैथिली समाज मे, राजदरबार सँ बाहर, पूरेपूरी पसरल छल। वीरगाथा वा प्रेमगाथा मे नाट्यतत्व स्वाभाविके अधिक होइछ आ मनोरंजनक तत्व सेहो।

भगैत भक्तिपरक गाथा थिक। जेना, धर्मराज वा कमलाक भगैत, जकर जानि नहि कतेको गाथा-गुच्छ अछि। भास हरेक गाथाक अपन अलग-अलग अछि जे कि ओकर वस्तु-स्वभावक अनुरूप होइत अछि। गीत एक एहन शब्द थिक जकर प्रयोग अक्सरहाँ हमरा लोकनि महराइ आ भगैत दुनूक लेल कयल जाइत देखि सकैत छी। जॉर्ज ग्रियर्सन जखन सल्हेस वा दीनाभद्रीक गाथाक पाठ प्रकाशित करौलनि तँ ओकरो ओ गीते कहने छलाह। स्पष्ट अछि जे जाहि गायक लोकनि सँ ओ एकरा लेने हेताह, हुनका लोकनिक समाज मे एकरा गीते कहबाक प्रचलन रहल हेतैक। एहि तीनूक बीचक अन्तर कें फड़िछबैत ओमप्रकाश भारती लिखने छथि: 'मिथिला मे गीत, लोकगाथाक लेल सर्वप्रचलित अभिधान अछि, जेना सल्हेसक गीत, बखतौरक गीत, भुइयां बाबाक गीत। गीत श्रेणीक लोकगाथा सब भगैत सँ (आ महराइ सँ सेहो) फराक होइत अछि। गीत श्रेणीक लोकगाथा मे गद्य-संवाद अल्प रहैछ, जखनि की भगैत मे गीतक संग गद्य-संवाद सेहो रहैछ। भगैत गायनशैली मे मूलगैन जाहि पद कें गबैछ, पुन: ओकर व्याख्या गद्य मे सेहो करैछ। गीत प्राय: एकलगान होइत अछि। जखन कि भगैत आवश्यक रूप सँ समूहगान थिक।'[32] कहब आवश्यक नहि जे गीतगायन लेल कोनो वाद्ययंत्रक प्रयोग नहि होइछ, जखन कि समूहगान यथा भगैत वाद्ययंत्रक संगहि गाओल जाइछ।

मैथिलीक लोकगाथा सब मे सँ सभक प्राय: अपन-अपन भास अछि। भगैतशैली मे गाओल जाइबला गाथा सब मे किछु समानता देखार पड़ि सकैछ, खास क' क' ई जे मूलगैन जाहि पद कें गबैत अछि, भगतिया लोकनि समवेत स्वर मे ओकरा दोहराबै छथि। एहि भास सभक आदिम स्रोत की थिक, एहि संबंध मे ओमप्रकाश भारतीक कहब छनि जे 'एहि सब धुनक उत्स जतसारि गीत मे अछि।' ओ यद्यपि

इहो कहैत छथि जे 'हमरा अपन शोध मे एखन धरि एहि गाथा सभक भासक प्रेरणाकेन्द्र नहि सोझरायल अछि', मुदा हुनकर अध्ययन छनि जे 'कतेको गाथा सब जतसारि गीतक भास पर गाओल जाइत अछि।' गाथा सभक पाँती छन्दोबद्ध नहि, लयबद्ध अछि। यदि पहिल पाँती मे 14 मात्र होयत तँ दोसर मे 18 आ तेसर मे 20 वा 12 मात्र भ' सकैत अछि, जकर लयबद्धताक रक्षा गायक लोकनि अपन अदाकारी सँ करैत छथि।

मैथिलीक गाथा सब कंठ सँ मात्र नहि, नाद सँ गाओल जाइछ, एहि आधार पर भारती जीक अध्ययन छनि जे गाथागायकी 'सामाजिक चिकित्साप्रणालीक एक टा अंग थिक।' ओ लिखने छथि—'नाद-संगीतक एक टा विशेषता होइत अछि जे गायनक आलाप सँ जे ध्वनि-तरंग नि:सृत होइत अछि ओ सौंसे देह मे सुषुप्तावस्था मे उपस्थित ऊतक कें जाग्रत करैत अछि, जाहि सँ शरीरक रक्त-संचार नियमित रहैत अछि, दिन भरिक थकान क्षणभरि मे बिला जाइत अछि।'[33] ओ प्रश्न करैत छथि—'यदि लोकगाथाक उद्देश्य केवल कथारस कें आगां बढ़ायब वा कोनो गीतक प्रस्तुति करब रहितियै तँ गायनक समय केवल संगीतमय प्रस्तुति सँ काज चलि जइतियै, तँ नाद सँ एते चिकारी-भोकारी किएक? स्वाभविक रूप सँ गाथागायन सामाजिक चिकित्सा-प्रणालीक एक टा अंग थिक जकरा गाबि बोनिहार वर्गक लोक दिन भरिक थकान मेटबैत अछि। शारीरिक रूप सँ बलिष्ठ रहलाक बादो हुनका लोकनि कें कहियो वीरता-प्रदर्शनक अवसर नहि भेटल रहैत छनि। गाथा गबैत-सुनैत जखन ओ अपने सनक लोकगायकक वीरता-प्रदर्शन देखैत छथि तँ भाव-विह्वल भ' अपना जीवनक विषमता बिसरि जाइत छथि। ई सब टा विह्वलता संगीतक माध्यम सँ रेचन प्राप्त करैछ। विषमताक ई रेचन गाथाक कथावस्तु धरि कें अक्सरहाँ प्रभावित करैत अछि। यैह कारण थिक जे मैथिली प्रेमगाथा सब मे हमरा लोकनि बोनिहार अथवा नोकरिहारा गाथानायकक प्रेम-प्रसंग राजाक बेटी संग चलैत, राजाक बेटीक संग विवाह होइत देखैत छी।

लोकगाथा आ सम्मरि

मैथिली गाथा सभक संरचना पर ध्यान दी तँ सर्वत्र देखैत छी जे पौराणिक गाथाक संरचना सँ ई सर्वथा भिप होइछ। पुराण आ लोकगाथाक बीचक जे अन्तर अछि ताहि पर किछु बात पहिने आबि चुकल अछि। पुराण सभक संरचना संवादप्रधान अछि। कतहु क्यो किनको कोनो कथा सुनौने रहथिन, सैह कथा एक बेर फेर जिज्ञासा कयला पर व्यास समुपस्थित ऋषि लोकनि कें सुनौलखिन, आदि आदि। स्वाभविक अछि जे एहना मे जा-जा एक कथा-प्रसंग समाप्त होइत अछि, कोनो मुनि एक आर जिज्ञासा

व्यास लग मे राखि दैत छथिन आ आगू कथा-प्रसंग नव मोड़ ल' लैत अछि। एहन कथा सभक बहुआयामी वा बहुविस्तारित हेबाक पूरा संभावना सदैव बनल रहैत अछि, तें हमरा लोकनि देखैत छी जे मूल रचना भने कतबो प्राचीन रहओ, नव लिपिकार द्वारा नव क्षेपक अपना युगानुरूप जोड़ि देबाक संभावना बनल रहैछ। अध्याय पर अध्याय एहिना चलैत जाइत अछि।

जेना कि पहिने बात भ' चुकल अछि, लोकगाथाक मौखिक रहने जोड़बा घटेबाक ई प्रक्रिया गाथा मे सेहो अनवरत चलैत रहैत अछि। मुदा, मूलकथा नायक पर केन्द्रित रहैत अछि। क्यो कहियो किनको कतहु सुनौने रहथिन, सैह आब ई अहाँ कें सुना रहल छथि, एहि प्रकारक संरचना गाथा मे नहि पाओल जाइछ। आरंभ मे सुमिरन होइत अछि जे अपन अपन युगानुरूप प्रतिष्ठित देवता लोकनिक वन्दन करबाक अवसर गायक कें दैत छनि—एहि सँ इहो पता चलैछ जे आर्यीकरणक प्रक्रिया कहिया कोन तल धरि पहुँचल छल, मुदा तकर लगले बाद नायकक चरित-वर्णन शुरू भ' जाइछ जे अधिकतर हुनकर जन्मकथा सँ आरंभ होइत अछि। एवंप्रकारें विषयकेन्द्रित रहैत, एकहाराबान अपनौने कथा-प्रसंग आगू बढ़ैत अछि। पौराणिक देवी-देवता सेहो प्रसंगवश गाथा सब मे अबैत देखल जाइछ। ई मुदा तत्कालीन लोकविश्वास आ आर्यीकरणक स्तरीयता पर निर्भर होइछ। ई देवता लोकनि जखन कखनहु अबैत छथि, चरित-कथाक सहायक बनि क' अबैत छथि, पुराण जकां नहि जे मूलकथा पाछां छुटि जाइछ आ आब हुनके कथा चलय लगैत हो। मैथिली गाथा सभक ई आत्यन्तिक विशेषता थिक जे एहि मे पौराणिक कथा-प्रसंगक नितान्त अभाव अछि। लोकगाथाक रचनाकार लोकनि, गायक लोकनि अपन चरितनायक तकैत छथि, हुनका स्थापित करैत छथि जे पुराण सँ सर्वथा भिप होइछ। अस्तु। एहि विषय पर किछु चर्चा पहिनहु भ' चुकल अछि।

मैथिली काव्यपरम्परा मे सम्मरि लिखबाक चलन प्राचीनकाल सँ रहल अछि। सम्मरि कें गीत कहल जाइछ गाथा नहि, जखन कि गाथात्मक हेबाक अतिरिक्त ई प्रबन्धात्मक सेहो होइत अछि। सम्मरि लोकगाथा सँ सर्वथा भिप वस्तु थिक। पहिल भिपता तँ यैह जे लोकगाथा जकां ई रचनाकार-विहीन नहि होइछ अपितु एक पेशेवर काव्यकार द्वारा रचित भेल रहैत अछि। ई काव्यकार के होइत छलाह? मैथिली साहित्यक इतिहास एहि प्रश्न पर मौन अछि। एहन काव्यकार लोकनिक कोनहु रचना जँ आइ कतहु भेटितो अछि तँ से मात्र लोक-मुख मे, जकरा लेल मैथिलीक शिष्टसाहित्य लग कोनहु स्थान नहि छैक।'लोक' तँ सर्वसहा पृथ्वी सन विराट होइत अछि। ओकरा लग मे एहू रचना सब लेल जगह छैक। ई काव्यकार लोकनि के होइत छलाह, तकर किछु सूत्र हमरा लोकनि कें वर्णरत्नाकर मे भेटैत अछि। एकर छठम कल्लोल

भट्टादिवर्णना छैक जकर आरंभे भेल छैक भाटवर्णना सँ। भाटक वर्णन करैत ज्योतिरीश्वर लिखने छथि जे भाट छहो भाषा (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ आदि)क तत्वज्ञ होइत अछि, सातो उपभाषा मे कुशल, आठो व्याकरण मे पारग, अठारहो कोश मे व्युत्पप, समस्त अलंकारशास्त्रक विज्ञ, समस्त छन्दशास्त्र मे कुशल, सुप्रसिद्ध काव्यग्रन्थ सब मे कृताभ्यास होइत अछि। भाट की करैत अछि? ओ कविता बनबैत अछि आ राजा कें, श्रीमन्तवर्ग कें सुना क' हुनकर मनोरंजन करैत अछि आ एही सँ अपन जीविका चलबैत अछि। भाटक सातटा गुणक वर्णन ज्योतिरीश्वर कयने छथि। एहन प्रतीत होइत अछि जे ई गुण सब भाटक रचना आ ओकर प्रस्तुतीकरणक विविधता पर आधारित अछि। ई गुण सब थिक- केवारी, गोहरिया, साकिक, शुद्धमुख, निरपेक्ष, दाता आ कवि।

मिथिला मे पंडितक सामने कविक कोनो मोल कहियो नहि रहल। ठीक तहिना कवियो लोकनिक समाज मे भाट कें कोनो मोल कहियो नहि देल गेल। भाट लोकनि राजा आ श्रीमन्तवर्गक मनोरंजन लेल लिखैत छलाह, एम्हर कवियो लोकनि अधिकतर एही निमित्तें लिखैत रहथि, मुदा एतेक ज्ञानी आ रंजनक्षम काव्य लिखबाक बादो पंडित कविलोकनि भाट कें अछोप बुझलनि, एहि विषयक समाजशास्त्र बुझबाक चाही। काव्य रचि क' सुनायब भाटक पेशा छल, जेना पहलवानक पेशा कुश्ती लड़ब आ पंडितक पेशा राजाक इष्टपूर्त साधब छल। मुदा, एहि मान्यता-अमान्यता मे कुलीनताक भूमिका प्रमुख बुझाइत अछि। स्वयं ज्योतिरीश्वर विवरण देने छथि जे भाट मादक औषधिक सेवन करैत छल आ बहुरंगी भेस बनायब ओकर पेशाक अंग छलैक। भाट लोकनिक जे गुण सब ज्योतिरीश्वर गनौने छथि ताहि मे एक 'कवि' होयब सेहो छैक। मुदा भाट लोकनि अपन कविता कें लिखि क' रखितथि किएक, हुनक पेशा वाचिक छल आ उत्तराधिकार सेहो वाचिके सौंपब चलन मे छल। तें लोक मे जतबा जे हुनका लोकनिक काव्य प्रचलित भ' गेल ततबे हमरा सब धरि पहुँचि सकल अछि। एहि स्थिति मे मुदा कोनो अति प्राचीन कविताक भेटि सकब कठिन अछि। जे भेटैत अछि से उपैसम शताब्दीक वस्तु थिक। एतबा अवश्य जे ओहि रचना सभक पाछू भाट लोकनिक विषयचयन, प्रस्तुति, कलात्मकता, प्रवाह आदिक परंपरा कोना अतीत मे छल होयत, तकर पता हमरा लोकनि पाबि सकैत छी। सम्मरि एही प्रकारक कविता-विधा थिक।

सम्मरि काव्यक प्रमुख विशेषता थिक-पौराणिक कथा कें उपजीव्य बनायब। पं. गोविन्द झाक ई कथन ऊपर उद्धृत कयल जा चुकल अछि जे जे वस्तु पुराण मे उपलब्ध होइत अछि से अन्यत्रे उपलब्ध भ' जाइछ, मुदा लोकगाथा मे वर्णित वस्तु दोसर कोनो शिष्ट स्रोत सँ प्राप्त होयब कठिन अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे

भाट लोकनि सुपरिचित विषय कें एहू लेल अपन काव्यवस्तु बनबैत छल हेताह जे एहि सँ चमत्कारपूर्वक मनोरंजन आसान होइत छल हेतैक।

सम्मरिक प्रत्यक्ष संबंध स्वयम्वर संग अछि। एहि मे प्रमुखतापूर्वक तत्कालीन विवाहप्रथाक विस्तृत वर्णन भेल रहैत अछि। मिथिला मे जे किछु अतिलोकप्रिय सम्मरि प्रचलित रहल ताहि मे सीतासम्मरि, रुक्मिणीहरण सम्मरि उषासम्मरि, जग्रनाथसम्मरि, अर्जुनसम्मरि आदि अछि। उपैसम शताब्दी मे लोकनाथ कवि द्वारा रचित रुक्मिणीहरण तथा उषास्वयम्बरक प्रकाशन अपन पुस्तक 'मैथिली लोकगीत' मे रामइकबाल सिंह राकेश कयनहु छथि। सम्मरि-काव्यक विशेषताक बारे मे राकेश जी लिखैत छथि—'इनकी कथावस्तु पुराण से ली गई है, जिनमें लग्न-प्रथा और उसके लौकिक आचारों के विवरण की अपेक्षा प्रबन्धात्मकता का निर्देश अधिक है, जीवन की संदेशवाहिनी सामाजिक भावना की अपेक्षा कला-चातुर्य का प्रदर्शन प्राधान्य है। प्रबन्धात्मक सम्मरि की यही मर्यादा है कि मुक्तक शैली के गीतों की सुघड़ आकृति से साम्य रखने के बावजूद उसने इनकी भाव-भंगी की नकल नहीं की।'[34] नकल करब संभवो नहि छलैक कारण सामाजिक भावना ओतय प्रधान छल जखन कि एतय कला-चातुर्यक प्रदर्शन। ज्योतिरीश्वरक कथन मानी तँ जते काव्य आ शास्त्रक ज्ञाता भाट लोकनि होइत छलाह, सब टा ज्ञानक भार तँ बेचारी कविते कें उठाबक होइत छलै।

ई पूर्णत: स्पष्ट अछि जे सम्मरि आ लोकगाथा दू भिप-भिप वस्तु थिक। रचनाकार आ रचना-विकासक दृष्टिमो सेहो, वर्ण्यविषय आ उपजीव्यक दृष्टिमो सेहो, आ सब सँ बढ़ि क' लोककला आ शिष्टकलाक प्रतिनिधित्वक कारणें सेहो। मुदा जें कि मैथिलीक शिष्टसाहित्य मे सम्मरि कें स्थान नहि देल गेल, ई लोकविधाक रूप मे तहिना बनल रहल जेना कुलीन लोकनिक मध्य कुकाव्य। शिष्टसाहित्य सँ अनुशासित आलोचक लोकनि एहि तथ्य सँ कि तँ अनजान रहलाह अथवा चतुरतापूर्वक पुराण कें लोकगाथाक उपजीव्य मे शामिल करबाक जतन रचलनि, कैक आलोचक सम्मरि कें लोकगाथाक रूप मे विवेचित कयलनि। ई चतुराइ कोना कयल गेल ताहि लेल हमरा लोकनि डॉ. ताराकान्त मिश्र आ डॉ. रामदेव झाक विश्लेषण देखि सकैत छी।

डॉ. ताराकान्त मिश्र मैथिली लोकगाथाक प्रकार-निरूपण करैत कहैत छथि— 'मैथिली लोकगाथा-गीत के दो प्रकार हैं—खंडगाथा ओर महागाथा। खंडगाथा गीत वे हैं जिनमें जीवन के किसी एक पक्ष का उद्घाटन होता है। महागाथा गीत वे हैं जिनमें संपूर्ण जीवन का विराट चित्रण मिलता है। मोटे तौर पर कह सकते हैं कि नाटक और एकांकी में जो अंतर है, उपन्यास और कहानी में जो अंतर है,

महाकाव्य और खंडकाव्य में जो अंतर है, वही अंतर भरसक महागाथा गीत तथा खंडगाथा गीत में है।'[35] मिश्र जीक कथन सँ बिल्कुल स्पष्ट अछि जे मिथिलाक जातीय काव्य-रूपक भू-स्पर्श धरि हुनका नहि छनि, उनटे खंडकाव्य आ महाकाव्यक शिष्ट आदर्श कें लोकसाहित्य पर लदबाक गुरुतर दायित्व हुनका पर छनि। तें तँ सवा चारि सौ पृष्ठक भरिगर किताब लिखि मारबाक बादो हुनका 'भरसक'(शायद) शब्दक प्रयोग लेल बाध्य होअय पड़ैत छनि। एहि ठाम ओ खंडगाथा कें 'जीवन के किसी एक पक्ष' धरि सीमित कहलनि अछि, स्वयंवर वा विवाह धरि सीमित नहि, कारण हुनका उपन्यास आ कहानी, महाकाव्य आ खंडकाव्यक आदर्श पर आगू बढ़बाक छनि। अन्यत्र संकलित अपन एक लेख मे ओ कहैत छथि—'खंडगाथा गीतक उदाहरण थिक सम्मर गीत आ महागाथा गीतक दृष्टान्त अछि लोरिकाइन। सम्मरि गीत खंडगाथाक वर्ण्यविषय प्रधानतः पाणिग्रहण-संस्कार होइछ किन्तु महागाथाक विषय विवाहक अतिरिक्त प्रेमप्रदर्शन, शौर्यप्रदर्शन, युद्ध, मारकाट, जादूटोना आदि होइछ।'[36]

सम्मरि काव्य कें लोकगाथा घोषित करबाक लेल डॉ. रामदेव झा वर्गीकरणक एक दोसर युक्ति प्रयोग करैत छथि। वर्गीकरण सँ पहिनहि ओ अपन मान्यता राखि दैत छथि—'मैथिली लोकगाथा मे कतोक पात्र सब ओ विवृत कथानक पौराणिक वाङ्मय पर आधृत अछि। दोसर दिस, बहुतो एहन गाथा सब अछि जकर नायक वा अन्य पात्र सब पुराण वा इतिहासप्रसिद्ध नहि अछि। एकर कथानक लौकिक अछि। किछु ऐतिहासिक पात्र अछियो तँ ओकर ऐतिहासिकता सर्वथा अस्पष्ट अछि। ओकर लौकिके स्वरूप अधिक मुखर।' एहि आधार पर ओ लोकगाथाक दू वर्ग करैत छथि—पौराणिकी लोकगाथा आ लौकिकी लोकगाथा। पौराणिकी लोकगाथाक अन्तर्गत ओ लवहरि-कुसहरि कें सेहो मानैत छथि, तकर अतिरिक्त सीताहरण, अर्जुनसम्मर, जग्रनाथसम्मर, सरबनपूत, हरिचन्दरदानी आदि कें मानैत छथि।'[37]

कहब आवश्यक नहि जे शिष्ट आलोचक लोकनिक समुच्चा माथापच्ची आ वाग्जाल भाट-सदृश अकुलीन कविक रचल कलात्मक कविता कें शिष्टसाहित्यक सीमा सँ बहिष्कृत करबाक आ तकरा बदला लोकगाथा मे सेंधमारी क' क' ओकर पौराणिकीकरण करबाक व्यायाम थिक। अध्येता कें गुणापेक्षी हेबाक चाही। कविता मे की कुलीनता आ अकुलीनता ? संकीर्णता सँ बाहर आबि जे वस्तुतः जे थिक तकरा ताही रूप मे स्वीकार करब, हमरा बुझने मैथिली साहित्यक स्वास्थ्य-रक्षाक लेल सैह उचित होयत।

सन्दर्भ

1. मणिपद्म/ मैथिली लोकगाथाक इतिहास/ पृ. 220
2. उपरोक्त/ पृ. 105
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ मध्यकालीन धर्मसाधना/ पृ. 22
4. मणिपद्म/ मैथिली लोकगाथाक इतिहास/ पृ. 147
5. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ मध्यकालीन धर्मसाधना/ पृ. 19
6. मणिपद्म/ मैथिली लोकगाथाक इतिहास/ पृ. 104
7. उपरोक्त/ पृ. 104
8. उपरोक्त/ पृ. 142-43
9. उपरोक्त/ पृ. 223
10. डॉ. विश्वेश्वर मिश्र/ भूमिका/ मैथिली लोकगाथा/ पृ. 12
11. जनपद/ वर्ष 1/ अंक 1/ पृ. 65
12. सोफिया बर्न 'ए हैंडबुक ऑफ फोकलोर' मे एकरा अतिरिक्त इहो लिखने छथि जे 'लोकसंस्कृति वस्तुतः आदिम मानवक मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति थिक, से चाहे दर्शन, धर्म, विज्ञान तथा औषधिक क्षेत्र मे भेल हो, अथवा सामाजिक संगठन आ अनुष्ठान मे, विशेषतः इतिहास, काव्य आ साहित्यक अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश मे संपप भेल हो।' (हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास/ भाग 16/ संपादक-राहुल सांकृत्यायन, कृष्णदेव उपाध्याय/ नागरी प्रचारिणी सभा, काशी/ प्रस्तावना/ पृ. 13)
13. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 34-35
14. फ्रैंक सिजविक/ द बैलेड/ पृ. 39
15. मणिपद्म/ मैथिली लोकगाथाक इतिहास/ पृ. 222
16. दीनाभद्री गाथा/ सं. रमेश रंजन/ नेपाल संगीत तथा नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठान/ पृ. 41
17. ग्रियर्सन/ मैथिली क्रिस्टोमैथी/ पृ. 3
18. पं. गोविन्द झा/ लोकगाथाक उद्‌भव आ स्वरूप/ मैथिली दलित
19. उपर्युक्त/ पृ. 182
20. डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन/ मैथिली लोकगाथा अनुशीलन/ पृ. 21
21. मणिपद्म/ मैथिली लोकगाथाक इतिहास/ पृ. 147
22. उपरोक्त/ पृ. 69
23. उपरोक्त/ पृ. 124
24. डॉ. रमेश कुन्तल मेघ/ विश्वमिथक सरित्सागर/ भूमिका/ पृ. 11
25. मणिपद्म/ उपरोक्त
26. डॉ. सुभाष चन्द्र यादव/ छेछन महाराज/ मैथिली दलित लोकगाथा ओ संस्कृति/ पृ. 246
27. महेन्द्र हजारी/ मिथिला मे दलित चेतनाक उत्प्रेरक/ उपरोक्त/ पृ. 195
28. डॉ. रेवती रमण लाल/ मिथिलाक सांस्कृतिक परंपरा/ पृ. 111
29. डॉ. अमरनाथ झाक लिखल ई भूमिका 1948 मे किताब महल, इलाहाबाद सँ प्रकाशित हुनकर निबन्ध-संग्रह 'विचारधारा' मे संकलित भेल। पृ. 262-269

30. मणिपद्म/ मैथिली लोकगाथाक इतिहास/ पृ. 223
31. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन/ मिथिलाक लोकसंस्कृति संदर्भ/ पृ. 48
32. मैथिली दलित लोकगाथा ओ संस्कृति/ पृ. 32-33
33. उपरोक्त/ पृ. 35
34. राम इकबाल सिंह राकेश/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 100
35. डॉ. ताराकान्त मिश्र/ मैथिली लोकसाहित्य का अध्ययन/ पृ. 202
36. डॉ. ताराकान्त मिश्र/ मैथिली लोकगाथा : स्वरूप-विवेचन एवं प्रस्तुति/ साहित्य अकादेमी/ पृ. 29
37. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 31

मैथिली लोकगीत : राग आ संघर्षक जीवन्त दस्तावेज

लोकगीत ओ विधा थिक जाहि मे कोनहु भाषाक्षेत्रक जातीयकविता अपन समस्त छवि आ प्रतिश्रुतिक संग मौजूद रहैत अछि। तकर कारण थिक विस्तार। लोकक जतेक जे विश्वास, स्वप्न आ यथार्थ होइत छैक, सब कथू लेल एहि ठाम पर्याप्त जगह पाओल जाइत अछि। भने तँ क्यो कहने छथि जे लोक एक एहन विराट प्रयोगशाला थिक जतय अपना युगक प्रायः समस्त प्रभावी सृजन आ विचार चाही तँ प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

प्राचीन मैथिली साहित्यक सब सँ प्रधान विधा थिक गीत। लोक मे कही तँ लोकगीत। विषय आ परिवेशक अपन विस्तृति मे वास्तविक रूप मे ई लोकगीत सब संख्या मे कतेक अछि, एकर अनुमानो धरि करब कठिन अछि। मैथिली लोकगीतक कृतकार्य संग्रहकर्त्ता डॉ. अणिमा सिंह अपन अनुभव लिखने छथि—'आइयो अनेक क्षेत्र एहन अछि जतय सँ लोकगीतक संग्रह नहि भ' सकल अछि। लोकगीतक विशाल परिमाण कें देखैत ई कहल जा सकैत अछि जे आइ (1993) धरि लोकगीत-संग्रहक लेल जे सब कार्य भेल अछि ओ सर्वथा अपर्याप्त अछि।'[1]

तकर ओ कारण सेहो बतौलनि अछि—'मैथिल समाज मे जीवन-जिज्ञासा सर्वत्र दर्शनशास्त्रदिक रूप धारण नहि करैछ, वरंच ओ प्रायः सहज भाव सँ गीतकाव्यक रूप मे सेहो परिणत भ' जाइछ। फलतः मैथिली लोकगीतक परिचय मे हुनका लोकनिक समग्र लोकजीवनक परिचय भेटि जाइछ।'[2] ध्यान देबाक थिक जे दर्शनशास्त्रदिक काज उच्च शिक्षित वर्गक काज थिक, जे कि अल्पसंख्यक होइत छथि, जखन कि लोकगीतक रचना लेल मनुष्य मात्र होयब पर्याप्त अछि, साक्षरो धरि हेबाक जरूरत नहि। एतय दुनू कें एक तुला पर राखल गेल अछि। एक। दोसर जे हरेक कालखंड मे बहुल संख्या लोकेक होइत छैक। विचार मे बहुलताक स्वीकार सेहो लोके मे बेसी होइत छैक, शास्त्रकार मे कम। विविधता आ विस्तार सेहो लोके मे बेसी। तें लोकसाहित्यक परतर शास्त्रीय साहित्य नहि क' सकैत अछि। कारण

'जीवन-जिज्ञासा' एक टा एहन वस्तु थिक जे शिक्षा सँ नहि, संवेदनशीलता आ विचारशीलता सँ गति पबैत छैक।

मैथिली लोकसाहित्यक कर्मशाला

चतुरानन मिश्र अपन लेख 'मैथिल संस्कृति के नवोत्थान का सवाल' मे लिखलनि अछि—'पेंटिंगे जकाँ गीत सेहो मिथिला मे एक घरेलू कला थिक। एहि ठामक बेटी-पुतोहु कें अरिपन देब आ गीत गायब सिखायल नहि जाइत छल। एहि कला सभक कतहु औपचारिक प्रशिक्षण नहि होइत रहैक। पाबनि-तिहार आ उत्सवक अवसर पर अपन माय-दादीक संग गबैत-गबैत, अरिपन बनबैत-बनबैत बेटी लोकनि एहि कला मे पारंगत भ' जाइत छली। परिवार आ समाज पाठशालाक काज करैत छल।'[3] एक एहने पाठशाला छल कीर्त्तन। समूहगानक ई प्रथा मिथिलाक सनातन प्रथा थिक। बौद्ध लोकनिक सामूहिक चर्या प्रथा सँ ई मेल खाइत देखाइत अछि जकर आश्रय बाद मे वैष्णव लोकनि लेलनि। बौद्धक बाद, भने एहि मे आध्यात्मिकताक क्षरण भेलैक, मुदा क्रम आगुओ बनल रहल। ई कीर्त्तनियाँ लोकनि आनो जे कोनो अवसर होइक उत्सवक, जेना फगुआक, ओहि मे गायनक काज क' लेथि। एकल गायन राजदरबारे मे सीमित रहल। तेसर कर्मशाला छल नाचपार्टी। समाज मे जे व्यक्ति बेसी सृजनात्मक रहैत छल, कला-साधनाक योग्य, तकरा खोज मे गुरुओ लोकनि लागल रहैत छला। फणीश्वरनाथ रेणुक कथा 'रसप्रिया' मे एहि गुरु-परंपराक बहुत प्रामाणिक चित्र आयल अछि। समाजक चिंतनशील लोक सब सेहो अपन परंपरा चलबै छला। ओ लोकसाहित्यक चारिम कर्मशाला छल। डाकवचन पंडित लोकनि पर ओहिना भारी नहि पड़ल हेतै। ओकरा पाछू ओकर अपन परंपरा छल होयत। पांचम कर्मशाला फेर अपन परिवारे होइत छलैक। साधारण बोली-बानी मे एक-सँ-एक कहबी, एक-सँ-एक फकड़ा बेटा लोकनि, बेटी लोकनि सीखि जाइत छली आ ओकर सटीक उपयोग मे पारंपत भ' जाइत छली। धान रोपैत काल धनरोपनीक गीत, जाँत पिसैत काल लगनी, जटा-जटिन खेलैत काल सिपाही बनब, एहिना परिवारक बीच, संगतुरियाक संग सीखि जाइत हेती। अणिमा सिंह लोकगीतक बारे मे लिखलनि अछि—'मुख मे एकर सृष्टि होइछ तथा हृदय मे एकर निवास होइछ। एकर केवल मौखिक प्रचार होइत आयल अछि। एकरा लिखि क' रखबाक परिपाटी नहि रहल। शिक्षाक प्रचार-प्रसारक बादहु एकर लेखनक व्यापक प्रचार नहि भ' सकल।'[4] एखन धरि जतबा भ' सकल अछि, तकरा अणिमा सिंह अपर्याप्त कहैत छथि। आ दोसर दिस अपन इहो चिन्ता व्यक्त करैत छथि जे—'लिखबाक पश्चात लोकगीत अनमनीय (rigid) भ' जाइछ।' कारण लोकगीतक विकास ओकर अपन

'चिर प्रवहमानता' मे छैक। जखन हम अनेक समाजार्थिक वा कि राजनीतिक कारण सँ मैथिली समाज मे भारी परिवर्त्तन होइत देखैत छी तँ दोसर दिस इहो पबैत छी जे लोकगीतक, कि कहल जाय लोकसंस्कृतिक प्रवहमानता मे घातक अवरोध उत्पप अछि जकर सामना लोक-समाज अपना तरहें कयलक अछि। नव लोकविधा विकसित भेल अछि, नव नायक ताकल गेलाह अछि।

मैथिली लोकगीतक विशेषता

मैथिली लोकगाथाक जे विशेषता सब अछि से ततबा लोकगीतो पर लागू होइत छैक जतबा एक काव्य आ महाकाव्यक अन्तर लेल चाही। मुदा भावक गांभीर्य गीत मे बेसी छै, तहिना विषयक विस्तार सेहो। एक टा बनल-बनायल साँचा छैक, भास सहित, ओहि मे सब कथू अटान ल' सकैत अछि जकर निवास 'गायकक हृदय मे' छैक।

डॉ. अणिमा सिंह एकर किछु विशेषता एहि तरहें गनबैत छथि—1. मैथिली लोकगीत मे भाषाक सरलता, सुबोधता आ वेगसम्पपता पाओल जाइछ। 2. एहि गीत सब मे भावक उदारता प्रचुर परिमाण मे भेटैछ। सर्वत्र संकीर्ण भावक भर्त्सना और उदारभावक प्रशंसा भेटैत अछि। 3. एकर तेसर विशेषता अछि मंगलैषणाक प्राधान्य। लोकगीतकार अपन वैयक्तिक जीवन मे, परिवार मे तथा समाज मे, शांति आ अभ्युदयक मंगलकामना करैत अछि। 4. एकर चतुर्थ विशेषता अछि धर्मोन्मुख जीवनक कामना। प्रत्येक व्यक्ति समाज मे अपन विकास चाहैछ। ई विकास एहन हेबाक चाही जे दोसरक विकास मे बाधक नहि बनैत होइ। 5. मैथिली लोकगीत मे पारिवारिक और सामाजिक संबंधक आदर्शीकरणक प्रयास सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। आदर्श भाइ, आदर्श बहीन, आदर्श शिष्य, आदर्श मित्र, आदर्श स्वामी, आदर्श सेवक तथा समुपत नागरिकक आदर्श एहि गीत सब मे भरल अछि। डॉ. रामदेव झा एकर एक टा आर विशेषता एकर सामूहिक गान-पद्धति कें मानलनि अछि। ई मैथिलीक प्राचीन धरोहर थिक।

सरल आ सुबोध भाषा मे वेगसम्पपता कोना आबि विराजैत अछि, तकरा देखबा लेल उखरी कुटैक ई गीत देखल जा सकैत अछि—

कुटू कुटू सखिया
नव नव धान भेल, भोगब कहिया
कुटू कुटू सखिया
चूड़ा कुटू, चाउर कुटू, करू बगिया
लुचलुच चाउरक पूआ लागत, मचमच खटिया

ठोकरा लिय' समाठ लिय' बांधू जुटिया
चाकर चाकर चूड़ा कुटू फटकू सुपिया
पाहुन अओता, सनेह करता, लेता गोदिया
ननदो के जुड़ेतैन हिया, कुटू सखिया
कुटू कुटू सखिया।

ननदि-भाउज मिलि क' माँझ आँगन मे चूड़ा कूटि रहल अछि आ ई गीत गाबि रहल अछि। मैथिलीक श्रमगीत थिक ई। श्रम-परिहारक कतेक सरस तरीका अपनाओल गेल छैक, से गीते सँ स्पष्ट अछि। पूआ खेलाक बादक दृश्य छैक जे ननदिक कथन थिक आ भाउजक लेल कहल गेल अछि। प्रगल्भ परिहास स्पष्ट छैक। अंतिम लाइन मे भाउजक जवाब छैक। ओहो अलबत्त छैक। सुखी जीवनक लगभग समुच्चा चित्र एहि ठाम उपस्थित छैक। कनेके टाक गीत मे सब कथू कहि देल गेल अछि।

उदारभावक प्रचुरता तँ ततबा छैक जे पुत्रजन्मक अवसर पर जे सोहर गाओल जाइत अछि, ताहि मे गीतगाइन गबैत अछि—

सेर जोखि सोनमा लुटायब, पसेरी जोखि रुपया रे
सौंसे अजोध्या लुटायब, किछु नहि राखब हे

राजा दशरथ आ राम-जन्मक तँ मात्र सहारा लेल गेल अछि, असल बात छैक—'किछु नहि राखब रे।' एहन भाव अनेक प्रकारक गीत सब मे भरल अछि। लोकगीत मे ई सब तत्त्व पाबि क' लोकअध्येता डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय लिखलनि अछि जे 'इन उल्लेखों से पता चलता है कि लोकगीतों मे वर्णित समाज धनी तथा समृद्ध था।' जी नहि, धनीक तँ क्यो-क्यो छला, जेना गाम भरि मे कतहु एक टा ब्रह्मस्थान। मुदा गीत गाओल हरेक घर मे जाइत छल। अधिकांश लोक गरीब छल। मुदा उल्लासक अवसर पर ओकर स्वप्न ओकर गीत मे उतरि अबैत छल। हृदय मे भावक उदारता छलैक। एक सुंदर भविष्यक आशा छैक। आशावाद सँ भरल गीत छल सब।

तहिना संकीर्ण भावक भर्त्सना सेहो कैक रूप मे गीत सब मे आयल अछि। एक टा सोहर मे नायिका अपने पतिक भर्त्सना करैत अछि जे पुत्रजन्मक स्थिति मे तँ प्रसप होइत अछि मुदा कन्याजन्म सँ दुखी भ' क' पराया-सन व्यवहार कर' लगैत अछि। पाँती अछि—

चैत बैसाख के पुरैनिदह पुरैनि लहरि मारु रे
ललना ताहि चढ़ि बेटी जनम लेल पियबा बिपच्छ भेल रे

पिया के विपक्ष भेने सँ सोइरीघर मे कतेक मालिन्य, कतेक पीड़ा भोग' पड़ैत छैक, आगू तकर वर्णन भेल अछि। तखन ओही गीत मे ई पाँती अबैत छैक—

चैत बैसाख के पुरैनिदह पुरैनि लहर मारु रे
ललना ताही चढ़ि बेटा जनम लेल पियबा अपन भेल रे—

जकरा जेहन संकीर्ण लोक संग पाला पड़ल रहैछ, तकरा स्वर मे ततबे तीक्ष्णता देखाइछ। मुदा, जनसाधारणक एक पैघ संघर्ष तँ आर्थिक रहैत छैक। जटा-जटिनक गीत मे ई पाँती अबैत अछि—

सगरे सुनै छियै फलना बड़ धनीक छै रे ना
एक सेर कें दुइ सेर बनबै छै रे ना
चिपड़ी रोटी चुटकी नोन जन कें दै छै रे ना
ओकरा नामें जन सब कानै छै रे ना
ओकरे पापें पानियो नै पड़ै छै रे ना—

लोकमंगलक भावना लोकगीतक मानू स्थायीभाव थिक। जखन भक्त अपन अभ्युदय लेल प्रार्थना करैत अछि तँ ओहि ठाम स्वाभाविक रूप सँ एहन भाव अनुस्यूत रहैत छैक जे सभक कल्याण होइक। देवी-देवताक जतेक गीत मैथिली मे प्रचलित छै, से चाहे गोसाउनि, गौरी, ज्वालामुखी, विषहरि, कमला, भैरव, हनुमानक होइक कि छेछन महाराज, बालापीरक होइक, ई भाव सर्वत्र भेटत। शिव तँ एहन देवता छथि जे अपना घर मे कनमा भरि अप नहि रहैत छनि मुदा लोक-कल्याण हेतु बेपिरीत, बताह बनल रहैत छथि। छठिगीत मे एक टा प्रसंग गाओल जाइत छैक जे भोरुका अर्घ्य कालक थिक। गितहारि गबैत छथि जे आन दिन तँ हे सूर्यदेव, अहाँ सबेरे-सकाल उगि जाइत छलहुँ, आइ जखन पबनैतिन सब अरदास लगौने जल मे ठाढ़ि अछि तखन किएक एते देरी लगा रहल छी, तँ सूर्यदेवक उतारा छनि जे विदा तँ हम सबेरे भ' गेलहुँ मुदा बाट मे एक टा कोढ़िया भेटि गेल, ओकरा काया देबा मे देरी भेल। आगू एक टा निकोखि भेटलि जकरा संतान दैत देरी भेल। आदि आदि। जे कल्याण-कामना लोकक हृदय मे छैक, सैह एतहुक देवतो लोकनिक आचरण मे अधिरोपित छैक। बालापीरक एक टा गीत मे आयल छैक जे कारनी मरणान्तक कष्ट मे अछि आ तखनहु बाला कें प्रकट हेबा मे देरी भ' रहलनि अछि। देवताक संग सेवकक आत्मीयता एहन जब्बर छैक जे सेवक कोनहु तर्क सुनबा लेल, विलम्बक कोनो कारण गछबा लेल तैयार नहि अछि। भजनीकक मुँह सँ अपन भगवान लेल अवाच्य कथा धरि बहरा जाइत छैक, कारण एहि विलम्ब लेल लोक-हृदय मे कोनहु बहपा नहि चलैबला छैक। एकरा आत्मीया भक्तिक अतिरेके कहल जा सकैछ। गीत अछि—

झाँझरि सन नैया बाला, कौने खेबनहार
कोने विधि पार उतरब, अगम अथाह

बाला तुम्ह रे जालीम, भौ से बाखरे मौलीम
जाहि तँ दरबार बाला, तुम्ह सन हाकिम
पाँच पीर औलिया, भैरव थानेदार
बाला तुम्ह रे जालीम, भौ से बाखरे मौलीम
जौं तोहें होइयह बाला, सैयद के पूत
मारिये पैजाम बाला, बात नै हो झूठ
बाला तुम्ह रे जालीम, भौ से बाखरे मौलीम—

लोकगीतक वर्गीकरण

मागधी-अर्धमागधी परिवारक लोकसाहित्य सभक आधार लैत डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय पाँच आधार पर एहि लोकगीत सब कें वर्गीकृत करबाक आधार देखैत छथि—1. संस्कारक दृष्टि सँ। 2. रसानुभूतिक प्रणाली सँ। 3. ऋतु आ व्रतक क्रम सँ। 4. विभिप जातिक अनुसार। 5. श्रमक आधार पर। लोक-समाजक जीवन धार्मिक नियमाचरण सँ बान्हल रहलैक अछि। मनुक्ख एहि समाज मे अबैत अछि तँ नियमपूर्वक ओकर सब संस्कार कयल जाइत छैक। जन्म, मूड़न, उपनयन, विवाह आ मृत्यु। ई समस्त संस्कार लोकगीतक लेल एक अवसर थिक। मृत्यु कें शिष्टसमाज अवश्य भय आ शंकाशीलता सँ देखैत अछि आ ओकरा एक उत्सवक रूप मे नहि, एक कर्मकाण्डक रूप मे मनबैत अछि। लोक-समाज मे मुदा मृत्यु कें स्वीकृति प्राप्त छैक। ओकरो गाओल जाइछ। डॉ. रामदेव झा लिखलनि अछि—'मिथिला मे कतोक द्विजेतर जातिक लोक कबीरपंथी वा निर्गुण सम्प्रदायक अनुयायी छथि। हिनका लोकनि मे वयस्क लोकक मृत्यु भेला पर सामूहिक रूप सँ भजनक गान होइछ एकरा निर्गुण गीत कहल जाइछ।'[5] मुदा निर्गुण गान कें मैथिली मे ने लोकसाहित्य मे स्थान छैक ने शिष्टसाहित्य मे, जखन कि ओकर लिखितो रूप प्राप्त छैक, जाहि मे अधिकतर 'कहत कबीर' लागल छैक। ई एक अलग प्रश्न छैक जे कबीरदासक पद मैथिली मे किएक भेटैत छैक? एहि पर आगू विचार होयत।

साहित्यक विवेचन रसानुभूतिक आधार पर करबाक प्रचलन मिथिला मे एखनहु बनले छैक। विश्वविद्यालय सब मे तँ स्पष्टे बनल छैक, जखन कि साहित्य-विवेचनक कैक गोट आन अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी दृष्टि हमरा लोकनि कें प्राप्त अछि जाहि आधार पर साहित्य कें कतहु बेसी उपकारक ढंग सँ ग्रहण कयल जा सकैत छैक। शिष्ट साहित्य मे नौ प्रकारक रस छैक मुदा लोकसाहित्य मे पाँच रस कें मान्यता प्राप्त छैक—शृंगार, करुण, वीर, हास्य आ शांत। वात्सल्य आ भक्ति सेहो एहि ठाम पर्याप्त अवसर पबैत अछि। सोहरगीत मे शृंगार आ वात्सल्य मिलि क' एक अपूर्व वातावरण बना दैत छैक। विवाह जँ शृंगारक अवसर थिक तँ बिदाइ

करुणक प्रबल प्रवाह बहा दैत छैक। धैर्यवानो लोकक हृदय एहि काल मे द्रवित भ' जाइत छैक, तकर साक्ष्य कविगुरु कालिदासो देलनि अछि। वीररस गाथा मे बेसी अबैत अछि मुदा लोकनृत्यक गीतो सब मे एकर आगमन भेटैत अछि। हास्य रस गीतक शब्द सब मे कम रहैछ, ओकरा गबैत काल वा अभिनय करैत काल जे समाजी स्त्री-पुरुष लोकनि वातावरण बनबैछ, ताहि मे एकर रसानुभूति बेसी होइछ। ध्यान द' क' देखी तँ लोक-समाजक जतेक गीत अछि ओ सब टा कोनो-ने-कोनो ऋतु, व्रत अथवा उत्सव सँ जुड़ल रहैत अछि। मिथिलाक समाज मे तँ कतोक गीत सब मंत्रक महिमा हासिल क' लेलक अछि। विवाहक विध सब मे जँ ओठंगर कुटबाक विधान छैक तँ ओकरा लेल गीतो निर्धारित छैक। ओकरा बिना ओ विध पूरा नहि भ' सकैत अछि, जेना मंत्रक बिना पूजा। सब ऋतुक अवसरक अपन-अपन गीत छैक। शृंगारक संयोग आ वियोग प्रभेदक ओहि ठाम अनेक छवि-प्रतिच्छवि हमरा लोकनि देखि सकैत छी। फागुन मे फगुआ तँ चैत मे चैतावर गाओल जाइत अछि। कजरी बिनु वर्षा जेना अनुभूत रहि जाइत अछि। छठि पाबनिक अवसर पर छठिक गीत होयत, तहिना पॉक्स भेला पर सितलाक गीत गाओल जायत। विवाहगीतक शृंखला मे जँ जोग गीतक अध्ययन करी तँ ओहि ठाम कामरु कमाख्याक कामिनी आ मालिनीतंत्र पूरा वजूद लेने उपस्थित भेटत। नागपंचमीक अवसर आयल तँ विषहरिक गीत गाओल जायत।

श्रमक आधार पर सेहो गीतक प्रकार-भेद पता लगाओल जा सकैत अछि। जाँत पिसबा काल लगनी गाओल जाइछ, धान रोपबाक काल रोपनी गीत। उक्खड़ि-समाठ संग जखन कुटैया चलैत रहैछ, ताहि कालक गीत उखरी कुटैक गीत कहबैत अछि। बाट चलैत गाओल जाइबला गीत बटगमनी भेल। एहि प्रकारक गीत सब श्रम-परिहारक होइत अछि। एहिठाम श्रम कें मनोरंजन संग मिला दैछ। श्रम कोन प्रकारक अछि ताहू पर बहुत निर्भर करैत छैक। जाँत पिसैत कालक श्रम हस्तक्रिया-प्रधान छैक तें बाँकी शरीर पर अपेक्षाकृत कम भार रहैत छैक। एम्हर जाँतक संगीत अपन एक खास लय बनबैत अछि जे विरह-भाव कें झंकृत करैत अछि। स्त्रीक सब टा पीड़ा ओहि मे फूटि पड़ैत छैक। उखरी कुटैक काज भिप मुद्राक थिक। जरब सेहो समुच्चा छै। ओहि ठाम श्रम-परिहारक शृंगार तँ अवश्य रहैत अछि मुदा परिहास कें अपना संग रखने रहैत अछि।

किछु गीत कें जातिक संग जोड़ि क' देखल जाइछ। सल्हेसक गीत संग दुसाध, दीनाभद्रीक गीत संग मुसहर लोकनि जोड़ल जाइत छथि। जाहि लोकदेवताक गाथा होइत छनि, हुनका स्तुति मे भजन-गीत आदि सेहो प्रचलन मे आबि जाइत छैक। तहिना, कोशी, कमला, जीबछक गीत सँ मल्लाह लोकनि कें जोड़ल जाइत छनि।

लोकदेवताक गाथा भने आनो जातिक लोक गाबि लेथु, कुलक्रमानुगत जे धार्मिक विधान छैक तकर नियमाचरण जातिक परिधि मे विकसित कयल गेल अछि। एकर लाभ इहो भेल अछि जे एहि संरक्षण सँ साम्प्रदायिक बहुलता बरकरार रहि पाओल अछि आ परंपरा–सहित गीत तँ उचिते जीवित रहि सकल अछि। एहिठाम चर्या आ गीत कें अलग–अलग देखबाक चाही। गीत सामाजिक संपत्ति थिक। जकरा कोनो जाति विशेष संग जोड़ल जाइछ से वस्तुत: ओहि गीतक चर्या थिक।

डॉ. रामदेव झा मैथिली लोकगीत कें छौ भाग मे वर्गीकृत कयलनि अछि— 1. संस्कारगीत 2. उत्सव व्रतोपासना गीत 3. भक्तिपरक गीत 4. श्रमोपनोदक गीत 5. समैया गीत 6. मनोरंजक गीत। ऋतु आ मास सँ सम्बन्धित गीत, जेना कजरी, चैताबर, झूलन आदि कें ओ समैया गीत कहलनि अछि। श्रमोपनोदक अर्थात जकर गायन सँ श्रमक तीव्रताक परिहार होइत चलय। गोदना गोदबैत काल सूचीवेधन–पीड़ा कें कम सँ कम करबाक जे गीत गाओल जाइछ गोदना–गीत, तकरहु ओ एही कोटि मे रखैत छथि। मनोरंजक गीत ओ ओहि गीत सब कें मानलनि अछि जे आनन्दक उद्देश्य सँ गाओल जाइछ आ जकरा संग कोनो समय वा अवसरक प्रतिबंध नहि रहैछ। तिरहुत, मान, झुम्मर, बिरहा आदि एहने गीत सब थिक।

मैथिली मे एखन धरि उपलब्ध लोक गीत सब कें गँहीर दृष्टि सँ देखी तँ सब सँ पहिने एहि मे हमरा लोकनि कें दू वर्ग देखार पड़त। एक तँ एहन, जकरा क्यो लोक–रचनाकार जोड़लनि। के जोड़लनि तकर परिचय अज्ञात। शिष्ट कवि लोकनि जकाँ गीतक अंत मे ओ अपन नाम जोड़ि देथि, से अशिष्टता हुनका सँ नहि भ' सकैत छलनि। उनटे ओ तँ अपन परिचय सायास नुकाबथि। परिचय नुकेबाक एहि प्रवृत्तिक पाछू कोन कारक छल तकरो अध्ययन अध्येता लोकनि कयलनि, मुदा मूल बात सामुदायिक भावनाक प्रबलते छल। अध्येता लोकनि इहो पकड़बाक प्रयास केलनि अछि जे संसारक आन आन भाषाक लोकसाहित्ये जकाँ रचनाकारक व्यक्तित्वहीनता मैथिलीक लोकसाहित्यो मे भरपूर पाओल जाइत अछि। व्यक्तित्वहीनता अर्थात एहन निर्मिति जाहि मे रचनाकार कतहु झलकैत नहि नजरि आबय। जेना पानि मे घोरल नोन अलग सँ अपन झलक नहि देखबैत अछि। गीतक शब्दावली आ प्रयोग सँ हमरा लोकनि अवगत होइत छी जे ई गीत कोनो लोक–रचनाकारक जोड़ल थिक आ कि क्यो पुरान साहित्यिक अपन रचना लिखि लोक मे चला देलनि अछि!

प्रसंगवश, डॉ. अणिमा सिंह अपन संग्रहक आमुख मे ई ठीक प्रश्न उठौलनि अछि जे लोकसाहित्य जकरा हमरा लोकनि कहैत छी तकर ठीक–ठीक अभिप्राय की अछि? तीन प्रकारक संभावना भ' सकैत अछि—1. लोक मे प्रचलित गीत 2. लोक–निर्मित गीत 3. लोक–विषयक गीत। लोक–विषयक गीत कें तँ ओ पहिनहि काटि दैत छथि जे ओहि मे सदा लोकगीत बनल रहबाक क्षमता नहि पाओल जाइछ। भ' सकैत अछि जे शिष्ट साहित्यो मे क्यो उच्च स्तरक प्रतिभाशाली कवि भ' गेल होथि जिनकर रचल गीत काल–विशेष मे लोकगीतक मान्यता हासिल क' लैछ, जेना विद्यापतिक गीत कें स्थान प्राप्त करैत हमरा लोकनि देखैत छी। मुदा कालान्तर मे इहो होइछ जे हुनका शिष्ट साहित्य मे स्थान द' देल जाइनि आ क्रमश: हुनक गीतक संबंध लोकजीवन सँ टुटि जाइन। बेर–बेर अध्येता लोकनि एहि बात के दोहराबैत छथि जे आइ जे लोकसाहित्य थिक सैह काल्हि शिष्टसाहित्य कहाओत। डॉ. अणिमाक निष्कर्ष छनि जे 'वैह गीत वास्तव मे लोकगीत मानल जा सकैछ जे मुख्यत: लोक–मध्य प्रचलित हो तथा लोकनिर्मित हो।'[6]

एक उदाहरण सँ ई बात आओर स्पष्ट भ' सकैत अछि। डाकक संबंध मे अद्यतन शोध यैह कहैत अछि जे ओ कोनो एक व्यक्ति नहि छला। एक व्यक्ति नहि हेबाक अर्थ प्रकारान्तर सँ, इहो होइत छैक जे अन्तत: छला ओ व्यक्तिए। हँ, एक व्यक्ति नहि छला। अनेक व्यक्ति छला। अलग–अलग कालखण्ड मे, अलग–अलग युग मे भेला। पुरनका वस्तु हुनका सिखलो रहनि आ नबका ओ जोड़नहु जाथि। ठीक यैह बात हमरा लोकनि लोकगीतक क्षेत्र मे सबतरि देखि सकैत छी। पुरनका हुनका सिखलो रहैत छनि आ नबका ओ आवश्यकतानुसार जोड़नहु जाइत छथि। कतेको युग मे एहन भेलैक अछि जे कोनो नव अवतारी पुरुषक, कोनो नव लोकदेवताक सेवा चलन पकड़लक अछि। ओहि युगक भजनीक आ गितहारि लोकनि कें ई गीत रचय पड़ैत छनि। हमरा लोकनि अनुमान क' सकैत छी, श्रेष्ठ कोटिक जे मार्मिक लोकगीत सब अछि तकर रचनाकार कोनो स्त्री रहल हेती।

विद्यापतिक भणिता जोड़ल जे आन–आन कविक ढेर रास कविता भेटैत अछि, ओहू रचनाकार लोकनिक मनोविज्ञान कें बूझल जा सकैत अछि। ओ लोकनि लोक मे अपन स्वीकृति चाहैत छला। अपन परिचय नुकेबाक पाछू कारण यैह जे व्यक्तिक एक परिचयवृत्त होइत अछि, एक टा छवि होइत अछि, मित्रशत्रु–वर्ग होइत अछि, जखन कि रचना कें एहि सब कथूक पार जेबाक चाही। अंग्रेजी मे लोकसाहित्यक अध्येता लोकनिक बीच एहि विषय पर बेस घमर्थन भ' चुकल अछि। नूलेगल ई कहैत छथि जे जेना गगनचुम्बी अट्टालिका कि उत्तुंग कीर्त्तिस्तम्भ, कि पाषाण पर उत्कीर्ण सजीव मूर्त्ति, कि आकर्षक आ हृदयहारी चित्र अन्तत: कोनो व्यक्तियेक रचना होइत अछि, तहिना लोकसाहित्यक निर्माणक पाछू सेहो अवश्ये एक रचनाकार रहैत अछि। हुनक बात कें बढ़बैत प्रोफेसर चाइल्ड लिखलनि जे व्यक्तिविशेषक रचना होइतहु जे कि ई लोक–समाज मे अंगीकृत होइत अछि, भिप–भिप लोकक द्वारा गायन करैत एकर क्रम बढ़ल जाइछ, परिवर्त्तन आ परिवर्द्धन भेल जाइछ, तें एहि मे सँ

एकर मूल रचनाकारक व्यक्तित्व नष्ट वा तिरोहित भ' जाइत अछि। कतेको बेर हमरा लोकनि ई उद्धरण सुनने होयब जे कवि तँ अन्तत: नष्ट भ' जाइत अछि, ओकर कविते टा बचल रहैत छैक। एकर वास्तविक दृष्टान्त हमरा लोकनि लोकसाहित्य मे पाबि सकैत छी।

डॉ. आशुतोष भट्टाचार्य एहि पर किछु आनो दृष्टिमो विचार केलनि अछि। हुनक विचार डॉ. अणिमा सिंहक शब्द मे: 'लोक-समाज मे प्राय: प्रत्येक व्यक्तिक लेल लोकगीत रस-वस्तु थिक। अपन रचना नहि भेनहु जन-मानस ओकरा बड़ आतुरता और उत्साह संग अपनाबैछ, किएक तँ ओहि मे अपनहि भावक प्रतिच्छवि पाबैछ। भावक तन्मयता मे अपन और आनक भेद तथा सब प्रकारक भेदभाव भूलि जाइछ। ओ लोक-मानसक एक अखंड अंग बनि जाइछ।'[7]

एहि तरहें देखी तँ लोकगीत अपन मूल मे दुइये वर्गक होइत अछि—एक तँ ओ जे लोक-रचनाकार द्वारा रचल जाइछ आ लोक कर्मशाला मे अनन्त काल धरि परिवर्त्तन आ परिवर्द्धन पबैत अपन यात्र करैत रहैत अछि। दोसर, शिष्ट रचनाकार लोकनिक लिखल लोकविषयक गीत जे किछु कालखंड धरि तँ अवश्य जन-मानस मे व्याप्त रहैछ, मुदा आगू फेर अपनहि कठघरा (शिष्टसाहित्य) मे घुरि जाइत अछि।

हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिलीक अधिसंख्य गीत चर्यापदक अछि। चर्या अर्थात विधान। पूजा करी तँ तकर अपन विधान छैक, ताही अनुरूप नियम छैक जे कोन अवसर पर कोन-कोन देवताक गीत गेबाक चाही। विवाह जँ होइत अछि तकर अलगे अपन विधान छैक आ विधानक भीतर विध, उपबिध, उप उपबिध। प्रत्येक अवसरक अपन गीत छैक। कहबे केलहुँ जे गीत मंत्रक हैसियत हासिल कयने अछि। पाबनि-तिहार अछि तँ तकर अपन-अपन बिध, अपन-अपन गीत। एहि हिसाब सँ देखी तँ समुच्चा संस्कारगीत अपन प्रवृत्ति मे चर्यापरक अछि। चर्या एहि लोकक मूले स्वभाव संग जुड़ल छैक। बौद्धधर्म कें सेहो वज्रयान सन चर्यापदक सम्प्रदाय जे भेटलैक से एही इलाका मे आबि क' भेटलैक। डॉ. जयकान्त मिश्र यद्यपि तँ लोकगीतक वर्गीकरण सात भाग मे केलनि अछि— भजन, देवी-देवताक गीत, पाबनिक गीत, सोहर, संस्कारगीत, समैया गीत, लगनी—मुदा बड़ पता के एक बात लिखलनि अछि जे 'मिथिलाक स्त्रिगणक अनुसार एकर विस्तृत विभाजन थिक 'देवपक्षक गीत' ओ 'रस-पक्षक गीत'। मुदा ओ मनुक्खक जीवनक समस्त पक्ष कें आवृत्त कयने अछि।'[8]

डॉ. रामदेव झा जे वर्गीकरण कयलनि अछि, हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे हुनकर तीनटा वर्ग—संस्कारगीत, उत्सवव्रतोपासना गीत, आ भक्तिपरक गीत—एही प्रवृत्तिक अछि जकरा हमरालोकनि चर्यापरक कहि सकैत छी। उत्सव, व्रत आ

उपासना—तीनू कें जे ओ एकठाम मिलौलनि अछि तकरा पाछू मैथिली समाजक धर्ममयं जगत्सर्वम् के मान्यते छैक। उत्सव मे सेहो एक टा धार्मिक प्रकारक पवित्रताक आग्रह रहैत छैक। भक्तिपरक गीतक व्याप्ति अवश्य चर्या सँ बाहर धरि जा सकैत अछि, बशर्ते कि ओ भक्तक भीतर ततबा गँहीर धसल हो। एकरा लेल मैथिल संस्कृति मे कम अवकाश (स्पेस) छैक। एहि ठामक धर्मचर्या मे संन्यास लेल कोनो प्रशंसनीय भाव कहियो नहि पाओल गेलैक। अव्वल तँ मिथिला एहि चारिम आश्रम कें मान्यते नहि देलकैक। रामदेव बाबू कतहु चर्च केलनि अछि जे महेशबानी गबैत भक्त कोना भावविभोर रहैत अछि आ अश्रुपात होइत रहैत छैक, भावनृत्य चलैत रहैत छैक, हाथक डमरू स्वरक मर्मस्पर्शिताक संग नचैत रहैत छैक। ई लगभग ओही प्रकारक दृष्टांत थिक जेना भजनीक सभक गहबर गीत सुनैत भगता पर भाओ चढ़ैत छैक। भक्तिक अतिरेक एकरा मानब कठिन थिक, कारण ई सब टा क्रियाकांड कयलाक बाद फेर महाशय पूर्ववत् अपन हील-हुज्जत भरल, निनानबेक फेरा मे पड़ल जीवन मे वापस घुरि अबैत अछि। भक्ति जँ व्यक्ति कें आमूलचूल बदललक नहि तँ ओकरा भक्ति कहबा मे संकोच करबाक चाही। कहब आवश्यक नहि जे महेशबानीक तुलना मे एहि भक्तिक संभावना मैथिली निर्गुण मे अपेक्षाकृत बेसी छैक। निर्गुण अपन स्वभाव मे एतेक अलग अछि जे मैथिली गीतक भक्ति-प्रभाग मे अँटबो मे असुविधा प्रदान करैत अछि।

एहि ठाम प्रसंगवश कहब उचित जे मैथिली लोकगीतक प्रतिष्ठित संकलयिता लोकनि एक विचित्र प्रकारक सीमाक शिकार भेल छथि। सीमा ई जे ओ अपन धार्मिक मताग्रह कें छोड़ि नहि पबैत छथि मुदा अहंकार एहन जे अपन संकलन कें 'मैथिली लोकगीत' वा कि 'मैथिली गहबर गीत' कहै छथि। आर्यीकरणक प्रक्रिया मे लोक-समाजक जतबा अंश ब्राह्मणधर्मक भीतर आयल तकरे ओ 'मैथिली' कहि क' निश्चिन्त भ' जाइत छथि जेना हुनका टोक' बला दूर-दूर भविष्य धरि क्यो नहि आबय जा रहल हो। डोम एक कलावंत जाति अछि। गीतो मे। सब अर्थ मे। मुदा, मिथिला मे ओ आने ठाम जकां अछोप थिक। छेछन महराजक गीत मे जे दशा चित्रित भेल अछि, ओकर चर्चा पहिनहि आबि चुकल अछि। एना मे कोना उम्मीद कयल जाय जे तजियाक गीत आ कि मुस्लिम समाज मे प्रचलित आन गीत संकलन मे औतैक? संकलयिता लोकनिक सीमा रहल जे ब्राह्मणधर्मक लोकवृत्त मे मान्यताप्राप्त सब वस्तु संकलन कयल आ बड़ सकार्थ बुझलनि जे अपनो जातिक वस्तु ओहि मे मिला देलनि। बुचरू पासवानक संपादन मे साहित्य अकादेमी सँ छपल संग्रहक नाम थिक—'दलितवर्गीय लोकव्यवहारगीत', मुदा एहि मे ने डोमक गीत अछि जे मुसलमानक। निश्चिते स्वयं अपने दलित होइतहु बुचरू पासवानक ब्राह्मणधर्मक

पसारल आदर्श के शिकार भेला अछि, ठीक तहिना जेना सब क्यो भेला अछि। एहना मे हमरा लोकनि रामइकबाल सिंह राकेश कि राधावल्लभ शर्मा पर कतेक भरोस क' सकैत छी। अणिमा सिंहक संग्रह कें जरूर ऐतिहासिक कहल जा सकैत अछि जे ओ मैथिल संग्रह-प्रवृत्तिक अनेको बेर अतिक्रमण कयलनि अछि। अणिमा सिंह मैथिल बाद मे भेली, पहिने ओ बंगालक बेटी छलीह, संभवत: एही दुआरे।

लोकगीत आ जीवन-संघर्ष

लोकगीत मे जे चर्या अछि, से चाहे उपासनाक हो कि भक्तिक, अपन शतांश मे ओ केवल धार्मिके हो आ ओहि मे लोकजीवनक हलचल, लाभ-लोभ, राग-द्वेष अयबाक द्वार एकदम्मे बंद हो, से नहि अछि। पूरा जीवन-संघर्ष ओहि मे आयल छैक। धर्मराजक एक गीत मे जखन सेवक कहैत छैक जे हे धर्म, हमरा तँ ने घर अछि ने घरनी, के साँझ देतह? ईश्वरो हमरा पर बाम भेल अछि आ ने खेते ततबा अछि जे जीवन गुदस्त क' सकी, तँ धर्मराज बोलभरोस दैत छथिन। गीत अछि—

घर नहि घरनी हे धर्म, के देतह साँझ हौ
खेत नहि समपन हे धर्म, ईसर भेला बाम हौ
घर देबह घरनी हे सेवक, सेहो देतह सांझ हौ
खेत देबह समपन हे सेवक, ईसरो दहीन हौ

एहि ठाम ईश्वर अलग छथि, धर्मराज अलग। तहिना मुस्लिम समुदायक लोकगीत मे अल्ला अलग छथि पैगम्बर अलग। हँ, दुनू कें ई सामर्थ छैक जे ओ चाहथि तँ सुप्रीम कें दहीन कयल जा सकैत सकैत अछि। धर्मराजक पत्नी छथिन सितला। विपत्तिये टा मे हुनकर नाम लेल जाइत अछि, बाँकी समय ओ बूढ़ी माय कहा क' नित सेवा पबैत छथि। सेवा पायब मैथिल धर्मधारणाक अपन खास विशेषता थिक। जकरा आन लोक कहता पूजा करब, मैथिल तकरा 'सेवा करब' कहता, मानू घरक सब सँ वरिष्ठ सदस्य होथि। अकारण नहि थिक जे दीनाभद्रीक सेवक मुसहर लोकनि एखनहु हुनका जीवित मानैत छथि आ 'दादाजी' कहि क' सम्मान करैत छथि। यैह बात सल्हेसक संग छनि। मैथिली गाथा सब मे सेहो हुनका सभक मृत्यु कें दोयम क' क' राखल गेल अछि। सल्हेस तँ आकाश मे उड़ि जाइत छथि आ तहिया सँ आकाशे मे विद्यमान छथि। एहिना आनो लोकनि छथि। बूढ़ी माइक एक गीत मे सेवक कहैत छैक जे हँ, तोहर सेवा मे गलती हमरा सँ जरूर भेल अछि। एक बेर अकाल पड़ल रहय तँ तोहर अक्षत के भात बना क' खा गेल रही, एक बेर नांगट होअय लागल रही तँ मजबूरन तोहर चनुवा के कपड़ा लपेटि क' गुदश्त कयने रही। मुदा, तों नहि गोहारि करबह तँ के करतै? गीत अछि—

भुखले जे खेलियौ हे बूढ़ी माय
अछता के चाउर हे
प्यासल पिलियौ गंगा नीर हे।
नांगटे पिन्हलियौ मैया हे
चनुवा के कपड़ा हे
उठू मैया करू ने गोहारि हे।।

दोसर स्थान पर हमरा लोकनि कें श्रमपरक गीत कें रखबाक चाही। ओ श्रम करैत काल गाओल जाइबला गीत सब छल। एहि पर महिला लोकनिक एकाधिकार जकां छलनि। वैह अधिकतर एहि गीत सभक निर्माण करथि ओ वैह गाबथि। श्रमक सीमा जे कि अनन्त अछि तें एहि गीतक प्रकारो बहुत भ' सकैत अछि। ई गीत स्वभावत: चर्या सँ बाहर अछि तें धार्मिकताक सीमा सँ बाहरो धरि जायब एकरा मे संभव छैक। मैथिली गीतक ई प्रवृत्ति छैक जे जखन ओ धर्मनिरपेक्ष होइत अछि तखनहि ओ जीवनसंघर्षक बेहतर वहन क' सकैत अछि। श्रमगीत मे हमरा लोकनि कें से भेटैत अछि।

पति परदेस रहै छैक। मैथिली लोकगीत मे अधिकतर हमरा लोकनि देखैत छी जे युवा पति-पत्नीक एक दोसर सँ दूर रहबाक हाहाकार सगरे व्याप्त छैक। बाहर लोक बनिज करय जाइत छल। जा क' भने नोकरिये करैत हो मुदा गीत मे ओकरा बनिज करब कहल जाइत अछि। बनिज करब एक सम्मानजनक पेशा छल। मुदा एहन प्रतीत होइत अछि जे प्रवासन के जाहि वेदना कें हमरा लोकनि आधुनिक कहि रहल छियैक, आ जकर सब सँ प्रभावी अभिव्यक्ति यात्रीक कविता मे भेलैक अछि, से बहुत पहिनहि सँ मिथिला मे व्याप्त छल।

गीत मे 'विरह' दू अर्थ मे आयल अछि। एक अर्थ तँ वियोग छैक, दोसर छैक—सुखक अभाव। घरक माहौल तनावपूर्ण रहैत छैक। सासुक व्यवहार निर्दयतापूर्ण रहैत छनि, मानू पुतोहुएक पापें ओकर पुत्र परदेस बसै छैक। ननदि द्वेष रखैत छैक तकर विवरण सँ मैथिली लोकगीत भरल अछि। 'विरह के मारल' पद जखन लोकगीत मे आबय तँ एकर अर्थ सबठाम वियोगे नहि होइछ, कतहु अर्थ होइछ—असुख। कतोक बेर तँ एहि असुखक कारण ओकर पति बनैत छैक।

एहने प्रकारक असुख कें लोकगीतक संदर्भ मे वेदना कहल जा सकैत अछि। एहि अभिव्यक्ति कें ठीक-ठीक करुण रस कहबैक, सेहो उचित नहि, कारण ओहिठाम शोक-क्लेश आदि कोनो भाव नहि छैक, ने इष्टनाश वा अनिष्ट-प्राप्ति। एकरा बदला ओहि मे रुचि, सेहन्ता आ भविष्यक स्वप्न निहित छैक। ओहि सँ गौनिहार कें बल

भेटैत छैक। तें, कतोक ठाम हमरा लोकनि देखब, रस-सिद्धांतक सीमा बेर-बेर देखार भ' जाइत छैक।

एक टा लगनी गीत मे आयल अछि जे पति परदेस बसैत छैक। परदेसी पति कें चिट्ठी पठेबाक छैक। ह्रदय के बात परदेसी धरि पहुँचेबाक यैह एक रस्ता छैक। लिखब जनैत छथि कायस्थ। ओ एना क' चिट्ठी लिखि दैत छथि जे 'चारूकात लिखिहनि इरिची मिरिचिया, माझे ठाम पिया के सन्देस।' इरिच मिरिचिया एहि ठाम सांसारिक झमेला सब कें कहल गेल अछि। ह्रदय के बात एहि सब सँ अलग छैक। आब प्रश्न अछि जे चिट्ठी पठाओल कोना जाय? गामक बाट द' क' बाट-बटोही सब परदेस जाइत अबैत रहैत छैक। पद छैक—'बाट रे बटोहिया कि तोंही मोरा भैया, नेने जाहो पिया के सन्देश।' मुदा बटोहीक समस्या दोसर छैक। एकर पिया कें ने ओ चिन्हैत अछि ने जनैत अछि। इहो ठीक-ठीक नहि पता जे ओ कोन नगर मे रहैत छैक। मैथिली लोकगीत मे भाइक बड़ महत्त्व। भाइक गौरव-वर्णन सगरहि भरल अछि, ताहि अनुपात मे भाइये कें हमरा लोकनि बहिनक ख्याल करैत नहि देखैत छिऐक। बटोही कें जखन धनी अपन भाइ बतबैत अछि तँ तात्पर्य छैक जे काज तँ ई हमर भाइ कें करबाक चाहैत छल, तोरा हम ओकर स्थान दैत छियह। मुदा बटोहीक समस्या अपना ठाम छैक। धनी अपन पियाक पहचान बतबैत अछि—'हमरहु पिया कें औंठे पौंठे धोतिया, मथवा मे पाग सुबेस।' कतहु कहैत अछि—'हमरहु पिया कें नामी नामी केसिया'। एही सँ बटोही कें पहचान करबाक छैक। कतेक कठिन टास्क अछि। यैह संदेश जखन शिष्टसाहित्य लग मे पहुँचेबाक रहैत छैक तँ मेघदूत सन भारी-भरकम कविता लिखल जाइत अछि। मेघ कोना संदेश पहुँचा सकैत अछि, ई प्रश्न कालिदास लग उठलनि तँ ओ लिखलनि कामार्ता: हि प्रकृतिकृपणा: चेतनाचेतनाषु। विरहक मारल बेगरतूत लोक कें चेतन-अचेतन धरि के भेद बिसरा जाइत अछि। क्यो-क्यो बटोही तँ ओम्हर सँ समाचारो लेने अबैत अछि—'देखलौं मे देखलौं बहिनो हाजीपुर के हटिया/ वैह रे बंगालिन सुगा कें लोभायल हे राम।' पुरुषक परस्त्री-लोभ नारी-दुर्दशाक प्रमुख कारण। बरखो बरखक बाद जखन ओकर पिया परदेस सँ घुरैत छैक तँ अपन दुखक किछु हाल ओ सुनबैत अछि—'तोहरो माय पिया बड़ दुख देलनि, पौआ भरि चाउर नापि देल/ तोहरो भौजैया बालम बड़ दुख देलनि, ढकनी नापिये भात देल/ तोहरो बहिनि पियवा बड़ रे चुगलाही, उठैत-बैठैत दुख देल।' मैथिली लोकगीत मे जें कि स्त्रीक पहुँच बनि सकलैक, हमरा लोकनिक देखैत छी जे स्त्रीक संग कयल जाइत अन्यायक हाहाकार ओतय सबतरि व्याप्त छैक। तें यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' बला ऋषि-वचन कतेक सारहीन छैक आ यात्री नागार्जुनक उपन्यास मे आयल मैथिल स्त्रीक चित्रण कतेक यथार्थ, तकर अवगति

लोकगीतक संसार मे ढुकने सँ स्पष्ट भ' जाइत छैक। स्त्रीक वेदना ततेक घनीभूत छैक जे प्राय: सब ठाम, चाहे ओ चर्येपरक गीत किएक ने हो, साफ-साफ उतरि अबैत अछि, मुदा श्रमगीत एकर स्थायी ठेकान छिऐक। ओ धर्मनिरपेक्ष अछि आ मनुक्खक जीवनसंघर्षक अभिव्यक्ति थिक। आधुनिक कविता, नव कविता एहि ठाम सँ अपन प्रेरणा प्राप्त करैत रहल अछि।

मिथिलाक गाम जेना-जेना सांस्कृतिक रूप सँ उजड़ैत गेल तेना-तेना लोकगीत सेहो अपन अंत कें प्राप्त करैत गेल। चर्यापरक गीत कें तखनहु अपन धार्मिकता आ विधि-व्यवहार सँ किछु संरक्षण भेटलैक, एकर असली मारि श्रमगीत पर पड़ल। जाहि गाम कें हमरा लोकनि अविकसित कहैत छिऐक, ओहि ठाम एखनहु जाइ तँ सदिघड़ी गीत गाब'वाली स्त्री लोकनि भेटतीह। हुंनकर जाबन्तो वेदनाक संरक्षण-स्थल गीते देखार पड़त। मुदा संग्रहकर्त्ता लोकनिक जड़ता एकरा कहल जा सकैछ जे जखन ई विलुप्त गीत सब जीवित छल, तखनहु ओ लोकनि श्रमगीतक संग्रह सँ परहेज केलनि आ संस्कारगीते कें मैथिली लोकगीत कहैत रहलाह।

चर्यापरक गीतक बाद जे गीत सब मैथिली मे सर्वाधिक संख्या मे भेटैत अछि, ओ विनोदपरक गीत थिक। विनोद अर्थात मनोविनोद। रामदेव बाबूक मनोरंजक गीत आ समैया गीत-एहि वर्ग मे अन्तर्भुक्त भ' सकैत अछि। एकर विस्तार बहुत व्यापक अछि। राजदरबार मे जा क' ई विलासगीत भ' जाइत छल तँ नृत्य मे प्रयुक्त भ' क' नाचगीत। एकर उल्लेख ज्योतिरीश्वरक विवरण मे भेटैत अछि। विद्यापतियो बहुधा एही कोटिक गीत लिखलनि। आइयो जे लोकगीतक नाम पर गीत लिखाइत अछि से बहुलांश मे एही वर्गक गीत थिक। अश्लीलताक जे सांस्कृतिक चोटक हमरा लोकनि चिन्ता करैत रहैत छी, सेहो एही बाटें लोकगीतक संसार मे प्रवेश करैत अछि।

मैथिली लोकगीतक संस्कृति

श्रेष्ठ कविताक एक विशेषता थिक जे जते ओ परंपरित कवि-परिपाटी सँ दूर होयत ततबे ओहि मे रसानुभूतिक गहराइ आ यथार्थ मार्मिकता बढ़ल जेतैक। ताही हिसाबें समाजक अबरजात सेहो ओहि मे बढ़तैक। यैह वस्तु कोनो कवि कें अपना पीढ़ी मे अग्रगामी बनबैत छैक। कविता कें ई शिक्षा लोकगीत सँ भेटैत छैक। तरह-तरहक बहपा सँ एहि गीत सब मे ओ समुच्चा जुग, ओहि जुगक उठा-पटक, ओहि युगक सुख-दुख, सब चीज आबि गेलैक अछि, से देखबा जोग अछि। तें कविता कोनो युगक असलियत जनबाक लेल एक आवश्यक सोत मानल जाइछ। तें, हमरा लोकनि देखैत छी जे लोकगीत आ गाथा मे ओहि युगक आस्था-विश्वास, सामाजिक आ आर्थिक स्थिति-परिस्थिति, ओहि युगक संघर्ष आ स्वप्न व्यक्त भेल रहैत छैक। एकर

आनो बहुतो आयाम सब भ' सकैत छैक। एहि हिसाबें देखी तँ मैथिली लोककविता पर गंभीर ढंग सँ काज होयब एखनहु बाँकी अछि।

मैथिलीक गाथा सब मे देखैत छी जे धार्मिक आस्था-विश्वास मे, हजार बरख मे, कैक बेर परिवर्त्तन भेल। आर्यीकरण सँ छिटकैत, मुठभेड़ करैत आ कि चुप्पो, मुदा असहमत, मिथिलावासीक ई सब व्यावहारिक प्रगति-चरण छल। हिनके लोकनिक भाषा मैथिली छल। जे लोकनि अपना कें शुद्ध आर्यसंतान मानैत छथि, तिनकर जँ जाबन्तो ज्ञान, समुच्चे धर्म-कर्मक भाषा संस्कृत छलनि। संस्कृतक चौहद्दी सँ बाहर, संस्कृतिक एक आओर संसार पहिनहु छलै बादो मे बनल रहलैक। मिथिलाक समस्या ई छल जे जे लोकनि मानसिक रूपें संस्कृतक संसार मे जीबै-मरै छलाह हुनकहु घर मे 'लोक' बिराजि रहल छलनि, मने मैथिली। आ, 'एहि' लोकक जुड़ाव 'ओहि' लोक संग छलनि। मैथिली लोक साहित्यक ई विशेषता छैक जे 'लोक' मे अद्‌भुत तादात्म्य अछि। भीतर-भीतर भने ओहि मे अनेक संघर्ष चलैत हो, मुदा वास्तविक तथ्य दुनू कें स्वीकार रहैत अछि। दुनू अपन-अपन गीत मे ओही तथ्य कें गबैत अछि। पूर्ण तादात्म्य छैक। भाषाक प्रसार संस्कृत बलाक भोजनभात आ ओछाओन-बिछाओन धरि तक पसरल छैक। जहिया पहिल बेर कोनो ऋषि 'लोके वेदे च' लिखने हेताह, ओ कोनो मामूली क्षण नहि रहल हेतैक। लोक कें वेदक समकक्ष मानब साधारण बात कोना भ' सकैत अछि? 'मिथिलाक सामाजिक इतिहास' मे पंडित गोविन्द झा कहैत छथि—'न स्त्रीशूद्रौ वेदमधीयताम्'—एहि वेदवाक्यक अनुसार ओहि कर्मकाण्ड सभ मे स्त्री आ शूद्रक कोनो भूमिका नहि छल। फलतः ब्राह्मणी लोकनि एक आन प्रकारक कर्मकाण्ड चलबैत रहलीह जे समान रूपें सब जातिक महिलामध्य प्रचलित छल। ई सर्ववर्गीय कर्मकाण्ड पंडितक भाषा मे लोकाचार वा सोझे आचार कहल गेल। वैदिक परम्परा मे सिन्दूरदानक कतहु विधान नहि अछि। कानून सेहो कहैत अछि जे हिन्दू मे विवाह सम्पप होएबाक प्रमाण थिक सप्तपदी। मैथिल ब्राह्मणक प्रचलित विवाहपद्धति मे कहल गेल अछि—'आचारात् सिन्दूरदानम्'। सिन्दूरदान मुंडा संस्कृति सँ आएल अछि।'[9]

बाल्मिीकिक राम जे ओहन-ओहन घटना केलनि, मिथिलाक आचार्य लोकनि तकर वार्त्ता नहि लेलनि। कोनो हृदयवान आचार्य भने कोनो दिन सीता कें स्मरण करैत कोनो संस्कृत मुक्तक लिखि देने होथि, आचार्यत्वक असली महत्त्व न्याय आ मीमांसा कें पड़िच्छ करबाक प्रयास मे लागल रहल। बाँकी बचल थोड़-थाड़ अद्वैत मे। धर्मक अस्मितीकरण (आइकोन बनायब), नव तरहें ओकरा संगठित करबाक, समन्वयात्मक बनेबाक प्रयास करब, मिथिलाक चिन्ता मे कहियो शामिल नहि रहलैक। अखिल भारतीय आदर्श मिथिलाक पंडित लोकनि कें सब दिन मोहित करैत

रहलनि। तखनहु राम कें प्रमुख देवता बना क' हुनकर भक्ति करब, रामोपनिषद् आ राम-मंत्र धरिक अंगीकार क' लेब, मिथिला कें कहियो पसिप नहि। से मिथिलाक लोको धरि मे तहिना व्याप्त। वर्णरत्नाकर मे रामक यश कें उज्जवल कहल गेल अछि। मिथिला हुनका यशस्वी तँ अवश्य मानलक मुदा पूज्य नहि। मुदा लोक सीता मे आत्मबुद्धि रखैत, अप्पन समाँग मानैत। मैथिली मे जतेक गाथा भेटैत अछि, प्रायः समस्त शूद्र लोकनिक कथा छियनि। शूद्रक समानान्तर जँ ककरो गाथा छैक तँ ओ बेटी सीताक, जकर जीवन बहुत दुख मे बितलैक। मिथिलाक शास्त्र (जेना इतिहास) भने साबित क' दौक जे राजा शिवसिंह, राजा हरिसिंहदेव, बड़ यशस्वी शासक रहथि, लोक मे हुनकर कोनो गाथा नहि बनि सकलनि। गाथा बनलनि सल्हेसक, जे राजासाहेबक अधीनक सेवक छला। गाथा बनलनि दीनाभद्रीक जे राजासाहेबक संग लड़ैत शहीद भ' गेला।

मिथिला मे रामभक्ति प्रचार नहि भेलाक बादो, आ एतय कोनो प्राचीन राममंदिर नहि हेबाक बादो, लोक मे हनुमान कें देवता मानबाक स्वभाव बनल रहलैक। हनुमान एक पौराणिक देवता छथि। लोक मे सेहो ओ एक देवता मानल जाइत छथि। ओ पूजित छथि मात्र एहि दुआरे जे विपत्तिकाल मे ओ सीताक सहायक भेल रहथि। 'लवहरि-कुशहरि' गाथा मे एकर पूरा प्रसंग आयल अछि। बेकसूर, गर्भवती सीता कें जखन राम अन्यायपूर्वक परित्याग क' वन पठा देने रहथि, हुनकर एहि कृत्य पर समुच्चा अयोध्यावासी चुप रहि गेल रहथि, मुदा एक हनुमाने छला जे हुनकर विरोध कयने रहनि। तखन, राम क्रोध आ प्रतिहिंसावश हनुमान कें सेहो तहिना वनवास पठा देलखिन जेना सीता कें। कुशक अयोध्या-आक्रमणक समय मे जखन लाचार राम हनुमान कें आपस बजौलनि तँ हनुमानेक प्रयास सँ फेर रामक बालक सब अयोध्या मे आबि जमि सकला, ने तँ रामक दुनू आतंकी भागिन मानू गद्दी पर कब्जा कइये चुकल छला। एक टा गीत मे सीता-हनुमान वार्तालापक प्रसंग आयल अछि—'कानि कानि कहथिन सीता सुनू हनुमान यौ/ कोना क' बिसरि गेला मोरा भगवान यौ/ हाड़-माँस गलि-पचि गेलै तेहने भुकतान यौ/ तैयो ने अधर्म तन निकसल परान यौ।'

लोकदेवी जीबछक एक गीत मे हनुमान कें जीबछक भाइ बताओल गेल छनि—'हँसि पुछू बिहँसि पुछू हनुमन्त भैया जे/ आ गे बहिनी, देखय देहो दाँतहुक इजोत।' कतेक सुन्दर बिम्ब अछि! तमसायलि जीवछ कें हनुमान दाँतक इजोत देखेबाक अनुरोध करै छथिन, मने हंसू, मने क्रोध छोड़ू। मैथिली गीत मे बालक हनुमान धरि के मनोहारी वर्णन भेलैक अछि। छोटे मोटे हनुमान कें नम्मा-नम्मा केश छनि, रूसल छथि आ अंगनाक काते कात नाचि रहल छथि। माय कहैत छनि जे

आबय दहीन मालिन कें, फूलक हार गंथवा क' मँगा देबौ। एक टा ब्राह्मणगीत मे नाहक अगिला माँगि पर ब्राह्मण बाबू बैसे छथि तँ पछिला माँगि पर हनुमान बैसल छथि। ई लोकनि भैरव सँ भेंट करय जा रहलाह अछि जे धारक ओइ पारक घाट पर नहा रहल छथि। अर्थात् लोक-समाजक संग अत्यन्त आत्मीयताक ई दृष्टान्त सब थिक। एकरा जड़ि मे हुनकर न्यायप्रियता रहनि।

धर्मधारणा मे शास्त्र सँ बाहर भ' चलबाक एक आओर दृष्टान्त देखल जा सकैछ। एक कालीगीत मे खिस्सा आयल अछि जे कोना-कोना की सब भेल रहैक जखन काली असुरक संहार कयने छली। अपने सँ अपन बरियाती साजि क' ओ असुरक घर आयल छली। बरियातीक दृश्य ई रहैक जे 'अपने सँ गाबथि काली अपने बजाबथि/ हे माँ, अपनहि सँ करथि बियाह।' जखन बियाह क' क' असुरक घर बस' लगलीह, ऊँच-ऊँच झरोखा चढ़ि नियार करथि जे कोना असुरा कें मारि लिधुर बहाओल जाय, तखन भैंसुरा सब कें मारि-मारि हार गूथल जाय।

काली कें दशमहाविद्या मे प्रथम स्थान देल गेलनि अछि। ओहि ठाम एहि प्रसंगक सर्वथा अभाव छैक। दुर्गासप्तशती मे तथ्य कें नुकाओल गेल अछि, वा कहल जाय जे दोसर तरहें राखल गेल अछि। एक तँ परम श्रेय काली कें नहि दुर्गा कें देल गेल अछि। दोसर, विवाह भेल नहि देखाओल गेल अछि। ओतय तँ नियारे भास मे असुरक बलिदान भ' जाइत छैक। हमसब देखैत छी जे शिष्टसाहित्यक लेखन मे यथार्थ बात कें नुका लेल गेल अछि। जखन कि लोकस्मृति मे वास्तविक तथ्य सुरक्षित छैक। लोकगीतक तथ्य ई कहैत अछि जे बात एतेक आसान नहि रहैक। बियाही नारी बनि क' घर मे प्रवेश कयलाक बादहि एतेक भारी लक्ष्य कें हासिल कयल जा सकैत रहय।

पूर्वांचल मे एक टा नवीन देवता दुर्गाक प्रचलन कोना भेलैक तकर मर्म बुझबाक लेल 'चारुचन्द्रलेख' (हजारीप्रसाद द्विवेदी) पढ़बाक चाही। दुर्गाक दू रूप माननिहार लोकनिक बीच संघर्ष सेहो लंबा समय धरि चलल—महिषमर्दिनी आ सिंहवाहिनी। पंडितसमाज महिषमर्दिनी कें मान्यता देलनि। कारण, सिंहवाहिनी मे उच्च आदर्श छलैक। ओहि मे पुरुष (सिंह) ओकर वाहन बनल छल। एहि मान्यताक पाछू स्त्रीक लेल गरिमापूर्ण जगह छलैक जे पुरुष संग सदा हुनकर सहअस्तित्व आ सहमति बनल रहतैक। करती सब टा स्त्रिये, कारण एहि ठाम दुर्गा वैह थिकी, मुदा पुरुष सब ठाम ओकरा संग बनल रहतैक। दुर्गासप्तशतीक महत्व एहि बात मे छैक जे ओहि मे दुर्गा सब ठाम सिंहवाहिनी छथि। महिषमर्दिनी तँ ओ, अन्त मे कोनो एक दिन जा क' भेली। मुदा शास्त्रीय समाज मे वैह दृश्य खचित भ' गेलैक।

दुर्गाक विकरालताक वर्णन एहि गीत मे भेलैक अछि—'सिंह चढ़ल मैया

गरजल आबथि/ मा हे, सिंह खसल मुरछाय/ सिंह काटिये मा खप्पर भरलनि/ मा हे, सोनित पीबू अछि धारे।' ओ अपन सिंह कें अपने काटि ओकर खून पीबि सकैत छथि। भयावह। दुर्गासप्तशती मे एहि प्रसंग-असुर संग कालीक विवाहक-सर्वथा अभाव अछि। शास्त्रीय समाज दुर्गा कें मान्यता तँ अवश्य देलक मुदा शर्त जे अहाँ स्वयं सामर्थ्यवान छी, क' सकी तँ स्वयं महिषक वध करू। तात्पर्य जे हम अहाँक वाहन नहि बनब। लोक-समाज मुदा एहि बात कें किपहु स्वीकार नहि केलक। मैथिली लोकगीत मे सर्वत्र सिंहवाहिनीक जयकारा भेटैत अछि। 'सिंह पर एक कमल राजित ताहि ऊपर भगवती/ उदित दिनकर लाल छवि नित, रूप शंकर धारती।'—ई मैथिलीक एक लोकगीत थिक जे सूरदासक नाम पर चलाओल भेटैत अछि। दुर्गा सिंहक साहचर्य सँ शंकरक रूप धारण करैत छथि। अर्थात 'शव' सेहो प्राणवान, शक्तिवान भेल छैक। काली जकरा सँ बियाह केलनि तकरे वध केलनि मुदा लोकगीत मे हुनका 'काली सोहागिन, बड़ अनुरागिन/ होअय लागल काली के सिंगार।' कहल गेल अछि। यैह सब कथू कारण रहल होयत जे शास्त्र मे कालीक रूप नग्न देखाओल गेल अछि। मुदा लोक मे हुनकर बड़ महिमा। ओ पलछिन मे आन्हर कें आँखि, कोढ़िया कें काया, निर्धन कें धन आ बाँझिन कें पुत्र द' सकैत छथिन। लोक-समाजक ओ 'इन्द्रपरी' थिकी जखन कि आर्य संस्कृतिक देवी ओ नहि थिकी।

मैथिलीक धार्मिक लोकगीतक एक आओर विशेषता ई थिक जे एतय ब्राह्मणक गीत सेहो छैक। कोनो धार्मिक अनुष्ठान मे आन-आन देवी-देवताक संग ब्राह्मणक गीत सेहो गाओल जाइत छैक। डॉ. रामदेव झा अपन अध्ययन मे एकरा 'कर्मकाण्डक निर्वहन कयनिहार कृशकाय ब्राह्मणक प्रति ममत्व ओ आस्थाक भाव' कहलनि अछि। बेसी लोक सैह मानैत छथि। मुदा ब्राह्मणधर्मक पुरोधा 'कृशकाय' कोना भेला, तकरा संबंध मे अलग-अलग व्याख्या अछि। डॉ. रामदेव झा एकर संबंध बौद्धधर्म संग जोड़ैत छथि। बेसी लोक एहिना जोड़लनि अछि। जतय कतहु आइ ब्राह्मण मे विपपता वा आचारहीनता देखाइत हो, एकर संबंध अनिवार्य रूप सँ 'बौद्धयुगीन अवशेष'क रूप मे देखल जाइछ।

पंडित गोविन्द झा अपन अध्ययन मे थोड़ेक भिप बात कहै छथि—'एहिकाल मे आर्यधर्म ब्राह्मणक मट्ठी सँ बहराए सार्वजनीन सनातन धर्म भए गेल। एहि सँ किछु समन्वय आएल परंतु ब्राह्मणक सम्पति, विद्या आ तस्मात् आदर-सम्मान सर्वत्र बढ़ैत गेल आ ताहि संग शोषण करबाक आ ठकि-फुसिआए गृहदास तथा सहवासिनी दासी बनएबाक प्रवृत्ति बढ़ैत गेल। स्मृतिकार सभ ई अत्याचार भोगब शूद्रक एकमात्र धर्म निर्धारित कएल। ई स्मृतिवचन पझाएल द्वेषाग्नि कें प्रज्वलित क' देलक। रामायण आ महाभारत एहि जातीय घृणा-द्वेषक रोचक उपाख्यान सभ सँ सरस बनाओल जाइत

रहल। एहन उपाख्यान दू नायक शम्बूक आ एकलव्य मानू अम्बेदकर-युगक मानव-बम भ' गेलाह। कहि नहि, एहन उपाख्यान सब चन्द्रगुप्त मौर्यक पछाति जोड़ल गेल कि आर्य-अनार्य युद्धक स्मृतिशेष थिक।'[11] रामदेव बाबू जकरा अवशेष कहलनि, गोविन्द बाबू लगभग तकरे स्मृतिशेष कहलनि अछि। तखन, दोसर भाग (अदर साइड) दिस सँ देखलनि अछि। दू टा विकल्प हुनका लग अयलनि, मुदा ताहि मे बौद्धक अत्याचार नहि छल, आर्य-अनार्य युद्ध छल।

अनार्य लोकनिक एक लोकदेवी बामति भेली अछि। एखनो बहुतो घर मे बामति देवीक पीड़ी होइत छनि। बामति के छली, की केलनि जे पूज्या भेली—एहि संबंध मे किछु स्पष्ट अध्ययन एखन धरि सामने नहि आयल अछि। बामति देवीक एक गहबरगीत कें ध्यान सँ देखी तँ लगैत अछि जेना बलात्कार आ हत्याक जघन्य घटना जे आइ चतुर्दिक होइत रहैत अछि, किछु तेहने घटना कोनो युग मे एक सामर्थ्यवान ब्राह्मणक द्वारा बामतिक संग कयल गेल होयत। हाहाकार करैत हुनकर आत्मा, लोकविश्वासक अनुसार, असल मे स्मृति जखन लोकक चित्त कें मथित आ अशांत करय लागल हेतैक तँ ओहि सुन्दर सुशील अनार्य महिलाक पूजा हुनका समाजक लोक करब शुरू कयने होयत। ओहि घटनाक स्मृति बामतिक गहबरगीत मे एहि तरहें आयल अछि—

बामति सुरति देखि भुललै बिरहामन छौंड़ा
लय रे गेलइ डिंगरा वन के ओर
एक वन गेल बिरहामन दुइ वन गेल
तेसर वन अचरा धयल बिरमाए
छोड़ू छोड़ू आहो बिरहामन हमरो अचरबा
सासु मोर अन्हरी ननदि बसे ससुररिया
रोबइत होइतै गोदी के बलकवा
बड़ आशा धयलियौ बामति तोहरो अचरिया
हमरो आशा करै छें निराश

गोविन्द बाबूक निष्कर्षक द्रष्टान्त रूप मे एहि प्रकरण के देखल जा सकैत अछि। डॉ. रामदेव झा एहि बामतिगीत मे नामित 'बिरहामन' कें उतिमाक गीत मे 'साहेबजी' उद्धृत केलनि अछि, अर्थात् अंग्रेजी राज मे अंग्रेजक अनाचार। सम्भव जे बामति सन के एक हृदयविदारक घटना परवर्ती काल मे सेहो उतिमाक संग सेहो भेल होइक। जकर स्मृति एहि गीतकथा मे आयल अछि।

मैथिली गीत मे जे ब्राह्मण आयल छथि से कतोक ठाम विपप अवस्थाक लोक छथि।'केहि कारण आहो ब्राह्मण, मुहमा मलिन भेल/ कथी बिनु चेहरा उदास' आदि।

एहू हाल मे मुदा ब्राह्मणक हाथ मे पोथी जरूर रहैत छनि। किछु ब्राह्मण घोड़ा चढ़ि अबैत छथि। मुदा तखनहु हुनका मे तेज बहुत छनि, कारण अपन योगबल सँ ओ बेगरतूत लोकक कल्याण क' सकैत छथि। किछु एहनो ब्राह्मण होइत छथि जिनकर उमर थोड़ होइत छथि। किछु तँ एहन मुग्धकारी सुन्दरता पौने रहैत छथि जे तमाम युवती लोकनि, ब्राह्मणबेटी, मालिनबेटी, हलुआइबेटी लोकनि अपन-अपन सब टा उत्पाद—जनउ, फूल आ मिठाइ—हुनका मुफ्त सौंपि दैत छथिन। यैह सब हुनकर पूजाक सेहो सामग्री छियनि। यद्यपि कि एकर विपरीतो होइत छैक जखन ओ लोकनि लाथ क' लैत छथि—'पहिनें जे अबितहुँ ब्राह्मण अहीं कें चढ़बितहुँ/ सब फूल गेल बिकाय हे।' लाथ करबाक कारण जे ब्राह्मण बाबू 'छोटे मोटे' छथि। किछु ब्राह्मण कठिन चरित्रक सेहो छथि जे जखन घोड़ा पर चढ़ल जाइत रहै छथि तँ कनेको एहि बातक परबाहि नहि करै छथि जे हुनकर घोड़ाक लात तर मालिनबेटीक लगाओल फूलगाछ खुर्दन भ' रहल छैक। मुदा कतहु जँ ब्राह्मण बाबू विपत्तिकर परिस्थितिक शिकार होइत छथि तँ ताहि लेल गीत मे आह सेहो छैक—'माइ तोरा रोबौ ब्राह्मण अशोगा बिरीछ तर/ बहिन तोरा ब्राह्मण हे, रोबौ ससुरिया बहिन तोर।'

ई गीत सब एक दिस जँ लोक-समाजक परम न्यायप्रियताक उदाहरण थिक, श्रद्धेयक प्रति श्रद्धा राखब उचित थिक आदि, तँ दोसर दिस एक टा पैघ सांस्कृतिक हलचलक साक्षी सेहो थिक। ब्राह्मणक हाथ मे वास्तविक सत्ता अयलाक बाद, जकर चर्चा ऊपर गोविन्द बाबू कयलनि अछि, जमींदार सँ पैकार धरि ओ अपने होअय लगलाह। ऊपर सँ दोष ई रहल जे अधिकतर हुनक रुआब बदलाक भावना सँ दूषित बनल रहल। धन आ प्रभुता कें जे वर्ग सर्वोच्च स्थान दैत छैक तकरा लग भ्रातृत्व आ सामुदायिकताक लेल कतय स्थान बचैत छैक? ई वस्तु लोक-समाजे लग मे पाओल जा सकैत अछि। वैदिक ऋषिक एक मंत्र मे आयल अछि—'जहिया कहियो धर्मक आविष्कार भेल छल हेतैक, निश्चित रूप सँ अनन्त ब्रह्माण्डक बीच जे ई सृष्टि अछि तकर निर्माणेक लेल भेल हेतैक। केहन आश्चर्यक बात थिक जे सबहक कल्याण-कामना राखयबला एहि धर्म कें प्रजा धारण करैत अछि!!' अर्थात् राजा धारण नहि करैत अछि अथवा अल्प धारण करैत अछि, जखन कि प्रजा पूरा धारण करैत अछि—

प्रभवार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।
सर्वोदयकरो नित्यो धर्मो धारयते प्रजा:।।

दोसर दिस सँ देखू तँ वैह धर्म एहि प्रजा कें बचा क' रखने छैक। अर्थात्, राजा बचा क' नहि रखने छैक। आधुनिक कालक समकालीन कवि लोकनिक मैथिली कविता पढ़ी, जेना महाप्रकाशक, तँ ओहिठाम भारतीय राजनेता लोकनिक

कयल जाहि कुकर्म कें सब सँ भारी बताओल गेल अछि से यैह जे ओ सब प्रजाक एहि संस्कार (जे अपन धर्म पर चली)—धर्म करैत जँ हुअय हानि, तैयो ने छोड़ी धर्मक बानि—कें खराब क' देलक। मैथिली समाजक धार्मिक-नैतिक मानदण्ड जँ देखी तँ तकर एक उच्च प्रतिमान बनैत अछि। धर्मक मार्ग पर जाधरि हम छी, भरोस अछि जे ताबे धरि परमात्मा हमर सहायता करता, ताबे धरि हुनकर सहायता पेबाक हम पात्र छी। धर्मराजक एक गीत मे आयल अछि जे गंगा मे भयंकर बाढ़ि आयल छैक, भक्त नाह पर बीच गंगा मे अछि आ बिहाड़ि उठि गेलैक अछि। ई बाढ़ि आ बिहाड़ि प्रतीकात्मक थिक जे एक साधारण जनक जीवन मे दैनंदिन संघर्षक दिस संकेत करैत अछि। 'धर्मक नैया हेतै हो दीनानाथ पार उतरतै/ पापक नैया बूड़त मझधार' अपन धर्मक कौल निमाहबा पर अडिग विश्वास तँ छैके एहिठाम, पापक नैया कें बुड़बाक स्वाभाविकता पर एक टा देखार न्यायप्रियता सेहो छैक। पूरा गीत एहि तरहें अछि—

चारू दिस देखै छी दीनानाथ जल रे जलामय
कोने विधि उतरब गंगा पार।
नहि हम देखी हो दीनानाथ नाव नवेरिया
नहि देखी झिलमिल मलाह।
अगिले जे माँगी बैसल अलख निरंजन
पछिले माँगी दसो रे देबान।
तर छोड़य धरती नैया ऊपर असमनमा
बीचे नैया पबन-बसात।
धर्मक नैया हेतै हो दीनानाथ पार उतरतै
पापक नैया बूड़त मझधार।

मैथिल संस्कृतिक जेहन वास्तविक विवरण लोकगीत मे आयल अछि, से अन्यत्र दुर्लभ अछि। मिथिलाक लोक कोन तरहें जीबैत, सोचैत आ हँसैत-कनैत अछि, सब कथूक यथार्थ चित्र एत्तहि भेटत। दुख भ' सकैत अछि ई देखि क' जे मैथिल संस्कृति पर तँ विद्वान लोकनि अनेक लेख, अनेक पुस्तक लिखलनि मुदा लोकगीत मे चित्रित समाजक आधार पर मिथिलाक जे रूप-स्वरूप बनैत छैक, ताहि दिस कोनो सचढ़ लोकक ध्यान नहि गेलनि अछि। भातृत्व, सामुदायिकता, सहअस्तित्व, सहिष्णुता, सर्वधर्म-समभाव, समान भावधारा मे जिबैत सम्पूर्ण समाजक स्वरूप एहि ठाम देखल जा सकैत अछि।

गोविन्द बाबू जकरा 'सार्वजनीन' आ 'सर्ववर्गीय' कहैत छथि, से वस्तुत: भावधाराक एकात्मता थिक। ई एकात्मताक सही रूप मे ने कोनो कर्मकाण्डीय ग्रन्थ

लग मे छैक ने कोनो राजनीतिक वा सामाजिक शिष्टदर्शन लग मे। मैथिलीक मुख्यधाराक सम्पूर्ण चिन्तना कोनहु खास वर्गीयता सँ, कोनो खास आग्रह सँ भरल भेटत। भविष्य मे जँ कहियो सामाजिक (सांस्कृतिक अर्थ मे राष्ट्रीय) एकात्मताक खोज पूरा भ' सकैत अछि तँ से हमरा लोकनिक लोकगीते मे।

मिथिलाक लोक गरीबी मे जिबैत अछि। एहि गरीबीक चित्र अनेकश: आयल छैक। अनेक ठाम तँ एहि गरीबी कें गौरीक खाता मे ठेलल गेल अछि। गौरीक खाता मे एहि दुआरे जे ई रचना सब स्त्री-रचनाकारक थिक। महादेवक जे गार्हस्थ्य कर्त्तव्य-निर्वहण छनि, से अत्यन्त असंतोषजनक, पूरा ढुलमुल। यैह निर्वहण प्राय: प्रत्येक मैथिल स्त्री कें अपन-अपन पुरुष सँ भोग' पड़ैत छलैक, सब घर एक्के लेखा। एक। दोसर जे मिथक गढ़बाक शाश्वत कला मे दक्ष मैथिलमन गरीबी कें सेहो एक टा भव्यता मे परिवर्त्तित क' लेब जनैत अछि। गरीबीक जे सुख छैक, से अमीर कें कहाँ नसीब, किछु ताहि तरहक। एक टा बारहमासा मे आयल अछि—

पूस गोइठा डाहि तापब माघ खेसारिक साग यो
फागुन हुनका छीमरि माकरि चैत खेसारीक दालि यो
बैसाख टिकुला सोहि राखब जेठ खेरहिक भात यो
अखाढ़ गाड़ा गारि खायब सावन कटहर कोव यो
भादव हुनको आंठी-मांठी आसिन मरुआ के रोटि यो
कातिक सुखदुख संगहि खेपब अगहन दुनू साँझ भात यो

अंत सदा सुखात्मक हेबाक रहैत छैक। जीवन एक आशा थिक आ जीवन कें कहियो स्थगित नहि हेबाक रहैत छैक। जे काज स्वयं अपना बुते करब पार नहि लागि सकल हो तकरा ओकर संतान कें करबाक रहैत छैक। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे विवाह आ शिशु-जन्म पर मैथिली मे सब सँ बेसी गीत छैक। जीवनक सरंजामक ई उत्सव थिक। एहि सब टाक बीच मुदा गरीबीक अपन स्थायिभाव छैक।

एक टा शिवगीत मे गरीबीक वर्णन भेल अछि—

डाही ऐल, जारी ऐल, बाढ़ि ऐल भीन
खेती पथारी बाबा सेहो लेलौं छीन
भाइ जे सहोदर सेहो भै गेल भीन
घर मे ने खरची, बाहर ने भेटै रीन
सदति भुखाएल नेनाभुटका, पड़ै न दैये नीन
एकेटा बरद छल, मालिक लेलक छीन
सर कुटुम्ब सब भेलै परमीन।
बाबा, गरीबक दीन।।

एतय धरि जे लोकदेवी काली जे छथि, जिनकर गणना बाद मे प्रथमा महाविद्याक रूप मे कयल गेलनि, हुनको जन्म एहने महादरिद्र घर मे भेल छलनि। कालीक एक गहबरगीत मे अबैत अछि—

कओने घर आहे काली तोहरो जनम भेल
कओने घर भेल छठिहार हे
टुटले मड़ैया हे सेवक हमरो जनम भेल
मुनहर घर भेल छठिहार हे
कथिये पहिरि हे काली तोहरो जनम भेल
कथिये पहिरि छठिहार हे
फाटले पुरान पहिरि हमरो जनम भेल
पटम्मर पहिरि छठिहार हे।

ई जे गरीबी अछि से सर्वजनीन थिक। यैह गरीबी महादेवो कें छनि। पुरहिताइ केनिहार ब्राह्मणक गरीबी एहन छनि जे बियाह मे होमक हेतु जे घी ल' क' ओ जाइत छलाह ओकरा रस्ते मे चट क' गेला, लाबा फाँकि लेलनि, से भिपे। अच्छत-अंकुरी सब जे जहाँ रहैक तकर पोटरी बान्हि लेलनि। गरीबीक यैह अवस्था मुसलमानोक छैक। बालापीरक एक टा गीत मे सेवक अपना जिनगी कें झाँझर बला नाह कहैत अछि जकर खेबनिहार क्यो नहि अछि। एकात्मता एहि सब सँ ऊपर जा क' छैक। पुतहुक मामूलियो सन गलती पर जेना ब्राह्मणी सासु पुतहुक गंजन करैत छैक, ठीक तहिना मुसलमान सासु, एके रंग गारि, एके रंग सराप। एक टा झरनी मे मात्र छोट सन गलती पर, जे आंगन बहारैत काल एक टा सिकिया बेरबाद भेल, ताहि लेल सासु बाप ओ भाइ लगा क' गरियाबैत छैक तँ पुतहु उतारा दैत अछि जे 'मोर भैया, मोर अब्बा, अल्ला के मंगनिये रे हाय/ हाय रे हाय, तोरो धिया हैथुन पर के पुतहबे रे हाय।' एकात्मकताक भाव एहन मिझरायल छैक जे ब्राह्मण-गीत मे ब्राह्मण बाबूक माय जँ 'माता मंदोदरि' छथिन तँ झरनी गीत मे मुस्लिम जुबकक माय सेहो माता मंदोदरिये छथि। 'गलिये गलिये घूमै छै मलिनियाँ हो बचे/ सेहरा पेन्हिह' हो बचे/ हाय सेहरा पेन्है मति जइह' हो बचे/ कौन सम्हारिह' हो बचे/ मैया मंदोदरि बहिन सम्हारिहे हो बचे।' (गीतनाद पृ. 117)

ग्रियर्सनक संकलनक गीत के एक पद अछि—'बीबीक अंगना चंदनघन गछिया/ओहि ऊपर कागा मड़राइ छै रे हाय/हाय हाय, नहाय सोनाय बीबी बैठलि अंगनमा रे/ दसो अंगुरिया केसबा झारै छै रे हाय।' आंगन मे चननघन गछिया मैथिली गीत मे बहुत होइत छैक। मुदा, से जेना ब्राह्मणक आंगन मे होइत छैक तहिना मुसलमानोक आंगन मे। एक टा आर पद अछि—'वन मे रोये कोइली जंगल मे रोये

फातमा/ घर मे रोये दुलहिन अभगली रे हाय/ हाय हाय, एक रोवे आमा दोसर रोवे चपा/ तेसर रोवे दूधा छाड़ि बलकबे रे हाय।' कनियांक लेल भने दुलहिन शब्दक प्रयोग कयल गेल होअय, मुदा विपत्तिक मारकता समान अछि। बालापीरक एक गीत मे अबैत छैक जे 'कुटाओन केलहुँ हो बालापीर, पिसाउन हे केलहुँ/ सुद्दी ले भरलहुँ पानि हे/ तोरा लए आहे बाबा शनि-रवि केलहुँ/ बान्हलहुँ हम सुरुजक डोर।' मुसलमान थिक ताहि सँ की? मैथिल तँ थिक। अपन मनोकामनापूर्ति हेतु शनि-रवि के व्रत करैत अछि, छठिक डोरा बन्हैत अछि। मुदा बाला एहि सेवक के गोहारि मे देरी लगबैत छथिन, कारण एखन ओ गाय सभक गोहारि कर' चलि गेल छथि। ओतय एक दिस एसगर बाला, दोसर दिस 'कौरव बहुत'। कौरवक प्रतीक-प्रयोग एतय ध्यान देबा योग्य अछि तथा वर्तमान हालात सँ तुलनीय सेहो। गीत मे आगू अबैत छैक—'छोटको न मारै बाला बुढ़बो ने मारै/ बिछि-बिछि मारल जुआन/ गैया बहुरौने बाला घर घुरि अयलाह/ परसू आहे गाय दूबि धान।' (दलितवर्गीय व्यवहार गीत/पृ.-26) गाय जँ माता थिकी तँ केवल हिन्दूक नहि। मुसलमानोक ओ ओतबे माता छथिन। तहिना, पीरबाबा जँ अदृश्य शक्तिमान रक्षक थिकाह तँ केवल मुसलमानेक नहि, हिन्दुओक ओ ततबे रक्षक थिका। हिन्दूक गहबर मे पीरबाबाक ई गीत गाओल जाइत अछि—

आहो साहेब औलिया पीर, आहो साहेब
बाप तोहर पढ़ौ रे औलिया उर्दू रे फारसी
तोहूं पढ़लें सात खंड कुरान।
हाथ तोहर सोभौ रे औलिया सोना खटकोनमा
पयर सोभौ झुनकी खराम।
मुँह तोहर सोभौ रे औलिया पाकल बीड़ा पनमा
गला मे सोभौ गिरमल हार।

जे झुनकी खराम, पाकल बीड़ पान आ गिरमल हार ब्राह्मण बाबू कें सोभै छनि, देखबाक थिक जे ठीक सैह सब साहेब औलिया पीर कें सेहो सोभै छनि। मैथिली समाजक एकात्मकताक तल ई थिक।

दबंगक जे अत्याचार छल, सेहो लोक-समाज मे एकात्मताक वाहक बनैत छल। सहभोक्ता लोकनि बन्धु-बान्धव होइत छथि, तें। एक टा चैतावर मे अबैत छैक जे फूल लोढ़य जखन युवती राजा जीक बगिया जाइत अछि तँ राजाक सिपहिया सौंसे खोंइछाक फूल छीनि लैत अछि आ एतबे नहि 'छूबि लेल बाला जौबनमा हो रामा।' ठीक यैह घटना ओहि मुसलमान युवतीक होइत छैक जे काबा मे बसनिहार सैयद कें चढ़ेबाक लेल फूल तोड़य जखन राजाक पफुलबाड़ी जाइत अछि तँ राजाक

रखबार ओकरा रोकि लैत अछि। ओहिठाम दुनूक बीच भेल वार्त्तालाप सेहो आयल छैक—'छोड़ू छोड़ू आहो राजा, अंचरा के खुटबा/ रोबैत हेतै गोदी के बलकबे हाय/ हाय हाय, कांचे तँ उमेरिया मालिन, मीठी तोहर बोलिया/ कहमा पौलें गोदी के बलकबे हाय/ हाय हाय, गेलियै जनकपुर, पुजली सिया जानकी/ ओहे देलखिन गोदी के बलकबे हाय।' माता जानकीक आशीर्वाद पयबा लेल हिन्दू होयब कोनो अनिवार्य योग्यता नहि थिक। मुसलमानो ततबे योग्य छथि। किछु युवक अध्येता कें एहन लागि सकैत अछि जे अंततः इहो अल्पसंख्यक संस्कृति पर बहुजनक वर्चस्वक उदाहरण थिक। मुदा, एकात्मताक प्रभाव एते गँहीर छैक जे एकर विपरीतोक अनेक उदाहरण हमरा लोकनि कें भेटि सकैत अछि। एक टा झरनीगीत मे छैक जे उत्सवक समय अयलैक तँ सब क्यो वस्त्र आदि किनबाक लेल हटिया गेला। वस्त्र आदि मे स्त्रीगणक आभरण सेहो शामिल छैक। बाबा हाजीपुर गेला, भैया पटना आ स्वामी बेतिया गेला। बाबा सुगबा साड़ी अनलनि, भैया कंगन अनलनि, आ स्वामी मात्र सिन्दूरक पुड़िया ल'क' आपस भेला। गीत मे अछि—'अम्मा पेन्हतै साड़ी सुगबा भौजी पेन्हतै कंगना/ हम्में पिन्हबै सिर के सिन्दुरबे हाय।' अल्प मोलक सिन्दूरक उपहार पयबा पर की युवतीक मन मे कनेको मलिनता नहि छैक? नहि छइक, कारण औदार्य सम्पूर्ण मैथिल संस्कृतिक एक प्रधान मूल्य थिक। युवतीक जे तर्क अछि, से चाहे ओ ब्राह्मण हो कि दुसाध, हिन्दू हो कि मुसलमान, ओकर तर्क होइत छैक—'फाटि जयतै साड़ी सुगमा, टूटि जेतै कंगना/ रहि जयतै सिर के सिन्दुरबे हाय।' कि वस्तुजात सब तँ क्षणभंगुर थिक, अस्सल चीज तँ सोहाग थिक।

मैथिली लोकगीतक भूगोल

मैथिली लोकसाहित्यक जे भौगोलिक पक्ष अछि, तकर सेहो एक खास विशेषता अछि। लोकगाथाक सुमिरन मे हमरा लोकनि चारू दिशाक उल्लेख देखैत छी। दिशाक सूचक ई दिक्पाल लोकनि—पूब मे 'उगला सुरूज', पच्छिम मे 'मीरा सुल्तान', उत्तर मे 'भीमसेन', आ दक्षिण मे 'गंगा'—कें जे देखैत छी, से सैकड़ो बरस धरि नहि बदललाह।

गाथा भने मौखिके होइ, ओहि मे एक प्रबन्धात्मकता पाओल जाइछ, जकर लोकगीत मे सर्वथा अभाव रहैत छैक। तकर कारण थिक लोकगीत पर समकालक दबाव। ओकर मौखिकता अपन वर्तमान आबोहवा कें संग रखने अभिव्यक्त होइत अछि। यैह कारण थिक जे कोनो भौगोलिक आ कालगत सीमाक भीतरक लोक-समाजक दशा-दिशा कें बुझबाक लेल लोकगीत कतहु बेसी सशक्त माध्यम होइत

अछि। आ, यैह ओ कारण थिक जे भविष्यक कविता कें प्रेरित आ अनुप्राणित करबाक बेसी सामर्थ्य लोकगीते मे कोना होइत छैक।

एक टा विषहरिगीत मे मिथिलाक चौहद्दी एहि तरहें वर्णित कयल गेल छैक—'नहाय सोनाय विषहरि पूब मुँह ठाढ़/ पूबहु के चारू दिस सुरुज गोसाँइ/ नहाय सोनाय विषहरि दक्षिण मुँह ठाढ़/ दक्षिणक चारू दिस गंगा हनुमान/ नहाय सोनाय विषहरि पच्छिम मुँह ठाढ़/ पच्छिमक चारू दिस बासुकी नाग/ नहाय सोनाय विषहरि उत्तर मुँह ठाढ़/ उत्तरक चारू दिस चारियो घाम।' एक टा फगुआगीत मे अबैत अछि जे युवती अपन कान्हा कें तीन दिशा मे जयबाक लेल मना करैत छैक। पूब दिशाक पानि कुपानि छैक आ स्वास्थ्यक लेल घातक। मोन पाड़ी, एक समय पूर्णियाँ दिस जखन कोसी बहैत रहथि तँ कहल जाय, ओतहुक कौओ कें मलेरिया आ पिल्ही भेल रहैत छैक। उत्तर दिशा मे भारी जंगल अछि जाहि मे बाघ-सिंह रहैत अछि। पच्छिम दिशाक खराबी ई छैक जे ओम्हरुक नारी सियानी होइत अछि, कोनो राति रंगमहल मे संग सुता क' जिनबी भरि पानि भरबैत रहि सकैत अछि। ओ दक्षिण दिशा जाय कहैत छथि जेम्हर गंगा बहैत छथि, आ जतय सँ ठीक-ठीक फगुआक समय मे हुनकर घुरि आयब निस्तुकी भ' सकैत अछि जाहि सँ ओ दुनू संग मिलि 'मंदिलवा' मे 'होरी' खेलि सकय।

बाहर जे लोक जाय से बनिज-व्यापार लेल जाय। बनिज मे उपति छलैक। एक टा सोहरगीत मे अयलैक अछि जे युवती गर्भवती छैक, आगू तरह-तरहक बेगरता आब'बला छैक। नैहर ओ जाय नहि चाहैत अछि आ सासुरक परिवार ओकरा प्रति निष्ठुर छैक। युवती अपन पति कें कहैत अछि जे पहिने तँ बनिज करय पूब दिस जाउ, ओम्हर सोंठ-पीपर-गुड़ भेटैत छैक, से लेने आयब। तखन उत्तर दिस बनिज करय जायब, ओम्हर लोढ़ी-सिलौठी बढ़ियाँ भेटैत छैक से लेनहि आयब। पति संग दियय तँ स्त्रीक गौरव कतेक बढ़ैत छैक, ओ पति कें कहैत अछि—'अपनहि कूटब, अपनहि पीयब, अपनहि दरद निजाएब/ हे पिया, हम तँ नै ककरो बोलाएब।' (अणिमा सिंह/पृ.-163) एक टा सोहर मे अबैत छैक जे भैया एहन देस मे बनिज करय गेला जतय सोना बहुत महग रहैक आ चानी सस्त। ओ भौजी लेल कंगन ल' क' घुरला मुदा बहिन लेल किछु नहि अनलनि। युवती अपन भाउज सँ कहैत अछि जे 'बेटबा एक बियाबह कंगन हम बधैया लेब हे।'

लोकगीतक भूगोल भावधाराक तादात्म्यक संग जुड़ल अछि। तें एहि ठाम सब किछु ठीक-ठीक ओही नक्शाक संग नहि होइत अछि जेना कि ओ वास्तविक संसार मे होइत अछि। एक टा कोबरगीत मे आयल अछि जे पानक जे बिरवा अयोध्या मे उपजल अछि ओकर डारि जनकपुर धरि पसरल अछि—'अजोध्या गामे उपजल

पान के बिरवा हे/ जनकपुर पसरल डारि हे' एना हेबाक कारण थिक रामक सीताक संग जुड़ाव, जे अयोध्या संग जनकपुर कें एक्के पानक लत्ती संगें जोड़ि दैछ। एक टा कुमारगीत मे जखन पिता योग्य वरक खोज मे विप्र कें पठबैत छथि तँ गोकुला आ वृन्दावन के संग-संग मिथिला सेहो जाय कहैत छथि। एहन प्रतीत होइत अछि जे जेना 'मैथिल'क सीमा कें स्वार्थवश संकुचित करबाक कुचक्र चलैत रहल, लगभग तहिना मिथिलाक सीमा कें सेहो छोट करबाक स्वार्थ सक्रिय रहल। एहिठाम मिथिलाक अर्थ थिक किछु परगना जतय प्रभुताशाली ब्राह्मण लोकनि निवास करैत होथि। एकर मुदा असली तात्पर्य यैह थिक जे जतबा दूरक भूभागक नाम मिथिला राखल गेल छल, वास्तव मे ओ ताहि सँ बहुत बेसी दूर धरि, बेसी व्याप्ति धरि पहुँचल छल। तखन, इहो बात अवश्य अछि जे किछु इलाका सब कें ल' क' लोक-समाज मे किछु विशेष आग्रह छल। संभव जे पवित्रता-ग्रन्थि सँ बेसी ई सांस्कृतिक भिपता सँ प्रेरित हो। एक टा दोसर कुमारगीत मे अबैत अछि जे योग्य वर कें तकैत-तकैत पिता बहुत परेशान भेलाह—'एक पात्र खोजल दोसर पात्र खोजल, खोजल मगहा मुंगेर यो/ सीता के जुगुति वर कतहु ने भेटल, आब सीता रहती कुमारि यो।' मगह के संग एतय मुंगेर सेहो आयल अछि। मगहक प्रति अनपेक्षा छलैक, तकर साक्ष्य आनो-आनो गीत मे भेटैत अछि। मुदा, मुंगेर कें अवश्ये सांस्कृतिक भिपताक आधार पर दोयम बूझल जाइत होअय, से प्रतीत होइत अछि। मुदा दोसर दिस, सल्हेसक एक गहबर-गीत मे मुंगेरक प्रशस्ति स्वर्णाभूषणक नीक बजारक लेल भेल भेटैत अछि जतय चतुर सोनार बसैत अछि—'मगह मुंगेर के चतुर सोनरबा/ गढ़ि देल घुंघरु अनूप।'

हाजीपुर वैशाली मे छैक। वैशाली संग मिथिला कें अपनत्वभाव। ओतय बजारक पसार बहुत भारी। एक टा बसंतगीत मे जखन युवती अपन परदेसी बलम जीक मादे बटोही सँ पुछैत अछि तँ ओ बतबैत अछि जे 'देखलौं जे देखलौं हाजीपुर बाजार/ पातरि तिरिया संगे खेलय जुआ सारि।' युवती झट बूझि जाइत अछि जे ओ तिरिया के भ' सकैत अछि। ओ अपन दुर्भाग्य पर बहुत रंज होइत अछि—'मरिहौ बंगालिन बेटी तोरो जेठ भाइ/ बारि वयस दुख देलौं हमार।'

लोक मे शहरक स्मृति

हटिया-बजारक अनेको चित्र मैथिली लोकगीत मे जहाँ-तहाँ आयल अछि। ओहि सब मे शहरीकरण के बढ़ैत प्रभाव आ ओकर असरि कें देखल जा सकैत अछि। पहिने तँ हमरा लोकनि देखैत छी जे कलकत्ता आ पटना बजार छैक, तखन हाजीपुर आ बेतिया सेहो बजार छैक। आगू दरभंगा कें सेहो बजार होइत देखैत छी। ओतय कचहरी छैक। एक टा डहकनगीत मे आयल अछि—'दरभंगा सँ अयलै इहो दरोगा हे कचहरी छोड़ि कए/ फलना छिनरो महलिया भ' गेल ठाढ़ हे कचहरी छोड़ि कए।' आगू ई बजार बढ़ि क' मधेपुर धरि चलि अबैत अछि। सितला माय के एक टा सेवक मधु बेचि क' गुजर करैत अछि। ओ मधेपुर हटिया जाइत अछि। ओ कलवारक बसाओल नगर थिक जे बड़ कृपण। एको कलवार ओकर मधु नहि किनैत छैक—'मधु बेचय गेली सीतलि मधेपुर हटिया हे/ मधुओ न लै छै कलवार, महामाया दया करू हे।'

मैथिली लोकगीत मे जे शहरक स्मृति आयल छैक तकरा दारुण कहल जा सकैत अछि। शहर मे, आत्मीयता एकदम नहि छैक। एक गीत मे ई सेहन्ता व्यक्त भेल अछि जे अपने बालम शहर जाइत छथि तँ हमरो लेने चलथु। शहर जयबाक उद्देश्य बनिज थिक, नोकरी नहि। मैथिलीक पुरुख समाज मे भने खेती कें उत्तम आ बनिज कें मध्यम श्रेणीक पेशा मानल गेल हो, उपति मे आगू रहबाक कारण स्त्री-समाजक अनुसार उत्तम पेशा बनिजे छियैक, यद्यपि कि एकर जरब स्त्रियो के उठाब' पड़ैत छनि, पति सँ वियोग हुनके भोगय पड़ैत छनि। आइ शहरीकरणक प्रसार मे उत्तम पेशा नोकरी भ' गेल अछि। मैथिली लोकगीतक स्मृति मे एहि उत्तमताक अभाव अछि। तें, भने लोकगीत आजुक तिथि मे गाओल जाइत हो, ओकर स्मृति मे एक टा अजमाओल जीवन-पद्धति पाओल जाइत छैक जे अनेक युगक अनुभव सँ समृद्ध भेल रहैत अछि। तें एहि हिसाब सँ शहरीकरणक पद्धति कें अपनायब स्वयं मे लोकगीतक संसार सँ पलायन करब सेहो थिक। आजुक पीढ़ी लग ई चुनौती छैक जे ओ मैथिल तँ जरूर बनल रहय चाहैत अछि मुदा शहरीकरणक सुविधा सेहो चाहैत अछि। ओकरा नहि बूझल छैक जे वास्तव मे मैथिल जीवनपद्धति ककरा कहैत छैक, ओ केहन होइत छैक। पंडितक लिखल पुस्तक जखन कखनहु मैथिलत्वक ज्ञान देत ओ अधूरे ज्ञान देत, कारण मैथिल संस्कृतिक असल स्वरूप ओतय छैक जकर आचरण आ दर्शनक आधार पुस्तकीय ज्ञान नहि छिऐक, लोक-स्मृति छिऐक।

शहरक कतेक खराब अनुभव मिथिलाक लग छैक, तकर किछु पता एहि झूमरगीत सँ लागि सकैत अछि। झूमरगीत सब मे किछु एहि किसिमक गीत होइत छैक जाहि मे 'हे की कहियौ प्रीतम' अथवा 'हे की कहियौ बहिना' पदक पुनरावृत्ति प्रत्येक चरण मे आयल रहैत छैक। 'प्रीतम' पतिक लेल संबोधन नहि थिक ने 'बहिना' बहिनक लेल। ई दुनू दोस्त लेल प्रयुक्त अछि। ई बेटी लोकनिक बीच आपस के दोसदारी छल, जकर स्मृति लोकगीत मे अनेको इाम खचित छैक। आश्चर्य जे पुरुषक दोसदारीक कतहु कोनो चित्र लोकगीत मे नहि भेटैत अछि। यैह सृजेताक शक्ति थिक। स्त्रीगण जें कि लोकगीतक सृजेता छली, हुनकर अयलनि। जेना 'बहिना'

लगाओल जाइत छलैक, तहिना 'प्रीतम'। बढ़ैत शिक्षाक संग-संग एहि संबंधक किछु नव-नव नाम सब सेहो अबैत गेल। 'अंग्रेजीफूल' एहने एक टा संबंध छल। पुरुषक दोसदारीक शब्द 'यार', 'भजार' आदि कविक लीखल गीत, जेना रवीन्द्रनाथ ठाकुरक, मे तँ जरूर आबि सकैत अछि मुदा ओ लोकगीत नहि कहल जायत।

एहि गीत मे आयल छैक—'संकट कुइयाँ विदेस के रस्ता/ लाख आबै लाख जाय हे, की कहियौ प्रीतम!/ एक नहि आबै ससुर जी के बेटबा/ जनि बिनु हिया तरसाय हे, की कहियौ प्रीतम!' एहि धनी के बालम शहर मे नौकरी खटैत अछि। शहर विदेस थिक आ विदेसक रस्ता 'संकट के कुइयाँ' थिक। साहित्यिक लोकनि एहि ठाम उत्प्रेक्षाक सधल मौलिकता कें देखि सकैत छथि। गीतक अंत मे अबैत छैक—'जाहि साहेब केर पियाजी नोकरिया/ सेहो साहेब मरि जाय हे, की कहियौ प्रीतम!/ जाहि शहर मे पियाजी नोकरिया/ सेहो शहर जरि जाय हे, की कहियौ प्रीतम!'

एक टा झूमरगीत मे होइ छै जे पिया कलकत्ता चलि जाइ छै आ एक टा सुगना खेलौनमा देने जाइत छैक। ओ वास्तविक सुग्गा थिक। धनीक एक मोन तँ होइ छैक जे सुगना कें पटकि क' मारि दी मुदा नहि। ओ ओकर देखभाल करैत अछि। आखिर वैह सुग्गा एक दिन उड़ि क' कलकत्ता जाइत छैक आ सब समाचार सुनबैत छैक—'माय जे रोबौ राजा भोर भिनसरबा/ बहिन रोबौ ना/ राजा लाली रे पलंगिया पर/ तिरिया रोबौ ना।'

अल्पवयस मे कन्याक विवाह सेहो पतिक परदेस-गमनक कारण बनैत छल। ओहि मे सँ कतेको लोक एहन होअय जे ओम्हरहि नेह जोड़ि लैत छल। एहना मे युवती पर जे बितैत छल तकर वर्णन अनेको गीत मे आयल अछि—'बारह बरस सुगा सिम्मर पोसल फूल देखि धैलक आस/ मारल लोल निकलि गेल रुइया/ सुगना चलल पछिताए।' 'हे की कहियौ बहिना' के टेक लैत एक टा झूमरगीत मे ई पाँती आयल अछि—

'पहु परदेस गेल पोखरी खुनाय गेल
रोपि गेल अमुआ अनार हे...
फरिए फुलाए नेबो आध रस चुबि गेल
कते दिन राखब जोगाय हे...
दिन नहि चैन रहए, राति नहि नीन्द होअए
नित उठि झहरय नोर हे...
अप पानी पैंच लेल, सिन्दूर सपन भेल
पिया भेल डुमरी के फूल हे...'

डुमरी अथवा डुम्मरि के फूल होयब मैथिली लोकगीत मे बेर-बेर अबैत अछि,

जकर अर्थ थिक दृश्यमान नहि होयब। डुम्मरि मने उदुम्बरि, गुल्लरि कें कहैत छैक, जकर फूल होइतो हो तँ देखाब नहि दैत अछि, सीधा फल देखार पड़ैत अछि। अधिकतर लोकगीत मे डुम्मरिक फूल अबैत अछि तँ शहरक स्मृति कें संग लेने अबैत अछि। (दुखक बात जे मैथिलीक शब्दकोश सब अध्येताक मदति करबाक बदला ओकरा आरो ओझरा दैत छैक। उदाहरणक लेल 'कल्याणी कोश' मे पं. गोविन्द झा डुमरि अथवा डुम्मरिक अर्थ दैत छथि—गम्हारि। एकर वानस्पतिक नाम दैत छथि—Ficus glamerata. मुश्किल ई अछि जे गम्हारि मे फूल होइत छैक आ से नीकेंनां दृश्यमान सेहो होइछ। एकर वानस्पतिक नाम Gmelina arborea छैक। पं. मतिनाथ मिश्र मतंगक मैथिली शब्दकल्पद्रुम मे डुम्मरिक स्पष्ट अर्थ देल गेल अछि— गुल्लरि। एकर संस्कृत नाम उदुम्बरक उल्लेख पं. गोविन्द झा कयलनि अछि, जकर तद्भव रूप डुम्मर थिक। मुदा उदुम्बर गाछ कोन भेल, ताहि मे समस्त वनस्पतिशास्त्री एकमत छथि जे ओ गूलर वा गुल्लरि भेल। जाहि अर्थ लेल डुमरिक फूल मोहाबरा छैक, तकरो संगति गुल्लरिये संग बैसैत छैक।)

एक टा कोहबरगीत मे अबैत अछि—'लाले रे कोहबर घर के रंगो ने मलिन भेल, प्रभु जी चलल परदेस यो।' परदेस गेने बिना बुझाइत अछि, मिथिलाक कहियो निस्तार नहि रहलैक अछि। दुलहिन कहैत अछि—'अपना जे जाइ छी प्रभु देस रे बिदेसबा/ हमरा किनका पर छोड़ने जाय यो।' पति स्त्रीक हृदय-तल पर होइत भावक उमड़-घुमड़ के कोनो परबाह नहि करैत अछि। ओ यथार्थवादी बात बजैत अछि—'नहिरा मे छौके सोहबी माइ-बाप सहोदर भाइ/ ससुरा मे राजा छथि देओर हे।' मुदा स्त्रीक संतुष्टि एहि सँ नहि छैक। ओ प्रश्न करैत अछि जे हिनका सब बुतें की ओहि स्तरक कर्त्तव्य-निर्वाह संभव छैक? ओ जेना अपन अंतिम निर्णय सुनबैत अछि—'तोंही मोरा ओरहन तोंही मेरा पहिरन/ तोंही मोरा सोलहो सिंगार यो।' मैथिल स्त्रीक समझ कें एतय देखल जा सकैत अछि जकरा लेल पतिक परदेस जेबाक अर्थ स्त्रीक सिंगार के उजड़ि जायब थिक।

मुदा लोकगीतक स्त्री एक बेर जखन स्वयं शहर जाइत अछि तँ ओतुक्का जे ओकर अनुभव रहलैक से कदाचित लोकस्मृति मे शहरक सब सँ खराब छवि थिक। एक दिन ओ अपन मौज मे सब आभूषण पहिरि-ओढ़ि बजार बहरायल। गीतक आरंभिक पाँती अछि—'एक ओर बिकै रामा दही चूड़ा चिनियाँ, कि एक ओर ना/ ऊ जे सोना के सिकरिया कि एक ओर ना/ अपन महलिया सँ निकलली सुन्दरिया कि करू सुन्दरिया ना/ ऊ जे सिकरी के मोलवा कि करू सुन्दरि ना।' ओ एक चतुर सोनार थिक। सुन्दरी कहैत छैक जे ओकरा अपन सिकरीक मोल नहि करेबाक छैक। जँ करेबाके रहतै तँ ओकर ससुर एता। सोनरा कहैत छैक जे तोहर ससुर राजाक

सिपाही छौ, ओ मोल करब की जानत! तँ भैसुर एता। ओ तँ जुआ के खेलाड़ी छौ, ओ की मोल करत! तँ दीयर एता। ओ तँ खाली गुलेती खेलायब जनैत छौ, ओ की मोल करत! तँ बालम जी स्वयं एता। एह, ओ तँ भैंसक चरबाह थिक, ओ की मोल करय जानत! स्त्रीक लग गहनो बहुत छैक। छाती परहक सिकरी सँ बात शुरू होइत छैक आ बाजूबंद, कंगना होइत पयरक कारा धरि पर सोनरा उतरि अबैत छैक, मुदा सुन्दरी एक नहि सुनैत अछि। ओ बजार सँ भागि पराइत अछि। मैथिली लोकगीतक लग ई शहरक सब सँ खराब स्मृति छैक। शहर एक शिकारी थिक। गामक लोक आ ओकर संस्कृति ओकर शिकार छिऐक।

एहि तरहें हमरा लोकनि देखी तँ लोकगीत सँ अनेको उपयोगी तत्त्व बहार भ' सकैत अछि जे मैथिली संस्कृतिक यथातथ्य निदर्शन क' सकैत अछि। मिथिलाक मान्यता–अमान्यता, आग्रह–दुराग्रहक सेहो वास्तविक चित्र एतय भेटि सकैत अछि। एहि अध्ययनक आयाम बहुत पैघ छैक आ मानविकी सँ जुड़ल हरेक शास्त्र–उपशास्त्र कें बहुतो वस्तु एतय सटीक भेटि सकैत अछि। ऐतिहासिक घटना, तकर समाज पर पड़ल प्रभाव, तकर समाजशास्त्रीय पक्ष, ओहि महँक आर्थिकी, तकर सांस्कृतिक प्रतिफलन, परिवार आ समाज पर पड़ल तकर प्रभाव आदि बहुतो पक्ष अछि जाहि पर अध्ययनक असीम संभावना अछि। पछिला हजार बरख मे मिथिला कोना–कोना बदलल आ कोन बदलाव समाज मे कोन तरहक प्रतिक्रिया पैदा केलक, तकरा संग सामंजस्य कोना बैसाओल गेल, आदि–आदि।

लोकगीतक आर्थिकी

मैथिल मानसक मनसूबा बड़ पैघ, ओहि ठाम कृपणताक लेल कोनो जगह नहि। देवी–देवता कें जे भोग लगाओल जाइत अछि वा बालम अथवा भैयाक आगमन पर जे हुनका भोजन कराओल जाइत छनि से सब टा बरतन–बासन सोने–चानीक रहैत छैक। भगवतीक जखन सिंगार होइत छनि तँ हीरा–मोती सँ हुनकर सजावटक ख्वाब रहैत छैक। एते धरि जे पियाक अबैयाक सूचना देनिहार जँ क्यो काग कुचरैत अछि तँ तकरो संग सोनाक चोंच मढ़ा देबाक करार कयल जाइछ। विद्यापतिक गीत सब मे ई बात सब खूब आयल अछि। कहबाक चाही जे ओ कालजयी एही दुआरे भ' सकलाह जे आत्यन्तिक रूप सँ लोकबद्धे टा नहि लोकविद्ध सेहो रहथि। मुदा, लोकगीत मे हमरा लोकनि देखैत छी जे बीबी जखन नहा सोना क' चानन घन गछिया तर मे बैसलीह आ ओतय एक कागा कें मरड़ाइत देखलनि तँ ओहो ओकरा सँ वैह करार करैत छथि जे कर्बला युद्धक मैदान के शुभ–शुभ खबरि जँ ओ सुनाबय—'देबौ रे कगबा कान दुनू सोनमा रे हाय/ कहू काग रण के खबरिया रे हाय।'

लोकगीत मे पाओल जाइबला आर्थिक भूगोलक अपन अलग महत्त्व छैक। किछु बात मुदा शाश्वत जकाँ सर्वजनीन छल। पिताक संपति पर पुत्रीक अधिकार नहि छल। एक टा सामागीत मे अबैत छैक जे भैया पान खा क' जे पिरकी नेरौलनि,—लोकगीत मे पिरकी फेकल नहि जाइछ, नेराओल जाइत अछि,—ताहि सँ गंगा–जमुना मे बाढ़ि आबि गेलैक। नदीक ओहि पार भैया, एहि पार बहिन। भैया बहिन कें बिसरि गेला। बहुत बरस बाद जखन ओ एक बेर अयलाह, बहिन बहुत कनलथि। भैया कहैत छथिन जे 'जुनि कानू जुनि खीजू हे बहिनो/ बाबा के संपतिया देबै बाँटि।' एहि पर बहिनक जे उतारा अछि से 'लोक'क अनुसार न्यायिक रूप सँ सही (लीगली करेक्ट) अछि जे 'बाबा के संपतिया हो भैया/ भतिजबा के आस/ हम दूरदेसिन हो भैया/ मोटरिया केर हे आस/ हम परदेसिन हो भैया/ सिन्दुरबा के हे आस।' स्त्री–चिन्तनाक एक स्पष्ट पक्ष एहिठाम देखल जा सकैत अछि जे नितान्त भावुक क्षण मे सेहो व्यावहारिक बोध कें नहि छोड़ैत अछि। भाइ सँ जँ जखन–तखन उपहार भेटि जयतैक, सैह बहुत। ओकर असली आस तँ अपन स्वामी पर अवलंबित छैक। आजुक कानूनक हिसाबें भने ई नियमविरुद्ध होइक मुदा 'लोक'क तँ यैह कानून छल, जकरा लेल बहिन राजी अछि।

एक टा सोहर–खेलौनागीत मे मुदा एहि सँ भिप स्थितिक वर्णन भेल अछि। बहिन कें बेटा भेल छैक। समाद पाबि जखन भाइ अबैत अछि तँ सुन्दर–सुशोभन भागिन कें देखि क' ओ बड़ प्रसप होइत अछि। बहिन कें कहैत अछि जे 'माँगू हे बहिनो कौने फल माँगब/ आजु के माँगल सब पयब गे दैया।' पंजीप्रथाक प्रतिफलन एहि गीत मे देखल जा सकैत अछि। जखन धनिक, अतिधनिक ब्राह्मणे जातीय श्रेणी हासिल करबाक ललक मे अपना घरक बेटी कें उच्च श्रेणीक ब्राह्मणकुल मे ब्याहैत छलाह, भने ओ दरिद्र–महादरिद्र होथि। बहिन खगल छथि आ भाइ देबा लेल बचनबद्ध, तें बहिन अपन भाइ सँ बहुतो वस्तु माँगि लैत अछि। एहि सूची कें देखने सँ हमरा लोकनि मध्यकालीन मिथिलाक पूरा आर्थिक ताना–बाना कें देखि सकैत छी। बहिन मंगैत अछि—'अगिला हर के हरवाहा माँगब/ पछिला हर के बरदबा हे भइया/ घर नीपन के चेरिया हम माँगब/ आओरो मे माँगब खबसबा हे भइया/ दूध पियै के गैया माँगब/ सोना के माँगब कटोरबा हे भइया/ पिया चढ़न के घोड़ा माँगब/ आओरो सहिसबा हे भइया।' अगिला हर के हरबाह आ पछिला हर के बरद मंगबाक पाछू जे चतुराइ छै से ओहि धनिक परिवार मे पोसायल बेटीक बुद्धिक अनुरूपे छैक। सैह बात चेरी, खबास आ सहीस कें अलग–अलग मंगबाक पाछू सेहो छैक। एहि सँ बूझल जा सकैत अछि जे मध्यकाल मे एक संपप गृहस्थक घर मे की सब संसाधन चाहैत छलैक।

गामक आसपास हाट लगैत छल जाहि ठाम सँ उपयोगी वस्तु कीनि अनबाक प्रथा छल। ई दृश्य हेबनि धरि हमरा लोकनि देखैत रहल छी—'हाट बजार सँ चाउर मंगायब तमोलिन घर गुआ पान।' तमोलिन गाम मे रहैत छली। मालिन फूलक कारबार करैत अछि—'पहिने जे अबितौं ब्राह्मण, अहीं कें चढ़बितौं/ सब फूल गेल बिकाय हे।' हलवाइ के मिठाइक व्यवसाय छलै। एहि मे सँ अनेक तँ यजमानी प्रथाक भीतर सामंजित छल। सोनारक दोकान सेहो गाम मे होइत छलैक। गीत सब मे सोनार कें घरक पछुआरक बसिन्दा कहल गेलैक अछि—'घर पछुअरबा मे सोनरा, तोंही मोरा हितबसु रे/ सोनरा रे गढ़ि देहो सोना के पिजड़ा कि भमरा बझायब रे।' गामक बाशिंदा कोन वर्गक की पेशा छलैक तकर वर्णन एक टा डहकनगीत मे आयल अछि—

गोरे रे बदन पर छिनरो कें सोभै ओ जे गोदना
दौगल गेली कुम्हरा ओइठाँ कुम्हरा कैलनि ओ सैंयां
ढकना देलकनि सरबा देलकनि फुच्ची देलकनि छोछना।
दौगल गेली कमरा ओइठाँ कमरा कैलनि ओ सैंयां
हाँसू देलकनि खुरपी देलकनि पच्चर देलकनि ठोकना।
दौगल गेली मलहा ओइठाँ मलहा कैलनि ओ सैंयां
खेसरा देलकनि पोठी देलकनि सिंघी देलकनि बिन्हना।

परिवार मे जखन कोनो विशेष आयोजन होइत छलैक तँ ताहि लेल अलग-अलग ठाम जा क' प्रशस्त जगह सँ ठीक-ठीक वस्तु सब कीनि क' आनल जाइत छल। कैक गीत मे एहन स्थान सभक उल्लेख भेल छैक जतय ओहि सब वस्तुक पैघ बजार छल, ओ जगह ओहि वस्तु लेल नामी छल। एक टा कुमारगीत मे आयल अछि—'पटना जाय बेसाहब करिघन/ पहिरायब धनि हाथे/ काशी सँ पिया कंगना आनल/ दच्छिन चीर मद्रासे।' एक टा झरनीगीत मे आयल छैक जे लहंगा-चुनरी-साड़ीक लेल हाजीपुर आ स्वर्णाभूषणक लेल पटना प्रशस्त बजार मानल जाइत छल। मुदा एहनो प्रतीत होइत अछि जे जे व्यक्ति जाहि शहर दिस बनिज लेल निकलल रहल होइत छलाह, से एहन सर-सामान ओही चौहद्दीक प्रशस्त बजार सँ किनने अबैत छलाह। एक टा सोहरगीत मे पुत्रजन्मक खबरि सुनला बादक वर्णन भेल अछि—

एतबा वचन राजा सुनलनि कि औरो राजा सुनलनि रे
ललना रे, चलि भेला मगह मुंगेर चुनरिया बेसाहन रे
कांख दाबि लेल चुनरिया बगल झुनझुनमा रे
ललना रे, खोलू धनी सोवर्ण केबाड़ कि दुहु मिलि देखब रे।

लोकगीतक संसार मे पुत्रजन्मक अवसर एक नितान्त उत्सवमयताक अवसर

होइत अछि। किन्तु एक बात कें ल' क' ननदि-भाउजि मे अनबन भेनाइ जेना स्वाभाविके रहैछ। एहि खुशीक अवसर पर ननदि कंगन कि बेसरि मंगैत अछि आ से भाउजि नहि देब' चाहैत अछि। अधिकतर ई झगड़ा भैयाक उदारताक कमी-बेसी-गुणें फड़ियाइत अछि। एक बेर एहन भेलैक जे भैया कंगन बहिन कें द' देबाक फैसला क' देलखिन जे हम अहाँ कें दोसर आनि देब। मुदा भाउजिक तेख बेसी तीव्र छलैक, ओ कहलनि—'होरिल पुत्र हम तेजब, बनखंड सेबब रे/ पहिले बनिज के कंगनमा, कंगनमा नहि देबनि रे।' पतिक पहिल बनिजक कमाइ सँ भेटल उपहार स्त्रीक लेल अपरिहार्य महत्त्व रखैत छल, से सूचित होइत अछि। कतहु-कतहु एहनो वर्णन भेल अछि जाहि सँ भाउजक कृपणता प्रकट होइत छैक—'इहो हम जनितहुँ ननदो दाइ पटोर लेती/ नहिरा जाय बियबितहुँ पटोर बचि जइतै रे।' कृपण लोक कें मुदा सामुदायिक असहयोगक सामना करय पड़ैत छल। एक धनी कें प्रसवक दर्द उठलनि। एहन परिस्थिति भेला पर कैक जनीक सहयोगक जरूरति रहैत छैक। दीयर काकी कें बजब' गेल तँ ओ नहि आयलि जे 'दुरागमन राति के झगड़ा याइदे छै रे ललना।' पड़ोसी बहिन कें बजब' गेल तँ ओकरो 'पहिल बेर के कंगना' मोने रहैक। पड़ोसी भौजी नहि आयलि जे 'कोहबर के ऐबक फर' ओकरो मोन रहैक। दगरिन नहि आयलि जे ओहो 'पहिल बेरक बेसरि' के फज्झति नहि बिसरि सकल रहय।

कुमारगीत मे दहेजक प्रसंग एक विकराल आर्थिक समस्याक रूप मे जहाँ-तहाँ प्रकट भेल अछि। 'लछमी बेटी कुमारि हे बाबा, नौ लाख माँगे दहेज/ नौ लाख एसरि नौ लाख बेसरि, नौ लाख माँगे धेनु गाय।' एहना मे 'खने बाबा सूतल खने बाबा जागल खने रे दहेजवा के सोच।' बेटीक जखन जन्म होइत अछि, बाबाक 'चिन्ता निन्द हरित भेल बेटी, थिर नहि रहल गेयान हे।' स्थिति ई अछि जे 'जकर धीया हे सियान/ शुभ सुख नीन्द जकर लाज ने गेयान।' जकर बेटी सियान भ' गेल रहैत छैक तकरा सुख आ कि नीन्द कहाँ? निर्लज्ज मूर्खे एहि स्थिति मे चैनक नीन्द सूति सकैत अछि। एहना मे प्रेमविवाह एक टा समाधान बनि क' अबैत छैक। प्रेमी कें मैथिली गीत मे 'तपसी' कहल गेलैक अछि जकर साम्य महादेवक संग भेलाक कारण ओ स्वीकार्य बनि पबैत अछि। मुदा, विरोध तकर बादो अछि। ई विरोध अज्ञात भविष्य सँ जनमल अमंगलक आशंका थिक। जे पंथ नहि देखल रहैत छैक ताहि पर चलैत लोक कें भय होइत छैक, किछु तेहने सन। माय कहैत छैक जे ई जँ हम जनैत रहितहुँ तँ कोखि मे जखन छलीह तखनहि पचास टा मरीच खा लीतहुँ जकर दाप सँ तों गर्भहि मे मरि जइतह। मुदा, प्रेम केनिहारि कन्याक निश्चय ओकरा मे आरो बेसी निर्भयता भरि दैत छैक। ओ माय कें कहैत अछि जे एखने की भेल अछि,

चलू हम कुइयाँ लग ठाढ़ होइ छी, अहाँ ठेलि दिय', अहाँक जीवक जंजाल छुटि जायत। बेटी जितैत अछि। माय कहैत छैक—'बहियाँ पकड़ैते हे बेटी बड़ी माया लागल/ कुइयाँ ठेलैत आँखि लोर हे।' अन्ततः स्थिति जखन अनुकूल भ' जाइत अछि, पिता सेहो उत्साह मे अबैत छथि—'गाड़ल धन बेटी हम नहि राखब/ आब धिया होयत बियाह हे।' मुदा नहि, बेटी कें से नहि पसिप। ओ पिताक संपति, दहेज-तुल्य नृशंसताक संग, नहि चाहैत अछि जे खर्च हो, यद्यपि कि पिता धनिक छथिन। ओ सुझाव दैत अछि—'बान्ह बनाबिह' बाबा, पोखरि खुनाबिहह /घन कै लगाबिह' आम छाँह।' ई सब जनकल्याणक काज थिक, जे पहिनेक उदार धनिक सब करै छला, आब सरकार करैत अछि अथवा नहि करैत अछि। मुदा बेटी कें ओ धन नहि चाहिऐक।

मैथिली लोकगीतक संसार मैथिल स्त्री लोकनिक सृजन के जीता-जागता संसार थिक। पुरुष वर्ग मे दुइये गोटे भेला जे स्त्रीक मनोलोकक एहि संसार मे प्रवेश क' सकलाह। पहिल विद्यापति छलाह, दोसर आधुनिक काल मे भिखारी ठाकुर। भिखारी ठाकुर भोजपुरिया रहथि। छनि-टपकि क' हुनकर किछु प्रभाव मैथिली गीत पर पड़ल हो, से कदाचित भ' सकैत अछि। मुदा, एम्हर मैथिली लोकगीतक जँ अध्ययन करी तँ कैक कविक नाम भणिता मे अबैत छैक। ओ प्रायः समस्त गीत सब चर्यापरक गीत थिक। विद्यापतिक भणिता पर चलाओल गीतक संख्या सर्वाधिक अछि। एहनो गीत सब अछि जकर भणिता मे सूरदास आ तुलसीदासक नाम भेटैत अछि। से छविक मोताबिक छैक। सूरक एक छवि छनि। तुलसीक एक भिप छवि छनि। एहि सभक अतिरिक्त एहन दर्जनो कवि छथि जे भणिता मे मौजूद छथि मुदा 'प्राचीन गीत'(संपादक रमानाथ झा)क सूची मे हुनकर नाम वा परिचय कतहु नहि भेटैत अछि। एहन किछु कवि छथि—लखत्र पांडे, दुर्गादत्त, दुर्गा प्रसाद, गौरी कवि, जदुनन्दन, कन्तकवि, सुखन्त लाल, सीताराम प्यारे, रामेश्वर, बैकुण्ठ, नसीब, हरिकिंकर, मूरत सिंह, भागीरथ तनय, देवनन्दन, महानंद, दुखमोचन, गोपीनाथ, मोतीचन्द, सुजनदास आदि। ई लोकनि के छला से लोकक स्मृति मे नहि छैक। ई लोकनि अपना कविकर्म कें लोक मे विसर्जित क' देलनि आ अपने अलोपित भ' गेलाह। के जानय, आइ जतय 'भनहि विद्यापति' वा 'सूरदास प्रभु गाओल' वा 'तुलसिदास कह' देखैत छी, ओहू ठाम कहियो तत्कालीन कोनो कविक नाम हेतनि। के जानय जे अभिलेखीकरण करैत काल जतय 'कहथि बैकुण्ठ' छल, लोक-समाज ओकरा चिक्कन बनेबाक लेल 'भनहि विद्यापति' मे बदलि देने होअय। मुदा, ई निमज्जीकरण सेहो तँ लोक रचनाशीलताक एक स्वाभाविक लक्षण थिक।

सन्दर्भ

1. डॉ. अणिमा सिंह/ भूमिका/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 9
2. उपर्युक्त/ पृ. 11
3. चतुरानन मिश्र/ मैथिल संस्कृति के नवोत्थान का सवाल
4. डॉ. अणिमा सिंह/ भूमिका/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 9
5. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्यः स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 51
6. डॉ. अणिमा सिंह/ भूमिका/ मैथिली लोकगीत/ पृ. 8
7. उपर्युक्त/ पृ. 9
8. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मिथिलाक लोकसाहित्यक भूमिका/ पृ. 83
9. पं. गोविन्द झा/ मिथिलाक सामाजिक इतिहास/ पृ. 49
10. डॉ. रामदेव झा/ उपर्युक्त/ पृ. 48
11. पं. गोविन्द झा/ मिथिलाक सामाजिक इतिहास/ पृ. 51

वचनकविता : भौतिक संसारक मैथिली काव्यीकरण

गीत तथा गाथाक अतिरिक्त प्राचीन मैथिली साहित्य मे तीन गोट आओरो कविता-रूप पाओल जाइत अछि जकरा क्रमश: वचनकविता, उक्तिकविता तथा कथागीत कहल जा सकैत अछि। वचनकविताक अधिकांश हमरा लोकनि डाकवचनक रूप मे पबैत छी। समयक संग आनो आन भणिता बला वचन सब प्रचलन मे अबैत गेल मुदा अद्यापि ई शिष्टसाहित्य सँ बाहर अछि। रच्छ अछि। मिथिलाक ई आदिम कविता-रूप थिक। डॉ. सुभद्र झाक मतानुसार प्राचीनता मे ई सिद्धसाहित्यक उपरांत द्वितीय स्थानक अधिकारी अछि, जखन कि प्रो. जयदेव मिश्र हुनक खंडन करैत ई सिद्ध कयलनि जे प्राचीन मैथिलीक प्रथम कृति चर्यागीत नहि अपितु डाकवचन थिक। जयदेव मिश्रक कथन मे सत्यक पूरा गुंजाइश छनि, कारण अनेक अध्येता एहि बातक दिस संकेत कयने छथि जे चर्यागीतक रचनाशैली कें देखैत अवश्यंभावी लगैत अछि जे ओहि सँ पहिनहु कविताक कोनो-ने-कोनो रूप मिथिला-समाज मे प्रचलन मे बनल रहल छल होयत। एक। दोसर जे वचनकविताक जे प्रकृति, विषय-विस्तार आ प्रयोजन अछि तकरा देखैत एकर प्रचलनक समय अनिवार्यत: आदिम युग हेबाक अपेक्षा रखैत छैक। एहि पर हमरा लोकनि आगू सेहो विचार करब।

उक्तिकविता एक भिप कविता-रूप थिक जकर प्रयोजनो भिप रहलैक अछि। एकरा लोकोक्ति, कहबी, फकड़ा आदि कहल जाइत रहल अछि। ई अत्यन्त लघु मुदा व्यंजनात्मकता मे अत्यंत विशेष होइत अछि। सामान्यत: लोक-व्यवहारक विडंबनात्मक यथार्थ कें, कखनहु प्रशंसात्मक कृत्य कें सेहो, ध्वनित करबाक लेल एकर प्रयोग होइछ। कतोक बेर उक्ति-विशेषक संग कोनो प्राचीन प्रसंग सेहो जुड़ल रहैत छैक। जापानी कविता मे जेना हाइकू प्रयोग भेल, ओहो प्राय: जापानक एक जातीय कविता-रूप छल होयत। मुदा, कतोक आधुनिको मैथिली कवि-लोकनिक आत्महीनताक एक नीक उदाहरण एकरा कहल जा सकैत छैक जे मैथिली मे सेहो जापानेक जातीयकविता लिखबाक प्रयास कयलनि, मिथिलाक अपन जातीयकविता दिस कदाचित हुनकर ध्यानो नहि गेलनि। लाक्षणिक प्रयोग सब सँ विदग्ध, अत्यंत मारुख आ बेधक तथ्य सब सँ भरल ई लघु कविता-रूप ततेक दीप्त रहल जे अपना समय मे जे क्यो पैघ कवि कोनो ज्वलन्त कविता लिखलनि, पंडित लोकनि यैह कहैत हुनका पर भड़कलाह जे फकड़ा लिखैत छथि। एहू पर हमरा लोकनि आगू गप करब।

कथागीत एहि दुनू कविता-रूप सँ भिप थिक आ एकर उद्देश्य सेहो अलग छैक। मनोरंजनक साधनक रूप मे अधिकतर एहि कविता-रूपक प्रयोग भेल अछि। लोकसाहित्य मे एकरा नेनागीत, शिशुगीत, नाचगीत आदिक रूप मे चिह्नित कयल जाइछ। एहि मे कयल गेल शब्द-प्रयोग पूर्णत: लोकाग्रही, स्वभाव मे सरल, छोटो-छीन कविता-रूप मे एक टा सुस्पष्ट कथा आ तकर क्रमिक विकास आ अंत मे जा क' कौतूहल वा प्रश्नात्मकता संग प्रसंगक समाप्ति—यैह एकर बनावट थिक। अपन सरलता आ विम्बात्मकता मे ई ततेक विशेष होइत अछि जे बरबस विद्वानो लोकक ध्यान आकृष्ट करबा मे समर्थ रहैत अछि। अन्य अनेक काव्य-रूप जे आगूक समय मे उत्तरोत्तर प्रचलन मे आयल—मंत्रकविता, कुकाव्य आदि—ओहि सब मे एहि कविताक रूप विस्तार लेलक अछि। एहू पर हमरा लोकनि आगू विचार करब।

डाकवचन

डाकवचनक नाम सँ सैकड़ो पद मिथिलाक जन-समुदाय मे प्राचीन कालहि सँ पसरल रहल अछि। अपन पुस्तक 'फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज' मे डॉ. सुभद्र झा लिखने छथि: "Many of his sayings on household affairs and cultivation are found on the lips of all the speakers of Maithili."[1] प्राय: एकर प्रसार आ व्याप्तिये कें देखैत डॉ. रामदेव झा एकरा मैथिली लोकसाहित्यक एक टा भिप आ विशिष्ट विधा माननि आ एकरा लोकवचन कहब पसिप कयलनि। ओ लिखने छथि: 'ई शिष्टसाहित्यक नीति, सूक्ति, सुभाषित इत्यादिक प्रतिस्थानीय होइत अछि। वास्तव मे एकरा लोकसूक्ति कहल जा सकैत अछि। लोकवचन मे नीति-अनुभूति, उपदेश-निर्देश, विधि-निषेध, वर्जना-तर्जना, कर्त्तव्याकर्त्तव्यक भाव व्यंजित रहैछ। एहि मे लक्ष्यार्थ आ व्यंग्यार्थक अपेक्षा वाच्यार्थेक मुख्यता रहैत अछि जे लोकजीवन मे सहज रूप मे माननीय, अनुकरणीय ओ आचरणीय होइत अछि।'[2] मोहन भारद्वाज अत्यन्त अध्यवसायपूर्वक डाकवचनक अध्ययन कयलनि अछि आ ओ एकरा मात्र सूक्ति आ सुभाषित नहि, एक टा सम्पूर्ण जीवनदृष्टि माननि अछि जे मिथिलाक बहुजन समाजक प्रतिनिधित्व करैत अछि। अकारण नहि जे डाकवचनक अध्ययनपरक अपन पुस्तकक नाम ओ 'डाक-दृष्टि' रखलनि। समाज मे डाकवचनक प्रचलन कोन तरहें रहल, ओ लिखने छथि: 'लोक कें दैनन्दिन कार्यक लेल पोथी-पतराक अपेक्षा

नहि रहलैक, डाकवचन मार्गदर्शक बनि गेलैक। एहि लोकसाहित्य मे ब्राह्मण-परम्पराक निवृत्तिमूलक नहि, लोकमतक प्रवृत्तिपरक जीवन-पद्धतिक प्रावधान अछि।'[3]

लगभग पचास गोट वचनक प्रकाशनक संग डाकवचन पहिल-पहिल बेर ग्रियर्सनक प्रसिद्ध पुस्तक 'बिहार पीजेन्ट लाइफ' (1885) मे मुद्रित भेल। रास बिहारी लाल दासक पुस्तक 'मिथिलादर्पण' (1915) मे डाक कें मिथिलाक एक कवि मानैत हुनकर किछु वचन कें हुनकर रचनाक रूप मे शामिल कयल गेल। ओहि ठाम डाकक परिचय देल गेल—'इस मिथिला में गोपजातीय घाघ (उपनाम डाक) नाम का एक विशेष कृषक हो गया है जिसने कृषकों के हितार्थ अनेकानेक कृषिविषयक शिक्षा दी है। किस समय और कौन नक्षत्र में कौन सा अन्न रोपना, बोना चाहिए और कौन नक्षत्र में कैसा लक्षण होने से कैसा फल होगा, ये सब बातें भलीभांति कह सुनाया है।'[4] डाकवचनक पहिल स्वतंत्र संकलन 'डाकवचनामृत'क रूप मे 1924 मे तीन भाग मे प्रकाशित भेल। प्रथम भागक भूमिका मे एहि पुस्तकक संग्रहकर्त्ता पंडित कपिलेश्वर झा लिखलनि: 'जाहि-जाहि विषयपरक जे वचन संग्रह भेल अछि प्रत्येक विषयक प्रकरण फुटा-फुटा कय एहि प्रथम भाग मे लिख देल अछि, ओ ताहि विषय पर आओरो वचन सभ दोसर ओ तेसर भाग मे देल गेल अछि। आशा करैत छी जे एहि मे हमरा लोकनिक दोषें जे किछु त्रुटि भेल होइक, तकरा गृहस्थजन क्षमा करथि, हमरा लोकनि एहि संग्रह मे देशोपकार मानि तत्पर छी, आशा अछि जे विज्ञजन एहि मे सहायता करताह।'[5] कथनक आशय स्पष्ट अछि जे एहि वचनक महत्ता कें देखैत एकर संग्रहकार्य कें ओ देशोपकार, मिथिलाक उपकार मानलनि आ एहि दिस विज्ञजन कें सचेष्ट करबाक अनुरोध कयलनि।

मुदा, डाकवचनक दोसर संग्रह 1950 मे मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा सँ पंडित जीवानन्द झा (सहायक संस्कृत लाइब्रेरियन, राज पुस्तकालय)क संकलयितात्व मे जखन छपल, ओकर नाम छल—'मैथिल डाक'। 'डाकक परिचय' नामक एक अध्याय एहि मे जोड़ल गेल छल जकर प्रतिपाद्य छल डाक कें मैथिल, मिथिला-निवासी सिद्ध करब। एहि पुस्तक मे कपिलेश्वर झाक संग्रहक वचन सभक अतिरिक्त जे नब वचन छल, तकरा संकलयिता 'विशुद्ध डाकवचन' एहि आधार पर कहलनि जे एहि वचन सभक उल्लेख ज्योतिष शास्त्रक पाण्डुलिपि सब मे दृष्टान्त वा टिपौतक रूप मे कयल गेल छल। एहि ठाम सँ आगू पूरा मामिला बदलि गेलैक। डाक कें एक व्यक्तिये नहि, मिथिलानिवासी अहीर पंडित साबित करबाक पाछू विद्वान लोकनि तेना व्यस्त भ' गेला जे कपिलेश्वर झाक जे देशोपकार-भावना छल, जकर पूर्त्ति निश्चिते डाकक आरो-आरो असंगृहीत वचनक नव-नव संग्रह सँ होइतैक, से पृष्ठभूमि मे चलि गेल, बिसरा गेल। एना-एना ई सब एहि तरहें भेल, तकर कारण

छल जे 1931 मे हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग सँ पंडित रामनरेश त्रिपाठीक संकलन 'घाघ और भड्डरी' प्रकाशित भेल, जाहि मे देखल गेल जे डाकक जाबन्तो वचन घाघक नामें थोड़ेक भाषान्तर करैत हिन्दी-क्षेत्रक वचनक रूप मे ल' लेल गेल छल। एकर प्रतिवाद करैत महामहोपाध्याय उमेश मिश्रक एक लेख हिन्दुस्तानी एकेडमीक पत्रिका मे प्रकाशित भेल जाहि मे डाक कें मैथिल सिद्ध करबाक हेतु प्रमाण सब देल गेल छल। एकर उल्लेख करैत 'मैथिल डाक'क प्रकाशकीय वक्तव्य मे मैथिली साहित्य परिषद्क तत्कालीन प्रधानमंत्री काञ्चीनाथ झा 'किरण' लिखलनि: 'महामहोपाध्याय डॉ. उमेश मिश्र हिन्दुस्तानी एकेडेमी पत्रिका मे एक लेख द्वारा डाक कें मैथिल सिद्ध कयने छथि। परन्तु प्रमाणक अभाव रहबे कयल। प्रस्तुत पोथी 'मैथिल डाक' डाकक मैथिलत्वक महत्त्वपूर्ण प्रमाणस्वरूप भेल अछि।'[6] ई महत्त्वपूर्ण प्रमाण की छल? स्वयं जीवानन्द ठाकुरक शब्द मे: 'एहि विषय मे डाक बड़ पैघ भाग्यवान छथि जे हुनका निबन्धकार लोकनि पैघ सम्मानक संग प्रमाण कोटि मे ग्राह्य कयने छथि। डाकक अतिरिक्त प्राय: केओ दोसर भाषाप्रवक्ता कें मैथिल निबन्धमे ई स्थान नहि भेटल छन्हि। डाक जाहि ठाम मिथिला मे एहि रूपें विद्वत्समाज मे प्रमाण रूपें उद्धृत भेलाह अछि—ओहि ठाम दोसर कोनो देशज निबन्धकार लोकनि हिनका कतहु प्रमाणत्वेन उल्लेख नहि कयलन्हि अछि। ई एक एहन प्रमाण अछि जाहि सँ डाकक स्थितिक संबंध मे खूब प्रकाश पड़ैत अछि।'[7] जाहि प्राचीन पाण्डुलिपि सब मे डाकवचनक उद्धरण आयल छल, ओ सब छल—व्यवहार-प्रदीप (महामहोपाध्याय हरपति ठाकुर), तिथिद्वैध-निर्णय (महामहोपाध्याय शुभंकर ठाकुर), ग्रामवास-विचार (अज्ञात), कालिदासरचित विक्रमोर्वंशीय के तड़िपत आदि। डॉ. शशिनाथ झा आगाँ अपन पुस्तक 'डाकवचन-संहिता' मे एहि शास्त्रस्वीकार्यता कें आरो बेसी धन्यताक संग उद्धृत कयलनि। हुनक ई पुस्तक 'जिज्ञासा'क तेसर अंक (1996) मे प्रकाशित भेल, पुन: स्वतंत्र पुस्तकक रूप मे सेहो आयल। अपन पुस्तक मे ओ विद्यापतिक पुत्र हरपतिक काल 1430 ई., शुभंकर ठाकुरक काल 1575 ई.,'ग्रामवास-विचार' पुस्तकक रचनाकाल 1500 ई. तथा विक्रमोर्वंशीय नाटकक तड़िपत-प्रतिलिपिक काल 1600 ई. निर्धारित कयने छथि। एहू सँ रोचक ई थिक जे महामहोपाध्याय चण्डेश्वर ठाकुर (1325 ई.) रचित 'कृत्यचिन्तामणि' मे तीन गोट डाकवचन स्वयं जीवानन्द ठाकुर कें भेटल छलनि आ एकर उल्लेख ओ अपन भूमिकाक पाटटिप्पणी-भाग मे कयनहु छथि, मुदा जें कि एहि मे डाकक भणिता प्रयुक्त नहि छल, एकर कर्तृत्व पर सन्देह व्यक्त करैत एकरा ओ अपन पुस्तक मे शामिल नहि कयलनि। शशिनाथ झा अपन पुस्तक मे दू टा आर ग्रंथ खोजि निकाललनि,

जाहि मे डाकवचन उद्धृत छल। ई छल विष्णुदेवकृत 'रत्नकलाप' (1650 ई.) तथा कलाधरकृत 'ज्यौतिषशिशुबोध' (1700 ई.)।

एहि बीच एक टा नवीन स्रोतक सूचना सेहो उद्‌घाटित भेल जकर उल्लेख रामदेव झा अपन पुस्तक 'मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य' मे कयने छथि। ई नवीन स्रोत धीरेश्वर रचित 'बुद्धिप्रदीपम्' थिक। पोथी मे रचनाकालक कोनो सूचना नहि देलनि अछि। रामदेव झाक अनुमान छनि जे 'ई प्रति डेढ़-दू सय वर्ष सँ बेसी प्राचीन नहि होयत।'[8] एहि मे सोलह भिप-भिप प्रसंगक टिपौट मे डाकवचनक उद्धरण देल गेल अछि। 'टिपौट'क अर्थ कल्याणीकोश मे देल गेल अछि—'स्मरणार्थ लिखि क' राखल गेल पुरजा'। आन-आन कोश कें देखने स्पष्ट होइछ जे पहिने ई शब्द केवल जन्म टिप्पणिक संदर्भ मे प्रयुक्त होइत छल। एकर तात्पर्य यैह बुझना जाइछ जे पाण्डुलिपिक लिपिकार लोकनि ग्रन्थकाररचित जे प्रसंग जाहि पृष्ठ पर लिखि रहल होथि, ताहि सँ सन्दर्भित जँ आनो कोनो प्रसंग, कथन, श्लोक आदि हुनका ओहि काल मन पड़ि जाइन तँ तकरा ओही पृष्ठ पर स्मरणार्थ लिखि दैत छलाह। से जँ नहि होइत तँ कालिदासक रचना मे डाकक उद्धरण कोना संभव भ' सकैत छल? डाकवचनक उल्लेखक अर्थ थिक जे अपन चमत्कारपूर्ण उक्तिक कारण ई वचन सब पंडित समाज मे लोकप्रिय छल, जनसामान्य मे तँ रहबे करय, बरु जनसामान्यक तँ समुच्चा आधार यैह छलैक कारण ओहि ठाम पोथी-पतरा नहि छल, केवल यैह अनुभवसिद्ध वचन सब छल।

ई बात पहिनहु कहल जा चुकल अछि जे आइ जे वस्तु लोकसाहित्य थिक वैह काल्हुक तिथि मे शिष्ट साहित्य मे स्थान पाबि सकैत अछि। एकर अनेको अनेक दृष्टान्त भारतीय साहित्य मे छैक आ सब सँ स्पष्ट दृष्टान्त तँ अपना लोकनिक कविपति विद्यापति थिकाह जिनकर गीतक प्रचलन कि तँ स्त्रीगणसमाज मे अवशेष रहि गेल छल वा नचनियाँ लोकनिक शूद्र समाज मे। डाकवचनक स्वीकार्यता कने आर बेसी ऊपर उठि संस्कृत वाघङ्मय मे भेल, तँ तकर कारण यैह बुझबाक चाही जे ताहि दिनक शिष्टसाहित्य संस्कृते मे लिखल जाइत छल। जीवानन्द ठाकुर जखन डाक कें 'भाषाप्रवक्ता' कहैत छथि तँ एहि आशय कें गमल जा सकैत अछि। ध्यान रखबाक थिक जे डाकक जाहि वचन सब कें पंडित लोकनि पाण्डुलिपि सब मे टिपलनि, से ज्योतिषक मुख्यत: तीन अंग—मुहूर्त्त, शकुन तथा योग सँ संबंधित अछि जखन कि डाक-परम्पराक जे रचनाविषय-वितान अछि से बहुत व्यापक आ विस्तृत अछि। पंडित गोविन्द झा लिखने छथि—'डाकक ई तीनू विषय (मुहूर्त्त, शकुन आ योग) शुद्ध पारम्परिक मान्यतामूलक थिक जकरा आजुक समाजशास्त्री लोकनि 'सोशल बिलीफ' वा सामाजिक मिथ्याग्रह कहताह आ जकरा प्रमाणित (वा खंडित) करबा मे आजुक विज्ञान असमर्थ अछि। एहि परम्पराप्राप्त विश्वास कें जेना पंडित लोकनि युग-युग सँ उघैत अएलाह अछि तहिना डाक सेहो उघलन्हि।'[9]

असल मे, डाकक मूल समस्या ई छलनि जे ओ कोनो एक व्यक्ति नहि छलाह, जेना कि मानल जाइत रहलाह। 'डाक' शब्द तिब्बती परम्पराक शब्द अछि जकर अर्थ होइत अछि ज्ञानी। ई शब्द सिद्धसाहित्यो मे हमरा लोकनि कें अनेक ठाम भेटैत अछि। बांग्ला मे एखनहु डाक एक क्रियापद थिक जकर अर्थ थिक हाक देब, पुकार लगायब। गोविन्द झा एहि शब्दक विभिप अर्थच्छविक किछु दृष्टान्त अपन कोश आ लेखहु मे देने छथि। मुदा, कोनहु शास्त्र, से चाहे अपनहु द्वितीय श्रेणीक किएक ने मानल जाइत हो, जखन लोकायत कें स्पर्श करैत अछि तँ ओकरा संग केहन सलूक करैत अछि, तकर दृष्टान्त हमरा लोकनि डाकक प्रकरण मे देखि सकैत छी। शास्त्र सँ एहि ठाम हमर तात्पर्य ज्योतिष सँ अछि, जकरा मिथिला मे कहियो सद्‌शास्त्रक स्थान नहि देल गेल, ओहि मिथिला मे, जकरा बारे मे प्रसिद्धि छलैक जे धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारत:।

मोहन भारद्वाज एहि तथ्य कें कने भिप तरहें रखलनि अछि—'समस्या तखन ठाढ़ होइत अछि जखन लोकजीवनक स्थिति, आवश्यकता आ अनुभवक वचन कें पाण्डित्यक प्रहार सँ शालग्राम बनयबाक चेष्टा कयल जाइत अछि।'[10] शालग्राम बनेबाक चेष्टा सँ हुनक तात्पर्य संस्कृतीकरण वा ब्राह्मणीकरण थिक। एकर अनेको साक्ष्य ओ अपन पुस्तक मे देने छथि। अपन पुस्तक मे जीवानन्द ठाकुरक ई लिखब जे 'डाकक रचना ज्यौतिषशास्त्रक संहिता ओ सैद्धान्तिक आधार पर भेल अछि। डाकक रचनाक आधार संस्कृतशास्त्रे छलन्हि।' अथवा पंडित गोविन्द झाक एहि निष्कर्ष पर पहुँचब जे 'बहुत वचन तँ शुद्ध संस्कृत वचनक अनुवाद अछि।'—एहि समस्याक दिस इंगित करैत अछि जकर अंतिम परिणति डाक कें एक व्यक्ति मानबाक रूप मे सामने अछि। के छलाह? जातिक गोआर छलाह। प्रख्यात ज्योतिर्विद वराहमिहिर (505 ई.) एक बेर कहियो अपन गाम सँ राजाक ओतय जाइत छलाह तँ बाट मे राति भेला पर एक टा गोआरक ओतय शरण लेलनि। पंडित कपिलेश्वर झाक शब्द मे कहल जाय तँ 'गोआर बड़े आदर सँ भोजन कराय हिनक सेवार्थ अपन कन्या कें नियुक्त कयलनि। प्रालब्धवश राति मे ओहि गोपकन्या सँ भोग कयलनि।' आ एहि तरहें डाकक जन्म भेल छल। डॉ. सुभद्र झा डाकक समय 1000 ई. मानैत छथि। उमेश मिश्र पर्याप्त प्रमाणक अभाव मे निश्चित समय-सीमा तँ नहि बान्हि सकलाह मुदा ई धरि अवश्य कहलनि जे 'डाक के चौदहम शताब्दी सँ पूर्वहि होएब निश्चित होइत अछि।' समय-निर्धारण भिप बात थिक मुदा डाकक व्यक्तित्वक जे परिचय बनाओल गेल, लोकायतक प्रति कतेक अवमानना-भाव मिथिलाक शिष्टसमाज मे

छल, तकर किछु थाह एहि कथा-प्रसंग सँ पाओल जा सकैत अछि। गोआर एते बुद्धिमान हो से कोना भ' सकैत अछि, जरूर ओ कोनो ब्राह्मणक जनमल हेताह— एहि ठाम से मानि क' चलल गेल अछि। रहल वराहमिहिरक कालगत असंगति, तँ पौराणिक टाइपक कल्पना मे वैज्ञानिक इतिहासक परवाह के आइ धरि कयलनि अछि जे ई लोकनि करितथि!

एहि दिस हमरा लोकनिक ध्यान नहि जाइत अछि जे जखन पंडित गोविन्द झा अथवा क्यो आर डाकक वचन सब कें संस्कृत वचनक अनुवाद कहैत छथि, तँ वास्तव मे एक अयथार्थ, बरु कि कहल जाय उनटा बात कहैत छथि। बिना अधिक आयास कयने हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे 'वृहत्संहिता', 'कृषि-पराशर' अथवा 'उपवन-विनोद' सन के ग्रन्थ सब मे जे तथ्य आयल अछि से हजारो हजार आँखिगर लोकक अनेक युगव्यापी अवलोकनक अनुवाद थिक। एकर सब सँ पैघ प्रमाण तँ यैह थिक जे मध्यकालक कोनो ज्योतिषग्रन्थ मे जतेक प्रकारक तथ्य आ अवलोकनक चर्चा कयल गेल अछि से कोनो एक व्यक्ति द्वारा एक जन्म मे क' सकब कोनहु तरहें संभव नहि अछि। पुराण सब मे वर्णित देवता आ ऋषि जकाँ क्यो बारह हजार वर्ष धरि तपस्या करैत रहि जाथु आ ताहि पर धर्मप्राण जनता विश्वासो करैत चलय से एक भिप बात थिक। पौराणिक समाधान सब पर हम कोनो टिप्पणी करी ताहि सँ कतहु बेसी नीक तरहें हजारीप्रसाद द्विवेदी ई लिखि गेल छथि जे 'असल में डेढ़ हजार वर्ष पहले से आज तक पुराण बहुत अविकसित बुद्धि के लोगों के हाथ में रहे हैं और फलत: उनमें बेहूदी बातें इतनी आ घुसी हैं कि पुराणों का मूलरूप खोज निकालना बड़ा दुष्कर कार्य हो गया है।'[11]

डाकक वचन वास्तव मे की थिक? असल मे ई विज्ञान आ प्रावैधिकी संबंधी सूचना सभक संप्रेषण माध्यम थिक जे कोनो व्यक्तिक अपन अवलोकन कें अपन संगी-साथी, अपन आगामी पीढ़ी कें अन्तरित करबाक प्रयासक रूप मे सामने आयल अछि। एहि रूप मे हमरा लोकनि सहज अनुमान क' सकैत छी जे एकर प्रकृति नितान्त आदिम अछि। जेना-जेना मनुष्य अपन श्रम-संघर्ष सँ नव-नव उपलब्धि हासिल करैत गेल, ओहि अनुभव कें भाषा मे अन्तरित करैत गेल। कंद-मूल, फल-फूल, गाछ-वृक्ष, पशु-पक्षी, नदी-नाला, माटि-पाथर, बिहाड़ि-पानि, जंगल-पहाड़, राति-दिन, नक्षत्र-तारा, ऋतु-मौसम—सब कथूक बारे मे एक पीढ़ीक अनुभव दोसर पीढ़ी धरि पहुँचल तँ सहजहि ओकर जीवन-संघर्ष कें अपेक्षाकृत आसान केलक। एहने किछु आदिम संप्रेषणक निसानी डाकवचन थिक। आइ भने मौजूद हो कि नहि हो, संसारक हरेक भाषा मे एहि तरहक सूचना-संप्रेषण-पद्धतिक अस्तित्व रहल अछि। बांग्ला, असमिया, उड़िया मे समान ढंगक डाकवचन विद्वान लोकनि अपन-अपन पुस्तक

मे उद्धृत केलनि अछि। एही तरहक वचन सब भोजपुरी, अवधी, बुन्देली, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषा मे सेहो ग्रथित देखाओल गेल अछि। विद्वान लोकनिक सीमा भ' सकैत छनि, मुदा सूचना-संप्रेषणक एहि भाषिक प्रविधिक कोनो सीमा नहि बान्हल जा सकैत अछि।'घाघ-भड्डरी का विज्ञान-संप्रेषण' पुस्तकक संपादक पुरुषोत्तम लिखने छथि: 'ये उक्तियाँ, मध्यकाल में समाज के सबसे निचले हिस्से तक सहज ढंग से विज्ञान एवं प्रावैधिकी संबंधी सूचनाओं के संपेषण का विशिष्ट नमूना हैं, ये भारत के सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र के गाँवों में प्रचलित हैं, उक्तियों में संचित सूचनाएँ मुख्यत: कृषि, पशुपालन और स्वास्थ्य से संबंधित हैं।'[12] ई सूचना सब आगू-दर-आगूक पीढ़ी धरि अंतरित होइत धीरे-धीरे अवधारणाक रूप ल' लेलक, जकरा बारे मे पंडित गोविन्द झा कहैत छथि जे आधुनिक विज्ञान लग मे ने तँ एकरा कटबाक कोनो रस्ता छैक, ने प्रमाणित करबाक।

हमला लोकनि सहजें बूझि सकैत छी जे एहि वचन सभक विषय-प्रकार आ सूचना-व्याप्ति कतेक पैघ रहल हेतैक। किछु तँ सामान्य विषय छल जेना मौसम वा स्वास्थ्य, बाँकी जे समुदाय जाहि प्रकारक पेशा संग सम्बद्ध रहल छल होयत, तकर सभक अपन-अपन तकनीकी सूचना-संग्रह होइत छल होयत। खेती केनिहारक खेती संबंधित तँ शिल्पकार लोकनिक अपन-अपन शिल्प संबंधित, आ तहिना वणिक लोकनिक बनिज संबंधित। काल-प्रभाववश जेना-जेना ओ पेशा प्रभावित होइत छल होयत तकर स्पष्ट प्रभाव एहि सूचना-संग्रह पर पड़ैत होयत कारण जे ई मौखिक छल। हमरा लोकनि अवगत छी जे अंगरेजक अयलाक बाद कम्पनी सरकार देसी शिल्प कें रणनीतिपूर्वक नष्ट करब आरंभ केलक। सांख्यिकीक किछु मोट तथ्य सब देखल जा सकैत अछि जे वर्ष 1807 ई. मे भागलपुर जिला मे 12 हजार बीघा जमीन मे बांग (कपास) उपजाओल जाइत रहैक आ 7279 करघा पर सूती आ 3275 करघा पर रेशमी वस्त्र बूनल जाइत रहैक। बुकाननक सर्वेक्षण मे आनो-आन जिला सभक आंकड़ा अयलैक अछि। हमरा लोकनि पबैत छी जे 1801 ई. मे भारत सँ अमेरिका 13633 गांठ कपड़ा जाइत छल जे 1829 मे घटि क' मात्र 258 गांठ रहि गेलैक। तहिना, आंकड़ा भेटैत अछि जे 1911 मे 11-2 प्रतिशत आबादी शिल्पकारी पर निर्भर छल जे 1921 मे घटि क' 10-49 प्रतिशत, 1931 मे 10-38 प्रतिशत रहि गेलैक। 1911 सँ 1931क बीच भारतक जनसंख्या मे भेल भारी वृद्धिक परिप्रेक्ष्य मे एहि आंकड़ा कें देखी तँ बात साफ होइत अछि। तें विभिप प्रकारक शिल्पकारी पेशा सभक बारे मे यदि आइ डाकवचन नहि भेटैत अछि तँ एहि मे आश्चर्य नहि मानैत, ओकर अनस्तित्व कें नहि, ओकर विलुप्त भ' जेबा कें कारण मानबाक चाही। दोसर दिस हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे 1901 मे खेती पर निर्भर आबादी

66 प्रतिशत छल जे 1911 मे बढ़ि क' 72 प्रतिशत भ' गेल। आगू आर बढ़िते गेल। खेती संबंधी वचन सभक अधिक उपलब्धताक ई एक स्पष्ट कारण थिक। डाकवचनक आदिसंग्राहक ग्रियर्सनक मन मे एकर संग्रहक विचार खेती-पथारीक काज मे सभतरि एकर प्रचलने देखि क' आयल रहनि, से नहि बिसरबाक चाही।

संतोषक विषय थिक जे डाकवचन कें कोनो एक व्यक्तिक रचना मानबाक बदला सामुदायिक रचनाशीलताक पहचानक रूप मे ख्यापित केनिहार विचारक लोकनिक सेहो मैथिली मे अभाव नहि रहल। मैथिली साहित्यक इतिहास लिखनिहार डॉ. जयकान्त मिश्र अपन पुस्तकक अंग्रेजी संस्करण (1976) मे डाकवचन कें 'यायावर जनसमुदायक देन' माननलनि। मैथिली संस्करण (1978) मे ओ ज्योतिषग्रन्थ सब मे डाकवचनक उद्धरण पाओल जेबाक प्रसंग मे लिखलनि: 'भए सकैत अछि जे ई ज्योतिषवचन सब एही रूप मे ओहि डाकक मुँह सँ नहि बहराएल हो जे विख्यात ज्योतिषी वराहमिहिरक गोआरिक गर्भ सँ उत्पप प्रख्यात पुत्र कहल जाइत छथि, किंतु ग्रामजीवन एवं कृषि संबंधी प्रचलित सुभाषित-राशि सँ लए प्राचीन ग्रन्थ मे उद्धृत कएल गेल हो।' जयकान्त मिश्रक मैथिली-पाठ मे किञ्चित संशय छल मुदा दोसर दिस ताहि सँ बहुत पहिने 1973 मे प्रो. जयदेव मिश्र मैथिली मे लिखि रहल छलाह: 'हमरा ई स्वीकार करब असंगत लगैछ जे डाक नामक केओ व्यक्ति कोनो शुभ लगन मे कलम-कागत लए बैसलाह ओ वचनावलीक रचना कएलन्हि। यथार्थत: ई वचनावली एक व्यक्तिक रचना, एक कालक रचना कथमपि नहि मानल जाए सकैछ। एहि मे सन्देह नहि जे डाक-घाघक वचनावली सुदूर एक एहन परिपार्श्वक दिशा संकेत करैछ जखन समाज सर्वथा कृषिमूलक छल, कृषिएक सफलता पर ओकर समस्त आशा-आकांक्षा निर्भर छलैक। अतएव मैथिलीक विकासक अति प्राचीन युग मे एकर निर्माण आरम्भ भेल होएत, ताहि मे सन्देह नहि। किंतु युगक बाद युग मे मुँहामुँही प्रचारित होएबाक कारण ई बरोबरि बदलैत गेल। सत्य पूछी तँ ई अनुभवपूत, युग-युग मे प्रचलित उक्ति सभक संग्रह मात्र थिक।'[13] मोहन भारद्वाजक पुस्तक 'डाक-दृष्टि' तँ समुच्चाक समुच्चा एहि सामुदायिक रचना-पद्धतिक जीवन-दर्शन आ जीवन-सौन्दर्ये पर आधारित अछि। ओ कहलनि: 'डाकवचन लोकसाहित्य अछि। मौखिक साहित्य अछि। आब एकर लिखित रूप सेहो उपलब्ध अछि, मुदा सैकड़ो वर्ष धरि एकर वाचिके रूप प्रचलित रहल। तें डाकवचन कें रचित नहि, विकसित काव्यपरंपराक देन मानबाक चाही।'[14]

मिथिला-समाज मे कतेको युग सँ डाकवचनक अनमोल महत्त्व रहल अछि। आन प्रान्त मे जतय घाघक उक्ति कें 'कहावत' कहल जाइत अछि, मिथिला मे डाकक उक्ति कें 'वचन' कहबाक परिपाटी रहलैक अछि। वचन कहल जाइत अछि ऋषि-

मुनिक उक्ति कें, जिनका प्रति लोक मे असीम श्रद्धा-भाव रहैत छैक। संभव जे एक एहू कारण सँ डाकक एक व्यक्ति हेबाक कल्पना कयल गेल हो। दोसर दिस, मैथिली कविताक क्षेत्र मे डाकवचनक से महत्त्व छैक जे प्रो. जयदेव मिश्र अपन लेख मे लिखलनि: 'एहि प्रकारक रचना हमरा लोकनिक पश्चातक रचनाक हेतु ओ आधार थीक जकरा हटा देने एकर जड़ि कटि जयतैक ओ संजीवनी आहरणक एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बंद भए जयतैक। एहना स्थिति मे हमरा लोकनिक कवि-साहित्यकार विपप भए जा सकैत छथि।'[15]

पंडित गोविन्द झा डाकवचनक कविता मे उक्ति-वैचित्र्यक गुण कें सर्वाधिक मूल्यवान माननलनि अछि। एहि ठाम इहो स्मरण रखबाक चाही जे काव्य मे उक्ति-वैचित्र्य भेल—वैदग्ध्यभंगी-भणिति अर्थात वक्रोक्ति। भारतीय काव्यशास्त्र मे जे सात टा प्रधान संप्रदाय रहलैक ताहि मे सँ एक वक्रोक्ति संप्रदाय सेहो थिक। ई लोकनि वक्रोक्ति कें काव्यक आत्मा मानैत छथि। अस्तु। एकर लोकप्रियताक प्रमुख रहस्य गोविन्द बाबू अभिव्यक्ति-छटा कें बतबैत छथि, जकरा कारणें कतहु तँ ई कविताक आनन्द दैत अछि तँ कतहु पिहानीक। एहि कविता मे ओ दू प्रकारक चमत्कार देखैत छथि—भाषागत चमत्कार आ भावगत चमत्कार। असाधारण बुद्धिमत्ताक संग चमत्कारी अभिव्यक्तिक किछु उदाहरण :

1. हर बहए तँ अपनहु बही, नहि बही तँ बैसलो रही।
   (अपन काजक संग संलग्नता राखक चाही)
2. खयनहु मरी बिनु खयनहु मरी, कहथि डाक जे संयम करी।
   (शारीरिक चर्या कें व्यवस्थित रखबाक चाही)
3. नित्तह खेती दोसरें गाय, जे नहि देखय तकरे जाय।
   (कर्त्तव्यक प्रति यथावसर साकांक्ष रहबाक चाही)
4. नंगटें पहिरी भुखलें खाइ, जहाँ मन हो तहाँ जाइ।
   (अनावश्यक परिग्रह आ मोह सँ बचबाक चाही)
5. बैसल खाय चिबाबए पान, से की राखत वंशक मान।
   (कर्महीन मनुष्य पुरखाक विरासत कें नहि सम्हारि सकैत अछि।)

भागवत चमत्कारक सेहो कैक गोट उदाहरण पंडित गोविन्द झा अपन लेख मे देने छथि। वर्षाक अभाव रहत अर्थात रौदी (सुखाड़) होयत, तकर अभिव्यक्ति लेल डाकवचन मे ई सब बिम्ब व्यवहार भेल छैक—(1) धोबि धोयत कूप पैसि (2) कोदब कुरथी हो बेबहार (3) कहथि डाक बीआ जनु खोअह, धानक खेत मे राहड़ि बोअह (4) बीआ काटि बड़द कें घासा, आदि। तहिना, सुवृष्टि हेबाक बात सेहो अनेक भंगी मे कहल गेल अछि—(1) चूल्हिक पुत्ता उपजए सारि (2)

कुकुरो अप नहि खाए (3) सुखले नदिया नाओ बहाबए (4) कातिक कन्ता सिकियो न डोलए कहाँ कए रखबह धान।

डाकवचनक काव्य-विशेषता पर अनेक अध्येता विद्वान विचार केलनि अछि। ताहि सब सँ ई नीक जकाँ स्पष्ट होइत छैक जे मिथिलाक ई जातीय कविता-प्ररूप आत्यन्तिक रूप सँ समाज-सरोकारी अछि आ यैह कविता थिक जे मैथिली भाषाक शक्तिमत्ताक प्रथम-प्रथम झंडा फहरौलक। मोहन भारद्वाज एकर खास विशेषता पर लिखलनि अछि—'डाकवचनक जीवन-दर्शन भौतिकवादी अछि। ओकर पयर यथार्थक माटि पर छैक।' तहिना ओ कहैत छथि जे 'डाकवचनक समाज-दृष्टि अत्यन्त उदार छैक आ यैह दृष्टिकोण ओकरा वेद-वचन सँ फराक करैत छैक। मानवीय आ लोकवादी बनबैत छैक।' एक ठाम ओ कहैत छथि—'वैदिक मान्यता वा ब्राह्मणवादी जीवन-दर्शन जाति-आधारित अछि। अभिजन-वर्गक हेम-छेम धरि सीमित अछि। किंतु, डाकवचन जें कि लोकवादी दृष्टि सँ परिचालित अछि तें एकर जीवनादर्श भिप छैक। एहि मे निम्नतम स्थितिक लोकक चिन्ता अछि, ओकर निदानक चेष्टा अछि।'[16]

मिथिलाक किसानी जीवनक समस्त विशेषता, समस्त छवि-छटा डाकवचन मे आयल अछि। 'किसानी जीवन' सँ एहि ठाम समस्त ओहन लोकक जीवन अभिप्रेत अछि, जे सामन्ती जीवन सँ भिप अछि। कर्मठता आ उद्यमशीलताक एतय सदैव प्रशंसा कयल गेल अछि। एक वचन मे जखन कहल जाइत छैक जे 'हर बहय तँ अपनहु बही' तँ तकर तात्पर्य यैह अछि जे हरबाहा संग किसान कें अपनहु श्रम करबाक चाही। अथवा जखन बैसि क' पान चिबाबैत आ बात बनबैत रहय बला लोकक निन्दा कयल जाइत छैक तँ एकर उद्देश्य एही कर्मठताक माँग थिक। एक वचन अछि—'घर बैसल जे बनबथि बात/ देह मे वस्त्र ने पेट मे भात/ जे पूछथि हरबाहा कहाँ/ बीया बूनब बेकाज तहाँ।' आइ जँ छल-कपट सँ एहन लोकक देह मे वस्त्र आ पेट मे भात छैको तँ भविष्यवाणी बूझक चाही जे भविष्य मे से नहि रहतैक। जँ एहन लोकक खेत मे बीया बूनब बीया कें बेकाज (बर्बाद) करब कहल गेल छैक तँ तकर तात्पर्य थिक जे कर्मठ लोक कें एहन लोक संग संगति सँ बचबाक चाही। एक वचन छैक जे 'परती सँ किछु भरती आछा/ कहए डाक किछु अक्कठ गाछा।' कतबो निराशाजनक परिस्थिति हो, किछु नहि करबा सँ सदा किछु करब बेसी श्रेयस्कर थिक, भने ओ अल्पमूल्येक काज किएक ने हो। एहि तरहें देखी तँ एहि वचन सब मे एक उच्च कोटिक संघर्षधर्मिता आ आशावाद सिपहित छैक। डाकवचनक दृष्टि कतेक ठोस यथार्थवादी छैक तकर अनुमान एहि वचन सँ कयल जा सकैत अछि जतय डाक मनुष्य लेल उपयोगी धनक परिभाषा करैत छथि—'धन मे धान आओर धन गाय/ किछु-किछु सोन आओर सब छाय।' आओर सब कें जखन ओ छाय बतबैत छथि तँ तात्पर्य थिक जे सहज जीवनक लेल ओ सब वस्तु अनुपयोगी अछि। एहि ठाम ठेठ मैथिल समाजक नैतिक स्तर कें सेहो हमरा लोकनि देखि सकैत छी। मैथिलक जीवन मे गाय एक जरूरी धन थिक तँ तकर कारण ई नहि जे 'गाय हमारी माता है' तकर कारण ई जे एहि ठामक समुच्चा अर्थव्यवस्था पशुधन सँ अन्योन्याश्रित छल। बरद किनबाक कौशल पर तँ ढेरो वचन अछिये, किछु महत्त्वपूर्ण वचन एहू पर अछि जे केहन आत्मीयताक संग पशुधनक परिपालन कयल जेबाक चाही। एक वचन अछि—'समथर जोतय, पूत चराबय/ चढ़िते जेठ भुसुल्ला छाबय/ भादव मास उड़य जँ गरदा/ बीस बरस धरि जोतह बरदा।' खेत समथर (समतल) रहत तखनहि, जखन किसान अपन खेत लेल श्रम करैत रहता। किसानक पुत्र बरद चरेतैक तँ पशु कें अपनत्व भेटतैक। चढ़िते जेठ भुसुल्ला (भुस्साक घर) छाओल जायत तँ वर्षाऋतु मे बरदक खाद्य सुरक्षित रहतैक। मालक घर मे भादो मे गरदा उड़त मने घर भीजल नहि रहत तँ बरद कष्ट नहि काटतैक। एहना मे पशुधनो संग दैत छैक। ओहि बरद कें अहाँ लगातार बीस बरख धरि जोति सकैत छी। कर्मठता आ सहजीवनक अद्‌भुत गान एतय व्यक्त भेलैक अछि। एक टा वचन छैक जाहि मे बताओल गेल छैक जे ककरा कोन चीज नाश करैत छैक—'हँसी-ठट्ठा संन्यासी घालय/ चोरहि घालय खाँसी/ आलस काज किसानहि घालय/ वेश्या नाश उदासी।' आलस नहि, कर्मठता किसानक उपतिक कारक थिक।

कतेक तरहक पेशा मिथिला-समाज मे तहिया प्रचलित छल आ ताहि मे उपतिक रहस्य की छल, एहू दृष्टि सँ एहि वचन सभक अर्थान्वेषण भ' सकैत अछि। इहो बूझल जा सकैत अछि जे 'ब्राह्मण घालय दासी'क अर्थ ई नहि अछि जे दासी तपस्या मे विघ्न उत्पप करैत छैक। मैथिल ब्राह्मणक सामंती समाज मे पारिवारिक खुक्खता आ नैतिक बलविहीनता मे एहि दासी-प्रथाक कतेक योगदान छल, से मिथिलाक वास्तविक इतिहासक मर्म जाननिहार लोकनि तँ जानिते छथि, एकर थोड़ेक चित्र आधुनिक मैथिली साहित्य मे सेहो आयल अछि। मुदा, मूल बात थिक जे किसानक नाश के करैत छैक? आलस काज किसानहि घालय। किसानक व्याप्ति एहि ठाम कतेक दूर धरि जाइत छैक तकरहु देखल जा सकैत अछि। हम-अहाँ ने खेत जोतैत छी ने बरद चरबैत छी, मुदा तखनहु एहि व्याप्तिक भीतर कोना हमहू सब किसान छी, सेहो देखल जा सकैत अछि।

पंडित गोविन्द झा लिखलनि अछि जे डाकवचन आत्यन्तिक रूप सँ लोकापेक्षी रचना थिक आ संगहि इहो जे ई धर्मापेक्षी नहि थिक। तकर स्पष्टीकरण दैत ओ कहैत छथि—'तैयो जे कतोक पाबनि-तिहारक चर्चा आ कर्णवेधादि संस्कारक मुहूर्त्त

देलनि से लोकापेक्षा कें देखैत देने होएताह।'[17] तकर प्रमाण देखबैत ओ कहैत छथि—'जँ धर्मोन्मुख रहितथि तँ अपशकुनक कुपरिणाम देखबैत ताहीसंग ओहि सँ बचबाक धार्मिक चिकित्सो देखबैत जइतथि, जेना बहुतो ज्योतिषग्रन्थ मे पबैत छी।' डाकवचनक आदर्श भौतिक जीवन थिक आ धर्म आ तकर अनुष्ठान सब लेल ओतय ओतबी जगह छैक जतबा कि कोनो उद्यमशील गृहस्थ समाज मे वास्तव मे पाओल जाइत अछि। ओतय महादेव शिवक लेल 'बतहा' आ भगवती जगदम्बाक लेल 'बतही' आ कृष्णक लेल 'छौंड़ा' शब्दक प्रयोग भेल छैक—'सूतब उठब पांजड़ मोड़ा, ताहि बीच मे जनमल छौंड़ा/ राजाक बेटा रामलाल, आठ नौ मे डाक नेहाल/ बतहाक चौदह बतहीक आठ, अप त्यागि क' जीवन काट।' एतय प्रसंग अछि जे व्रत कहिया-कहिया करक चाही। मुदा, एकरा पाछू जे एहि-एहि देवता लोकनिक पूर्वचरित अछि तकर स्मरण क' लेल गेल अछि। धर्म एहि ठाम कोनो व्यवसायक रूप मे नहि आयल छै ने शरणागतिक तात्पर्य मे। जीवन अछि, जीवनक कर्त्तव्य सब अछि, तखनहि धर्मो अछि। धर्म धारण करबाक वस्तु थिक, व्यवसाय करबाक नहि। तखन तँ इहो वचन डाकेक नाम पर प्रचलित छैक जे 'देव न मारथि डांग सँ/ देथि कुपंथ चढ़ाय।' जेना एखन भारतक लोक कें चढ़ौने छथिन।

डाकवचनक असली मर्म सामुदायिकता आ पारिवारिकता सँ परिपूर्ण जीवन-प्रणाली मे निहित छैक। ओहि ठाम पुरुषार्थक प्रबल महत्त्व छैक आ धोखो सँ कतहु एहन पद नहि भेटैछ जाहि मे निराश भ' क' किसान आत्महत्याक विचार कर' लागल हो। ठट्ठा करैत एहन पद तँ जरूर आयल अछि जे 'कहए डाक तेजहु मन हर्ष' मुदा कोनो तरहें ई एक निर्णायक कथन नहि होइत अछि कारण किसानी जीवन मे प्रत्येक दिन परिस्थिति बदलैत छैक आ पन्द्रह दिन पर तँ नक्षत्रे बदलि जाइत अछि। उदासी जँ होइतो अछि तँ थोड़बे दिनक लेल होइत अछि।

जीवनक वास्तविक सुख की थिक, सेहो डाकवचन मे ठाम-ठाम आयल छैक। एहन वचन सब मे किसान जीवनक भौतिक ठोस आधार, व्यावहारिक विचार-पद्धति आ सामुदायिक ओ पारिवारिक सामंजस्यक अद्‌भुत चित्र सब बनैत छैक। एक टा वचन अछि—

भुइयाँ खेड़े हर हो चारि/ धर हो गिरहिनि गाय दुधारि
रहर दालि जरहन के भात/ गागर नेबो ओ घिउ भात
सहरस खंड दही जँ होए/ बाँके नयन परोसए जोए
कहए डाक तब सबही झूठ/ ओतए छाड़ि एत्तहि बैकुंठ

आत्यन्तिक रूपें सुखी जीवनक लेल घर मे गृहिणी के होयब जरूरी मानल गेल अछि दासी के नहि, ई जीवन-शैलीक अपन-अपन प्रकारता थिक। ताहि

गृहिणीक संग सामंजस्य एहन छैक जे परसैत कालक 'बाँके नयन ' सुख सँ नेहाल करबा योग्य अछि। बाँकी चारि टा हर हो आ दुआर पर दुधारि गाय हो तँ शेष सुविधा तँ उचिते थिक। किसानक जीवन मे चारि टा हरक अति विशेष महत्त्व। एक वचन मे आयल अछि—'एक हर हत्या दू हर काज/ तीन हर खेती चारि हर राज।'

गोविन्द झाक अनुमान छनि जे डाक, जँ कोनो एक व्यक्ति छल हेताह, कर्णाट शासक रामसिंह (1225-1285 ई.)क बाद समकालीन छलाह। राजा रामसिंह कतेक हरक मालिक छल हेताह, डाकवचनक विचारक ई विषय नहि रहल। डाकक किसान तँ चारि हर भेने स्वयं राजा होइत अछि। हिनकर तँ हिसाब छनि जे चढ़ैत आर्द्रा बरसि जाय आ उतरैत हस्त (नक्षत्र), तँ राजा भने कतबो डाँड़य कि बान्हय, गृहस्थ प्रसप रहैत अछि—'चढ़तहि बरसे अरदरा, उतरत बरसे हस्त/ कतबो राजा डांड़य-बान्हय, आनन्द रहे गृहस्त।' डाँड़य-बान्हय सँ तात्पर्य अन्यायपूर्ण लगान-वसूली सँ अछि। फेर स्मरण करी जे ओ मिथिले प्रांत छल जतय जमींदारक अमला कोनो-ने-कोनो बहपें किसानक सतासी प्रतिशत धरि उपजा हड़पि लैत छल। राजा पर आबय बला आपदाक सेहो कारक सब डाकवचन मे आयल छैक मुदा हमरा लोकनि देखि सकैत छी, ओहि ठाम शास्त्रज्ञ द्रष्टा बला निष्पक्षता छैक। असल देख'बला वस्तु तँ मुदा ई थिक जे किसानी जीवनक छोट-छोट सुख, जकरा अर्जित करबा मे हरेक किसान परिवार अपनहि मे स्वावलम्बी अछि, तकरा महासुख बताओल गेल अछि आ धार्मिक कल्पना-परिकल्पना सब कें झूठ ठहराबैत, बैकुंठ कें कोनो आन लोक मे हेबाक खंडन करैत, ओकरा एत्तहि, किसान-परिवार मे मौजूद बताओल गेल अछि।

सामुदायिकताक प्रशंसा डाकवचन मे सबतरि पाओल जा सकैत अछि। मोहन भारद्वाज उचित लिखलनि अछि जे 'डाकवचन एकल परिवार आ जाति-आधारित समाज-व्यवस्थाक विरोधी अछि।' ठाम-ठाम ई प्रसंग आयल अछि जे जतय कतहु जा क' बसी, 'भाए भतीजें करी बास।' खेती करबाक तौर-तरीका पर गप करैत एक ठाम मिलि-जुलि क' रहबाक लाभ बताओल जाइत अछि—'बापे-पुत्ते करी चास/ बापक मुइले माइक आस।' एक ठाम बूड़िक लक्षण एहि तरहें बताओल गेल अछि—'धोकड़ी लाधि भूमि पर सोबए/ उढ़री बहु लए जे नर रोबए/ बाट चलए नहि ताकए घूरि/ कहए डाक ई तीनू बूड़ि।' पहिल पाँती मे जँ रहन-सहनक उचित-अनुचित तरीका दिस संकेत भेल अछि तँ दोसर मे मनुक्खक भावनात्मक स्वास्थ्यक परीक्षण अछि। डाकवचन मे प्रेमक वायवीय घटाटोप नहि अछि, एकर बदला दाम्पत्यक सहअस्तित्वपूर्ण आवेग अछि। किसानी संस्कृतिक रफ-टफ जीवन-पद्धति मे उढ़री बहु लेल कानब पुरुषार्थक विरुद्ध अछि। ओकरा यदि कोनो आनक संग चललै-बनलै तँ ओतय गेल, एकरा लेल आब उचित यैह थिक जे अपना लेल

श्रेयस्कर स्त्री चुनय। कानल नहि जा सकैत अछि। दाम्पत्यक जे सुंदर स्थापत्य हमरा लोकनि डाकवचन मे देखैत छिऐक, विद्यापति आ हुनका बाद जे मैथिली साहित्यक युग बदलल, प्रेम तँ सगरो देखल जा सकैत अछि, नहि वास्तविक तँ बनौआ सही, मुदा दाम्पत्य दुर्लभ अछि। ओ बहुत आगू जा क' आधुनिके युग मे आबि शिष्टसाहित्य मे संभव भ' सकलैक। एहि वचन मे आगू एक एहन लोकक खिधांस भेलैक अछि जे बाट चलैत घूरि क' नहि तकैत अछि। घूरि क' नहि तकबाक प्राथमिक अर्थ जँ लोक-समाज संग संबद्धता नहि राखब थिक तँ एकर एक आर अर्थ स्वयं अपनहि जड़ि सँ कटि जायब, अपन परंपरा सँ विच्छिप भ' जायब थिक। डाकवचन मे पतित लोकक एक लक्षण ई बताओल गेल अछि जे ओ स्वार्थवश मुइला बोहुक नैहर जाइत अछि। (माछ संगे दुध-खिच्चड़ि खाय/ मुइला बहुक नैहर जाय/ बाट चलैत जे गाबय गीत/ कहए डाक ई तिनू पतीत।' नैहरक (मने अपन सासुरक) लोक-समाज संग सद्भावना राखब नीक बात थिक, तकर एहि ठाम निषेध भेल होइक, से बात नहि। स्त्रीक रहने जाहि तरहक संबंध छलैक, मुइलाक बादो ओकरा पूर्ववत नहि राखल जा सकैत अछि। ई व्यावहारिक जीवनक विरुद्ध बात हेतैक। बेमेल विवाहक मुखर विरोध करैत एक वचन मे आयल अछि—'बाछा (पाठान्तर नाटा) बड़द बहुरिया जोय/ नहि घर बसय न खेती होय।' अल्पवयक स्त्री संग विवाह करब कें एतय बाछा बरदक भरोसें खेती करबाक तुल्य मानल गेल अछि। जेना ओकरा भरोसें खेती नहि भ' सकैत अछि, अर्थ अछि नीक खेती सँ, तहिना एकरा भरोसें घर नहि बसाओल जा सकैत अछि। बिकौआ आ कनेदानीक भार तर मे पिचायल जर्जर सम्भ्रान्त ब्राह्मण समाज कें मिथिला कें बहुतो युग धरि थकचुपा करैत हमरा लोकनि देखि सकैत छी। आ दोसर दिस डाकक समाज अछि। एहि ठाम अल्पवयक स्त्रीक संग विवाह कें सर्वथा निषेध कयल गेल अछि।

एही क्रम मे हमरा लोकनि विधवाक समस्या कें देखि सकैत छी। आधुनिक मैथिली साहित्यक मुख्यधाराक विधा कें विधवाक समस्या कें उठा क' आधुनिक युगक सूत्रपात करैत हमरा लोकनि देखि सकैत छी। एकर अर्थ थिक जे समुच्चा मध्यकालीन मिथिलाक आसमान अबला विधवाक कोहराम सँ रौरव बनल रहल अछि। मुदा, मैथिलीक मध्यकालीन शिष्टकविता मे हमरा लोकनि कें ई रोदन कतहु नहि भेटत। जँ भेटत तँ ओम्हर लोकगीते मे जा क' भेटत। शिष्टसाहित्य मे तँ भौतिक आ पराभौतिक प्रेमक गायन मात्र व्याप्त छैक जकरा पर विद्वज्जन गौरव करैत छथि आ नवतुरिया लोकनि बहस करैत छथि। डाकक समाज मे स्त्रीक ई दुर्दशा कत्तहु नहि भेटत। ओहि समाज मे जँ विधवा अछि तँ अपन एक संभावनाक संग अछि। संभावना समाप्त नहि भेल अछि। भइयो नहि सकैत अछि।

एक डाकवचनक दृश्य तते काव्यात्मक अछि जे मुग्ध करैत अछि। ओहि मे एहि समाजक विधवा आयल अछि। वचन अछि—'तितिरपंख मेघा जरे ओ विधवा मुसुकाय/ कहे डाक सुनु डाकिनि, ओ बरसे ई जाय।' एहि वचनक एक पाठान्तर जीवानन्द ठाकुर एहि रूपक देने छथि—'तीतर पंखी बादरा विधवा कज्जल रेख/ ओ घर करए ई बरिसए एहि मे मीन न मेख।' शिष्टसमाज मे विधवाक ई मुसुकायब आ कि काजर करब कुलक्षण मानल जायत। मुदा की ई सत मे कुलक्षण थिक? डाकक समाज मे प्रेमक परिणति छल विवाह। जारकर्म प्रतिबन्धित छल, विवाह मान्य। शिष्टसमाज मे उनटा छल—पुनर्विवाहे प्रतिबन्धित छल आ जारकर्म मान्य। एहि विधवाक ई मुसुकायब घर बसेबाक कामना पर जा क' ठहरैत अछि। एक वचन मे तँ कहलो गेल अछि—'पुरबा पर जँ पछबा बहै/ राँड़ बिहुँसि बाता करै/ ई दूनू के इहे विचार/ ओ बरसे ई करे भतार।' ओ भतार करत। एहि ठाम इहो देखबाक चाही जे 'भतार करब' कें एहि ठाम बरखा होयब के संग जोड़ल गेल। बरखा होयबा के अपन समयजन्य लाभ-हानि छै, मुदा कुल मिला क' बरखा होयब एक प्रीतिकर परिघटना थिक। एकर एतय तात्पर्य एतबा तँ अवश्ये छैक विधवाक भतार करबाक प्रति विरोधभाव नहि छैक।

जाहि परिवार मे 'बतकट जोय' हो अथवा 'बौराहा भाइ'—ओहि परिवारक दुख कें अवश्यंभावी बताओल गेल अछि—'ई दुख विहि ककरहु नहि देहु' आ कि 'डाक कहे दुख कहाँ समाय!' एक वचन मे पतनशील गृहस्थीक लक्षण एहि तरहें बताओल गेल अछि—'जाकर घर बासय चतुरंग/ साँझ-प्रात नर पीबय भंग/ नारी ओगरए गाछी-चास/ तकर घरक हो शीघ्रहि नाश।' नारी घर सम्हरबाक बदला गाछी-चास ओगरथि तकरा अनर्थकारी तँ बताओले गेल अछि, पुरुष साँझ-प्रात भांग पीबथि, सेहो समाने अनर्थकारी कहल गेल अछि। पुत्र हो कि पुत्री, सन्तानक प्रति समान अनुराग देखाओल गेल अछि। एक ठाम जँ कहल गेल अछि जे 'बाँचए पुत्र करबियह नाच' तँ दोसर ठाम कन्या जन्मक बारे मे कहल गेल अछि जे 'कन्या देखले बड़ सुख पाबि।' नीक आ अधलाह, श्रेयस्कर आ विपत्तिकर के विचार सब डाकवचन मे पूरा स्पष्ट छैक, आ से भाववादी ढंगक नहि पूर्णत: वस्तुवादी आ व्यवहारमूलक कसौटी पर कसल छैक। कोन-कोन अधलाह लोक पर नहि करबाक चाही, ताहि बारे मे एक वचन अछि—'कपटी मित्र, कोसलिया माय/ बुड़िबक बेटा, टेटा जमाय/ कहथि डाक चारू परिहरू/ बुड़िबक-सन ससुरो नहि करू।' मध्यकालीन बोधक अपन सीमा भ' सकैत अछि, मुदा ओतय जे किछु अछि से पूर्णत: स्पष्ट अछि आ शिष्टसमाजक प्रचलित मानदंड सँ अनेक ठाम अलग अछि।

डाकवचनक कविता-रूपक मादे मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि जे 'डाकवचन

मुक्तक कविता थिक। मुक्तकक माने अछि असम्बद्ध। स्वतंत्र रूप सँ अर्थद्योतन करयबला। डाकवचन मे एक पदक अर्थसंगतिक लेल दोसर पद पर निर्भर नहि रहय पड़ैत छैक।'[18] डाकवचनक मुक्तकपन आ ताहि सँ उपजल असम्बद्धता एकर वस्तुनिष्ठ कथ्यक कारणें छैक। ओहि मे आलंकारिकताक आयास नहि छैक। जतबा कहने अर्थद्योतन भ' जाइक तत्तहि पहुँचि क' वचन पूर्ण भ' जाइत छैक। डाकवचन मे शिष्ट मुक्तक कविताक विपरीत गेयता नहि छैक, तकर बदला लयात्मकता छैक। तकर कारण मोहन भारद्वाज ई बतबैत छथि जे 'डाकवचन लोकाचारक मौखिक अभिलेख थिक।' अभिलेख वस्तुनिष्ठताक वस्तु होइत अछि। प्रेमगीत जकाँ ओहि ठाम धरती छोड़ि क' आसमान मे गगनविहार नहि कयल जा सकैत अछि। एकठाम भारद्वाज जी डाकवचन कें संवादकाव्य कहैत छथि। तकर कारण बतबैत छथि जे 'सम्बोधनक प्रयोग ओकर संवादात्मकताक प्रमाण थिक। सम्बोधन पारिवारिक आ सामाजिक दृष्टिकोणक परिचायक थिक।' डाकवचन मे अनेक सम्बोधन आयल अछि—पत्नी, मीत, रानी, किसान सँ ल' क' राजा धरि कें ठाम-ठाम सम्बोधित कयल गेल छैक। निश्चिते ई सामाजिक सरोकारक फलस्वरूप अछि। मुदा तें एकरा 'संवादकाव्य' कहल जाय तकर आवश्यकता नहि देखाइत अछि, कारण दूतकाव्ये जकाँ संवादकाव्यक सेहो एक प्रबन्धात्मकताक माँग रहैत अछि जकर डाकवचन मे अभाव अछि। ई शुद्ध क' क' मुक्तक स्वभावक रचना थिक।

अपन वस्तुनिष्ठताक कारण डाकवचन मिथिला मे शास्त्रक कोटि मे परिगणित भेल।'कहथि डाक गोआर' कहैत वचन सब मे बहुत आराम सँ पैघ-पैघ शक्तिशाली बात सब कहि देल गेल अछि। अपन अस्मिताक प्रति ओतय एक सम्मान-भाव छैक तें शिष्टसमाजक समानान्तर अपन बात रखबा मे कोनहु कुण्ठा नहि छैक, ने भय ने रोच। सब सँ पैघ बात तँ ई थिक जे मैथिली मे नव-नव शब्द गढ़बाक, नव देसी नाम चलेबाक, अभिव्यक्ति-शैली मे नवीनताक स्फुरण भरि देबाक चेष्टा मे डाकवचन अनुपम अछि। एहि ठाम ग्रह सभक मैथिली नामकरण कयल गेल अछि जतय शनि कें खोड़ (विकलांग), बुध कें राउत, सोम कें बोड़, रवि कें तीख, शुक्र कें कान कहल गेल अछि। तहिना राशि सब मे सँ मीन कें मच्छ, मेष कें भेड़ा, वृष कें बलदा (बड़दा) कहल गेल अछि। डाकवचनक एहि प्रवृत्तिक व्याख्या करैत पंडित गोविन्द झा लिखलनि अछि—'माछ कें सर्वजनप्रसिद्ध 'माछ' नहि कहि 'मीन' कहब कोनो व्यावहारिक आवश्यकता नहि, भाषिक विलास थिक, अपना कें सामान्य लोक सँ उत्कृष्ट बुझयबाक साधन थिक, वा शास्त्र कें सामान्य लोकक हेतु दुष्प्रवेश्य बनाए ओहि पर एकाधिकार स्थापित कएने रहबाक चेष्टा थिक। लगैत अछि, डाक एही कुप्रथाक अन्त करक हेतु लोकक भाषा मे ग्रहादिक नब-नब नाम चलएबाक प्रयास कयलनि।'[19]

भाषागत नवाचारक आओरो कतोक प्रयोग सब डाकवचन मे आयल अछि। संस्कृतहु मे पौराणिक आख्यान सभक आधार पर ग्रहादिक नामकरणक परंपरा रहल अछि, तहिना संक्षेपाक्षर बनेबाक सेहो प्रवृत्ति रहल अछि। डाकवचन एहि काज कें भिप तरहें, भिप विधान सँ करैत अछि। विद्वान लोकनि एकरा मैथिलीक शक्तिमत्ताक रूप मे देखैत छथि, जकर अद्भुत भंडार डाकवचन थिक। पंडित गोविन्द झा अपन लेख मे एहि सभक अनेक उदाहरण देलनि अछि। एक टा वचन मे, कोन दिन केश कटाबी तकरा बारे मे कहल अछि—'केस कटाबी बापू-पूते, नहि कटाबी बापू-पूते।' एहि ठाम पहिल बाप-पूत भेल सोम आ बुध, दोसर बाप-पूत भेल शनि आ रवि। व्रतक क्रम बतबैत एकठाम हरिशयन एकादशी कें 'सुत्ता', देवोत्थान एकादशी कें 'उट्ठा', पार्श्वपरिवर्त्तन एकादशी कें 'पाँजरमोड़ा', कृष्णाष्टमी कें 'जनमल छोड़ा', शिवरात्रि चतुर्दशी कें 'बतहाक चौदह' आ महाष्टमी कें 'बतहीक आठ' कहल गेल अछि। प्रतीकाक्षरक प्रयोग मे सेहो प्रचुर नवीनता छैक। उत्तम तिथि बतबैत एक ठाम कहल गेल अछि—'दुतिया तृतिया पासा एगारह/ तिथि कें उत्तम जानि बिचारह।' एहि ठाम 'पासा'क अर्थ थिक पा=पाँचम, सा=सातम। कन्यादानक मासक सूची देल गेल अछि—'मामा फाबै जेठ अखाढ़।' सुनबा मे लगैत अछि जेना मामा कें जेठ-अखाढ़ नीक लगैत होइन, मुदा मा=माघ, मा=मार्ग, फा=फागुन, बै=बैसाख अर्थ थिक। केरा रोपबाक उचित समय बतबैत एकठाम कहल गेल छि—'भदबा सीमी बारि/ केरा रोपी दिन बिचारि।' एहिठाम 'सीमी'क अर्थ अछि, जाहि तिथिक अंत मे 'सी' वा 'मी' अबैत हो। जेना—एकादशी, द्वादशी, सप्तमी, अष्टमी आदि। एहिठाम प्रतीकाक्षरक रूप मे शब्दक पहिल अक्षर कें नहि ल' क' अंतिम अक्षर कें लेल गेल अछि, जे अभिनव प्रयोग थिक। पंडित गोविन्द झा लिखलनि अछि—'लोकक भाषा कें, विशेषत: मैथिली कें शास्त्रीय व्यवहार मे सभ सँ पहिने के अनलनि एहि बातक अन्वेषण जँ इतिहास मे करैत छी तँ हमरा इएह लोकरत्न डाक भेटैत छथि। हिनका सँ पूर्व सिद्ध सन्त लोकनि लोक-प्रचलित भाषाक प्रयोग अपन धार्मिक साधनाक विषय मे कयने छलाह, परन्तु ओकरा शास्त्रीय विषय नहि कहि सकैत छी।'[20]

लिखित बनाम मौखिक

डाकवचनक अनेक पाँती ऊपर उद्धृत कयल गेल। एहि वचन सभक मैथिली आइ बाजल जाय बला मैथिली थिक। 'आइ' के समयविस्तार एक शताब्दी धरि मानि

सकैत छी। ग्रियर्सन जे उद्धरण सब अपन पुस्तक सब मे देने छथि वा संग्रहकर्त्ता लोकनि जे पाठ अपन संकलन मे प्रकाशित करौलनि अछि, रत्ती भरि फर्क कतहु महसूस होइतो ई आजुक मैथिली थिक। एकर जँ बिल्कुल अपडेट वर्सन देखय चाही तँ गामघर मे जे आइ डाकवचन मौखिक रूप सँ प्रचलित अछि तकरा देखल जा सकैत अछि। सूक्ष्मतापूर्वक जँ अवलोकन करी तँ एहू मे किछु फर्क पाओल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनि लग मे चौदहम शताब्दी सँ ल' क' एकैसम शताब्दी धरिक डाकवचनक प्रचलित रूप उपलब्ध अछि। 2012 मे मोहन भारद्वाजक 'डाक-दृष्टि' प्रकाशित भेल अछि जाहि मे ओ किछु चुनौटा वचन परिशिष्ट मे प्रकाशित करौलनि अछि। एकरा आजुक मैथिली मानल जा सकैत अछि, यद्यपि कि भारद्वाजो जी कैक ठाम संग्रहकर्त्ता लोकनिक पाठ पर निर्भर भेलाह अछि। सब सँ पुरान नमूना डॉ. शशिनाथ झा द्वारा संपादित 'डाकवचन-संहिता'क भूमिका मे आयल अछि। ई वचन डॉ. झा चंदेश्वर ठाकुर (लगभग 1325 ई.)क 'कृत्यचिन्तामणि' सँ उद्धृत कयने छथि। वचन अछि—

खोला कुजा जाहेरि संगा
ताहेरि कोटि न करिवर रंगा
जहा होसइ इहेरि दसा
ताहि पर णीक न करबि आशा।

पूर्व मे चर्चा आबि चुकल अछि जे एहि वचनक जानकारी पं. जीवानन्द ठाकुर कें सेहो छलनि, मुदा स्पष्ट प्रमाणक अभाव मे एहि वचन कें तथा एकर अतिरिक्त दू गोट आरो वचन कें ओ अपन पुस्तक 'मैथिल डाक' मे शामिल नहि केलनि। मुदा, संदेह पूरा छलनि जे वचन डाकहिक थिक, तें एकर उल्लेख पुस्तकक भूमिका मे करब नहि बिसरलाह। एहि पुस्तकक प्रकाशनक पचास वर्ष बाद डॉ. शशिनाथ झा जखन 'डाकवचन-संहिता' संपादित करैत छलाह, ठीक यैह काज ओहो केलनि। भूमिका मे तीनू वचन उल्लिखित केलनि। एक टा जे स्पष्ट अन्तर दुनू विद्वानक बीच पबैत छी, डॉ. झा स्पष्ट रूप सँ लिखलनि—'आठम शताब्दीक 'भृगुसंहिता'क रचयिता भृगुऋषि भेलाह जिनक लोकभाषा (अवहट्ठ) मे निबद्ध किछु वचन सान्धिविग्रहिक चण्डेश्वर ठाकुर 'कृत्यचिन्तामणि' मे उद्धृत कयने छथि।'[21] डॉ. झाक मान्यता स्पष्ट छनि जे ई भृगुऋषिक रचना छियनि, डाकक नहि। तखन ओ अपन पुस्तक 'डाकवचन-संहिता'क भूमिका मे एकर उल्लेख किएक केलनि? केवल एहि ठामक लोकभाषा मे शास्त्रीय तथ्य पर कविता बनेबाक परम्परा पहिनहि सँ छलैक आ तकर विस्तार मुखामुखी व्यवहार मे मिथिला मे प्रचलित रहैक। देखबाक चाही

जे 'मैथिल डाक'क संकलयिता पं. जीवानन्द ठाकुर एहि पर की कहैत छथि! पहिल बात तँ ई जे जाहि भृगुसंहिता, क्षपणक जातक आ कापालिक जातकक उद्धरण देल गेल अछि से अद्यावधि कतहु उपलब्ध नहि होइत अछि। तें, ई निर्णय करब कठिन जे ई सब ग्रन्थ तत्कालीन मैथिली अवहट्ठ मे मूल रूप सँ सर्वांगत: लिखल गेल छल आ कि एकरहु लेखक लोकनि कोनो आन स्रोत सँ अवहट्ठक ई पाँती सब ल' क' उद्धृत मात्र कयने छलाह। पं. जीवानन्द ठाकुर लिखलनि: 'यदि दोसराक पद सब थीक, तखन नियमानुसार रचयिताक नाम उपादान किएक नहि केलनि? यदि एकरा भ्रम मानी तँ ककर? की क्षपणक जातककारक? की म.म. चण्डेश्वरक? अथवा लेखकक (लिपिकार)क? एहि सब प्रश्नक समाधान तावत धरि संभव नहि यावत धरि ई सब ग्रन्थ नहि भेटय। परंच एतबा स्पष्ट अछि जे विषय ओ भाषा दुनू इत्यादि वचन डाकहिक समान बुझना जाइत अछि।'[22]

एहि सब पक्ष पर विचार करबाक बाद पं. ठाकुर अपन निष्कर्ष देलनि: 'एतबा निर्विवाद सिद्ध अछि जे तेरहम शताब्दीक आदिभागक रचना कृत्यचिन्तामणिअहु सँ पहिलुका अवहट्ठ मे ज्योतिषक अनेक रचना प्रामाणिक रूपें मान्य छलैक आओर डाक ओहि अवहट्ठ लेखक मे सँ एक छलाह।' (उप./ पृ. 44)

उपर्युक्त उद्धरणक बाद अगिला जे प्राचीन उद्धरण भेटैत अछि, से एक सौ वर्ष बाद, महाकवि विद्यापतिक पुत्र हरपति ठाकुर (1430 ई.)क 'व्यवहारप्रदीप' नामक ग्रन्थ मे। एहि मे तत्कालीन मैथिलीक अवलोकन कयल जाय। प्रसंग थिक जे नववस्त्र आ आभूषण धारणक लेल कोन समय उत्तम होइत अछि। डाकक वचन छनि—

अस्सन रेवय अवर घनिष्ठा, हस्त आदि कए पांच नखत्ता
एकरा उत्तर दुइ गुरुमन्ती, कापल परिहह, न करह भन्ती
संखा सोना परिहह रन्ता, बरख सय एक जीबओ कन्ता
पुष्य पुनर्वसु परिहरह, रोहिणि पालह वज्ज
तीनि उत्तर परिहरह, जह भतारे कज्ज।।

'ग्रामवास-विचार' ग्रन्थक लेखन-काल डॉ. शशिनाथ झा 1500 ई. निर्धारित कयने छथि। 'अत्र डाक:' कहि क' डाकक ई वचन ओहिठाम उद्धृत भेल अछि—

उत्तरे आगत कहिहइ थीर, दच्छिन कुसल बहए बलवीर
पुव्वे दिगे काज निसेथ, पच्छिम दिशा तहिखने खेद।

एकर 75 वर्षक बाद म.म. शुभंकर ठाकुर रचित 'तिथिद्वैध-निर्णय' मे 'सुखरात्रि-विचारे डाक:' कहि क' डाकवचन उद्धृत कयल गेल अछि—

स्वाती दीआ जमाो बरए, बिसाखा खेलए गाए

अवसओ नरवइ जुज्झिहइ, अप महग्घा जाए

(स्वाती नक्षत्र मे जँ दीपावली पड़य, आ पखेब (गोक्रीड़ाक पर्व) विशाखा नक्षत्र मे पाबय, तँ अवश्ये राजा युद्ध लड़बा लेल बाध्य होथि आ अप महग भ' जाय।)

विक्रमोर्वशीय (कालिदास)क टिपौट मे तालपत्र पर जे डाकवचन भेटल अछि, तकर प्रतिलिपि-काल डॉ. झा 1600 ई. निर्धारित केलनि अछि। एहि मे जे डाकवचन उद्धृत अछि तकर प्रसंग थिक जे घरक लग मे कोन-कोन गाछ कोन दिशा मे नहि हेबाक चाही—

पिप्पर पाकड़ि पए घर कांट, पच्छिम लोहित फूल नहि आंट
वायव तेत्तरि उत्तर तार, इसानक बदरी पुरतह काल।

1650 ई.क लिखल 'रत्नकलाप' (विष्णुदेवकृत) मे डाकक ई वचन उद्धृत भेल अछि—

नाऊ भेटए जबे, काम कराओब तबे।

(केश कटेबाक शुभ मुहुर्त्त मे यदि नौआ नहि भेटि पाबय, तँ जखनहि भेटि जाय तखनहि कटबा ली।)

1700 ई.क ग्रन्थ 'ज्यौतिषशिशुबोध' (कलाधरकृत) मे उद्धृत डाकवचनक भाषा नमूना देखी—

उत्तर तीनि हस्त भउ चारि, दुइ चितरा लए कन्यकुमारि
दुइ चितरा स्वाती समतूल, तीनि विसाखा तूलमतूल।

एहि तरहें हमरा लोकनि चारि-पांच शताब्दीक मैथिली भाषा-विकासक स्थिति देखि सकैत छी। एहि सब मे सँ बहुतो वचन एहन अछि जे लोकप्रचलन सँ आइ बाहर भ' गेल अछि। एहि संबंध मे पहिनहि चर्चा भ' चुकल अछि जे समाजक युगीन आवश्यकतेक वचन वा गीत जीवित रहैछ, अन्यथा लुप्त भ' जाइत अछि। चारि सौ वर्ष पहिनेक लिखल वचन, जे कि आइयो प्रचलन मे हो, ओकरा देखि हमरा लोकनि लिखित भाषा बनाम मौखिक भाषाक फर्क बूझि सकैत छी। मुदा तें जँ ई कहल जाय जे जाहि जाहि डाकवचनक उद्धरण प्राचीन निबन्धग्रन्थ सब मे भेटैत अछि वैह टा मात्र 'विशुद्ध डाकवचन' थिक, पूर्णत: अनर्गल आ दुराग्रहपूर्ण अछि। एकरा हास्यास्पदे कहल जायत जे प्राचीन उदार पंडित लोकनि शास्त्रीय मतक प्रमाण मे जतय लोकमतक उद्धरण आदरपूर्वक दैत छलाह ओतहि आधुनिक पंडित लोकनि उद्धरण टा कें विशुद्ध आ लोकमत कें अशुद्ध मानबाक दुराग्रह सँ भरल अछि। की एकरा आधुनिकताक एक दोष नहि कहल जेतै जे उदारताक स्थान पर हमरालोकनि आर अधिक संकीर्णे भेलहुँ अछि!

की डाक मैथिली समाजक नहि छलाह?

पं. जीवानन्द ठाकुरक पुस्तक 'मैथिल डाक' एही भ्रमक निवारणार्थ प्रकाशित भेल छल जे डाक मैथिल छलाह। मैथिल विद्वानक ओहि पीढ़ीक यैह मान्यता छलनि जे डाक एक व्यक्ति छलाह। बंगाली लोकनि डाक कें बंगाली घोषित केलनि। आसामक विद्वान हुनका असमिया आ हिन्दीक विद्वान लोकनि हुनका कपौज आ गोरखपुरक निवासी घोषित केलनि। एहि घोषणाक एकमात्र आधार लोक मे प्रचलित दंतकथा छल, जाहि मे सँ कतहु ओ वराह मिहिरक पुत्र तँ कतहु पौत्र, कतहु जमायक रूप मे कहल गेलाह। एतबा धरि साम्य सबठाम देखल गेल जे ओ जातिक अहीर वा गोआर छलाह। डाक कें उत्तरप्रदेशक निवासी सिद्ध करबाक उत्साह पं. रामनरेश त्रिपाठी मे एतेक भेलनि जे ओ लिखलनि: 'घाघ की कहावतों का जितना प्रचार अवध और कपौज के आस-पास है उतना युक्तप्रान्त या बिहार के किसी जिले में नहीं है।' एकर खंडन करैत म.म. उमेश मिश्रक कथन भेलनि जे 'जितनी कहावतें श्री त्रिपाठी जी ने प्रकाशित की हैं उनसे अधिक नहीं तो कम भी नहीं, कहावतों का संग्रह मिथिला में विद्यमान है।' (1931 मे प्रकाशित पं. रामनरेश त्रिपाठीक संपादित पुस्तक 'घाघ और भड्डुरी'क मान्यताक खंडन मे म.म. उमेश मिश्रक लेखक अंश)।

डाक, जँ क्यो एक व्यक्ति छलाह, तँ सुनिश्चित रूप सँ ओ मिथिलाक निवासी रहथि, अपन एहि मान्यताक प्रमाण मे पं. जीवानन्द ठाकुर एक महत्त्वपूर्ण बात कहलनि जे मध्यकालीन मिथिलाक शास्त्रीय निबंध-ग्रन्थ सब मे डाक लोकप्रमाणत्वेन उद्धृत कयल गेलाह। 'डाकक अतिरिक्त प्राय: केओ दोसर भाषा प्रवक्ता कें मैथिल निबन्ध मे ई स्थान नहि भेटल छनि। डाक जाहि ठाम मिथिला मे एहि रूपें विद्वत्समाज मे प्रमाणरूपें उद्धृत भेलाह अछि—ओहि ठाम दोसर देशज निबन्धकार लोकनि हिनका कतहु प्रमाणत्वेन उल्लेख नहि केलनि अछि। ई एक एहन प्रमाण अछि जाहि सँ डाकक स्थितिक संबंध मे खूब प्रकाश पड़ैत अछि।' (मैथिल डाक/ जिज्ञासा/ अंक 2-1995/ पृ. 38) प्रश्न अछि जे जँ डाक मैथिल छलाह तँ बंगाल, आसाम, अवध, राजपुताना आदि मे ओ कोना पहुँचला? म.म. उमेश मिश्र कहैत छथि: 'वह किसी देश में उत्पप हुए होंगे, विशिष्ट विद्वान होने के कारण अनेक प्रदेशों में उन्होंने भ्रमण किया होगा।' जतय-जतय गेल हेताह, ततय-ततय अपन वचन भाखने हेताह। ओहि-ओहि ठामक लोक अपन-अपन भाषा-संस्कारक हिसाबें अपना चलन मे ओकरा शामिल क' लेने हेताह। अंतर केवल एतबे अछि जे एना कहियो एक बेर नहि भेल होयत। अनेक शताब्दी मे अनेक व्यक्ति भेल हेताह, मिथिला मे आ मिथिला सँ बाहरो, जे अपन वैज्ञानिक अवलोकन कें कविता मे ढालि लोक मे पहुँचौने हेताह। पं. जीवानन्द ठाकुर

एकर पुष्टि मे एक आरो तथ्य लिखैत छथि: 'आहयो काल्हि मिथिला मे बहुत पंडितकल्प व्यक्ति भेटैत छथि जे घूमि घूमि क' केवल डाकवचनक सहायतें डीह गुनि वा दिन गुनि कार्य कय जीवनयापन करैत छथि।'[23]

मिथिला मे डाकवचनक स्वीकार्यता कतेक रहल, तकर पता एक एही तथ्य सँ लागि जाइत अछि जे आन प्रान्त मे जतय एहि कविता कें 'कहावत' कहल जाइत अछि, मिथिला मे ई 'वचन' कहबैत अछि। वचन अर्थात ऋषि-मुनिक कथन। पं. ठाकुर लिखनहु छथि: 'आब ई निर्विवाद भय गेल जे मिथिला मे आइ सँ नहि, कैक सय वर्ष सँ डाकक समादर पैघ-पैघ दैवज्ञक बीचहु मे ऋषितुल्य भेल अबैत छनि।'[24] अन्तर एतबे छनि जे मैथिली कविता मे वचनकविताक एक समृद्ध परम्परा रहल अछि जाहि मे अनेक अनाम कवि लोकनिक योगदान अनेक शताब्दी सँ होइत आबि रहल अछि। जँ क्यो एकरा संस्कृतशास्त्रक लोकभाषा-अनुवाद मानैत छथि तँ एकरा पाछू सोचक यैह ग्रन्थि छैक जे ज्ञानक बात केवल संस्कृते टा मे लिखल होयब संभव थिक, ठीक तहिना जेना कोनो ज्ञानी मनुष्यक जन्म ब्राह्मणेतर समाज मे नहि भ' सकैत अछि। एक। दोसर, ई देखब ई लोकनि बिसरि जाइत छथि जे संस्कृतशास्त्रक संग डाकवचनक केवल समते टा नहि छैक, विषमतो बहुत छैक। ओतय धर्म एक व्यवहारक रूप मे आयल अछि, व्यवसायक रूप मे नहि, आ ने आतंककारी दवाबक रूप मे। दृष्टि वस्तुवादी छैक आ पयर यथार्थक धरती पर सँ कखनहु नहि उखड़ैत छैक।

सन्दर्भ

1. डॉ. सुभद्र झा/ फॉरमेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज/ पृ. 36
2. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 78
3. मोहन भारद्वाज/ डाक-दृष्टि/ पृ. 25
4. रास बिहारी लाल दास/ मिथिलादर्पण/ पृ. 178
5. पं. कपिलेश्वर झा/ डाकवचनामृत/ भूमिका
6. काञ्चीनाथ झा किरण/ प्रकाशकीय वक्तव्य/ मैथिल डाक/ पं. जीवानन्द ठाकुर
7. 'मैथिल डाक'क भूमिका-लेख मे पं. जीवानन्द ठाकुर।
8. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 84
9. पं. गोविन्द झा/ जिज्ञासा/ अंक 2 (1995)/ पृ. 25,
10. मोहन भारद्वाज/ डाक-दृष्टि/ पृ. 18
11. हजारीप्रसाद द्विवेदी/ रचनावली/ खंड 3/ पृ. 183
12. पुरुषोत्तम/ घाघ-भड्डरी का विज्ञान-संप्रेषण/ पृ. 7
13. प्रो. जयदेव मिश्र/ मैथिली साहित्यक रूपरेखा (2006)/ पृ. 5
14. मोहन भारद्वाज/ डाक-दृष्टि/ पृ. 9
15. प्रो. जयदेव मिश्र/ उपर्युक्त/ पृ. 7
16. मोहन भारद्वाज/ डाक-दृष्टि/ पृ. 92-93
17. पं. गोविन्द झा/ जिज्ञासा/ अंक 2 (1995)/ पृ. 24
18. मोहन भारद्वाज/ डाक-दृष्टि/ पृ. 93
19. पं. गोविन्द झा/ जिज्ञासा/ अंक 2/ पृ. 26
20. उपर्युक्त/ पृ. 23
21. पं. शशिनाथ झा/ जिज्ञासा/ अंक 3 (1996)/ पृ. 88
22. मैथिल डाक/ सं. जीवानन्द ठाकुर/ जिज्ञासा/ अंक 2 (1995)/ पृ. 44
23. उपर्युक्त/ पृ. 40

24- उपर्युक्त/ पृ. 40

उक्तिकविता : विडम्बना कें देखबाक मैथिल आँखि

मैथिलीक लोकसाहित्य मे, डाकवचनक बाद दोसर नंबरक विधा उक्तिकविता थिक जकरा शिष्टसमाज ग्रहण केलक। ग्रहण केने होयत तँ अपनो किछु प्रभाव अवश्ये ओहि रचना सब पर छोड़ने होयत। डाकवचनक उद्धृत पाठ (ज्योतिषक पांडुलिपि सब मे) आ चलित पाठ मे जे अंतर छैक तकरा देखने सँ लगैत छैक जे प्रभाव सत मे छोड़ल गेल छल। पं. गोविन्द झा, जे डाक कें एक व्यक्ति मानैत छलाह, अपन अध्ययनक अंत मे लगभग निर्णायक अंदाज मे ई लिखलनि: 'हम तँ साहसपूर्वक कहब जे मैथिली मे ज्यौतिष विषयक जे कोनो रचना होइत गेल ताहि सभ मे डाकक नाम जोड़ाइत गेल आ एहि प्रकारें डाक एक व्यक्ति सँ एक परम्परा भ' गेलाह।'[1] सोचि क' देखल जाय तँ एहि कथनक आशय यैह अछि जे शिष्टसाहित्य ओकरा पचा नहि सकल। आ, एहि तरहें लोकसाहित्यक लग ओ वापस आबि गेल आ एहि तरहें ओकर विजय भेलैक। लोक-साहित्यक विजय एहि बात मे निहित छैक जे ओकर पाठ सब कें स्वच्छन्द, निर्द्वन्द्व छोड़ि देल जाय, आवश्यकताक अनुरूप लोकसमाज ओहि मे परिवर्तन क' लेत। ओकर मुख्य उद्देश्य छिऐक लोकक काज औनाइ आ ककरो जीवन मे शामिल भइये क' ओकर काज आओल जा सकैए। हम-अहाँ लाभान्वित एहि तरहें भ' सकै छी जे ओकर एक पाठ जे अहाँ धरि पहुँचि सकल, तकरा संग्रहीत क' ली। तकरा अगिला पीढ़ी धरि पहुँचाबी। एहि सँ हमरा लोकनि लुप्तीकरण प्रक्रिया कें भने कने कम क' रहल होइ, मुदा लोकसाहित्यक फेनोमेना मे ई लुप्तीकरण एक सहज अवस्था छैक। मुद्रित साहित्य एहि मे बाधा पहुँचबैत अछि तें ओ लोक साहित्यक लेल त्याज्य मानल जाइछ, पहिनहि कहल जा चुकल अछि।

डाकवचनक बाद, उक्तिकविता दोसर विधा थिक जकरा शिष्टसमाज अपनौलक। ध्यान रखबाक बात थिक जे समाज अपनौलक, मुदा तखनहु, साहित्य नहि। साहित्य जँ अपनौने रहैत तँ संभव जे मैथिली कविताक इतिहास आइ दोसर तरहें लिखल गेल भेटैत। कम-सँ-कम बांग्ला वा उड़ियाक बराबर तँ जरूर। अपनेबाक बदला

एकरा ओ लोकनि फकड़ाक नाम देलनि, जे तहिना निकृष्ट मानल गेल अछि जेना महामहोपाध्यायक सामने मे छठुआ डोम। लोकहृदय मे की चलि रहल छलैक से ओम्हर लोकसाहित्य मे आबि रहल छल, फकड़ा मे आबि रहल छल। अद्‌भुत ई छल जे रचयिता आ प्रेमी लोकनि सेहो एकरा फकड़े कहि रहल छला, मुदा पंडित लोकनिक कहब घृणामूलक छल। विशेष विवरणक लेल डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क लेख 'फकड़ा' पढ़बाक चाही।[2]

शिष्टसमाज जखन लोकसाहित्यकक कोनो विधा कें ग्रहण करैत अछि, तँ एकर तात्पर्य थिक जे ओ अपन जीवन मे ओ बरतैत अछि आ अपना जँ किछु रचनाशीलता रहलैक तँ ओकर विकास मे अभिवृद्धि करैत अछि। डाकवचन मे एहि प्रभाव कें हमरा लोकनि ज्योतिषशास्त्र-केन्द्रित होइत देखैत छी—ज्योतिषी लोकनि संस्कृत श्लोकक अनुवाद उठा डाकक नाम पर चला देलखिन जाहि दिस गोविन्द झा अपन लेख मे स्पष्ट संकेत केलनि अछि।

उक्तिकाव्य मे जे ई प्रभाव आयल अछि जे एकदम जगजगार अछि। तकर कारण थिक एहि विधाक स्वभाव। एकरा शास्त्र सँ किछु नहि लेना-देना। पंडितो सँ नहि। कोनहु धार्मिक शिष्टाचारो सँ नहि। अपन जीवन गुदस्त करबाक क्रम मे जे लोक-समाज संपर्क मे आयल, तकरा संग चर्चा मे, अपन बात कहैत, एक अजगुत छटाक बात कहि जायब जकरा श्रोता यदि मोन राखि लेब' जोग बुझलक तँ ई प्रचलन मे आबि जाइछ। स्वाभाविक थिक जे ओहि मे ओ समाज आयत जे एकरा बरतलक। तत्कालीन वर्चस्व, तत्कालीन प्रतिरोध, उचित आ अनुचितक विवेक, दुनियाक गति आ मति पर, भूगोल आ अर्थशास्त्र पर, अपन बेबाक राय, स्पष्ट मंतव्य देबाक काज करब एहि विधाक स्वरूप अछि। एकर सामान्य लक्षण थिक वक्रोक्ति। सब बात ओहि उक्तिये मे रहैत छैक, आ तकर सौन्दर्य ई जे ओ 'वक्र' रहैत छैक। मने ठीक ओहन नहि जेना कि कहल जेबाक रेबाज छैक—अर्थात् सरलोक्ति मे, ताहि सँ किछु अलग, तें वक्र।

वक्रोक्ति आ सरलोक्ति कोना अपन प्रयोजन आ अपन स्वर धरि मे एक दोसर सँ अलग होइछ तकर दृष्टान्त लेल दू टा फकड़ा देखल जाय—

1. *कोकटिक* धोती पटुआ साग
   तिरहुति गीत बड़े अनुराग
   सुन्दर अमौट फोका मखान
   खिरसा के लड्डुबी पकवान
   भावभरल पर तरुणी-रूप
   एतबे तिरहुति होइछ अनूप।[3]

2. बाबूक धिया-पुता बाधबोन बौआय,
बौआसिनक धिया-पुता मचिया बैसि अगराय।[4]

एहिठाम, स्पष्ट अछि जे पहिल फकड़ा शिष्ट समाज सँ आयल अछि जाहि मे मातृभूमि तिरहुत के प्रशंसा कयल गेल छैक। संभव जे एहनो लोक होथि जिनका एकर रचयितोक नाम बूझल होइन, मुदा एकर संकलयिता डॉ. कमलकान्त झा कें नहि बूझल रहनि। एहि प्रशंसा-गान मे तिरहुतक नारीक सेहो रूप आयल अछि—भावभरल, आ तरुणी-रूप। सुखक पर्याप्तता देखबैत छैक जे नारी ततेक सुखी अछि जे सदा ओकर चेहरा पर तरुणाइ विद्यमान देखल जा सकैत अछि। दोसर फकड़ा सेहो ठीक एही समाजक नारीक विषय मे अछि भावभरल तरुणी रूपक विषय मे, मुदा से दोसर कोण सँ देखल गेल दृश्य थिक, दोसर पक्ष सँ विचारल तथ्य थिक। बाबू कें नित नवीन भोग चाहियनि। ताहि लेल खवास आदि समुदायक ढेर तरुणी हुनका प्रताप सँ लभ्य छनि। बौआसिन बेचारीक लेल हुनका लग कनेको दरेग नहि छनि, कारण ओ बाबू हिनका संग बंधि क' नहि रहि सकैत छथि। सरलतम समाधान अनाचार छैक वा पुरुखक 'राक्षसजाति' सँ बदला, जे कहल जाय, अनेको खवास बहुआसिन कें सेहो उपलब्ध छनि। फल छैक जे बाबूक संतान खवासिन लोकनि जनमा रहल छथि आ खवासक संतानक बहुआसिन बेचारो। यथार्थक एक पक्ष सँ दोसर पक्षक जे हुलकी अबैत छैक तकरा हमरा लोकनि एतय देखि सकैत छी। हमरा लोकनि अनुभव क' सकैत छी जे सत्यक अभिव्यक्ति लेल कटुता चाहबे करी। प्रियं ब्रूयात् बला सत्य वास्तव मे सत्य होइतहु अछि कि नहि, कहब मुश्किल। अन्यायपूर्ण जँ व्यवस्था रहतैक तँ ओकर प्रतिरोधक स्वर ततबे कटु हेतैक। एहि स्वर कें जे विधा सम्हारि सकैत अछि से थिक फकड़ा। शिष्ट साहित्यकार कें भला ई कोना ठीक लागि सकैत छनि? मुदा, एहि रचना कें अपने एहि बातक कोनो बेगरता नहि अछि जे बाबू एकर वार्ता लेथु। ओ तँ बस जखन जरूरति छैक ताबे अछि, जखन नहि रहतै तखन अपनहु नहि रहत।

मैथिली लोकोक्ति पर शोधकार्य क' चुकल डॉ. कमलकान्त झा लोकोक्तिक पर्यायवाची 'कहबी' बतबैत छथि। ओ अपन पुस्तक 'मैथिली लोकोक्ति: उद्भव ओ विकास' मे लोकोक्तिक विभिप प्रकार बतौलनि अछि—1. उपलक्षण अथवा मोहाबरा 2. सूक्ति 3. लौकिक न्याय आ 4. प्राज्ञोक्ति। ऊपर जे तिरहुतमहिमाक उक्ति उद्धृत भेल अछि, से हुनका वर्गीकरणक अनुसार सूक्ति थिक। एही विषयक हुनकर एक टा आर सूक्ति छनि—'सोतिक बेटी, ओलक टोंटी/ बिकयती तँ बिकयती नहि तँ गन्हयती।' एकर सन्दर्भ बिकौआ प्रथा सँ जुड़ल बुझाइछ। ओलक टोंटी कें शीघ्रे माटि तर नहि द' देल जाय तँ ओ नष्ट भ' जाइत अछि। सैह हाल सोतिक बेटीक बुझबाक चाही, से आशय अछि। प्राज्ञोक्तिक उदाहरण देलनि अछि—'गुदरी तँ उजरी भली, बेटी तँ सुनरी भली/ बेटा बुलन्ता भला, घोड़ा कुदन्ता भला।' मुदा एहू उक्ति कें डॉ. झा प्राज्ञोक्तियेक कोटि मे रखने छथि—'बड़का जाति बतियेने/ छोटका जाति लतियेने।' ओ किएक सूक्ति आ ई किएक प्रज्ञोक्ति तकर कोनो स्पष्ट सीमारेखा नहि बताओल गेल अछि। जखन कि ई प्राय: स्पष्ट अछि जे जँ लोकक उक्ति कोनो कवि द्वारा अधिगृहीत भ' क' तेहने विदग्धता आ संक्षेपीकरणक संग अभिव्यक्त होइत पुन: लोक मे वापस घुरैत अछि तँ सूक्ति वा सुभाषित कहबैत अछि। एहि मे रचनाक संग-संग रचनाकारोक महत्ता रहैछ, जखन कि कहबी वा फकड़ाक जाबन्तो विशेषता ओकर रचनहि मे निहित रहैत छैक, ओकरा पाछू कोनो स्पष्ट रचनाकार-व्यक्तिक सर्वथा अभाव रहैछ। 'प्राज्ञोक्ति' अलग सँ कोनहु होइतहु छैक कि नहि कहब मुश्किल। कारण, एकरहु संग वैह सूक्ति बला प्रक्रिया भेल रहैत छैक। लौकिक न्यायक उदाहरण देलनि अछि—'नंगटे नहाएब तँ गाड़ब की?' इहो कोना लौकिक न्याय, तकरो लेल कोनो तर्क नहि छनि। एतबे कहलनि अछि जे 'ओहि मे उचित एवं अनुचितक विचार कयल गेल छैक।' अन्तत: एही निष्कर्ष पर पहुँचलाह अछि जे वस्तुत: सूक्ति, प्राज्ञोक्ति एवं लौकिक न्याय तीनू लोकोक्तियेक विभिप रूप थिक। ठीक ओहिना जेना 'एक शरीर लेल दुइ बास/ खन बैकुण्ठ खनहि कैलास।' (पृ.126)

डॉ. रामदेव झा सूक्ति आ लोकोक्ति कें एकदम भिप-भिप मानलनि अछि आ तकर कारण ई बतौलनि अछि जे सूक्ति महापुरुष विचारक लोकनिक वचन होइत अछि जखन कि लोकोक्तिक रचयिता अज्ञात रहैत अछि। लोकोक्तिक ओ तीन गोट प्रभेद माननलनि अछि—1. कहबी 2. फकड़ा आ 3. लौकिक न्याय। कहबीक एक अपर नाम ओ उपलक्षण प्रस्तावित केलनि अछि, जखन कि सामान्यत: आनठाम उपलक्षण मोहाबरा कें कहल गेल छैक। उपलक्षणक दृष्टान्त मे ओ चन्दा झाक ई प्रसिद्ध पद उद्धृत केलनि अछि—'उपलच्छन संसारहि फैल/ झिटुकी सँ फुटि जाइछ घैल। उपलच्छन अछि जन कहबाक/ तिन तिरहुतिया तेरह पाक।' मोहाबरा कें एहि वर्गीकरण सँ ओ बाहरे रखलनि अछि आ एकरा लेल मैथिली नाम 'चतकार' प्रस्तावित केलनि अछि। चतकारक अर्थ थिक—बजबाक विसेख गुण, जे लक्ष्यार्थ-व्यंग्यार्थ-युक्त रहैत हो। मोहाबराक किछु उदाहरण अगराड़ी लागब (वा लगायब), आगि मूतब, गुबदी मारब, खेखनियां करब, धुरखुर नोचब आदि थिक। लौकिक न्यायक किछु उदाहरण अनोन बिसनोन, एकपिठिया, डोमाडिगरी, बिसुनबिलाड़ि, हड़ाशंख आदि थिक। कहबी कें तँ ओ बजबाक बिसेख गुण वा छवि-छटा कहलनि, मुदा फकड़ाक परिभाषा एहि तरहें देलनि अछि—'मैथिली मे ओहन परम्परित वा

कविकृत यथात्मक संरचना कें फकड़ा कहल जाइत अछि जाहि मे कोनो व्यक्ति, वर्ग, घटना, आचरण, स्वभाव इत्यादिक उपहास, कौचर्य, काकु, खिधांस कयल गेल रहैत अछि। व्यंग्य ओ कटाक्ष फकड़ाक मूल भाव रहैत छथि।'[5]

डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' अपन लेख 'फकड़ा' मे मिथिलाक एहि लोककविताक जे चित्र देलनि अछि, से एहि विधाक प्रकृति कें स्वत: स्पष्ट क' दैत छैक। हुनक पांच गोट उद्धरण देखल जाय—

1. 'ठेंठ समाज मे फकड़ो ओहने आदरपूर्ण स्थान रखैत अछि जेहन स्थान संस्कृत श्लोक कें पैघ लोकक समाज मे छैक। फकड़ो काव्ये थिक। जहिना मिथिलाक जीवनक पूर्ण परिचय पाबक लेल ब्राह्मण-क्षत्रिय सँ लए डोम-दुसाध धरिक जीवन-क्रमक अध्ययन आवश्यक तहिना मिथिलाक पूर्ण चित्र देखबाक लेल पण्डितक काव्यक संग-संग लोकसाहित्यक अध्ययन आवश्यक अछि। आ फकड़ा लोकसाहित्यक प्रमुख अंग थिक।'[6]
2. 'पण्डितक कविता चुनरी-पटोर, गहना-गुरिया, पसाहनि-असाहनि सँ सजल सांकर अन्तर मे बसनिहार बौआसिन थिकी तँ फकड़ा आडम्बरहीना, निर्मलहृदया, सत्यमयी, बाट-घाट, जंगल-झाड़ आदि प्रकृतिक विशाल क्षेत्रक अनुभव सँ भरलि मुनिकन्या थिक।'[7]
3. 'विद्यापतियोक कविता मे विषय एकेटा। स्त्री ओ पुरुषक आकर्षण संबंधी। विद्यापतिक परवर्ती कवि लोकनि हुनक परिपाटीक पालन मात्र करैत गेला। तें हुनका सभक पदक विवेचना करब अनावश्यक। फकड़ा मे विद्यापतिक काव्यक विपरीत मिथिलाक व्यापक समाजक चित्र अछि। जीवनक सभ अंगक विषय भेटैछ। समाजक संग साहित्यक घनिष्ठ संबंधक परिचय फकड़ाए सँ भेटैत अछि। फकड़ा ठेंठ शब्द, स्पष्ट अर्थ, सोझ विलक्षण छन्द, सभ किछु समाजक असली चित्र उपस्थित क' दैछ।'[8]
4. 'फकड़ा जाहि समाजक साहित्यक थिक तकर जीवनक्रम की छै? रहैक लेल एक टा गोहाल कि खोपड़ी। घरो तँ सोझका। ककरो एकोटा, ककरो दुओटा। चतु:शाल तँ नहिए। पहिरन बिष्ठी धरिया। ककरो धोती साड़ियो। मुदा विधिवत नहि। भोजन भेंट-सारुक, सातु-भूजा, रोटी-भात जखन जे जुरलै। कखनहु एक टुक्का, कखनहु एक कोन, कखनहु एक फेनी, कखनहु सौंसो।

   जे समाज अनावश्यको चारि टा घर बान्हैछ, गर्मिओ मे पांचो टुक कपड़ा पहिरैछ, पुरौना द' क' नौ तिमनक सचार लगाबैछ, तनिक साहित्यो मे पुरौना शब्द-पांति ढेर भेटत परन्तु फकड़ा मे व्यर्थ पाँती व शब्द नहि भेटत। एके पाँती मे अर्थ पूर्ण भ' गेलै तँ भ' गेल। पाँती मे मात्र वा अक्षरक संख्या निर्धारित नहि। जेहने कांच-कोचिल, उसिनल-पकौल भोजन तेहने भाषा-पद। मुदा, पोषकता तँ उसिनल-पकौल सन तरल-छौंकल मे नहि रहैत छैक। बर तरल दुखद भ' जाइछ। तहिना कहि सकैत छी जे पण्डितक बहुत काव्य तरल तरकारीक समान गुणहीने नहि अस्वास्थ्यकर भ' गेल अछि।'[9]
5. 'हमरा तँ दृढ़ विश्वास अछि जे वर्तमान ओ भावी निरपेक्ष तत्वान्वेषी लोकक दृष्टि मे फकड़ाक महत्व ओहिना बढ़त जेना गद्दी-मसलंग पर बैसल रहनिहार अर्कमण्यक अपेक्षा आगि-पानि, रौद-बसात मे परिश्रम केनिहार कर्मठ मनुष्यक बढ़ि रहल अछि।'[10]

एवंप्रकारें हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे फकड़ाक कते लंबा वितान छैक। हमरा लोकनि, पढ़ल-लिखल समाज यैह बुझैत छी जे ज्ञान पढ़नहि सँ होइत छैक आ जे शिक्षित नहि से ज्ञानियो नहि भ' सकैत अछि। शिष्ट साहित्यक समुच्चा दारोमदार एही विभ्रम पर टिकल छैक। मुदा शिक्षाक प्ररूप सब सँ बिल्कुल पाछां छूटि गेल ज्ञान सब मे एक टा प्रत्यक्षज्ञान सेहो होइत छैक आ एकर अभिज्ञता कैक बेर सब सँ भारी पड़ैत छैक। फकड़ा ठीक-ठीक ओही अर्थ मे 'कविता' थिक जेना कि आजुक युगक आधुनिक कविता कविता थिक। अपभ्रंश आ लोकवादी संस्कृतक मुक्तक सब जे मध्यकाल मे प्रकाशित भेल ओहि सब मे एहि 'फक्कड़ कविता'क पूर्वरूप के देखल जा सकैत अछि। फकड़ा कि सौंसे लोकोक्तिक जे मर्मस्पर्शिता आ विदग्धता छैक, सैह चकित करैबला छैक। शब्दावली व्यावहारिक भाषा मुदा शैली अलंकृत आ स्वरूप लयात्मक। बेसी कहबाक कनेको लोभ नहि, जेना कहबाक लेल कहबे नहि कयल गेल होइक, अपन आत्माभिव्यक्तिये टा उद्देश्य होइक। ई असल मैथिलजीवन थिक। मिथिलाक लोक उचितवक्ता, बजन्ता आ ठांहि-प-ठांहि होइत छथि, एहि तथ्यक प्रमाण उद्धृत करैक लेल आइयो हमरा लोकनि लग मे लोकोक्ति आ फकड़ा सँ बेसी स्पष्ट वस्तु दोसर नहि अछि। जतनपूर्वक पढ़ि-लिखि गेला तँ ओ केहन होइ छथि, एकर पता पण्डितक पुस्तक सब सँ पाबि सकै छी, रसज्ञ केहन होइत छथि से विद्यापति आदिक कविता बताओत। मुदा आलोचना कोना करैत छथि, ताहि कालक हुनकर व्यंग्य कते विदग्ध होइत छनि, नैतिकताक आंतरिक बल कोना हुनका एहन बलशाली बनौलकनि अछि जे बेढ़ब आचरण करैबलाक लेल ओ तीख व्यंगवाण चला सकैत छथि, निश्चये ई बल आन्तरिक सम्पपतासँ अबैत

छैक। ओ गरीब भ' सकैत छथि जखन कि श्रम करबा सँ कनेको नहि कनछियाइत छथि, तैयो। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे कतेको उद्देश्य आ आवश्यकतावश फकड़ा सब, लोकोक्ति सब बनैत गेलैक अछि। उपदेश, शिक्षा, ज्ञान आ सूचना—ई एकर मुख्य प्रयोजन रहलैक अछि। तें व्यवसाय, स्वास्थ्य, विधिनिषेध, राजनीति, आलोचना—ई सब विषयवस्तु यथावसर एहि मे जगह पबैत गेलैक अछि। यैह कारण थिक जे कतेको देशी-विदेशी अध्येता एकरा 'ज्ञानक संक्षेपीकरण', 'पैघ-पैघ अनुभवक छोट अभिव्यक्ति', 'पाण्डित्यक अंश', भौतिकवादक बीजगणित' आदिक रूप मे परिभाषित केलनि अछि। लोकोक्तिक औरदा कतेक होइछ, ताहि बारे मे प्रख्यात लोकविद् डिजरेलीक ई कथन प्रसिद्ध अछि जे 'सैकड़ो वर्षक बादो लोकोक्तिरूपी मानसिक उपस्कर मे धुन नहि लगैत अछि।' मुदा एकर जन्म कोना होइत छैक, एहि संबंध मे मोहन भारद्वाज लिखैत छथि—'लोकोक्तिक विश्लेषण सँ पता चलैत अछि जे स्नेह-प्रेमक अपेक्षा कुचेष्टा तथा कौचर्यक उक्ति बेसी अछि। एकर कारण अछि मानव-स्वभाव। रागाभिव्यक्ति तँ निश्छल होइत अछि। ओहि मे व्याजोक्तिक प्राय: अवसरे नहि छैक। किन्तु, द्वेष, स्पर्धा, निन्दा आदि भावक प्रकटीकरणक बेर मे मुँह टेढ़ भ' जाइत अछि। व्यंग्योक्ति स्वत: बहराए लगैत अछि। देखल-सुनल बात अछि जे गाम-घर मे जखन केओ खिसियाइत छथि, उत्तेजित होइत छथि तखन अपन कथन कें पुष्ट करबाक लेल लोकोक्तिक प्रयोग करैत छथि। एहि तरहें मानव-मनक प्रकृति भाषा प्रवृत्तिक निर्धारक भए जाइत अछि। लोकोक्तिक जन्म एहने मानसिकता मे होइत अछि। लोकोक्ति मानवीय स्वभावक शाब्दिक परिणति थिक।'[11]

मैथिलीक एहि लोककविता-प्ररूपक संकलनक दिस बहुत पुरान समय सँ अध्येता लोकनिक ध्यान जाइत रहलनि अछि। जेना कि आन कोनो मैथिली कविता-प्ररूपक संकलन आ विश्लेषण मे ग्रियर्सनक योगदान अतुल्य अछि, हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिली लोकोक्ति, कहबी, फकड़ा आ लघु कथा-काव्यक पहिल संकलन सेहो ग्रियर्सनें प्रकाशित करौलनि। अपन प्रख्यात पुस्तक 'मैथिली क्रिस्टोमैथी एंड वोकेबलरी' (एशियाटिक सोसाइटी, 1881-82) मे जे शब्दकोश ओ देलनि, ताहि मे शब्द सभक अर्थ-संगति तकबाक लेल एहि सब प्ररूपक उपयोग केलनि। हुनकर कोश मे तीन सौक करीब कहबी, फकड़ा आ लघु लोककाव्य संग्रहीत अछि। कोशकारक ई दृष्टि अपूर्व छल, जकर आगू हमरा लोकनि सर्वथा अभाव पबैत छी। ग्रियर्सनक संकलनक लोकोक्ति आगुओक संग्रहकर्त्ता लोकनि उपयोग करैत गेलाह, से स्वाभाविके, मुदा कतेको एहन वस्तु एखनहु ओतय अस्पृष्ट पाओल जा सकैत अछि। जेना, 'सील' शब्द कें प्रविष्टि मे लैत एकर अर्थ ओ केलनि अछि— a stone : the shalgram stone. सील शालग्रामक लेल प्रयुक्त शब्द छल। एहि शब्दक

अनुप्रयोग बतबैत एक कहबी ओ उद्धृत केलनि—सील, सुत, हरिवंश लै/ बीच गंगाक धार/ एत्तेक लै ब्राह्मण (करय)/ तै(यो) ना करह इतिवार।' एहि कहबीक अर्थ ओ एहि तरहें देने छथि—'If a Brahman Swear even by the shalgram, his son, the Haribans, and in the midst of the Ganges, Don't believe him.12 बूझब सोझ अछि जे लोकोक्तिक विशालकाय कोशकार लोकनि एहि लोकोक्ति कें अपन संग्रह मे किएक नहि शामिल केलथिन। तहिना, ग्रियर्सनक संकलनक एक शब्द थिक—लोकदिनी। एकर अर्थ बताओल गेल अछि—Maid Servent अर्थात् खबासिनी। अनुप्रयोग बतबैत ई कहबी उद्धृत कयल गेल अछि—'लोकदिनीक पयर जतने ससुरा वास।'[13] बुझनिहार बूझि सकैत छथि जे एहि कहबीक गूढ़ आशय की थिक। बौआसिन कें ससुरक सुख तखनहि नसीब हेतनि जँ पति दहीन रहथिन। पति खबासिनीक वश मे भने नहिओ होथि, ओकर बुधियारीक वश मे तँ अवश्ये अछि। ओकर विरुद्ध भेने तँ ससुरावास—ड्योढ़ीक वास छैके नहि। मुदा देखल जा सकैत अछि जे आगूक संकलयिता लोकनि कोना एहि मे बुधियारीपूर्वक अर्थान्तर अनलनि अछि। एहि कहबीक मूल अभिप्राय छल स्त्रीक दारुण दुर्दशाक वर्णन मुदा डॉ. कमलकान्त झा एकर अर्थ, लिखलनि अछि—'लोक जतय रहैत अछि ततहि सब सँ मिलि क' रहय पड़ैत छैक। पैरवी-पैगाम सँ कार्य नहि चलैत छैक।'[14] ठीक छैक। मुदा 'पयर जतने' किऐक?

ग्रियर्सनक संकलनक महत्व आनो कैक दृष्टि सँ बहुत अछि। एहिठाम हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे मैथिलीक जाहि कोनो वस्तु कें ओ संकलित केलनि, अपन स्रोत ओ व्यापक रखलनि। हुनकर स्रोत दुनू समाज छल—पंडित-समाज आ लोक-समाज सेहो। हुनक संकलनक असल महत्व एकर यथातथ्यता मे छैक जे जाहि समाज सँ ओ ग्रहण केलनि ताहि समाज मे प्रचलित अर्थक अनुसन्धान सेहो केलनि आ तकरा हू-ब-हू अंकित करबाक प्रयास रखलनि।

लोकोक्तिक संकलन सेहो ग्रियर्सन दुनू समाज सँ कयने छलाह तकर पता हुनकर संकलित वस्तुए सब दैत अछि। हमरा लोकनि जनैत छी जे फकड़ा मे आयल तथाकथित अश्लील पदक प्रतिस्थानी प्रयोगक चलन शिष्टसमाज मे छल। जाहि समाजक वस्तु लोकोक्ति थिक ओहि समाजक मन मे यौनिकता (अश्लीलता) वास नहि करैत छैक। असल मे यौनिकता मस्तिष्क मे रहय बला वस्तु थिकहे नहि, ई मनक वस्तु थिक। आ, भला एक शब्द मे यौनिकताक वास भइयो कोना सकैत अछि? ई तँ एक शरीरगत प्रक्रिया थिक जकर तसफिया शरीरेक स्तर पर होयब संभव। मनोवैज्ञानिक लोकनिक अध्ययन छनि जे यौनिकता जँ शरीर सँ ससरि क' मोन मे घुसिया जाय तँ ई ओहि समाजक लेल घातक भ' जाइत अछि। समाज मे व्याप्त

विभिप प्रकारक यौन-अपराधक मूल यैह होइत अछि। तें, अश्लीलता शब्द मे भ' सकैत अछि कि नहि, ई एहि पर निर्भर करैत छैक जे यौनिकता ओहि समाजक शरीरे धरि अछि कि मोन पर चढ़ि गेल अछि। लोकोक्तिक प्रकारविभाजन करैत डॉ. कमलकान्त झा लिखैत छथि—'मूलत: लोकोक्ति दू प्रकारक होइत अछि—एक तँ ओ लोकोक्ति जे जनसामान्य द्वारा निर्विकार भाव सँ प्रयुक्त होइत रहैत अछि, जाहि मे अश्लील शब्दक भरमार रहैत अछि। गाम-घर मे जनसामान्य लेल ओ त्याज्य नहि अछि। दोसर ओ लोकोक्ति जकरा सुसभ्य समाज सुधारि कय कहैत अछि, यथा—किदन मरौनी भगवनियां नाम, किदन फाटय तँ मलार गाबी, एक दिन सात बोहु लग गेलहुँ एकदिन किदन ऐंठि कय मरलहुँ।'[15] ई मानब कठिन अछि जे शब्द बदलि देने अश्लीलता नष्ट भ' जाइत अछि, कारण प्रतिस्थानी शब्द तँ सेहो आखिर ओही यौनांगक अर्थ द्योतित करैत छैक, आ से वक्ता आ श्रोता-समूह दुनूक बुद्धि मे आसानी सँ आबि जाइत छैक। ई मिथ्याचार असल मे रुग्णताक लक्षण थिक मुदा डॉ. झा एकरा 'सुसभ्य समाज' कहैत छथि, मानू रुग्णता आ सभ्यता समानार्थी होइक।

गियर्सनक संकलन लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहिने तैयार कयल गेल छल। ताहि दिनक सुसभ्य समाज कोना आजुक सुसभ्य सँ भिप छल, तकर किछु सूचना एहिठाम भेटि सकैत अछि। ऊपर डॉ. झा जाहि शब्दक बदला 'किदन' शब्दक व्यवहार देखौलनि अछि, से असल मे स्त्री आ पुरुषक गुह्यांग थिक। ग्रियर्सनक उदाहरण देखल जाय। एक टा कहबी अछि—'नब जोगी कें गांड़ि मे जटा'। एक टा आर कहबी अछि—'गांड़ि नै चलैन्हि, केराक भार।' गियर्सन एकर संकलन जाहि समाज सँ कयने छलाह, ततय ई पाठ प्रचलित रहैक—'नब जोगी कें कटि मे जटा', 'कटि नहि चलैन्हि केराक भार।' मुदा लोकसमाज सँ सेहो ई कहबी सब ओ संकलित केलनि—'झांटि उपारने मुरदा हलुक', 'गांड़ि नंगोटी फत्ते खाँ', 'गांड़ि न धोय से भगता होय', 'तेल जरय तेलीक गांड़ि फाटय मशालचीक', 'राम राम करय से धक्का पाबै, गांड़ि घुमाबय से टक्का पाबय।' यथार्थ बात थिक जे एही रूप मे ई कहबी सब लोकसमाज मे प्रचलित सेहो अछि मुदा लोकोक्तिकोश सब मे ताकय जायब तँ 'गांड़ि' के बदला तँ 'किदन' भेटबे करत, 'झांटि' सेहो बदलि क' 'केश' भ' जयत। तें कहल जाइत अछि जे लोकसाहित्य लोकसमाज मे शोभा पबैत अछि, पुस्तक मे अयने एकर मौअति भ' जाइत अछि।

सब लोकभाषाक लोकोक्ति मे जाति, जातीय स्वभाव, जातीय द्वेष आदि कें ल'क' अनेको उक्ति भाखल भेटैत अछि। से मैथिली मे सेहो कम नहि अछि। पचास टा सँ ऊपर लोकोक्ति तँ स्वयं ग्रियर्सन अपन संकलन मे देलनि अछि। डॉ. कमलकान्त झा अपन शोध-ग्रन्थ मे एहि प्रसंग पर एक पृथक अध्याय सेहो देने छथिन। एहि

सब सँ स्पष्ट पता लगैत अछि जे जाति एक अनिवार्य सत्य थिक आ लोक-समाजक काज जाति कें बीच मे अनने बिना नहि चलि सकैत अछि। मैथिली मे कतोक एहन उक्ति अछि, जाहि मे जातिस्वभाव पर टिप्पणी कयल गेल अछि। ग्रियर्सनक संकलित एक कहबी अछि—'तुरुक ताड़ी बैल खेसारी/ बाभन आम कायथ काम।' कोन जाति मे कथीक प्रति लोभाविष्टता देखल जाइछ तकर एहिठाम हिसाब देल गेल अछि। ब्राह्मणक भोजनप्रियता आ स्वार्थपरकता पर बहुतो उक्ति अछि। कमलकान्त झाक संकलन मे एक उक्ति आयल अछि—'बाभन बेटा लोटेपोटे/ मूर ब्याज दूनू सरपोटे।' एहि मे अविश्वसनीयता प्रकट कयल गेल छैक। एक टा अछि—'कारी बाभन गोर चमार/ एक संग नहि उतरय पार।' हीनताग्रन्थिक प्रश्न एहिठाम मुख्य अछि मुदा कुल्लम भाव जे आन जातिक संग मिलिक' रहबा मे हुनका लोकनि कें असौकर्य होइत छनि। एते धरि जे स्वयं अपनहु जाति-समुदायक संग हुनका मिलानी नहि रहैत छनि। 'तीन तिरहुतिया तेरह पाक' अथवा 'बाभन कुत्ता हाथी, अपने जातिक घाती' मे यैह भाव आयल छैक। ब्राह्मणक बाह्याडम्बर आ मिथ्याचारक सेहो उक्ति अछि 'ललकल पगिया फलकल टीक/ तखने बुझी तिरहुतिया थीक।' कायथ कें केवल 'काम' पर नजरि रहैत छैक, एकर तात्पर्य स्वार्थसाधन पर एकाग्रता बुझबाक चाही। एक फकड़ा अछि—'लड्डू लड़य झिल्ली झड़य/ कायथ बेचारे कें पेट भरय।' भूमिहारक बारे मे अछि—'भर ने करी भुइंहार के/ नांगरि ने धरी सियार के।' बनियांक बारे मे राय छैक—'बनियांक जी धनियां'। मने, ओ उदार नहि भ' सकैछ। फकड़ा अछि—'किछु हाथक सफाइ किछु दंडी के फेर/ दोसरा के तीन पाव बनियां के सेर।' एहने एक कहबी ग्रियर्सनक संकलन मे अछि—'दोहरौने बनियां दुन्ना।' मुदा एहि जातिक उद्यमशीलताक तारीफ सेहो भेल छैक—'बैठल बनियां की करय, एहि कोठीक धान ओहि कोठी करय।' पछड़ल जाति जकरा कहल जाइछ, ताहि सभक समेकित नाम मिथिला मे रहलैक अछि—राड़। सभ्यसमाज मे राड़ कें बड़ अधलाह मानल गेल, यद्यपि कि ओकर सभक जीवन एही सभ्यसमाजक सेवा करैत बितैत छल। कहबी अछि जे 'राड़क लघीक काज पड़ि जाय तँ छह मास नहि भेंट।' ग्रियर्सन एक टा फकड़ा उद्धृत कयने छथि—' हाड़, राड़, बहु, चेरी/ नित्य लैड़ी फेरी।' हाड़ अर्थात् पशु। एकरा सब कें नित्य पीटल जाय तखनहि ठीक रहैत अछि। 'ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारी' (तुलसीदास) क उक्ति सँ ई तुलनीय अछि। ई मान्यता रहलैक जे ब्राह्मणसमाज मे बसनिहार राड़ भने कतबो योग्य भ' जाय ओकरा मान्यता नहि देल जा सकैछ। एकरा ओ लोकनि 'बाभनक गाम मे राड़ पजियार' करब माननलनि। दोसर दिस, लोकसमाज मे ब्राह्मणक बारे मे ई मान्यता रहलैक जे 'बाभनमित्रं कभी न मित्रं, जब मित्रं तब दगे दगा:।' तात्पर्य जे ब्राह्मण सँ मान्यताक भरोसें रहब तँ धोखा भेटत।

एहने एक टा कहबी अछि—'राड़ं घोड़ं एड़ं पवित्रम्।' राड़ आ घोड़ा एंड़ खयले पर 'पवित्र' रहैत अछि। एक टा मे अछि जे धोबी अविवेकी जाति होइत अछि—'धोबीक घर बियाह, गदहा माथा मौर।' एक टा मे तीन जाति कें समटल गेल अछि—'नौआ, धोबी, दरजी/ तीनू जाति अलगरजी।' ग्रियर्सनक संकलन मे एक टा छनि—'धोबी पर धोबी बसय/ तब कपड़ा पर साबुन पड़य।' माने पेशागत प्रतिद्वंद्विता सँ धोबी ठीक रहैत अछि। जोलहा आत्मा मे संतोष करैबला, अन्यमनस्क जीवन जीनिहार जाति थिक—'तौला भरि अनाज भेल/ जोलहा कें राज भेल।' अपन पेशागत काज, कपड़ा बुनबाक अतिरिक्त किसानीक आन काज सब मे ई जाति बेलूरि होइछ—'जोलहा जानथि जौ काटय!' अथवा 'जोलहा भुतिएला तीसीक खेत।' कहबी सब सँ प्रतीत होइछ जे राड़ लोकनि मे जोलहा एक विचारशील जाति छल, तकरा कारणें मतवैभिन्य ब्राह्मणे जकाँ जोलहो मे पाओल जाइत छल—'आठ जोलहा कें नौटा हुक्का/ ताहू पर उठय थुक्कम-थुक्का।' कोइरी आ कुम्हार दू टा एहन जाति छल जे अपन कृषि आ शिल्पक बल पर नीक दरजा हासिल कयने छल, हिनका लोकनिक विश्वसनीयता सेहो असंदिग्ध छल, जखन कि ब्राह्मण संदिग्धताक नजरि सँ देखल जाथि। ग्रियर्सनक संकलित एक कहबी अछि—'कोइरी-कुम्हार बास ने पाबय/ बाभन आंटा माँग।' तात्पर्य जे जतय कोइरी-कुम्हारो उपेक्षित होथि ततय ब्राह्मण कें कोना स्थान भेटि सकैत अछि। एक टा कहबी बड़ नामी अछि जकरा प्राय: सब क्यो संकलित कयने छथि जे 'बाभन नाचय कोइरी देखय।' ब्राह्मणक तुलना मे कोइरीक अभ्युपतिक प्रति एतय ईर्ष्या व्यक्त भेलैक अछि। मुदा, ई लड़ै-भिड़ैबला जाति नहि थिक फलत: राजसेवाक लेल अयोग्य अछि—'कोइरी सिपाही तँ बकरी मरखाही।' तेली हिसाबी जाति होइत अछि आ धन जोड़ब जनैत अछि—'सड़लो तेली तँ नौ अधेली।' मुदा धनसम्पप भेलाक कारण हिनका लोकनिक प्रति ईर्ष्याभाव सेहो प्रकट भेल अछि—'धोबिया सँ कि तेलिया घाटि/ ओकरा मुंगरा एकरा जाठि।' जाठि अर्थात कोल्हुक काठ। कलवार सेहो सम्पप मुदा अपन हित मे साकांक्ष। कर्जा ओसुलबा मे ई लोकनि कतेक सक्कत होइ छला ताहि पर कहबी अछि—'कल कलवार, खल्ला ओदार।' चमार आ दुसाध जातिक प्रति अधिकतर बहुत द्वेष प्रकट भेल देखाइत अछि—'चमारक बेटी, नाम रजमनियां', 'दुसाध जाति खाय नीचां ताकय ऊपर।' ऊपर तकबाक अभिप्राय छैक जे चोरी करबा योग्य मालक ओ टोह ल' रहल होइत छथि। डोम कें ततेक दुर्गत अवस्था मे राखल गेल छल मुदा कहबी छैक—'डोम लेखें धोबी नीच।' तात्पर्य जे ओहो लोकनि ब्राह्मणवाद कें स्वीकार कयने छलाह। बखोक बारे मे अछि—'बुड़बक बखोक खंटक मे डेरा।' उपद्रवक डरें ई यायावर जाति एकात मे बास लैत छल तँ तकरो ओकर बुड़बकपना बताओल गेल अछि। नट जातिक प्रति कतेक द्वेष छलैक से एहि कहबी मे देखल जा सकैत अछि जे 'नटी पूत नरहरा टीक।' जे ब्राह्मण छोट टीक रखैत छलाह हुनकर खिधान्स लेल ई उक्ति प्रचलित छल। परभाषा बजनिहारक प्रति अवमाननाभाव छल। परभाषाभाषी मे एहिठाम बंगाली छला, जिनका बारे मे कहबी बनल जे 'एक तँ बंगाली दोसर तोतराह।' बोलचाल मे लटपटाह लोकक लेल ई उक्ति छल। मिथिला-समाज मे सद्शूद्र क' क' राड़क किछु जाति परिगणित छल जिनका लोकनिक पानि चलैत छलनि। सभ्यसमाज मे हिनका लोकनिक प्रवेश छलनि, एहन जाति धानुक, कुर्मी, कीयट, नोनियां आदि छल। हिनका सब पर द्वेषपूर्ण कहबी किनसाइते भेटत। मुदा हिनका सभक दुर्दशा अलग तरहें उक्तिसाहित्य मे आयल अछि।

ग्रियर्सनक संकलित एक टा कहबी छनि—'भल भेल सैयां कें बाघे धयलक नहि तँ बेगारी पड़ितथि।' 'बेगारी' शब्दक अर्थ फरिछबैत ग्रियर्सन ई कहबी उद्धृत कयने छनि। बेगारी अर्थात् दबंगतापूर्वक श्रम करबायब आ पारिश्रमिक नहि देब। बाघक हमला मे स्त्रीक पति मारल गेलैक मुदा स्त्री कें तखनहु संतोष छैक जे बेगारी खटबा सँ ओ मुक्त भेल। बेगारी करबैकाल जे बाबू-भैया लोकनि हृदयहीनता बरतथि ताहू पर प्रचलित कहबी ग्रियर्सन देने छथि—'झिंगुर बोलतम रनारनी/ तखन छोड़ब जनाजनी।' दुर्दशापपताक ई हद छल, मुदा ई स्त्रियो कोनो बहुआसिन किसिमक स्त्री नहि छली, खटब, संघर्ष करब जनैत छली। मुदा दोसर दिस इहो जे 'राड़क बहु सबहक भौजी' सेहो एहने स्त्रीक विषय मे कहल जाइत छल।

ग्रियर्सनक संकलन मे एक बात ध्यान देबाक योग्य अछि। पचास टाक करीब जातिविषयक लोकोक्ति ओ संकलित कयलनि जाहि मे सँ करीब आधा केवल मुसलमानेक बारे मे अछि। आन-आन जातिक बारे मे सेहो आरो बेसी कहबी आ फकड़ा प्रचलित छलैक, तकरा सब कें ओ भने छोड़ने होथु, मुदा एहन प्रतीत होइत अछि जे मुसलमानक बारे मे जे कोनो कहबी, फकड़ा वा कथाकाव्य प्रचलित छलैक तकरा जरूर शामिल कयलनि। तकर कारण ग्रियर्सनक अपन पृष्ठभूमि आ ओहि कालक इतिहास मे पाओल जा सकैत अछि। ग्रियर्सन छला मूलत: अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी आ 1857क महाविद्रोहक दमनक बाद प्रशासन-व्यवस्था मे जे आमूलचूल परिवर्तन भेल छल तकर अनिवार्य असर हुनकर गतिविधि पर पड़बाक छल। 'डिवाइड एंड रूल' ब्रिटिश सरकारक एक प्रमुख नीति छल जाहि मे हिन्दू-मुसलमान मे दरार पैदा करब एक स्पष्ट लक्ष्य छल जाहि सँ ई दुनू तेना एकत्रित भ' क' नहि लड़ि सकय जे 1857 सन परिस्थिति फेर कहियो बनय। मैथिली हिन्दूक वस्तु छल जाहि मे ग्रियर्सन 1870क दशक मे मुसलमानक खिधान्स लेल प्रचलित कहबी सब कें एकट्ठा क' रहल छला। एकर छांह हमरा लोकनि संकलित पाठ सब मे देखि सकैत

छी, यद्यपि कि मिथिलाक मुसलमान अपन दुर्गत अवस्था कें ताहि तरहें स्वीकार क' लेने छलाह जे उपद्रव आ अशान्तिक तँ कोन कथा जे पूर्णत: आर्यीकृत आ गृहस्थ जीवन जीबैत एक सर्वसाधारण मनुख जकाँ मैथिल मनुख छला। एहि कहबी सब मे मुसलमान कें मीयां कहल गेल अछि, जे कि वास्तविक रूप मे कहलो जाइत छल, आ अर्थक विचार सँ देखी तँ स्वीकृतिमूलक संबोधन छल। मुदा एहि सब मे अधिक ठाम मीयां कें बूड़ि अथवा बुड़बक बताओल गेल अछि। एक टा कहबी अछि—'बुड़बक मीयां कें माझ गाम बथान।' ई कहबी अद्‌भुत संवेद्यता सँ भरल अछि। मीयां अपन बथान माझ गाम मे बना लेलक, एहि सँ ओकर मनक सामुदायिक भावना आ सुरक्षा-बोध कें अकानल जा सकैत अछि। मुदा, बदलल परिस्थिति मे ओकरा बुड़बक कहल गेलैक अछि कारण ओकर निर्णय अव्यावहारिक छैक किएक तँ हिन्दू लोकनि हुनका संग उपद्रव करतनि। मिथिला मे मृत्युभोज सब जाति मे कुल परम्परानुसार प्रचलित छल। एक टा कहबी ताहू पर अछि—'मीयां महिरें तँ सीरनी बटिहें।' मांस खाइ मे ब्राह्मणो लोकनि बहादुर होइत छलाह मुदा मीयां कें एही कारणें राकस कहल गेल अछि—'बुड़बक मीयां बकरी खाइ मे राकस।' सैयद मुसलमानक बारे मे अछि—'कहाबै लै सैयद चोराबै लै छुछी।' आ पैठानक बारे मे—'तीर न कमान मीयां कथी के पैठान।' धुनियांक बारे मे—'बाप धुनियां पूत खुनियां।' मुसलमानक खेबा-पीबाक आदतिक संबंध मे टिप्पणी अछि—'एक तँ मीयांक मुँह बड़ सुन्दर दोसर भरि मुँह पियाजु।' मुसलमान जँ अपना ढ़ंगक दाढ़ी रखलनि तँ ताहू पर टिप्पणी—'बूड़ि मीयां कें फटकी दाढ़ी।' अपन गतिविधि कें जँ अपन लक्ष्य धरि सीमित रखलनि, ताहू पर—'मीयांक दौड़ मस्जिद तक।' अपन पूर्वजक जँ ओ कीर्त्ति बखान कयलनि, ताहि पर—'बुड़बक मीयां कें नामी नामी बात।' गरीबीक अवस्था मे जँ मुसलमान रहलाह तँ 'घर मे धान नहि बीबी कुटतीह चूड़ा', 'भेटय मीयां कें मांड़ी नहि मीयां खोजय ताड़ी।' संत फकीर जँ क्यो मुसलमान मे बहरेला, तिनका पर—'आप मीयां मंगरू द्वारे दरवेश।'' हुनका लोकनिक असफलताक जँ कोनो पुरान आख्यान रहलैक तँ तकरा फकड़ा बना क' ओकरा पुनि-पुनि स्मरण मे आनल जाइत छल—'मीयां एक लेल जागीर/ भोर होइत भेल तामीर/ घुरि क' तकलन्हि अप्पन गांव/ गांड़ि नं गोटी फत्ते खाँ।' अथवा—'मीयां एक चलल ससुरारि/ बाटहि लेल सुरवाल उतारि/कन्या छलि से मातृक गेल/गाछ कटहर ओठ तेल।'

डॉ. रामदेव झाक लेख सँ जानकारी भेटैछ जे विद्यानन्द ठाकुर (पूर्णियां) 1935 मे 'लोकोक्तिप्रकाश' नाम सँ कहबीक एक लघु संकलन प्रकाशित कयलनि, जे एहि दिशा मे पहिल प्रयास छल। पं. ऋद्धिनाथ झा (म.म. हर्षनाथ झाक पुत्र) एक संकलन 'लोकोक्ति-तरंगिणी' नाम सँ करैत छलाह जे एहि विषयक एक अपूर्व संग्रह होइत मुदा हुनकर जीवनकाल (1891-1977) मे ई अपूर्ण रहल आ अन्तत: 'जिज्ञासा'क चारिम अंक (1996) मे एकरा यथावत प्रकाशित कयल गेल। ऋद्धिनाथ झा छलाह तँ पंडित, मुदा लोकसाहित्यक मर्म कें पकड़बाक अद्‌भुत क्षमता पौने छलाह। लोकोक्ति सभक व्याख्या, प्रयोग-संदर्भ आ दृष्टान्त जे ओ अपन पुस्तक मे देने छथि, ताहि सँ एहि तथ्यक पता चलैत अछि। 'जिज्ञासा'क संपादकीय टिप्पणी मे हुनका मादे कहल गेल अछि—'हिनका लौकिक वाग्व्यवहारक चमत्कार सहसा आकृष्ट करैत छलनि। ओकर काव्यात्मक ओ भाषिक दुनू पक्ष कें पकड़ि-पकड़ि जेना अक्षर मे बान्हि लेअए चाहैत होथि। लोकसाहित्य आ लोकभाषाक महत्व पण्डित भए ओ जतबा चिन्हलनि ततबा प्राय: आन केओ पारम्परिक पंडित नहि चीन्हि सकलाह।'[16] एहि कथन सँ पूर्णत: सहमत भेल जा सकैत अछि। लोकोक्ति सभक सटीक प्रयोग-संदर्भ उल्लिखित करैत ओ 122 गोट लोकोक्तिक व्याख्या अपन पुस्तक मे देलनि। संदर्भक ई सटीकता आइयो कोनो दोसर व्याख्याकार लग मे नहि छनि यद्यपि कि हुनकर भाषा नितान्त संस्कृतनिष्ठ आ सारग्राही अछि। हुनकर संकलनक किछु लोकोक्ति—'अटकरें गीता भगवानुवाच', 'अंजैत-अंजैत धिया कानी भेलीह' (फैशन आ मेकअपक चलाचलतीक एहि युग मे एहि प्राचीन कहबी कें स्मरण करब विलक्षण अछि), 'अन्हरा कें गाय बिआएल सब डाबा लय कें दौड़ल', 'आगिक लाथें भोजघर जाइ', 'ई हर एहिना बहय', 'उपर उपर दाइ गे दाइ, भितरक मने सासुर जाइ', 'ऋण पचाबय कापूत, कर पचाबय सापूत', ए'क गड़ू कें नओ उपाय', 'करी गोत पर पड़य पूत पर' आदि।

1950क दशक मे जखन विद्यालय-महाविद्यालय सब मे मैथिलीक अध्यापन होअय लागल तँ व्याकरणक संग-संग मोहाबरा आ लोकोक्तिक संकलनक आवश्यकता पड़ल आ एहि दिशा मे कैक गोट विद्वान पुस्तक प्रकाशित केलनि। रमानाथ झाक 'मैथिली भाषा प्रकाश' (1954), चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क 'मैथिली मोहाबरा ओ लोकोक्ति' (1954), बालगोविन्द झा व्यथितक 'आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना (1960), रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क 'मैथिली मुहाबरा ओ लोकोक्ति प्रकाश' (1963) आदि एहने पुस्तक सब थिक। एहि संकलन सभक उद्देश्य जें कि सीमित रहैक, संग्रहणकार्य छात्रक उपयोगिता कें ध्यान मे राखि क' कयल गेल छल, लोकोक्तिक महत्ताक दृष्टिकोण सँ नहि। तें मोहन भारद्वाजक ई कहब बिल्कुल सही अछि जे 'छात्रक आवश्यकताक पूर्त्ति एहि सब सँ भने भए जाइत हो, लोकोक्ति-संसारक परिचय एहि सँ नहि भेटैत अछि।'[17] अपन एहि आलेख मे मोहन भारद्वाज सात सौ लोकोक्तिक विषयवार संकलन देलनि। कहब आवश्यक नहि जे मोहन भारद्वाजक संकलन-वृत्ति काञ्चीनाथ झा किरणक परंपरा सँ निदेशित रहय, जे एहि

कहबी आ फकड़ा सब मे साधारण मैथिलजनक रचनाशीलता, प्रगतिशीलता, प्रतिरोध आ श्रमजन्य सांस्कृतिक दृष्टिकोण कें आगू क' क' देखि रहल छला। डॉ. रामदेव झा मुदा एहि पर आरोप लगबैत लिखलनि 'राजनीतिक प्रतिबद्धता ओ स्व-संस्कृतिक प्रति अवहेलाक व्यंजक उक्ति, बनौआ आ अनसोहाँत कथन सब मैथिली कहबीक रूप मे चला देल गेल अछि। सप्तशती सन परम्परावादी संख्या पुरेबाक लौलि मे हिन्दी, उर्दू ओ छपरिया बोलीक खांटी कहबी सब सेहो प्रचुर संख्या मे सम्मिलित क' लेल गेल अछि।'[18] सुसभ्य समाज जे लोकसमाजक अवमानना करैछ, शिष्टसाहित्य जे लोकसाहित्य कें अपन अनुशासन मे बन्हलाक बादे ओकरा मानि देबाक जिद रखैत अछि, वस्तुत: ई संस्कृति मे वर्चस्व आ प्रतिरोधक दृष्टान्त सब थिक। कहब आवश्यक नहि जे रामदेव झाक उक्ति मात्र तकरे उदाहरण थिक, ने तँ 1870क दशक मे जे ग्रियर्सन लोकोक्ति संचय कयने छलाह, आ ताहि मे जे हिन्दी, उर्दू, भोजपुरीक तँ कोन कथा जे फारसी आ अरबी शब्द धरि मैथिली लोकोक्ति मे आबि गेल छलैक, तकर निश्चिते कोनो जवाब डॉ. रामदेव झा लग मे नहि भ' सकैत छनि। ग्रियर्सनक किछु पाठ—(1) 'से गुड़ कहाँ जे मक्खी खाय।' माछी नहि, मक्खी। (2) 'आपे कूटे आपे खाय/ घर मेहर नहि आंगन माय/ जइसे उसर मे लोटे गदहा/ आगां नाथ न पाछू पगहा।' स्त्री नहि, मेहर। (3) 'बोलक ढंग नहि गेल कचहरी।' बाजक नहि, बोलक। न्यायालय नहि, बचहरी। (4) 'जौं मीयांक दाढ़ी तौं गांव गुलजार।' गुलजार फारसी शब्द थिक। (5) 'बोललह से बोललह फेर मति बोलिहह।' (6) 'एतेक लै ब्राह्मण करै/ तैयो न करह इतिबार।' इतिबार अर्थात् एतबार। एतबार अरबी शब्द थिक। असल मे लोकसमाज आ लोकसंस्कृति पंडित जीक टेबुल पर खोलल नोटबुकक पपा नहि थिक जाहि पर वैह शब्द लिखेतैक जे शिष्ट समाजानुमोदित, शुद्ध मैथिल रहतैक, ओकर प्रसार आ प्रभावक फराक गति होइत अछि। आ, विद्वान कें एतेक स्वार्थियो नहि हेबाक चाही जे अहाँक विद्यापति जँ बंगाल आ आसाम धरि पहुँचलाह तकर तँ पूरे जय जय, मुदा आनक भाषाक जँ कोनो शब्द वा भंगिमा एतय पहुँचि गेल तँ तकर सोग मना रहल छी!

वास्तविक परिप्रेक्ष्य आ उचित महत्ताक संग जाहिठाम लोकोक्तिक विश्लेषण भेल अछि, से थिक काञ्चीनाथ झा किरणक लेख 'फकड़ा', जे हुनक पुस्तक 'किरण समग्र' मे संकलित अछि। एहिठाम आम जीवनक संग एकर सरोकार आ गतिशीलताक पूर्ण रूप आयल अछि। एहि मे किरणजी अपन संकलनक 73 गोट कहबी आ फकड़ाक उदाहरण सेहो देने छथि जकरा देखने एकर वास्तविक स्वरूप आ विचारशीलताक परिचय पाओल जा सकैछ। हुनक उद्धृत किछु कहबी-फकड़ा—'चाम सुपर की काम सुपर', 'दस कंगला तँ एक बंगला', 'दस टाका पर नहि इतराइ

दस लोक पर इतराइ', 'नैहर जो बेटी सासुर जो/ बहियां डोला बेटी सबतरि खो', 'भरल रहय कोखि माँग/ बनल रहय अपन समाँग', 'सैंया देलक सेज गोसइयां देलक नीन/ जीवन हमर बोनि-बिच्छा के लेत छीन', 'बाहर सुखाइ छनि नयनसुख धोती/ भीतर पाकै छनि खुद्दीक रोटी', 'इतरक पानि भित्तर जाय/ आ घैल छुलें जाति जाय', 'उचरिन कें की बैसक चाही बटसिनुरी कें की कोबर', 'निर्गुनियाँ लग की गून जेहने चानन तेहने घून', 'निचू चार तर सोहाय मलार', 'पेट रहतै भुखल मधुर हेतै बोल/ से कि मनुख थिक काठक खोल', 'धार कातक चास/ पैघ पासक बास/ एकर कोन बिसबास', 'हम नै बूढ़ि गे हम नै बूढ़ि/ बुढ़बा बियाहलक तें हम बूढ़ि', 'अन्हार घर मे लागय नीक तँ जानू जे भेल पिरीत', 'आनक सुपर वर पानिक हिलकोर/ कुबड़ो अपन वर जीवनक ओर', 'परजाइ सँ पोखरि भल जै मे एक्के जाठि', 'कुल की बाप की गुनक करू मान/ सितुआक पूत मोती के हैत समान', 'दाइ ले' लगै छनि टाट पर टाट/ दाइ तकै छथि टाटक फाट', 'भीतर घिनाइ छनि चिनबार/ तिनकर चानन बड़ जगजियार'—आदि आदि।

मैथिली मे जे लोकोक्ति आ फकड़ा सब भेटैत अछि तकर अभिव्यक्ति पूर्णत: काव्यात्मक छैक। मुदा, कविता रूप मे एकर कतहु विश्लेषण वा मूल्यांकन कयल गेल हो, से कतहु देखार नहि पड़त। शिष्ट लोकनिक मैथिली साहित्य मे एहि सब कथू कें साहित्ये नहि मानल जाइछ, तें कविताक रूप मे एकर विश्लेषण सोच सँ बाहरक विषय थिक।

एक टा फकड़ा अछि—'रूपचन हम्मर भाइ रहय, तँ गली-गली भौजाइ रहय।' सामर्थ्यवानक पाछू-पाछू सब क्यो चलैत अछि कारण लोक कें ताहि सँ स्वार्थसिद्धि होइत छैक, से आशय अछि। अपन दिन-समय बदलि गेला पर क्यो समाजक बेरुखीक प्रसंगें ई फकड़ा बजैत अछि। आधुनिक कविता जेना लिखल जाइछ, एहि फकड़ा कें जँ एहि तरहें लिखल जाय—

'रूपचन हम्मर भाइ रहय
तँ
गली-गली भौजाइ रहय।'

कहल जाउ जे एकरा कविता मानबा मे कतय आ कोन हर्ज छैक?

एक टा फकड़ा नक्षत्रविषयक अछि जाहि सँ सामाजिक आ आर्थिक, दुनू स्थितिक विषय मे प्रकाश पड़ैत अछि—

'हथिया पेट सँ
निकलल जाड़

गोनरि लेल
खरकट्टैए राड़।'

उद्देश्य छैक ई बतायब जे हथिया नक्षत्रक बाद जाड़ शुरू भ' जाइत छैक, मुदा एहि बात कें दृश्यमान करबाक लेल राड़क आर्थिक स्थितिक चित्र राखल गेल। राड़ अर्थात सवर्णेतर मैथिल।

एक टा फकड़ा एहि विषयक छैक जे स्त्रीक नहिरा भने कतबो विपप होअय, सोआसिन नहिरा कें नहि बिसरि सकैत अछि। ओकरा लेल स्त्रीक मन मे पूरा दरेग, पूरा भरोस रहैत छैक। फकड़ा अछि—

'नहिराक भोज छलय
कुरथीक दालि छलय
छुरछुर पानि छलय
जी के भरोस छलय।'

अथवा, एहि फकड़ा कें देखी—

'गुड़ा-खुद्दी खेलौं
उपास भंग भेल
बूढ़ बियाहलक
कुमारि पद गेल।'

एहिठाम जे स्त्रीक पीड़ा अद्भुत बिम्बात्मकता लेने काव्यरूप मे प्रकट भेल अछि, के अभागल होयत जे एकरा कविता मानबा सँ इनकार करत! मुदा एहिठाम, मैथिली साहित्य मे, इनकारक कारण बेसी जटिल छैक। ई सत्ताक प्रतिरोधक कविता थिक। कुलीन लोकनिक बहुविवाह हुनकर विशेषाधिकार छलनि आ आब हुनकर 'स्वर्णिम इतिहास' छियनि, भने पीड़ित स्त्रीक लेल बूढ़ संग विवाह होयब गुड़ा-खुद्दी खा क' कहुना उपास भंग करबाक लाचारी किए ने हो! मैथिली साहित्यक मस्तक जेना ब्राह्मणवादक चरण मे झुकल रहल अछि ठीक तहिना कुलीनवादक चरण मे। आधुनिक विचारक लोकनिक कहब छनि जे कविता सत्ताक शाश्वत प्रतिपक्ष होइत अछि। जँ सौंसे संसारक कविताक ई स्वभाव थिक तँ से मिथिलाक कविताक सेहो हेबाक चाही। मुदा नहि, मिथिलाक विचारवान आधुनिक लोकनि कें सिर पिटैत देखबनि जे मैथिली मे एहि प्रवृत्तिक अभाव रहल। अभाव नहि रहल महराज, ओकरा अबडेरि देल गेल, ओकर वार्त्ता नहि लेल गेल। मैथिलीक साहित्य मने सत्ताक साहित्य। दुर्बलक अबाज कें एतय अबाजे नहि मानल गेल। ओ कोना साहित्य? ओ तँ फकड़ा। स्मरण रहय जे यात्री जीक काव्यलेखन कें रमानाथ झा 'फकड़ा लिखब' कहने छलाह।[19]

हमरा लोकनि देखैत छी जे एक मिथिलाक भीतर दू-दू मिथिला विद्यमान अछि। दुनू एक दोसर सँ बेपरवाह। जेना गोविन्द बाबू कहैत छथि, एक्के धराधाम पर बास केनिहार दू समुदाय मानू दू अलग-अलग ग्रहक प्राणी होथि। एक समुदायक लग मे मैथिली साहित्य अछि, मने लिखित। दोसर लग मे जीवन अछि, जीवनक दुख-सुख, जाबन्तो हलचल अछि, मैथिली तँ पूरमपूर अछि, मुदा लिखित साहित्य जकरा कहल जाय, से ने अछि आ ने दूर दूर धरि ओकर कोनो आवश्यकता अछि। अहाँ अपन मैथिली साहित्य धयने डींग-पैंतरा मारैत रहू, पुरस्कार आदिक खरीद-बिक्री करैत रहू, मिथिलाक लोक अपन सांस्कृतिक जीवन मे अपनहि संतुष्ट अछि। जाहि समुदायक निर्मिति आ भंगिमा फकड़ा थिक, ओकरा बुझलो नहि छैक जे अहाँक साहित्यक कोनो इतिहासो अछि आ ताहि सँ अहाँ ओकरा बंचित कयने छिऐक। जतय जीवन साक्षात गतिमान बिराजैत अछि, ततय इतिहासक खगते कोन? जँ अहाँ कें खगता नहि, तँ ओकरा तँ आरो नहि। एकैसम शताब्दीक ग्लोबल समय आयल आ संसारक समस्त जाति अपन अस्मिताक प्रति साकांक्ष भेल, तँ हमरा लोकनि नवागन्तुक मैथिली-कर्मी लोकनि सँ आशा क' सकैत रही जे दुनू मिथिलाक बीच पुल बनबाक, बनेबाक जतन ई लोकनि करितथि। मुदा एहि देशक दुर्भाग्य एहि सदी मे जाहि तरहें करौट फेरलक अछि आ तकर पूर्ण प्रतिफलन मिथिला-मैथिली मे देखा द' रहलैक अछि, इहो आशा करब तत्काल बकाण्डप्रत्याशे बुझना जाइत अछि। नवागन्तुक लोकनि जापानक काव्य-परम्परा सँ हाइकू लाबि क' अपन प्रयोगशीलता देखा रहल छथि—यद्यपि कि एहन रचना सब कतेक बेजान आ स्पन्दनहीन अछि से अपनो ठेकना क' देखता तँ हुनका बुझबा मे आबि जेतनि। मुदा, एहीठाम, मिथिलाक एक समुदाय मे फकड़ा सन विधा अछि, हुनके लोकनिक चतुर्दिक, एहि मे हुनको घरक माय-बहीन शामिल छथि, तकरा दिस ओ नहि तकताह, कारण प्रतिरोधी साहित्य हेबाक कारण फकड़ा हुनक पुरखा लोकनिक लेल अपमानजनक अछि, ओ कविता नहि थिक, साहित्ये नहि थिक। फकड़ा थिक। अन्ट-सन्ट थिक।

मैथिली फकड़ाक मिलान आधुनिक लघुकविता सँ करी। एहि मे छंद नहि केवल लय अछि। अनेक बेर कहल जा चुकल अछि जे मैथिली कविता लेल छंद एक विजातीय वस्तु थिक, ई मैथिलीक काव्य-परंपरा मे प्राचीने काल सँ विजातीय रहल अछि। केवल लय। तुक मिलय तँ ठीक, नहियो मिलय तँ कोनो बात नहि। आधुनिक लघुकविता जकां जँ मैथिली फकड़ा कें लिखल आ छापल जाय, विदग्धता, सम्प्रेषण कि तेवर—कथू मे ई दोयम नहि ठहरत। मुदा, स्टैण्डर्ड (मानक) फैशन जापानक काव्य-परम्परा कें पकड़ब थिक, गंवार देहाती ठेठी सँ माँ मैथिलीक आसन अपवित्र भ' जेतनि कि ने!

सन्दर्भ

1. पं. गोविन्द झा/ जिज्ञासा/ अंक 2 (1995)/ पृ. 26
2. काञ्चीनाथ झा किरणक ई लेख 'फकड़ा' हुनकर पुस्तक किरण समग्र, खंड-1 मे छपल छनि।
3. डॉ. कमलकान्त झा/ मैथिली लोकोक्ति/ पृ. 52
4. किरण समग्र/ पृ. 185
5. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 97
6. किरण समग्र/ पृ. 179
7. उपर्युक्त/ पृ. 179
8. उपर्युक्त/ पृ. 181
9. उपर्युक्त/ पृ. 182
10. उपर्युक्त/ पृ. 182
11. मोहन भारद्वाज/ जिज्ञासा/ अंक 4 (1996)/ पृ. 54
12. ग्रियर्सन/ मैथिली क्रिस्टोमैथी एंड वोकेबलरी/ महाराजा कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउन्डेशन संस्करण/ पृ. 252
13. उपर्युक्त/ पृ. 243
    ग्रियर्सन एहि फकड़ाक मार्मिक कटाक्ष तँ लक्ष्य नहि क' सकलाह अछि, मुदा ई अवश्य लिखलनि अछि जे मिथिलाक लोक-प्रयोग मे जेल (जहल) कें ससुरारि कहल जाइत छैक।
    एहि फकड़ाक ठीक-ठीक अभिप्राय किरण जी पकड़लनि अछि कारण ओ समाज हुनकर नित दिनक देखल समाज छल।
14. डॉ. कमलकान्त झा/ मैथिली लोकोक्ति-संचय/ पृ. 307
15. उपर्युक्त/ पृ. 7-8
16. जिज्ञासा/ अक 4 (1996)/ संपादकीय टिप्पणी
17. मोहन भारद्वाज/ उपर्युक्त/ पृ. 57
18. डॉ. रामदेव झा/ मैथिली लोकसाहित्य: स्वरूप ओ सौन्दर्य/ पृ. 101
19. विवरण लेल देखी—किरण समग्र/ पृ. 276
    यात्री जीक 'बूढ़ वर' आ 'विलाप' काव्यपुस्तिका (1941) जखन मिथिला मे बहुत लोकप्रिय भेल तँ 'राज लाइब्रेरी मे स्व? रमानाथ बाबूक भेंट क' यात्री जी एक-एक प्रति उपहार देलथिन। रमानाथ बाबू भर्त्सनाक स्वर मे कहलथिन—की ई अन्ट-सन्ट लिख' लागल छी? नीक विषय नहि फुरैत अछि?' (पृ. 276)

आदिम कथा-काव्य : लय सँ बुनल जीवनकथा

ललित साहित्यक जाहि विधाक विकास लोकसाहित्य मे सर्वाधिक भेल, से कथा-काव्य छल। अपन स्वभावहि सँ ई धर्मनिरपेक्ष आ समाज-सरोकारी विधा छल। चर्याक संबंध मे नहि, ने संस्कार आदि, भावानुभूति धरि सीमित रहबाक एतय कोनहु गुंजाइश छल। आँखिक देखजल सामाजिक यथार्थ, जाहि पर प्रतिक्रिया जरूरी हो, एकर विषय बनैत छल। तहिना, मनोरंजनक लेल कविता मे खिस्सा जोड़ब, जाहि मे समाजक अवधारणा, परिकल्पना आ स्वप्नक पूरा वर्णन भ' सकैत छल। समाजक कोनो लोक वा समुदाय, जकरा प्रति घोर असहमति हो, एकर विषय भ' सकैत छल। मिथिलाक जातीय काव्य-विधा सब मे गीतक बाद जाहि दोसर विधा कें आधुनिक कालक कवि लोकनि द्वारा सर्वाधिक प्रयोग कएल गेल, से यैह कथा-काव्य छल। हमरा लोकनि देखैत छी जे आधुनिक युग मे जे क्यो महाप्राण कवि भेलाह, किछु ने किछु रचना कथाकाव्य विधा मे अवश्य केलनि।

अपन संपादित संग्रह 'मैथिली कथाकाव्य'क भूमिका मे रमानाथ झा कथाकाव्य कें परिभाषित करबाक चेष्टा कयलनि अछि—'कथाकाव्य मे प्रधानता होइछ कथानकक मुदा कवि अपन व्यक्तित्व कें कथा सँ कतबो असम्पृक्त राखए चाहथु संवेदनाक रागात्मक अभिव्यक्ति होइतहि कविक व्यक्तित्व हुनक कथा कें रंजित कइए देत, तथापि गीतिकाव्य मे कवि यदि अपन स्वानुभूति कें प्रधानता दैत छथि तँ कथाकाव्य मे हुनक दृष्टि मुख्यत: कथानक दिस रहैत छनि। कथाकाव्य मे कखनहु कविक व्यक्तित्व कथाक मध्य जे व्यक्त होअए लगैत अछि जे कथाक दोष कहब। एहन दोष जनसीदन जीक 'विधवा-विलाप' मे दृष्टिगोचर होयत।'[1] तात्पर्य जे एहि विधााक मूल स्वभाव कविता मे कथानकक अभिव्यक्ति थिक, आ कविक स्वानुभूतिक प्रकटीकरण एहि विधाक लेल वर्जित क्षेत्र थिक। आधुनिक मैथिली कविता मे हमरा लोकनि अनेको कथाकाव्य लिखल देखैत छी जाहि ठाम एहि सब गुणक निर्वाह भेल अछि।

आधुनिक कथाकाव्य सब कें देखने सामान्य पाठकक ई धारणा बनैत छैक

जे कथाकाव्य दीर्घकविता प्रकारक काव्यरूप थिक जकर लम्बाइ मे पैघ होयब जेना अनिवार्य गुण होइक। मुदा जातीय कवितारूप मे जँ एकर दृष्टान्त सभक अवलोकन करी तँ कैक टा बात ध्यान देबा योग्य भेटैत अछि। आकार मे ई छोट होइछ जाहि मे परिवेश, वातावरण, चरित्र-चित्रण आदिक अवकाश नहि पाओल जाइछ। शब्द-शब्द मे व्यंजकता ताहि तरहें भरल रहैत अछि जे श्रोता/पाठक बिना कोनो अतिरिक्त परिश्रम कयने वातावरण, चरित्र-चित्रण एहि सब कथूक ऊहि स्वयं क' लैछ। कतोक कविता तँ मात्र संवादात्मक होइत अछि अथवा उक्ति-प्रत्युक्तिमूलक। एक टा दृष्टान्त देखी—

हमरा बाड़ी हमरा बाड़ी के ठनकय?
राजा-कोतबाल
मँगैए की?
आरब चाउर नब ढकना,
राजा पठौलनि एक टा कुमहर ले'
देबह तँ दैह नहि तँ गाछ काटि लए जेबहु।[2]

ई कथाकाव्य मिथिला मे नीक जकाँ प्रचलित रहल अछि, अनेक जन अपन बाल्यावस्था मे निरक्षरो जन कें ई कविता पढ़ैत सुनने हेताह। कविताक कथानक स्पष्ट अछि। जमींदारी राजक कथा थिक। जमींदारक कोतबाल रैयत सँ कुमहर माँगय आएल अछि। राजा कें मात्र कुमहरक आवश्यकता छैक मुदा कोतबाल अपनो आवश्यकता ओहि मे जोड़ि लेलक अछि। नौ ढकना अरबा चाउर। इतिहास सँ जनतब होइत अछि जे अंग्रेजक जबाना मे, सौंसे भारत मे मिथिले राज ओ जगह छल जतय जमींदारक अमला सब कोनो ने कोनो बहपे किसानक अधिकतम उपजा दफानि लैत छल। कोतबालक ठनकब सुनि क' स्पष्ट बूझि लेल जाइत अछि जे अवश्ये ओ किछु मँगबा लेल आएल होयत। कोतबालक रुआब केहन छैक जे नहि देला पर ओ कुमहर समेत ओकर गाछ काटने चलि जायत। एहने एक आर फकड़ा मे राजाक कोतबालक प्रताप कहल गेल अछि—

एक खुट बालु, दुइ खुट चाउर
राजा पठौलक कुम्हरा टोल
से कटहर पाकल की फूटल?
—आब पाकले।[3]

प्रताप एहेन जे एक सेर बालुक बदला ओ किसान सँ दू सेर चाउर दफानि लैत अछि। ओ जँ गाछ मे फड़ल कटहर देखि लियए तँ ककर मजाल छैक जे नहि कहि देत। आदि-आदि।

स्वाभाविक जे राजपरिवारक शोषण आ अनुदारता पर लोक-मत आलोचनात्मक छल। एक टा फकड़ा मे एकर किछु वर्णन आएल अछि—

—हे गिरगिटिया रानी, कतय सँ एलह?
—उत्तर खोन्हि मटिखुनमा सँ
—हमरा ले' तों की की अनलह?
—कान खोड़ि गुजुआ
—सेहो गुजुआ किसको दीया?
—राजा-बेटी हाथ को दीया
—राजा-बेटी की की दीया?
—हाथी छोड़ि बगेड़ा दीया
—सेहो बगेड़ा काहाँ हय?
—बिन्दराबन मे चरता है।[4]

एहि तरहें, देखि सकैत छी जे ठीक बीच मे सँ कथानक कें उठा लेल गेल अछि, ओकर पूर्वांश अकथित छैक आ उत्तरांश सेहो अकथित छैक। मुदा व्यंजकता तेहन संक्रामक छैक जे दुनू दिस सहज उह्य भ' जाइत अछि। एहि मे उक्ति-प्रत्युक्ति शैलीक प्रयोग भेल अछि। एही शैली मे रचल एक आर कविता देखी—

पबनी कर गे पबनी कर
कहाँ से करब गे कहाँ सँ करब?
रिन-पैंच कर गे रिन-पैंच कर
कहाँ सँ सधाएब गे कहाँ सँ सधाएब?
खयने जो पड़ाएल जो, खयने जो पड़ाएल जो।[5]

एहू कविता मे जमींदारी राजक अन्यायपूर्ण व्यवस्थाक चित्र अछि। अभावक कारण एक गरीबिन पाबनि करब छोड़ि रहल अछि। ऋण-पैंच ओ ल' क' पाबनि निमाहि सकैत छल मुदा आगुओ कोनो अर्थागमक उपाय नहि देखाइत छैक तें ऋण लेब ओ अधलाह बुझैत अछि। ई ओकर नैतिक स्तर अछि। दोसर दिस जे गरीबिन अछि तकरा पर एहि अन्यायपूर्ण अर्थव्यवस्थाक मारि बेसी पड़ि चुकल छैक, ओ आब विद्रोह पर उतारू अछि। विद्रोहक बेर मे नैतिकताक टुटब अवश्यंभावी एहि दुआरे होइछ जे अन्यायी वर्ग अनैतिकते बरति क' ओकर शोषण कयने रहैत छैक। ओ पड़ोसिया गरीबिन सुझाव दैत छैक जे खयने जो, पड़ाएल जो। अंग्रेजक राज, जमींदारक शासन, बाबू-भैयाक प्रताप—एहि सब कथूक बाद एक नि:स्व गरीबक विद्रोह आर भइये की सकैत छल? एहू कविताक शैली तद्वते छैक। अन्तर एक टा छैक जे ओहि मे रैयत मात्र दू वाक्य बजैत अछि बाँकी चरि वाक्य मे शासनपूर्वक

उतारा कोतबाल दैत अछि। लोककविक काव्यकला देखबा योग्य अछि जे थोड़बे टा पाँती द्वारा ओ कोतबालक अकबाल आ शासनक बंगताक परिचय द' दैत अछि। दोसर कविता मे वक्ता आ प्रतिवक्ताक हिस्सेदारी बराबर-बराबर छैक कारण दुनू समान रूपें गरीब अछि। अनुभवक निचोड़ अंतिम पाँती मे अयलैक अछि। एहू कविता मे कथानकक पूर्वांश आ उत्तरांश अकथित छैक, मुदा से सहज उह्य अछि।

उपर्युक्त दुनू दृष्टान्त उक्ति-प्रत्युक्तिक शैली मे अछि। अनेक एहनो कविता भेटैत अछि जाहि मे उक्ति-प्रत्युक्ति नहि, एकालाप रहैछ। पूर्णत: संवादात्मक। दृष्टान्तक लेल एहि कविता कें देखल जा सकैछ—

एक बेर बभ्यो गलफड़ फट्यो
बघबर पंच चील्ह सँ बच्यो
जे नहि जानय बंसीक फ्यो
तकरा आगू बंसी द्यों[6]

जेना कि कविता सँ स्वत: स्पष्ट अछि, एहि मे एक माछक अनुभवक कथा वर्णित भेल छैक जे एक बेर बंसी मे बाझि गेलाक बादो भाग्यवश छुटि क' बचि गेल छल। ओ माछ फेर पानि मे पाथल बंसी देखैत अछि, ताही पर ओकर ई उक्ति छैक। कथानक एहि सँ बेसी यैह छैक जे बंसी छिपला पर जखन माछक गलफड़ फाटलाक बाद ओ बंसी सँ बहरा गल छल, ठीक तखनहि एक टा चील्ह सेहो झपट्टा मारने छलैक। मानू विपत्ति जखन अबैछ तँ एसकर नहि अबैछ। मुदा भाग्यवश ओहू झपट्टा सँ ओ बाँचि गेल छल। कथानकक उत्तरांश तँ एहि मे थोड़ेक वर्णित छैक मुदा पूर्वांश तँ पूरेपूरी अकथित छैक। लोक-परम्परा मे एहि सब अकथित अंशक पूर्त्ति वाचिक गद्य सँ कयल जाइत छल। कविताधनक प्रयोग ततबे वर्तनीय छल जकरा लेल साधारणत: गद्य कें असमर्थ पाओल जाइक, अन्यथा गद्य-पद्य समान प्रतिष्ठाक भागी छल।

किछु कविता एहनो प्रकारक कथाकाव्य चलन मे रहल जाहि मे कथानक वर्णित नहि रहैत छल, केवल ओकरा दिस संकेत कयल जाइत छल। ई संकेत मुदा ततेक स्पष्ट जे कथानक झलफल देखार पड़य लगैछ। ई एहन प्रकारक कथाकाव्य थिक जे अपन लघु होयबाक कारण कथानक कें व्यक्त तँ नहि क' पबैत अछि, मुदा ई स्पष्ट क' दैत छैक जे ओ (कथानक) ओकरा पाछू अथवा ओकरा भीतर नुकाएल छैक। एक टा दृष्टान्त देखल जाय—

बहुत हँसी नहि करी
थोड़बे हँसी भला
बहुत हँसी राउत केलनि

लाठी लागल, गेला[7]
एहने एक आर कविता अछि—
अधिक क्रोधों क्रोधा ने करी
नाग-नागिन तें गेलीह
अधिक लोभें लोभ नहि करी
गिदर-गिदरनी तें गेलीह[8]

राउत, नाग-नागिन आ गिदड़-गिदड़नी किऐक अन्त कें प्राप्त केयलथि, तकर एहि ठाम प्रसंग आएल अछि। कथानक नहि अछि, जे अछि तकरा कथानकक संकेत-मात्र कहिल जा सकैत अछि। मुदा से संकेत तते विशेष अछि जे ई एक टा कविता बनि जाइछ। ई मैथिलीक आदिम कथाकाव्य प्ररूप थिक। लेखन-सुविधाक अभाव मे संक्षिप्त होयब एहू दुआरे जरूरी छल होयत जे कविता कें स्मरण राखब सुकर होइक। बाद मे जखन शिष्ट साहित्य लग मे ई पहुँचल तँ अकथित सब कें सेहो कविता मे खोलल जाय लागल। मुदा ध्यान देबाक बात ई अछि जे कविता-प्ररूपक जे विलक्षणता अछि, व्यंजनात्मकता अछि, तकर निर्वाह काव्य-प्रतिभाक माँग करैत अछि। जे कवि एकरा निमाहि सकला, सैह वास्तव मे पैघ कवि छथि।

मैथिली मे कुकाव्यक परम्परा

भारतीय काव्यशास्त्र मे कुकाव्यक निन्दा मे एक सँ एक उक्ति कयल गेल अछि। कोनो कविक लेल कुकाव्यक रचना करब साक्षात मृत्यु समान मानल गेल अछि। एक टा संस्कृत श्लोक मे तँ कुकाव्य रचनिहार कें 'अनर्थपण्डित'क उपाधि दैत कुकाव्यक असर बताओल अछि जे ई लोकनि मनुक्ख कें 'कुकाव्यहव्याहुतयो निवेशिता:' क' दैत छथिन। जतय अरसिक आगू कवित्वनिवेदन करब कें कविक सर्वाधिक प्रचंड दुर्भाग्य मानल जाइत हो, ततय स्वयं कुकाव्य रचनिहारक प्रति केहन तीव्र रोष हेतैक तकर सहजहि अनुमान कएल जा सकैत अछि।

मुदा संस्कृत मे कुकाव्यक अर्थ थिक दोषयुक्त काव्य, जे काव्यशास्त्रक नियमन के प्रतिकूल जा क' लिखल गेल हो। मिथिलाक प्रबुद्ध लोकसमाज मे 'कुकाव्य' नामक विधा प्रचलित छल तकर अर्थ एहि सँ सर्वथा भिप अछि। डॉ. यशोदानाथ झा अपन पुस्तक मे मैथिली कुकाव्य कें परिभाषित करबाक प्रयास कयलनि अछि—'कुत्सित कार्यक विरुद्ध निन्दात्मक काव्यकरूप कुकाव्य थिक।'[9] एकर प्रभावक मादे ओ लिखैत छथि—'कुकाव्य मे काव्यक आनन्द तँ भेटितहि छैक संगहि कुत्सित कार्यक प्रति घोर भर्त्सनाक कारणे मोदजनकताक संग परिष्कारक तत्त्वहु रहैत छैक।' मिथिलाक सम्भ्रान्त समाज मे कुकाव्यक की महत्त्व छल?

कुकाव्य 'कुत्सित आचरण कयनिहारक प्रति गुप्त प्रचार द्वारा सार्वजनिक रूपें निन्दा करबाक एक साधन छल।' स्वत: स्पष्ट अछि, मिथिलाक समाज, भने ओ लोक-समाज हो कि शिष्ट समाज, एक सामुदायिक, सामाजिक भावना संग जीनिहार समाज अछि। एहि ठाम जँ सामाजिक सरोकारक बहुत महत्व अछि तँ सामाजिक प्रतिष्ठोक मानि सब सँ ऊपर अछि। जें जखन क्यो व्यक्ति सामाजिक मानदण्ड कें शिथिल करबाक प्रयास करैत छल वा एहि सँ बाहर आचरण करैत छल तँ ओ (व्यक्ति) कुकाव्यक पात्र बनैत छल। कहब जरूरी नहि जे एक खास सामाजिक जीवन-पद्धतिये मे एहि विधाक अस्तित्व भ' सकैत छल, जखन लोक सामाजिक भय सँ मुक्त भ' जाय वा व्यक्तिवादी जीवन-पद्धति पर चलि अबैक, एकर प्रभाव स्वत: समाप्त छल, एकर रचनोक तखन कोनो आवश्यकता वा उपादेयता नहि रहि जाइत छल। जानि नहि कहिया सँ मैथिली मे एहि विधाक प्रचलन भेल, निश्चय जे अति प्राचीन अछि, मुदा शिष्ट साहित्य मे परिगणित नहि छल, आ लोकसाहित्यक स्वभावक अनुरूपे एकरा लिखि क' राखल नहि जाइत छल आ जेना-जेना पीढ़ी बदलय, युगबदलय, पुरान रचना सब लुप्त भेल जाइत छल। डॉ. यशोदानाथ झा सोतिपुरा मे प्रचलित कुकाव्य सभक संकलन आ अधययन कयलनि अछि आ देखौलनि जे बीसम शताब्दीक आरंभिक वर्ष सब मे तँ प्रसारित छलहे, स्वदेशी-बिलैंती-संघर्ष मे सेहो एकर प्रभावी भूमिका छल। ओ शताब्दीक अन्तो धरि बनाओल गेल कुकाव्यक संकलन कयने छलनि, एहनोक जकर पात्र लोकनि एखनहु जीवित छथि।

कुकाव्यक रचयिता के होइत छलाह। ओ अज्ञात व्यक्ति होइत छलाह। अज्ञात मुदा अपन पात्रक अवगुण सभक बारे मे गोट-गोट सूचना सँ लैस आ लक्ष्य कएल गेल घटनाक एक-एक डिटेल सँ वाकिफ। कुकाव्यक रचयिता लोकनिक एकल नाम छल—'कुच्चर कवि'। भणिता तँ नहि प्रत्युक्त भेल रहैक मुदा ठाम-ठाम अपन उक्ति कें ओ कुच्चर कविक कथन कहैत दृष्टिगोचर होथि। यशोदा बाबू लिखलनि अछि—'कोनहु कुकाव्यक बहार भेलाक छओ मास वा वर्ष दिनक बाद कोनो-ने-कोनो सूत्र सँ लोक अनुमान लगाए रचयिता कें ठिकियाबए लगैत छल। कखनहु भ्रमहु होइक तँ कखनहु अनुमान सत्यक निकटहु पहुँचि जाए।' एहना मे इहो स्वाभाविक छल जे कतोक लोक (पात्र) अपना मे सुधार अनबाक बदला अनकरे टेटर तकबा मे लागि जाइत छल। ईर्ष्या-द्वेष जनित कुकाव्यक ढेर लागि जाइत छल।

कुकाव्यक प्रचार-शैली सेहो अद्‌भुत छल। प्राचीन युग मे तँ मुँहामुँही एकर प्रचार पूरे परिसर धरि भ' जाइत छल, लोक अपन धिया-पुता धरि कें मुँहजुबानी यादि करबा दैत छल, आगू जखन टेपरिकार्डर आ लाउडस्पीकरक प्रसार भेल, एकरो जबर्दस्त उपयोग कएल जयबाक सूचना यशोदा बाबू दैत छथि। 1974 मे 'हरसिंहदेवीक

श्राद्ध' कुकाव्य बनाओल गबेल छल। बीस छन्दोबद्ध पाँतीक ई कुकाव्य भाँगड़ा शैली मे गाबि क' रिकार्ड कएल गेल छल आ सोतिपुराक विभिप रेलवे-स्टेशन पर, चौक-चौराहा पर एकरा बजाओल गेल। विषय छल जे सरिसबनिवासी लक्ष्मीनाथ झा उर्फ खोखा बाबू अपन पुत्रक विवाह मे एगारह हजार टाका गनबौने छलाह, ई तकरे विरुद्ध छल। कविता एहि पाँती सँ शुरू होइत छल—

खौआरे कुलढ़िबरी खोखा डूबि पिबथि जे पानि
मन-मन बुझथि बुझै अछि क्यो नहि, मुदा गेलनि सब जानि
स्वयं बिकौआ मोदी डागदर तिलक देखौआ गेल
दश हजार टाका गनि बाबू कानि-कानि क' देल

कुकाव्यक विशेषता छल जे एकर शब्द-शब्द मे सन्दर्भ भरल रहैत छल। खोखा बाबू खौआरे कुलक छलाह। हुनका ढिबरी बताओल गेल अछि जे धुआँ छोड़ैत वातावरण कें कार्बन डाइआक्साइड सँ विषाक्त करैत अछि। मोदी अर्थात सरिसबपाहीक डॉ. मोदनाथ मिश्र, जे एहने काज पहिने कयने छलाह। कानि-कानि क' बाबू टाका गनलनि, ई बाबूसाहेब शुभंकरपुरक बाबू मपू सिंह छलाह। आदि-आदि।

एकर जे प्रभाव पड़ल डॉ. यशोदानाथ झा लिखलनि अछि—'भाँगड़ा धुनक उतार-चढ़ाव सँ वर पक्षक लोक सबहिक दम फूलए लागल, चौक-चौराहा किंबा सभ-सोसाइटी मे जाएब लज्जास्पद बुझाए लागल। भण्डाफोड़-प्रयास कें नीक जकाँ सफल बनाओल गेल।' कुकाव्यक दूरगामी असर होइत छल। एही 'हरसिंहदेवीक श्राद्ध' के जे प्रभाव भेल, यशोदा बाबू लिखैत छथि—'समस्त सोतिपुरा मे एकर प्रभाव पड़ल जे तरघुसकी टाका लेबाक खेल पूर्णत: बन्द भए गेल। अद्यपर्यन्त ओहि रोग सँ मुक्त अछि समाज। सोति-समाज कें ई कुकाव्य पूर्णत: परिष्कारक भेल।'

तहिना, 'मिथिला पियाँक क्लब' नामक कुकाव्य मे एहन लोकक निन्दा कएल गेल छल जे वामाचारक बहपें वा ओहनो निशाँ-सेवनक व्यसनी भेल छलाह। कविता एहि पद सँ शुरू होइत छल—

चालि कुचालि भेल तहिया सँ, जहिया सँ भेल मदिरा संग
कुल-मर्यादा सब कें त्यागल, चीलम भरि-भरि पीबी भंग
देल लुटाए गहना-जेवर कें, रंडी-भड़ुआ भये नेहाल
पत्नी केर साड़ी नलहि छोड़ल, सदत दरिद्रा नाचय भाल

मर्यादा मर्यादाक हनन तकबाक क्रम मे कुच्चर कवि लोकनि एहनो विषय कें तकलनि, निधोख नाम लए तकर खेरहा सुनाओल, शिष्ट साहित्य मे जकर चर्चा बहुत बादो धरि वर्जित रहैक, एही कारणें कहियो राजकमल चौधरीक कथा-साहित्य बदनाम मानल गेल। तात्पर्य स्वजन स्त्री संग यौन-संबंध सँ अछि। कान्तिपुरक बाबू

ब्रजनन्दन सिंह पर बहराएल कुकाव्य मे ई प्रसंग अबैत छल—

स्वर्णभस्म, मकरध्वजसेवी नित नब-नब कें टेबथि
रहल जान्हि नहि तँ ओ अपने जनमल धरि कें सेबथि
पतिपना की कहब स्वजन-जन धरि नहि बूझथि पशुओ
पचमहि ठाम विवाह रचौने कन्या पुत्रक छथि ओ
प्रायश्चित्त कएल ओ, तदपि न चालि कुचालक त्यागल
विधवा कन्या एक ततहु धरि, पहुँचथि लगले लागल[10]

कुच्चर कविक साहसक परिचय आनोआन अनेक कुकाव्य मे होइत अछि, ओतय लोककवि बला अक्खड़पन आ फक्कड़पन भरपूर छैक। मिथिला मे एक जबाना छल जखन लोक वयोवृद्ध भेलहु पर अनगिनती विवाह कयने चलि जाइत छल, मुदा आठम दशक अबैत-अबैत कुकाव्यक प्रभावें ई स्थिति बनल जे सामाजिक भयवश वार्धक्य मे विवाहक सेहन्ता बाबू लोकनि कें त्यागय पड़ैत छल। 'धनि काली मंदिर' नामक कुकाव्य मे एकर दृष्टान्त देखल जा सकैत अछि। तहिना 'बुझिवंश-परिचय' नामक कुकाव्य मे प्रतिष्ठित कुल मे भाबहु-भैंसुर व्यभिचारक प्रयास कें बेनग्न कएल अछि। कुच्चर कविक साहसक तँ ई स्तर छल जे सुदेशी-बिलैंती-संघर्ष (1931-1942) मे स्वयं महराज कामेश्वर सिंहक विरुद्ध 'बिलेंती तेजी' नामक कुकाव्य रचल गेल आ से लोकप्रिय तेहन भ' गेल जे महराज कें अपन समर्थन मे कुच्चर कविक प्रबन्ध कए 'सुदेशी सुस्ती' सनक कुकाव्यक रचना कराब' पड़लनि। 'बिलेंती तेजी' जँ छियालीस पाँतिक छन्दोबद्ध कविता छल तँ प्रतिरूप मे रचल 'सुदेशी सुस्ती' 164 पाँतिक विस्तार लेने छल। मुदा असल कुच्चर कवि असले छलाह। चम्पानगरक राजा कीर्त्यानन्द सिंह कें सोति-समाज मे उठेबाक प्रश्न पर जे लोकनि नितान्त सक्रिय छलाह, ओहि मे महराजक सार मुकुन्द झा अग्रणी रहथि। आचार्य रमानाथ झा सेहो सक्रिय रहथि आ एही उद्देश्यें 'अलयी कुल प्रकाश' पुस्तकक रचना कयने रहथि। सामान्य सकल सोति-समाज मे एकर कड़ा प्रतिवाद छल जकर किछु पता 'मुकुन्दी बोली' शीर्षक कुकाव्य सँ भेटैत अछि। मुकुन्दी अर्थात मुकुन्द झाक। एहि मे कीर्त्यानन्द सिंहक पाँजि 'अलैबार बैगनी' व्यंग्यवश अणैवार कहल गेल छल। कुकाव्य शुरुहे एहि पद सँ होइत रहैक—

मकुना जुलुम मचौलें रौ
सोतिआइ चौपट कयलें रौ।
अणैबार कें सोति बनौलें
फणैबार छउ बाँकी
अपन रूप अपनहु नहि देखलें
बनलें सागक ढाकी
मकुना जुलुम मचौलें रौ।

आचार्य रमानाथ झाक लेल कहल गेल अछि—'दस-बीस टका रमनत्था लए कें/ भीम, बुद्धि, रावण कें अनलक/ सब नरओने मिलि कें लेलकउ/ कर्महेक सब शान/ मकुना जुलुम मचौलें रौ।' एही घटना कें ल' क' अणैबार महाश्वमेध यज्ञस्य तृतीय: सर्ग:' नामक एक दोसरो कुकाव्य भेटैत अछि जाहि मे कुच्चर कवि ई संकल्प कयने छथि जे एक-पर-एक सर्ग लिखैत ओ महाकाव्य तैयार क' लेताह जा एहि पर्वक अन्त नहि होइत अछि।

कुकाव्य मैथिली लोककविताक एक विलक्षण रूप छल जकर आदर्श, मान्यता, अनुमोदित व्यवहार, एतय धरि जे शब्दावली समेत तँ शिष्ट समाजक होइत छल मुदा एकर बाना पूर्णत: लोकसाहित्यक छल। अधिकतर कुकाव्य मे यद्यपि परंपरापंथीक कट्टरपन आएल छैक मुदा एहनो तत्त्व कम नहि छैक जे सामाजिक विकास कें गति देबाक इच्छाशक्ति सँ भरल अछि। ई मैथिली कविताक एक विलक्षण मिलनबिंदु छल जतय लोकसाहित्य आ शिष्टसाहित्य एक दोसरक प्रभाव कें ग्रहण करैत देखाब दैत अछि।

मैथिलीक नेना-गीत

मिथिलाक जातीय कविता जाहि ठाम अपन सर्वाधिक कल्पनाशीलता कें ल' क' प्रकट भेल, से मैथिलीक लोक नेनागीत थिक। 'गीत' तँ मात्र एकरा कहले टा जाइत अछि, असल मे एकर स्वरूप फकड़ा बला अछि जाहि मे तुक मिला क' एकक बाद एक पाँती जोड़ल रहैत अछि। तखन, फकड़ा सँ जे वस्तु एकरा अलग करैत अछि से थिक एकर लय। गीत जकाँ तँ ई गाओल नहि जाइछ कारण राग आ तालक एहि मे अभाव रहैछ मुदा मुक्तक फकड़ा जकाँ ई पढ़लो नहि जाइछ, अपितु एक खास लय मे, समुच्चा आरोह-अवरोह आ ध्वन्त्यात्मकता आ काकुक संग पढ़ल जाइछ। हँ, लोरी-सन किछु प्रकार गाओलो जाइछ मुदा ओहिठाम सेहो लयक प्रभाव किछु बेसी काज करैत देखल जाइछ। 'नेनागीत' नाम लोक-अध्येता डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंहक देल नाम छियनि, जनिकर 'मैथिली नेनागीत' नाम सँ एक संकलनो छपल छनि। एहि क्षेत्र मे डॉ. अणिमा सिंहक कएल काज सेहो महत्त्वपूर्ण छनि।

भारतक समस्त लोकभाषा सब मे एहि प्रकारक लोककविता अवश्य अछि जकरा नेनागीत कहल जा सकैछ। नेनागीतक तात्पर्य एतबे अछि जे एकर रचना नेनाक मनोविनोदार्थ होइत अछि बाँकी रचनाकार एकर समर्थे लोक, मुख्यत: स्त्रिगण होइत छथि। कोनहु परिवार मे नवपीढ़ीक आएब लोकसाहित्य मे कतेक पैघ महत्त्व रखैत

अछि तकर अनुमान हमरा लोकनि सोहर गीतक व्याप्ति आ महत्त्व सँ क' सकैत छी। सोहरक क्षेत्र बच्चाक जन्म अवधि धरि छैक। जहिया सँ बाललीला शुरू होइछ, तखन ई नेनागीतक क्षेत्र भ' जाइत अछि। मिथिलाक लोक-समाज अपन नबका पीढ़ीक तकतान कतेक हियाब सँ करैत छल तकर पता हमरा लोकनि कें मैथिली नेनागीतक व्यापक परिसर कें देखि क'लागि जाइत अछि। डॉ. मौन मैथिली नेनागीतक निम्नलिखित प्रकार, संकलित कयने छथि—पलनागीत अर्थात् लोरी, अंग-अंग मालिसक गीत, झुलुआ गीत, रूसल नेना कें मनाउनि गीत, खानपीनक गीत आ खेलगीत। जाहि किछु प्रमुख खेलक गीत ओ संकलित क' सकलाह अछि से सब थिक—अट्टापट्टा, अटकन-मटकन, गदाबाजी, घोघोरानी, कलम-दुआत, करिया झुम्मरि आ गुल्लीडंडा। मिथिला मे प्रचलित किछु आनो खेल सभक चर्च ओ कयने छथि जेना हरदीबासा, चिक्काडोलि, डोल-पत्ता, सोनाडुब्बी, गिद्धा गुरकान, झो-मक्का, गद-गदरासी, गिरगिटिया रानी, अन्हरिया-इजोरिया, कोइल-पतरो, उरुक-बुरुक आदि। संभव जे एहू मे सँ किछु खेलक संग फकड़ा उचारबाक चलन होइक। बाँकी गीत सभक जे नामकरण ओ अयने छथि ताहि सँ अवसरक अनुसार गीतक प्रकारक व्यवहृत होयबाक चलन स्वत: स्पष्ट अछि।

आन-आन भारतीय लोकभाषा सभक जे पारंपरिक नेनागीतक वर्गीकरण हमरा लोकनि देखैत छी ताहि मे एक प्रकार कथागीतक अवश्य होइत अछि। तकर तात्पर्य जे कविता द्वारा गाबि क' नेना कें खिस्सा सुनाओल जाइछ। मैथिलीक परंपरा दिस देखी तँ ई बात खास तौर पर रेखांकित करबा योग्य अछि जे पारंपरिक लोकरचना सब मे एकछाहा कथा-गीत जकरा कहल जा सकय तेहन गीतक अभाव रहल अछि। कथा सुनबाक अवस्था नेनाक पाँच बरख पुरलाक बादे अबैत छैक आ ताधरि गद्य मे खिस्सा सुनबाक आ अपना हिसाबें ओकरा बुझबाक न्यूनतम अवगति ओकरा भ' गेल रहैत छैक। एहन प्रतीत होइत अछि जे एहि अवस्थाक नेनाक मनोविनोदक पूरा भार मिथिलाक लोक-समाज गद्य पर देलकैक जकरा प्रसादात लोकनि मैथिली लोक कथाक विशाल भंडार हमरा लोकनि कें प्राप्त भेल। एहि अवस्थाक बाद नेना लोकनि अपन खेलक वास्ते अपन गीत अपने जोड़ि लैत छलाह तें खेलगीतक जे प्रकार सब मैथिली मे भेटैत अछि तकर सूक्ष्म अध्ययन कयने स्पष्ट भ' सकैत अछि जे एकर आदि रचनाकार कोनो स्त्रिये होथि से जरूरी नहि, पुरुखो भ' सकैत छथि से भने एखन नेपे किएक ने होथु।

मैथिली नेनागीत मे अलग सँ कथागीतक चलन नहि होयबाक सब सँ प्रमुख कारण समस्त प्रकारक नेनागीत, मे कथा तत्त्वक अनिवार्य समावेश थिक। शिशु कें पलना मे झुलबैत काल कि निपक आवाहन करैत काल जे गीत गाओल जाइछ, देखब

जे ओहू मे भितरे भितर एक कथा चलैत रहैत छैक। तहिना गीत भने अंगमालिसक हो कि रूसल नेना कें मनेबाक, ओहि मे एक कथाक अन्तर्धारा चलैत रहैत छैक। ठीक यैह बात झुलुआगीत कि खानपीन गीत कि खेलगीतक सन्दर्भ मे सेहो कहल जा सकैत अछि। बिचारला पर हमरा लोकनि प्राय: एहि निष्कर्ष पर पहुँचब जे एना अपना समाजक मिथकीय स्वभावक कारण अछि। एतय धरि जे जे गीत पूर्णत: वर्णनात्मक होइत अछि ताहू मे अलग-अलग दृश्यक वितान आपस मे गुथि क' एक खिस्साक रूप धारण क' लैत छैक। खिस्सा आ बालसाहित्य जेना अन्योन्याश्रित होइक। खूब प्रचलित झुलुआ-गीत छैक—

झूल रे झूल। के के झूल? बबुआ झूल
आम झूल, अमपाकड़ि झूल
अपन पलंग पर बौआ झूल
आमक ठैली कोइली झूल
बाँसक फुनगी सुगना झूल
भानस करैत भनसीया झूल
कोठिक पाछू बिलड़बा झूल।[11]

एहि चित्रणात्मक वर्णनक जे गतिमयता छैक, प्राय: सैह एकरा कथात्मक बना दैत छैक।

कविता चाहे वर्णनात्मक होइक वा चित्रणात्मक, एहि सभक भीतर जे एक अंतर्धारा चलैत रहैत छैक, से कथाक रूप लेने रहैत अछि। किछु ठाम तँ ई बेसी स्पष्ट भ' क' उभरि अबैत अछि—जेना एहि लोरी गीत मे—

निनियाँ आयल निनपुर सँ
बौआ आयल ममहर सँ
एक सूप लाओल देसरिया धान
तै धान के गूआ पान
गुऐतिन कहए गूए नै
पनैतिन कहए पाने नै
बौआ कहए दाँते नै।[12]

एहि कविताक काव्य-सौन्दर्य पर कनेक विचार कएल जाय। एहि ठाम दू टा गाम अछि—निनपुर आ ममहर। निप स्वयं अपने एहन अकबाली जे जाहि गाम मे ओ बसैत अछि तकर नामकरण समेत ओकरे नाम पर भेल छैक। दोसर गाम अछि ममहर (मामा गाम)। ओहि गामक जरूर कोनो नाम होयतैक, हरेक गामक होइत अछि, मुदा बौआक लेल ओ तहिना निरर्थक जेना मायक नाम। माय तँ ततेक मीठ

होइत अछि जे ओकर की नाम होयतैक, ओ तँ बस माय होइत अछि। ममहर सँ बौआ आएल छथि आ निनपुर सँ निनियाँ। बौआ-सन प्रिय लोक, तकरा लग जखन ननियाँ आएल तँ खाली हाथ कोना आएत? जे जुड़लैक से अनलक। ओ एक सूप देसरिया धान लेने आएल अछि। देसरिया भेल ओ धान, जकर ममहरे जकाँ कोनो नाम नहि छैक, ओ तँ शुद्ध मिथिलादेसक माटिक उपजा थिक। निनियाँक नियार छैक जे एहि धानक ओ गूआ-पान किनत आ बौआ कें खुआओत। असली खिस्सा तँ एकर बाद शुरू होइत छैक। निप जखन अबैत छैक तँ एक्के बेर सरपटे नहि आबि जाइछ। पहिनें तन्द्रा अबैत छैक, तखन अर्द्धनिद्रा आ तखन निद्रा। एहि बीच मे की होइत छैक जेक निनियाँ गूआ किन' जाइत अछि तँ गुऐतिन कहैत अछि जे गूआ नहि अछि, सब बिका गेल। लाचार ओ पनैतिन लग जाइत अछि तँ ओहो सैह कहैत अछि। एहि 'गुऐतिन' (सुपारी बेच'वाली) आ 'पनैनितन' (पान बेच'वाली) शब्द पर सेहो थोड़े अख्यास करबाक चाही। ई दुनू पेशा अपेक्षाकृत सरल छल ते स्त्रिगणक नियंत्रण मे छल। बाजार जखन बदलैत छैक तँ अपना संग प्राचीन मिथक आ शब्दावली कें समाप्त करैत बदलैत अछि। आइ जँ लोकसाहित्यक प्राचीन वस्तु आ शब्द लुप्त भेल भेटैत अछि तँ ई नहि बुझबाक चाही जे ओ अपने समाप्त भ' गेल होयत। हमरा लोकनि भने ओतय धरि पहुँचि पाबी के नहि पहुँचि पाबी, यथार्थ यैह अछि जे एहि समाप्तिक पाछू कोनो बलशाली कारक होइत छैक। अस्तु, निराश-हताश भेल निनियाँ अन्ततः जखन बौआ लग पहुँचैत अछि, बौआ ई कहि क' ओकर सब दुख दूर क' दैत छेक जे हमरा दाँते नहि अछि। अर्थात पूर्ण निद्रा। निश्चय मानल जाय जे एहि कविताक आदिरचयिता कोनो स्त्री रहल हेती। एहि गज्झिन लोककविताक बुनाबटि सँ हमरा लोकनि मैथिलीक ओहि आदिरचयित्रीक काव्य-प्रतिभाक अनुमान पाबि सकैत छी।

किछु कविता मे तँ वास्तविक गाम-घर आ वास्तविक परिस्थिति धरिक वर्णन आएल अछि। एहना ठाम सत्ता-प्रतिष्ठानक अकर्मण्यता आ अनीति धरिक उल्लेख पाबि लैत छी। एहि झुलुआ-गीत मे घटनावलिक पूरा शृंखला एहि तरहें आएल अछि—

घुघुआ मना, उपजे घना
बौआ कें गढ़ा दे कान दुनू सोना
बौआ खेलकै दूध-भतबा
कुकूर चटलकै सब पतबा
जा हम लेलहुँ लाठी
तामे भागल साठी

साठी सठेलपुर, बेरमा कचहरी
बेरमा मे आगि लागल, जरि गेल मुसहरी।[13]

लाठीक डर सँ जखन कुकूर भागल तँ सीधे साठी गाम पहुँचल। कोन साठी? साठी सठैलपुर। जेना बनगाँव-महिषी। साठिएक लगपास मे बेरमा कचहरी (जमीन्दारक क्षेत्रीय कार्यालय) छैक। ताहि बेरमा मे एक बेर आगि लागल तँ सौंसे मुसहरी (मुसहरक टोल) जरि क' सुड्डाह भ' गेल छल। अर्थात कचहरी (सरकारक प्रतीकात्मक उपस्थिति) रहनहि की? मिथिलाक गाम सभक जँ लिखित इतिहास होइत तँ हम सब जानि सकैत छलहुँ जे ई कोन वर्षक घटना थिक। एखन एहि वर्ष हरिदास जीक आत्मकथा 'जनम, जुआ मति हारहु' छपल अछि जाहि मे हम सब 1940 मे दरभंगा राजक किरदानी सब देखैत छी। ओना मुसहरी जरबाक घटना एक सामान्य घटना थिक, हरेक गाम मे ई कतेको बेर भ' चुकल होयत। तें इहो संभव जे एहि ठामक ई कथन मुसहर जातिक प्रति मात्रएक दुर्भावना आ अभिशाप होइक। कबी छलैक—पड़बा धन आ मुसहर जन। अर्थात एहि दुनूक कोनो भरोस नहि, ई दुनू पोस नहि मानैत अछि। तात्पर्य एतबे जे मुसहर एखन धरि आर्यीकरणक भीतर आएब नहि गछने छल, दीनाभद्री एखनो हुनका लोकनिक जीवित दादाजी छलथिन। जे लोकनि स्वयं अनार्य सँ आएल छलाह हुनको लोकनिक लेल ई अभिशाप सोचब नितान्त सम्भव छल, कारण आर्यीकरण एतबा जल्लादी तँ अपन समर्थक मे भरिये दैत छल। अस्तु।

बाल लोककविता मे कतोक वस्तु तँ एहनो भेटैत छैक जकर अपन सुस्पष्ट ऐतिहासिक अभिप्राय रहैत छैक। कैक ठाम तँ कोनो युगक ऐतिहासिक घटना अपन समुच्चा अन्तर्वस्तु लेने कविता मे उतरि अबैत छैक। जेना एहि खेलगीत कें देखल जाय—

छकौड़ी छबीला राय
तेक्कर बेटा भुल्ला राय
पान खाय बंगाला जाय
गोरिया दौगेने जाय
गोरिया के रत्ता
चल बरियत्ता
तीसी तेल बबुरक लस्सा
चल कबड्डी आरा
सुल्तानगंज कें मारा
तमुरिया मे आगि लागल
गाँव मे धुआँ।[14]

एतबा तँ स्पष्ट छैक जे एहि कविता मे भुल्ला राय नामक एक वीर बंकाक विस्मृत आख्यान आएल छैक जे ओहि छबीला रायक बेटा छलाह जनिका छौ टा आँगुर छलनि। मिथिलाक कोनहु गाम मे जँ गर्भविकृतिवश कोनो बच्चाक एक हाथ मे छौ टा आँगुर होइक तँ ओकर पुकारू नाम छकौड़ी राखि देल जाइक आ एक तरहें जीवन भरिक लेल, एहि ठाम तँ मृत्युक बादो ओकर अमिट पहचान बनि जाइक। एहि गीतक संचयन डॉ. मौन पूर्णियाँ जिलाक खबासपुर सँ कयने छलाह। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रत्नेश्वर मिश्र 'चल कबड्डी आरा/ सुल्तानगंज कें मारा'क संबंध 1857क महाविद्रोह संग जोड़लनि अछि। हुनकर कहब छनि जे विद्रोही लोकनि द्वारा सुल्तानगंज जीति लेबाक पछाति एहि ठाम आरा चलबाक आह्वान छैक जतय बाबू कुँवर सिंह कम्पनी सरकार सँ लड़ि रहल छलाह। महराज द्वारा अंग्रेज कें पूर्ण समर्थन देल जयबाक बादो मिथिलाक विभिप इलाका मे महाविद्रोहक ई लपट कमोबेश पसरले रहल छल, तकर पुष्टि इतिहासकार लोकनिक साक्ष्य सँ सेहो होइत अछि। 'मिथिला का इतिहास'क लेखक रामप्रकाश शर्मा (मुजफ्फरपुर जिलाक एक गाम मे) कबड्डी खेलनिहार चरबाह बालकक दू दल द्वारा ई उक्ति प्रयोग कएल जेबाक उल्लेख कयलनि अछि। एक दल कहैत अछि—

'अमरसिंह के कमर टूटलनि, कुमर सिंह के बाँहि
पुछियनु ग' 'दलभंजन सिंह सँ अब लड़ता की नाँहि'

स्पष्ट अछि जे ई दल अंग्रेजक स्वांग क' रहल अछि। दोसर दल विद्रोही सभक थिक। ओ उतारा दैत छि—

हाथी बेचब घोड़ा बेचब, सिपाही कें खियायब
लड़ब नै तँ करब की, हँसी की करायब?[15]

अस्तु। एहि तरहें हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिली लोककविताक वितान एक लम्बा-चौड़ा परिप्रेक्ष्य कें उघारैत अछि आ बहुत आराम सँ सन्दर्भ कें कथातत्त्व मे परिवर्तित क' लैछ। कैक ठाम तँ कविताक सन्दर्भ मूल विषयवस्तु सँ बहुत आगू धरि जाइछ। कतोक ठाम तँ नेना कें खेलेबाक वा फुसलेबाक लेल जे कविता बनाओल जाइछ ताहि मे समाज मे व्याप्त मिथ्याचारक ओधबाध क' देल जाइछ। जेना एहि खेलगीत मे—

—बबाजी बबाजी, धोकरी मे की?
—भुजल केराव
—खा ने।
—एखनी नै
—से किऐ?

—हग्गल गाँड़ि
—धूअ' ने!
—कनकन पानि[16]

जाड़क भय सँ कोनो बच्चा भने बिना शौच कयनहि रहि जेबाक जिद करैत पाओल जाइत हो, मुदा एहि ठाम ई आरोप एक सम्मानित चेतन लेल कयल गेल अछि, आ कविता-विधाक अपन स्वभावक कारण एकर व्याप्ति शौच-अशौचे धरि नहि, समस्त कर्तव्य-अकर्तव्यक सीमा धरि कें शामिल क' लैछ। बेटी लोकनि कें खेलेबाक गीत सब मे विषयवस्तुक विस्तार थोड़ेक आरो भेल रहैत छैक। एहि गीत कें देखल जाय—

—अलेल दीदी गे, की दीदी गे
—बभना गाछ पर की बजै छै गे?
—बेंग बजै छै गे
—छत्ता बला मनसा हेऊ के अबै छै गे?
—पहुना अबै छै गे
—अरबा चाउर तोरा मीठ लगै छह
उसना चाउर तोरा तीत लगै छह
कोठाक धमक तोरा चोट लगै छह
बहीन कुमारि तोरा नीक लगै छह[17]

आइ जकरा हमरा लोकनि घरेलू यौन-शोषण कहैत छिऐक, स्मरण रखबाक चाही जे बहुत हद धार मिथिलाक समाज मे सामान्य घटना मुदा अवाच्य कथा मानल जाइत छल। पुरुषवर्चस्वी समाजक अनुरूपे छल, मुदा स्त्री अभिव्यक्ति एकर विरुद्ध जाइत छल, एहि कविता मे तकर एक स्पष्ट उल्लेख आएल अछि। कतहु स्त्री-जीवनक विडम्बना सब बाल्यावस्थे सँ हुलकी दिय' लगैत अछि—

—लालदीदी गे, की दीदी गे
—बाबा छै निरमोहिया गे
काँचे बाँसक डोलिया गे
बीच बजार मे खसलहुँ गे
सब बरियतिया हँसलै गे
भइया लजा क' बैसलै गे।[18]

अथवा

ओही ओही ओही
कौआ रे बटोही

भैया गेलइ मोरंग कमाइ ले'
भौजिक हीया कूही।[19]

सन्दर्भ

1. रमानाथ झा/ मैथिली कथाकाव्य/ भूमिका/ पृ. 7-8
2. जिज्ञासा/ अंक 4 (1996)/ पृ. 2
3. मैथिली नेनागीत (प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन)/ पृ. 59
4. उपर्युक्त/ पृ. 60
5. जिज्ञासा/ उपर्युक्त/ पृ. 2
6. मैथिली लोकोक्ति-संचल (कमलकान्त झा)/ पृ. 51
7. उपर्युक्त/ पृ. 240
8. उपर्युक्त/ पृ. 17
9. डॉ. यशोदानाथ झा/ मैथिल ब्राह्मण-समाजक सांस्कृतिक मरौसी एवं मैथिलीक कुकाव्य/ पृ. 82
10. उपर्युक्त/ पृ. 139
11. मैथिली नेनागीत (प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन)/ पृ. 45-46
12. उपर्युक्त/ पृ. 40
13. उपर्युक्त/ पृ. 47
14. उपर्युक्त/ पृ. 62
15. रामप्रकाश शर्मा/ मिथिला का इतिहास/ पृ. 574
16. मैथिली नेनागीत/ पृ. 57-58
17. उपर्युक्त/ पृ. 67
18. उपर्युक्त/ पृ. 67
19. उपर्युक्त/ पृ. 65

ज्योतिरीश्वर आ हुनकर वर्णरत्नाकर

मैथिली साहित्य मे कविशेखर ज्योतिरीश्वरक अत्यन्त महान स्थान छनि। आचार्य रामनाथ झा लिखने छथि—नव्य भारती-भाषा-साहित्यक इतिहास मे ज्योतिरीश्वरक स्थान अत्युच्च अछि, हुनक प्रतिष्ठा अप्रतिम अछि। मैथिलीक जे कोनो ग्रन्थ उपलब्ध अछि ताहि मे हुनक वर्णरत्नाकर प्राचीनतम अछि आ वर्णरत्नाकर विशुद्ध मैथिलीक ग्रन्थ थिक, एकर रचयिता मैथिल छलाह, एकर भाषा मैथिली थिक। ताहि प्रसंग ककरहु कनेको आपत्ति नहि छनि, ऐकमत्य अछि। स्वसम्पादित वर्णरत्नाकरक भूमिका मे भारतीय भाषा-तत्वक विश्वविश्रुत आचार्य डाक्टर श्री सुनीति कुमार चटर्जी मुक्तकंठ सँ स्वीकार कयने छथि जे नव्य भारतीय भाषा साहित्य मे वर्णरत्नाकरक सदृश प्राचीन ग्रन्थ नहि अछि अथ च जकरा प्रसंग विवादक कोनो अवकाश नहि होइक, एहन बड़ विरल ग्रन्थ अछि।'[1]

बुझले बात अछि जे मैथिली मे पुस्तक-रूप मे प्राप्त जे पहिल ग्रन्थ प्राप्त होइत अछि, से ज्योतिरीश्वरक 'वर्ण-रत्नाकर' छनि। निर्विवाद रूप सँ एकर भाषा मैथिली मानल गेल अछि, जे कि लिखित मैथिलीक प्राचीनतम रूप थिक। सिद्ध साहित्यक रचना अन्य-अन्य व्यक्ति द्वारा प्रयोजनवश संकलित कयल गेल, ओकर भाषा कें ल' क' विवाद सेहो रहलैक जे कि आधुनिक भारतीय भाषाक पूर्वांचलक स्पष्ट स्वरूप निर्धारणक प्रक्रियाक निर्माणाधीन रहने स्वाभाविको छल। 'वर्णरत्नाकर' एहि विवाद सँ दूर रहल। एकर रचना विधिवत प्रबन्धात्मक स्वरूप स्थिर कए नियत उद्देश्य सँ ग्रन्थकारक द्वारा पुस्तक-रूप मे कयल गेल। ई बात भिन्न अछि जे एकर पाण्डुलिपिक एकमात्र प्रति जे म.म. हर प्रसाद शास्त्री के 1895-1900 मे, मिथिला मे भेटलनि से अयोग्य प्रतिलिपिकारक उतारल छल जाहिमे अशुद्धिक भरमार छलैक। 1901 मे प्रकाशित अपन रिपोर्ट 'ऑन द सर्च ऑफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट' मे एहि पाण्डुलिपिक विवरण दैत म.म. शास्त्री लिखलनि—'ई पोथी चौदहम शताब्दीक आदि भागक थिक। एखन धरि एहि कालक कोनो बंगाली वा मैथिल हस्तलेख प्रकाश मे नहि आयल अछि।'[2] बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाताक हस्तलेख-

संग्रह मे संरक्षित ई पाण्डुलिपि, जे तालपत्र पर तिरहुता मे लिखल छल, एहिमे 77 गोट पात हेबाक छलैक जाहिमे सँ सतरह गोट विलुप्त छल। संभवत: इहो कारण छल जे अगिला कैक दशक धरि अध्येता लोकनिक अध्यवसाय एहि पुस्तकक परायण दिस नहि लागल। एतय धरि जे ग्रियसनि सेहो एकर उपयोग मैथिली विषयक अपन कोनहु अध्ययन मे नहि क' सकलाह। एकमात्र सुनीति कुमार चटर्जी डलाह जे 1923 मे लिखल अपन एक लेख मे एहि पाण्डुलिपिक उद्धरण देलनि। 1919 मे जखन कलकत्ता वि.वि. मे मैथिलीक पठन-पाठन शुरू भेल, कतेको वर्ष धरि 'वर्णरत्नाकर' एम.ए.क पाठ्यक्रम मे रहल जखन कि ई प्रकाशित नहि छल। सर आशुतोष मुखर्जीक प्रेरणा सँ कलकत्ता वि.वि. जखन एकर प्रतिलिपि देवनागरी मे करौलक, जकर मिलान स्वयं सुनीति बाबू कयने छलाह आ प्रकाशन हेतु प्रेस-कॉपी, मैथिलीक आद्य अध्यापक पं. खुद्दी झा तैयार कयने छलाह। सतरह गोट पातक अनुपलब्धि तथा अशुद्ध हस्तलेख, यैह दुनू कारण रहल जे प्रकाशन सँ पूर्व आवश्यक बुझल गेल जे एक बेर फेर खोजबीन क' लेल जाय, कदाचित एकर दोसरो प्रति मिथिला मे भेटि जाय! स्वयं खुद्दी झा मिथिला आबि पर्याप्त अन्वेषण कयलनि मुदा सफल नहि भेलाह। तकर एक सीमा इहो छल जे एकर प्रथम (आ अंतिम सेहो) प्रति म.म. हर प्रसाद शास्त्रीक सहायक पं. विनोद बिहारी काव्यतीर्थ कें मिथिलाक कोन गाम मे, कोन व्यक्तिक घर सँ भेटल रहनि, तकर कोनो उल्लेख शास्त्री जीक टिप्पणी मे नहि छल, यद्यपि कि शास्त्री जी 1931 मे दिवंगत भेलाह। 'अन्तत: एकमात्र एशियाटिक सोसाइटीक उक्त हस्तलेखक आधार पर सुनीति कुमार चटर्जी ओ पण्डित बबुआ मिश्र एकरा जेना-तेना सम्पादित क' 1940 ई. मे बंगाल एशियाटिक सोसाइटी सँ प्रकाशित करौलनि। मूल तड़िपत हाल धरि बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक पुस्तकालय मे सुरक्षित छल, किनतु सुनैत छी जे लुप्त भ' गेल।'[3]

'वर्णरत्नाकर'क अतिरिक्त ज्योतिरीश्वरक दू गोट आओर पुस्तक भेटैत अछि—कामशास्त्र-विषयक 'पंचसायक' तथा प्रहसन (नाटक) 'धूर्त्त-समागम' किछु विद्वान यथा मनमोहन चक्रवर्तीक इहो कहब अछि जे कामशास्त्र-विषयक एक आर ग्रन्थ 'रंगशेखर'क रचना ओ कयने छलाह, जकर उद्धरण तँ अनेक पुस्तक मे भेटैत अछि किन्तु एकर पांडुलिपि नहि भेटि सकल अछि। 'धूर्त्तसमागम' हुनकर संस्कृत प्रहसन, नाटकक एक प्रभेद थिकनि जे बहुत लोकप्रिय भेल आ एकर हस्तलेख सेहो अनेक ठाम भेटल आ संस्कृत साहित्यक आरम्भिक तिहासकार लोकनि—विल्सन सँ विन्टरनिट्ज धरि महत्त्वपूर्णक एकर उल्लेख कयने छथि। अपन पुस्तक सब मे ज्योतिरीश्वर अपना बारे मे, अपन कुल, अपन गाम, अपन उपाधि आदिक बारे मे पर्याप्त लिखने छथि, कदाचित एतेक बारंबार जे ओहि युगक आन कोनो कवि,

यथा विद्यापति सेहो एहि सँ कम्मे लिखने छथि। तथापि हुनका संबंध मे अनेक भ्रम आरंभे सँ बनल रहल अछि। आ किछु तँ एखनहु बनले अछि। 'धूर्त्तसमागम'क प्रस्तावना मे ओ अपना कें रामेश्वरक पौत्र एवं पवित्रकीर्त्ति धीरेश्वरक पुत्र कहने छथि। कविशेखर हुनक विदित उपाधि छलनि। धूर्तसमागमक अतिरिक्त 'पंचसायक' एवं 'वर्णरत्नाकर' मे सेहो हुनक नामक संग एहि उपाधिक प्रयोग अछि। हुनक आचार्यत्व तत्कालीन इतिहासक आश्रुत विषय थिक। उक्त प्रस्तावनाक अन्तर्गत हुनक प्रज्ञा तथा प्रतिष्ठाक जे विवरण देल गेल अछि ताहि सँ ज्ञात होइत अछि जे ओ उच्च राज्य पदाधिकारी, वैदिक कर्मकाण्डी, दर्शनिक विद्वान, बहुभाषाविद्, शिवभक्त एवं निपुण संगीतज्ञ छलाह।[4] शैलेन्द्र मोहन झा 'सुभाषिरत्नभाण्डागार' मे संकलित एक श्लोक (आन कविक) उद्धृत कयने छथि, जाहि मे कविशेखर ज्योतिरीश्वर कें 'दिन मे चारि सय छन्दक रचना केनिहार, चौंसठो कलाक आश्रय' तथा 'संगीतागमनागर' कहल गेलनि अछि।[5]

आचार्य रमानाथ झा लिखने छथि जे एहि बात मे कोनो विवाद नहि अछि जे वर्णरत्नाकर आधुनिक भारतीय भाषा-साहित्यक सब सँ प्राचीन ग्रन्थ थिक आ तकर भाषा मैथिली थिक-दुनिया भरिक अध्येता लोकनि एहि तथ्य पर एकमत छथि, मुदा एहि ग्रन्थक रचयिता स्वयं ज्योतिरीश्वरेक परिचिति पर, हुनकर काल पर, आश्रयदाता राजाक नाम पर आ एहि ग्रन्थक विधा पर भयंकर विवाद रहल अछि। अध्येता लोकनिक उध्यम सँ किछु विवादक निपटारा तँ भ' गेल मुदा किछु एखनो विद्यमान अछि। पहिल तँ यैह अछि जे की ज्योतिरीश्वर विद्यापतिक पितामह-भ्राता छलाह? विद्यापतिक प्रपितामहक नाम छलनि धीरेश्वर आ ज्योतिरीश्वरक पिताक नाम सेहो धीरेश्वर रहनि। की दुनू एक्के व्यक्ति छलाह? विद्यापति-पदावलीक अपन भूमिका मे नगेन्द्र नाथ गुप्त मिथिला मे प्रचलित विश्वासक हवाला दैत लिखि गेलाह जे हँ, ई दुनू एक्के व्यक्ति छलाह। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी बिनु एहि तथ्यक छानबीन कयने एकरा स्वीकार क' केलनि। म.म. उमेश मिश्र, बबुआ मिश्र आदि एहि प्रसंग पर चुप रहि गेलाह। अपन इतिहास मे डॉ. जयकान्त मिश्र एहि पर सन्देह अवश्य प्रकट कयलनि मुदा प्रमाणपूर्वक तथ्य निरूपित करथि, से नहि भ' सकल। आचार्य रमानाथ झा 'निबंधमाला' मे संकलित अपन निबंध 'ज्योतिरीश्वर' मे एहि संग-संग आरो किछु विवादक संगत समाधान तथ्य आ तर्कक संग प्रस्तुत कयसलनि। हुनकर ई लेख अवश्य पढ़बा योग्य अछि। (आचार्य रमानाथ झा रचनावली खंड दू मे ई लेख संकलित अछि) ओ स्पष्ट केलनि जे विद्यापतिक प्रपितामह महावार्तिक नैबन्धिक धीरेश्वर छलाह देवादित्यक बालक आ ज्योतिरीश्वरक पिता धीरेश्वर छलाह रामेश्वरक बालक जकर उल्लेख स्वयं ज्योतिरीश्वर धूर्त्तसमागम प्रस्तावना

मे कयने छथि। विद्यापतिक मूल विस्फी थिक किन्तु ज्योतिरीश्वर अपन मूल पाली (पल्ली जन्मभूमिना) कहैत छथि। अत: ज्योतिरीश्वर विद्यापति सँ सर्वथा भिप वंशक छलाह।

दोसर विवाद ज्योतिरीश्वरक आश्रयदाता राजाक बारे मे रहल। धूर्तसभागमक प्रस्तावना मे अपन आश्रयदाताक नाम हरिसिंहदेव लिखलनि अछि। पहिनहु कहल गेल जे धूर्तसमागम एक लोकप्रिय रचना छल आ एकर अनेको हस्तलेख पाओल गेल। किछु हस्तलेख मे हरिसिंहदेव के स्थान पर नरसिंहदेव पाठ भेटैत अछि। एहि आधार पर ई विवाद ठाढ़ भेल जे ओ नरसिंहदेव (1174–1226)क आश्रित छलाह आ कि हरिसिंहदेव (1296–1324)क ? विवादक स्थिति ई रहल जे बंगाल एशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित वर्णरत्नाकरक सम्पादक द्वय मे सँ सुनीति कुमार चटर्जी जतय हुनका ऐतिहासिक तथ्यक समीक्षण करैत हरिसिंहदेवक समकालीन सिद्ध कयलनि, ओत्तहि दोसर संपादक बबुआ मिश्रक मत छलनि जे ओ नरसिंहदेवक समकालीन छलाह। एहि पाछू हुनक सब सँ पैघ तर्क ई छलनि जे हरिसिंहदेवक सभासद भेलाक अछैतो पंजीमे हुनक नाम नहि अयलनि, जे असंभव-सन लगैत अछि। ओ लिखलनि—'ज्योतिरीश्वर ठाकुर कें हरिसिंहदेवक सभासद मानबा मे अकाट्य आपत्ति ई अछि जे यदि ज्योतिरीश्वर हरिसिंहदेवक सभासद छलाह तखन हुनक नाम पंजी मे किएक नहि भेटैत अछि। हरिसिंहदेवक सभासद भैयोक' ज्योतिरीश्वरक सदृश सर्वज्ञ पंडितक नामोल्लेख पंजी ग्रन्थ मे—जे मैथिलीक दृष्टिएं अत्यन्त प्रामाणिक थीक—नहि भेलनि सहसा विश्वास नहि होइछ।'7 हुनका मतें, 'ज्योतिरीश्वर अपन बाप-पितामहक नाम देलनि अछि, परन्तु मूलग्राम आदिक कोनो प्रकारें उल्लेख नहिं कयलनि, इत्यादि हिनक हरिसिंहदेव सँ प्राचीन होयबाक प्रमाण देखना जाइछ।'8 आचार्य रमानाथ झाक जाहि लेख के ऊपर चर्चा कयल गेल अछि, 1951 मे प्रकाशित ओहि लेख मे ओ सकल अज्ञानान्धकार कें दूर क' स्पष्ट क' देलनि' (वर्णरत्नाकर (मै.अका.)क प्रस्तावना मे संपादकक शब्द) जे पंजी मे तँ ज्योतिरीश्वरक उल्लेख अछिये, स्वयं ज्योतिरीश्वर सेहो अपन मूल आदिक चर्चा कयलनि अछि जे पंजीक विवरण सँ मेल खाइत अछि। जहाँधरि नरसिंहदेवक प्रश्न अछि, नरसिंहदेव कर्णाट वंशक तेसर उत्तराधिकारी राजा छलाह, बबुआ मिश्र वा आनो समर्थकक आशय एही राजा सँ छलनि, मुदा क्रिश्चियन लैसन हुनका विजयनगरक राजा नरसिंह (1487–1508) मानि बैसलाह, से एक अलगे बखेड़ा ठाढ़ कयलक जकर भ्रान्ति-निवारण आगू जा क' अध्येता लोकनि केलनि।[9]

म.म. हरप्रसाद शास्त्री अपन वर्णरत्नाकर-विषयक टिप्पणी मे लिखने छलाह जे ई ग्रन्थ चौदहम शताब्दीक आदि-भागक थिक। सुनीति कुमार चटर्जी ज्योतिरीश्वर

कें हरिसिंहदेवक समकालीन माननलि। डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहास मे ज्योतिरीश्वरक जीवन-काल 1280–1340 निर्धारित केलनि अछि।[10] भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता अपन शोध मे अनेकानेक सन्दर्भ के अकानैत ज्योतिरीश्वरक काल 1275–1324 निर्धारित केलनि अछि।[11] तहिना, तत्कालीन तथ्य सभक आकलन करैत डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' अपन पुस्तक मे लिखलनि अछि जे 'ज्योतिरीश्वरक जन्म 1230–40क करीब मे भेल छल होयत।'[12] आचार्य रमानाथ झाक आकलन एहि सँ थोड़े भिप अछि। पूर्ण तथ्य उल्लिखित कयलाक बाद ओ लिखलनि अछि जे 'ज्योतिरीश्वरक जन्मकाल शाके 1210 मे मानब उचित ओ प्राय: पचास वर्षक वयस मे, 1340 ई.क प्रान्त मे, वर्णरत्नाकरक रचना कएल, हमरा से पूर्ण संगत जंचैत अछि।'[13] प्रो. आनन्द मिश्र—पं. गोविन्द झाक आकलन एहि सँ थोड़बे भिप अछि—'वर्णरत्नाकरक रचना-काल शाके 1266 (1344 ई.)क आसपास राखल जा सकैत अछि।'[14] एहि प्रश्न पर प्राय: समस्त अध्येता लोकनि मे ऐकमत्य अछि जे अपन आन दुनू उपलब्ध पुस्तक 'धूर्तसमागम' तथा 'पंचसायक' ज्योतिरीश्वर पहिनहि लिखने छलाह तथा 'वर्णरत्नाकर' हुनकर परिपक्व वयक अंतिम कृति छियनि।

मुदा 'वर्णरत्नाकर' काव्यग्रन्थ थिक आ कि काव्यग्रन्थ नहि थिक, ई विवादक एक प्रमुख विषय बनल रहल अछि जे कि एत्तेक शोध भ' चुकलाक बाद आइयो बनले अछि। डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' ठीक ओहिना अपन परिवक्व वय मे, 1969 ई. मे 'वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन पर विधिवत शोध कयने छलाह जेना स्वयं ज्योतिरीश्वर 'वर्णरत्नाकर'क रचना कयने रहथि। स्वाभाविके जे किरण जी एहि पुस्तक कें एक काव्य-ग्रन्थ मानने रहथि। प्रश्न उठि सकैत अछि जे स्वयं ज्योतिरीश्वर एहि पुस्तक कें की मानने रहथि? की काव्य मानने रहथि। उत्तर स्वीकारात्मक अछि। पुस्तक मे दू-दू ठाम ज्योतिरीश्वर संस्कृत श्लोक मे एहि पुंस्तक कें 'काव्य' कहलनि अछि—'काव्यं श्री कविशेखरस्य सुधियां तावत्कृषीष्टोत्सवम्'। ई श्लोकांशे नहि, दुनू ठाम पूरा श्लोके अशुद्ध संस्कृत मे अछि जकर शुद्ध पाठ किरण्रा जी अपन पुस्तक मे प्रस्तावित कयने छथि। स्पष्ट अछि जे ज्योतिरीश्वर एकरा काव्ये नहि, एहन काव्य माननलि अछि जे चिरकाल धरि पाठक कें आनन्दित करैत रहल। किरण जी लिखैत छथि—'जखन रचयिता एकरा काव्य कहैत छथि तखन अनका कोन अधिकार छैक एकरा काव्य-ग्रन्थ नहि मानबाक? आन एकर आलनोचना क' क' एकरा अकाव्ये घोषित करओ से भए सकैछ, परंच आलोचना आरंभ करय पड़तैक एकरा काव्यग्रन्थ मान कय। जकर गाय से कहय बहिला आ पड़ोसी कहय गाभिन से तँ उचित नहि।'[15]

हमरा लोकनि अवगत छी 'वर्णरत्नाकर'क आद्य संपादक डॉ. सुनीति कुमार

चटर्जी, जिनका एहि ग्रन्थक उद्धारकर्त्ताक गरिमा हासिल छनि, एहि ग्रन्थ कें काव्य नहि माननलि। एकर भूमिका मे ओ स्पष्ट लिखलनि—'The author was an accomplished Sanskrit Scholar well-read in literature, and was a successful writer, too, in Sanskrit. If he wanted seriously to compose in Maithili, we could expect something really artistic from him. But frequently the book is nothing but an enumeration of names, - Cyclopaedic in character, no doubt, but a cyclopaedia is not literature.'[16] कोनो ग्रन्थक ऐतिहासिक महत्व होयब भिप बात थिक, मुदा साहित्यक एक कृतिक रूप मे एहि पुस्तक सँ सुनीति बाबू कतेक निराश छलाह, से हुनकर एहि उक्ति सँ बूझल जा सकैत अछि। हमरा लोकनि आइ नीक जकां बूझि सकै छी जे ज्योतिरीश्वरक छवि कें देखैत हुनका सन कवि सँ ओ जाहि तरहक कलात्मक कृतिक अपेक्षा करैत छलाह, कृति तँ ई अवश्ये, अनिवार्य रूप सँ अत्यन्त कलात्मक छैके, मुदा एहि कलाक मर्म कें सुनीति बाबू नहि बूझि सकलाह। हुनका मुताबिक, मैथिली मे सेहो कलात्मक हेबाक वैह शर्त्त, वैह मानदंड हेबाक छलैक जे संस्कृत-काव्यक छल। संस्कृत भिप वर्गक भाषा छल, मैथिली भिप वर्गक। दुनू वर्गक साहित्यिक वा कलात्मक आवश्यकता एक समान कोना भ' सकैत छल? जँ सैह होइत तँ ज्योतिरीश्वरक कोन महानता, जिनका लेल सुनीति बाबू एहन उच्च धारणा रखैत छथि।

सब अवगत छी जे काव्य मे दू गोट वस्तु होइत छैक—विषय आ रूप। महान कवि जखन काव्य-रचना करैत छथि तँ हुनका सँ भेड़ियाधसान क उम्मेद नहि कयल जा सकैछ। से सुनीति बाबू सेहो नहि करैत छथि। विषयक मादे तँ ओ जे किछु कहलनि, मूलत: ओ एहि ग्रन्थक अन्वेषक म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक अभिमत सँ आबद्ध बनल रहलाह। हरप्रसाद शास्त्री अपन रिपोर्ट मे लिखने छलाह—'एहि ग्रन्थक विषयवस्तु विचित्र अछि। एहिमे कवि-समय (काव्य-परिपाटी) वर्णित अछि। यथा—यदि राजाक वर्णन करबाक हो तँ हुनक कोन-कोन गुण उल्लेखनीय थिक, यदि नगरक वर्णन करबाक हो तँ ओहि मे कोन-कोन बात कहल जाय, इत्यादि। कतहु-कतहु काव्य-परिपाटी बड़ रोचक लगैत अछि।'[17] एकर रूपक बारे मे शास्त्री जी किछु नहि कहलनि, बस 'हस्तलेख' कहि क' काज चला लेलनि। सुनीति बाबू एकरा अकाव्य मानैत काव्योपयोगी गद्य-ग्रन्थ माननलि। गद्य मे ओहो वस्तु लिखल जा सकैत अछि जे साहित्य नहि हो। ई स्वयं तँ अकाव्य थिक मुदा आनक लेल काव्योपयोगी ग्रन्थ थिक—'The purpose in writing the book is not to compose a descriptive poem in Maithili : the Varnana of the various subjects in itself was not the aim. Rather, the aim was to furnish lists of things one must mention in descriting these subjects - of things in their proper order and proper setting.'[18]

एहि कृति-रचनाक पाछू एक प्रतिभाशाली कविक उद्देश्य, एहि कृतिक कलात्मकता आ एकर रूपक मर्म कें सुनीति कुमार चटर्जी किएक नहि बूझि सकलाह? काञ्चीनाथ झा 'किरण' एहि पाछूक कारणक खोज करैत छथि—'डॉ. श्री सुनीति कुमार चटर्जी भाषाविज्ञानक बड़ पैघ विद्वान छथि, परंच मैथिल जातिक जीवनक संग तँ परिचित नहि छथि। एकर विशाल लोककाव्यक तत्व कें देखबाक अवसर तँ नहि भेटल छनि। तें ओ वर्णरत्नाकर कें काव्य नहि माननलि।'[19] सुनीति बाबू एहि कृति कें अगंभीर आ असाहित्यिक तँ मानबे कयलनि, एकर रचनाक प्रयोजनक मादे हुनकर राय छलनि जे कथक वा कथावाचक लोकनिक उपयोग वास्ते ओ एकर रचना कयने छल हेताह। मोहन भारद्वाज लिखैत छथि—'वर्णरत्नाकर मैथिलीक कृति अछि, एकर लेखक मैथिल छलाह से मानियो क' ओ एकर प्रणयनक प्रयोजन तकबाक लेल मैथिल समाजक धार्मिक आ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कें देखबाक अपेक्षा बंगाल कें पढ़ब बेसी जरूरी बुझलनि। वैष्णवकालीन बंगाल मे (परवर्ती काल मे) कथावाचक लेल एहने वर्णनप्रधान पुस्तक लिखल गेल। ओहि सँ वर्णरत्नाकरक आंशिक समानता देखाओल जा सकैत अछि, किन्तु तें वर्णरत्नाकर कें ओहि कोटिक पोथी कहब युक्तिसंगत नहि।'[20] ओ पुन: कहैत छथि—'हर प्रसाद शास्त्री के जखन वर्णरत्नाकर मे पचास प्रतिशत सँ अधिक अभिव्यक्ति बंगालक भेटैत छनि अथवा सुनीति कुमार चटर्जी कें वैष्णवकालीन बंगालक कथावाचक सनक लोक लेल एहि पोथीक प्रयोजन बुंझाइत छनि तखन हुनका सभक अपन भाषा आ भूमिक प्रति अतिरिक्त आकर्षण तँ झलकिते अछि, मैथिली भाषा आ माटिक प्रति एक प्रकारक उदासीनतो देखार होइत अछि।'[21] बंगाली अध्येता लोकनिक एहि प्रवृत्ति पर जे राहुल सांकृत्यायन चुटकी लेलनि अछि तकर चर्चा पहिनहि भ' चुकल अछि।[22]

पैघ लोकक अपन प्रभावी आभामंडल होइत छैक। ओ जे किछु तय क स्थापित क' जाइत अछि, ताहि सँ बाहर निकलब बहुत कठिन होइत छैक। कदाचित एही दुआरे कहल जाइत छैक जे पैघ लोकक कयल गलती सेहो पैघ होइत छैक, ओ इतिहास धरि कें प्रभावित कयने बिना नहि छोड़ैछ। मानव-जीवनक अनेक क्षेत्र मे हमरा लोकनि लग एकर अनेकानेक दृष्टांत उपलब्ध अछि। किरणजी अपन जीवन आ कृतित्व मे एक क्रांतिकारी लोक छलाह, तथापि अपन शोधक आरंभे मे ओ ई बात लिखलनि—'वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन करबाक निमित्त प्रवृत्ति

भेलहुँ तँ बड़ असमंजस मे पड़ि गेलहुँ। बड़ विचित्र कठिनताक अनुभव भेल। पहिल ई जे एहि ग्रन्थक स्वनामधन्य संपादक लोकनि एकरा काव्य नहि मानने छथि। काव्योपयोगी गद्यग्रन्थ घोषित कयने छथि। एहन स्थिति मे वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययनक अर्थ होइछ एकरा काव्य सिद्ध करब, से कतेक पैघ घृष्टता होयत? साहस नहि होइत छल कलम उठयबाक, विशेषत: मैथिल समाजक रूढ़िप्रियता कें देखि। मुदा सोचलहुँ जे पुत्रत् शिष्यात् पराजयम् इहो तँ भारतीय विद्वानक उक्ति थिक। अतएव सम्पादक लोकनिक प्रति असीम श्रद्धा रखैत हम प्रवृत्त भेलहुँ।'[23] मोहन भारद्वाज लग मे किरणजीक स्पष्ट परंपरा रहनि तथापि मतान्तर द्योतित करबा सँ पहिने ओ लिखलनि—'सुनीति कुमार चटर्जी भाषाविज्ञानक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान छलाह। मैथिलीक लेल ओ बहुत किछु कयलनि आ तदर्थ सम्पूर्ण मैथिली संसार हुनक आभारी अछि। वर्णरत्नाकर के अमर बनयबाक श्रेय हुनकहि छनि। किन्तु वर्णरत्नाकरक भूमिका मे किछु बात ओ एहन लिखने छथि जकर संगति नहि बैसैत अछि।[24]

एहना स्थिति मे सहज अनुमान कयल जा सकैत अछि जे वर्णरत्नाकरक आद्य सह-संपादक बबुआ मिश्र, जे कि सुनीति बाबू जकां मैथिलक सांस्कृतिक परंपरा सँ अनभिज्ञ नहि छलाह, हुनकहु लेल सुनीति बाबूक आभामंडल सँ अपना कें बाहर राखि सकब कने कठिन रहल होयत। वर्णरत्नाकरक रचनाक प्रयोजन पर ओ लिखलनि—'ग्रन्थक उद्देश्य, जेना म.म. हरप्रसाद शास्त्री ओ श्रीयुत सुनीति बाबू लिखने छथि, भावी कवि ओ कत्थक लोकनिक निमित्त एक टा पथप्रदर्शक ग्रन्थ बनाएब छलनि।'25 स्वाभाविके जे सुनीति बाबुए जकां हुनको मान्यता एहि कृति कें अगंभीर, कलाहीन, असाहित्यिक गद्य-पुस्तक होयबाक पक्ष मे छलनि। एहि कृतिक 'रूप'क मादे ओ लिखलनि—'जाहि ठाम अन्यान्य साहित्यक आरम्भ गीतिकाव्य सँ होइछ, ताहि ठाम हमरा साहित्यक आरम्भ होइछ कही तँ एहि गद्य काव्य सँ। एहन होयब असंभव, परन्तु उपलब्ध साधनक आधार पर तँ यैह कहल जा सकैत अछि।'[26] की बबुआ मिश्र कें नकिह बूझल छलनि जे आदिम मैथिली रचना सिद्ध-साहित्य गीतिकाव्य थिक? अथवा, ओ ओकरा मैथिलीक रचना नहि मानैत छलाह? वास्तविकता एकर विपरीत अछि। ओ लिखने छथि—'ई दुखक विषय थीक जे स्थूल रूपें देशी भाषाक आरंभकाल एगारहम शताब्दी मानल जाय तँ एगारहम शताब्दी सँ तेरहम शताब्दी धरि एहि दू सय वर्षक कोनो तादृश मिथिलाभाषाक रचना उपलब्ध नहि होइछ। हम तत्काल स्व? म.म. हरप्रसाद शास्त्री द्वारा नेपाल सँ आनल 'बौद्धगान ओ दोहा' कें विचार परिधि सँ बहिर्भुत रखैत छी, कारण जे ओहि रचना पर हमरा मतें मैथिलीक प्रबल अधिकार रहनहुं ओ पण्डितमण्डली

मे अद्यापि सर्वमान्य नहि भेल अछि।'[27] एहि विचित्र तर्क पर किछु गोटे हंसि सकैत छथि किछु माथ पीटि सकैत छथि जे भाषाक आधार पर बबुंआ मिश्र सिद्ध-साहित्य पर मैथिलीक 'प्रबल अधिकार' मानैत तँ जरूर छथि, मुदा एकरा स्वीकार नहि क' सकैत छथि, कारण जे स्वीकार करबाक लेल पण्डितमण्डली मे सर्वमान्य होयब अनिवार्य अछि। म.म. हरप्रसाद अपनहु तँ पण्डिते छलाह मुदा ओ एकरा बांग्ला भाषाक मानलनि। राहुल सांकृत्यायन तँ महापण्डित छलाह, एकरा ओ मैथिली भाषाक मानलनि। मुदा एक्का-दुक्काक मानने नहि होयत। पण्डितमण्डली मे सर्वमान्य हो तखनहि ई भ' सकैत अछि। 'पण्डितमण्डली' कें ओहि तथ्य आ सत्य सँ कोनो सरोकार कोना भ' सकैत अछि जँ ओ ब्राह्मणधर्म आ वर्ण-व्यवस्थाक विरोधी होइक? बूझी तँ अनचोक्कहि मिश्र जी मैथिल पण्डित लोकनिक एजेन्डाक परम यथार्थ भाखि गेलाह अछि। मुदा, एहि परम यथार्थक ई मात्र एक पक्ष थिक। डाकवचन पद्य मे अछि, ओ ज्योतिरीश्वर सँ प्राचीनो अछि, आ पण्डित लोकनि द्वारा मान्यताप्राप्त सेहो। मुदा, ओकरो ओ मैथिलीक रचना नहि मानैत छथि। किएक? ओ हेतुहेतुमद्भूत मे सोचैत लिखैत छथि—'डाक वचन आदि रचना सँ भिप पण्डितरचित अथवा पण्डितगोष्ठीमान्य अन्यान्यो रचना अवश्य भेल होयत, जे उपलब्ध नहि अछि।'[28] अर्थात् जँ उपलब्ध होइत तँ ओ विचार करितथि। हुनक एहि कथन सँ स्पष्ट अछि जे डाकवचन एहि दुआरे मैथिलीक नहि थिक जे ओ 'पण्डितरचित' नहि थिसक। पण्डित के? सद्-असद्-विवेकिनी बुंद्धि कें पंडा बुद्धि कहल जाइछ, से जिनका मे होइन से भेला पण्डित। मिश्र जी जकां हमहूं सब यदि डाक कें एक व्यक्ति मानि ली तँ एहि परिभाषाक मोताबिक तँ ओहो एक पण्डित छलाह। मुदा नहि। पण्डितक अर्थ आर बांकी जे जे हुअय, ओकर ब्राह्मण होयब पहिल आ अनिवार्य शर्त्त थिक। डाक छलाह गोआर, जेना कि मिथिला मे मान्यता रहल आ निहितार्थ स्पष्ट अछि जे सैह मान्यता मिश्र जीक सेहो रहलनि। एक गोआरक लिखल रचना सँ मैथिली भाषाक आरंभ कोना भ' सकैत अछि? सिद्ध-साहित्य एहि दुआरे मैथिली साहित्य नहि थिक जे ओ पण्डितमण्डली मे सर्वमान्य नहि अछि, आ डाकवचन एहि दुआरे नहि जे ओ पण्डित अर्थात ब्राह्मण द्वारा रचित नहि थिक। परिणाम? परिणाम यैह जे एक 'असंभव' घटना कें ओ सीधे मैथिली साहित्य मे घटित होइत देखैत छथि। अर्थात् मैथिली साहित्यक आरम्भ गद्य सँ भेल, जे कि एक 'असंभव' बात थिक। एना संसारक कोनो भाषा मे नहि भेल छल।

एहि असंभवताक रोचक व्याख्या काञ्चीनाथ झा 'किरण' कयने छथि। हुनक कहब छनि जे सत्यक अनवधानता सँ जे गलत निष्कर्ष निकालल गेल अछि सैह मिश्र जी कें आश्चर्य सँ भरि देलकनि अछि। किरणजीक चुटकी छनि—'भाषाक

पहिले काव्य गद्यमय देखि क' बबुआजी मिश्र कें अस्वाभाविक लागल छलनि। किन्तु ओ एहि पर विशेष ध्यान नहि देलनि जे एहन अस्वाभाविक घटना कोना भेल? गद्यकाव्य सँ कोनो साहित्यक आरम्भ कें असंभव मानियो क' पुन: मैथिली मे संभव कोना मानि लेलनि से नहि जानि।'[29] किरण जीक अभिमत छनि जे वर्ण रत्नाकर मे जे वस्तु नितान्त अस्वाभाविक लगैत अछि से थिक एकर भाषा आ शैली। ज्योतिरीश्वर अपन ई ग्रन्थ अनपढ़ मुदा सांस्कृतिक रूप सँ सचेत समाजक लेल लिखने छलाह। अन्यथा सकलसंगीत-विशेषविद्योतनाभिनव भरत र्निखल भाषोपभाषाशुभभावुक सरस्वती कण्ठाभरण, अनवरत सोमरसास्वादकषाय कण्ठकदली नटीनृत्यभान मीमांसामहोत्सव आदि पदवी कें धारण केनिहार पंडितप्रवर 'लोकभाषा मे, गमार शूद्र हरिजनक भाषा मे ग्रन्थ लिखलनि, यैह असंभव!'[30] ओ स्पष्ट कहैत छथि—'कविशेखर असाधारण दृष्टिक विद्वान छलाह से हुनक लोकभाषाक समादरे सँ सूचित होइछ।'[31]

किरणजीक निष्कर्ष छनि जे वर्णरत्नाकर गद्य नहि, पद्यक कृति थिक, जे ओहि अनपढ़ समाजक लेल ओहि विशेष शिल्प मे लिखल गेल जे समाज मे खूब लोकप्रिय छल। महराइ गाथा-गायनक एक शिल्प थिक। लोरिक, सल्हेस आदि पर रचित गाथा एही शिल्प मे गाओल जाइत अछि। अपन स्वभाव मे ई शिल्प महाकाव्यात्मक होइत अछि आ एहि मे गाथा-गायन करैत प्रस्तोता गीत गबैत-गबैत गद्य मे वर्णन करय लगैत अछि। ई गद्य सेहो पर्याप्त लयात्मक एवं काव्यात्मक होइत अछि। किरणजी लिखैत छथि—'कविशेखरक समक्ष यैह महाराइ महाकाव्य छलनि। ओ ओही तर्ज पर वर्णरत्नाकरक रचना कयलनि। महाराइ मे गद्य आ पद्य अपन अपन पृथक रूप कें छोड़ि देने अछि। एकर पद कें गद्य जकां पढ़ि सकैत छी आ पद्य जकां गाबि सकैत छी। ई काव्य मिथिलाक माटिक विलक्षण उपजा थिक।'[32]

असंभवताक खोज करैत किरण जीक नजरि एहि बात पर गेलनि अछि जे सतरहम शताब्दीक लोचन (रागतरंगिणी मे) जाहि शूद्र-दलितक लोक भाषा कें 'अपभ्रंश' कहि क' वर्णित कयलनि अछि, हुनका सँ तीन सय बरसो सँ पहिने भेल ज्योतिरीश्वर ओही शूद्र-दलितक लोक-भाषा मे ग्रन्थक रचना किएक केलनि। ओ पुछैत छथि 'कविशेखरक द्वारा की एहन रचना स्वाभाविक थिक?'[33] एहि प्रश्नक उतारा ओ प्रकारान्तर सँ दैत छथि। तत्कालीन राजनीतिक आ सामाजिक परिस्थिति सभक विस्तार सँ उल्लेख करैत हुनक कहब छनि जे इस्लामक प्रभाव चहुंदिस पसरि गेल छल एक मिथिले टा 'स्वाधीन' बचल छल। कहैत छथि 'उत्तर भारत मे एक मिथिला टा अपन स्वाधीनता बचौने, एक यैह असंभव घटना भेल।'[34] पुन: ओ

आजुक समय मे घुरैत पुरान समय कें स्मरण करैत छथि—'मिथिला मे तथाकथित दलित (बैकवार्ड) वर्गक ओ हरिजनक संख्या थोड़ नहि अछि, ओकर सभक स्थिति समाज मे बड़ दुखद, असम्मानजनक अछि। तथापि ओ सब मुसलमान नहि भेल से किएक? मिथिलाक विद्वान ओकर हृदय मे धार्मिक भावना भरैत रहलाह अपन भाषा-रचनाक द्वारा 1 ज्योतिरीश्वर एहि प्रकारक विद्वान मे अग्रगण्य थिकाह।'[35] तात्पर्य जे जे काज मिथिलाक धर्मशास्त्री लोकनि संस्कृत मे निबन्ध-ग्रन्थ लिखि क' क' रहल छलाह, प्राय: सैह काज भाषा-ग्रन्थ लिखि ज्योतिरीश्वर सवर्णेतर समाजक लेल केलनि। पहिनहु चर्चा भ' चुकल अछि जे बौद्धधर्मक पतनक बाद भारतीय विद्वान लोकनिक समक्ष एक टा विशाल समाज छल बहुजातीय, बहुसांस्कृतिक, बहुपरम्परा सँ समृद्ध जे एखन धरि सनातन धर्म, अर्थात् ब्राह्मणधर्म सँ बाहर छल। संपूर्ण नैबन्धिक ग्रन्थ एहि बहु-समाज कें ब्राह्मणधर्मक भीतर अनबाक उपक्रम थिक। किरण जीक राय मे जयोतिरीश्वर सेहो सैह काज कयलनि। हुनक एहि राय कें स्वीकार करबा मे बड़ पैघ बाधा थिक स्वयं ई रचना, जे कि अपन आंतरिक स्वभावे सँ एक धर्मनिरपेक्ष रचना थिक। डोम-धरकार सँ ल' क' कुट्टनी वेश्या धरि, सब टा वर्णन भेटि जाएत एहि ठामुमुदा देवी-देवताक वर्णन कत्तहु नहि भेटत। हुनका लोकनिक स्तुति तँ बहुत दूरक बात थिक। धार्मिक चिह्न आ प्रतीक सभक गणना अवश्य अछि मुदा कतहु धार्मिक कर्त्तव्याकर्तव्यक मीमांसा नहि अछि। विवाहक वर्णन भेटत मुदा वैवाहिक कर्मकाण्डक सर्वथा अभाव सेहो ज्योतिरीश्वर मोनोग्राफक लेखक डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा जाहि दृष्टान्त लेल दिनेश चन्द्र सेनक पुस्तक हिस्ट्री ऑफ बंगाली लैंग्वेज एंड लिटरेचर मे कथक लोकनिक प्रसंग उद्धृत कयलनि अछि, तकर कोनो अर्थ नहि छैक। कथक लोकनि कें तँ देवी-देवताक वर्णन सूत्र रूप मे रटय पड़ैत छलैके, हुनका लोकनिक स्तर एतय छल, हुनका काजक रचना ई नहि भ' सकैत छल। धार्मिक रूढ़ि मे ग्रस्त समाजक विकल जीवन ओतय नहि छैक। ओतय तँ यथार्थ जीवनक हलचल छैक। विविध रंग आ गंध सँ परिपूर्ण ज्योतिरीश्वर जे बेर बेर देखु देखु (देषु देषु) कहैत रहैत छथि तकर मर्म कें बुझबाक चाही। यथार्थक अवलोकन के जे आनांद छैक, तकर रस सँ परिपूर्ण अछि वर्णरत्नाकर। के अभागल कविता नहि कहतैक। वर्णरत्नाकरक पूरा परिदृश्ये काव्यात्मक छैक। किरणजी एहि बात कें ठीक पकड़लनि अछि। वर्णरत्नाकर किछु अंश मे छुच्छे गणनात्मक संख्या भरल छैक। ओहिठाम केवल गणना छैक, कविता नहि। किरण जी अपन पुस्तक मे संस्कृत महाकाव्य 'किरातार्जुनीय' बांग्ला महाकाव्य वृत्रसंहार आ मेघनादवध आ मैथिली महाकाव्यक एकावली परिणय आ अम्बचरित सँ एहन उदाहरण सब प्रस्तुत कयने छथि जे नितान्त वर्णनात्मक छैक, ओहिठाम कोनो कविता

नहि छैक। किरण जीक कहब छनि जे महाकाव्यक ई स्वभावे होइछ। अन्तर बस एतबे अछि जे ओ छंद मे अछि आ ई मात्र लय मे। हमरा लोकनि कें देखवाक चाही जे छंद मैथिली समाजक वस्तु नहि रहैक, ओ संस्कृतक वस्तु छल, जकर कि वास्तव मे कोनो जरूरति मैथिली कविता मे नहि रहैक। मैथिलीक वस्तु छल लय। सुनीति बाबू आ एम्हर रमानाथ झा सँ ल' क' समस्त मैथिली इतिहासकार सब यैह मानि रहल छथि जे वर्णरत्नाकर गद्य थिक। ई लोकनि संस्कृतक हिसाब सँ सोचैत छथि। छंद नहि भेटैत छनि तँ बुझैत छथि गद्य थिक। मैथिली समाजक हुनका कोनो सोह नहि छनि। मैथिलीक नजरिया सँ देखल जाय तँ वर्णरत्नाकरे काव्य थिक, आन महाकाव्य कें जे श्रेष्ठ कहि क' चला देल गेल अछि, असल मे ओ मैथिली काव्य नहि थिक, संस्कृत काव्यक नकल भने हो तँ हो। मैथिलीक तँ कम सँ कम नहिमो थिक। स्वयं आचार्य रमानाथ झा अपन सुप्रसिद्ध लेख प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा क समापन अंश मे जातीय कविताक मादे लिखलनि अछि—'जं सूक्ष्म रूपें विवेचना कयल जाय तँ मैथिली साहित्यक परम्परा मिथिला-देशवासीक जातीय परम्पराक अनुरूप सिद्ध होयत। आदि अहि सँ मिथिला जनपदक एक गोट अपन भाषा छल जे पूर्व मे द्विजाति सँ भिप लोक बजैत छल। क्रमशः द्विजाति सेहो ई भाषा बाजए लगलाह। एहि भाषा मे जे रचना भेल से सब जनभाषाक हेतु ओ एकर प्रचार पण्डित सँ भिप जनता मे भेल ओ वर्णरत्नाकर सँ पूर्व प्रायः एहिमे रचना सेहो पण्डित सँ भिपे लोक करथि। एहि भाषाक साहित्य तें मौखिक रूपें प्रचलित होइत रहल। राजाक आश्रय नहि रहलें कोनो पैधा ग्रन्थक निर्माण नहि भेल।'[36] आश्चर्य लागि सकैत अछि जे मौखिक साहित्य गद्य कोना होयत? मात्र एही टा दुआरे जे मनिकर (उपलब्ध पांडुलिपिक लिपिकार) एकरा गद्य जकां उतारने छलाह। मुदा, एकर कारण तड़िपतक अभाव तँ सेहो भ' सकैत अछि आ लिपि लेखन-परिपाटी सेहो।

धार्मिक रूढ़ि तर हकमैत समाज वर्णरत्नाकरक समाज नहि थिक। धर्मक प्रतीक बनल वस्तु सब तँ ओहिठाम आएल अछि जरूर, जेना दशावतार वर्णना, तीर्थ वर्णना, अष्टमूर्त्ति वर्णना, नवग्रह वर्णना, एकादश रूद्र द्वादश आदित्य आदि आदि, मुदा ओहो सब ठीक ठीक ओही प्रकारें आएल अछि जेना नीच कहल जाइत जातिक वर्णना, वेश्या वर्णना, चोर वर्णना आदि। ध्यान द' क' देखी तँ दुनियावी यथार्थक वर्णना अपेक्षाकृत अधिक काव्यात्मक अछि। ई अवश्य जे जीवनपद्धति आ दर्शन कें ल' क' ज्योतिरीश्वरक जे मान्यता आ विचार छनि, सेहो अपना तरहें नुकाएल नहि रहल अछि। जेना, बौद्धधर्मक प्रति जे हुनकर घृणा छनि, से स्पष्टतः व्यक्त भ' आएल अछि। तंत्रशास्त्रक आधुनिक अध्येता लोकनि लेल एक टा आओरो

गौर करबाक बात छैक जे एहि पुस्तक मे दशावतार वर्णना तँ आएल अछि मुदा दशमहाविद्या वर्णना नहि अछि। दशमहाविद्या-निर्धारणक घटना कें अध्येता लोकनि आम तौर पर बारहम सदीक घटना मानैत छथि। मुदा वर्णरत्नाकरक साक्ष्य कें देखी तँ हुनका लोकनि कें कम सँ कम दू सौ वर्ष आगू आबय पड़तनि। अस्तु! अनेक एहन कारण अछि जे किरण जीक एहि बात पर विश्वास करबा सँ रोकैत अछि जे ज्योतिरीश्वर इस्लाम सँ रक्षाक हेतु हिन्दूधर्म कें संगठित करबाक लेल एहि पुस्तकक रचना कयलनि। आइ, एकैसम शताब्दीक तेसर दशक मे हिन्दुत्व तँ पूर्णतः संगठित भ' चुकल अछि। की क्यो बन्धु एहि हिन्दुत्वक जड़ि वर्णरत्नाकर वा कि एहि प्रकारक साहित्य मे ताकि सकै छथि?

किरण जीक ई बात मुदा प्रत्यक्ष सत्य देखार दैत अछि जे ज्योतिरीश्वर सार्वत्रिक आदर्श, अखिल भारतीय मानदंड कें ल' क' चलैत छथि आ ओहि मे मैथिली संस्कृति लेल स्पेस बनबैत छथि। मोहन भारद्वाज किरण जीक आशय स्पष्ट करैत कहैत छथि—'ज्योतिरीश्वर एक एहन ग्रन्थक योजना बनौलनि जाहिमे भाषा आ शिल्प मिथिलाक रहत आ विषयवस्तु होयत अखिल भारतीय। किरण जीक अनुसार एही योजनाक प्रतिफल अछि वर्णरत्नाकर।'[37] ज्योतिरीश्वरक विलक्षणता छनि जे तीर्थक नाम गनबैत अड़सठि गोट तीर्थक गणना कयलनि, से सब अखिल भारत मे पसरल छल, मुदा ओहिमे एक मिथिलाक नाम द' देलनि! आन प्रान्तक लोक तीर्थ करय अन्तय जाथु मुदा मैथिल लोकनि तँ तीर्थहि मे वास करैत छथि, भाव से। एकतीस गोट पवित्र नदीक नाम देलखिन, ओहिमे अपना गाम लग मे बहैत वाग्वती आ कौशिकीक नाम सेहो देलखिन। हमरा लोकनि अन्यत्र चर्चा क' आएल छी जे आंचलिकता आ स्थानीयता लोकसाहित्यक गुंण थिक जखन कि सार्वत्रिकता शिष्टसाहित्यक।ज्योतिरीश्वरक रचनाक ढ़ांचा पूर्णतः शिष्टतावादी अछि। ओ मूलतः पंडित छथि। मैथिलीक विद्वान लोकनि तें हुनका मोजरो देलकनि। मुदा, समस्या ई अछि जे हुनकर रचना-स्वभाव लोकवादी छनि। हुनका बुझवा मे जे पंडित लोकनि कें एते पराभव भेलनि आ भ' रहल छनि, से एही कारण सं। काञ्चीनाथ झा किरण लोकवादी रहथि तँ बुझि गेलाह, मुदा सैह बूझब इतिहासकार लोकनि वा महान आलोचक लोकनि बुतें संभव नहि भेलनि। ओ एकरे सँ संतोष करबाक लेल विवश भेलाह जे ज्योतिरीश्वर जे किछु होथु, प्रतिष्ठित कुलक मैथिल ब्राह्मण छलाह।

किरण जीक अभिमत छनि जे वर्णरत्नाकर मिथिलाक भूमि सँ स्वयंसंजात सल्हेसक गीत जातिक वस्तु थिक। छन्दशास्त्रक अनुसार कोनो छन्द एहि मे नहि अछि। कविशेखर जानिये क' ओकर आश्रय नहि लेलनि। हुनक आगू मे तँ अनपढ़

निरक्षर समाज छल। ओकर रुचि, ओकर क्षमता कें देखि रचना करय बैसल छलाह। सल्हेसक गीत के ओ ककरो घोषबैत नहि छैक। एक मुरख सँ दोसर मुख मे स्वत: प्रवाहित होइत नहि जानि कहिया सँ प्रवहमान अछि।। कविशेखर सल्हेस जातिक गीतक एहि विलक्षणता कें पकड़लनि आ ओही तर्ज पर रचना केलनि।[38]

अपन अभिमत कें स्पष्ट करबाक लेल ओ ग्रियर्सनक संकलित सल्हेस-गाथा सँ दृष्टान्त देलनि। एक अंश अछि जतय स्त्रिगणक शृंगार आ आभूषणक प्रसंग आएल अछि —

तखन दोना मालिनि दछिनक चीर पहिरि लेलि
पाटी समारि लेल
नैना काजर पेन्हि लेलि
सीके सीके मिस्सी बैठाए लेलि
चोली पहिरि लेलि
हाथ मे बांक पहिरि लेलि
पैर मे कारा पहिरि लेलि
माँग में तार चन्द टिकुली पहिरि लेलि
असले कसबीन भेलि[39]

एक आर प्रसंग जाहिमे चूहड़मलक सेन्ह कटबाक वर्णन अछि, अपेक्षाकृत कथात्मक अछि—

से जानि चूहड़ चढ़ि कए आएल
झोंटीक केस बांधल
देहरि चरना चढ़ाओल
लाख दर लाख छूड़ी गतर मे बांधल
कमर मे ढ़ाल बांधल
पेसतर छूड़ी लेल हाथ कें
बैठल धरती मे
आसन लगाए कें
देल पेटकुनियां धरती मे
सेन्ध काटे लागल
दुइ चारि कोसक बीच सँ धरती मे मिलि गेल
सेन्ध कटैत चल जाए पकड़िया राज मे।[40]

ई वर्णनात्मकता वर्णरत्नाकर मे सेहो अनेक रूप लैत अछि। मन्द (छोट) जातिक नाम गनबैत ज्योतिरीश्वर एहि तरहें माहौल बनबैत छथि—

नागल तोंगल तापस तेलि
तांति तिवर तुरिआ तुलुक
तुर कटारफ़अ
धेओल धांगल धाकल धानुक धोआर
धुनिया धलिकार
डोव डोव बटारफ़अ
खांगि खगार
हाड़ि बाजि चल चण्डार चमार
गोष्ठ गोष्ठि गोन्ति गोआर गावर
ओड़ शुण्डि साव
पंचकबार पटनिआ परिह चाबि
मुण्डबाहि वीन्द कादव नागर प्रभृति
मन्द जातीय तें बास।[41]

एहीठाम सँ वर्णरत्नाकरक उपलब्ध पाठक प्रथम कल्लोल शुरू होइत छैक। मन्द जातिक अवधारणाा मनुष्यता कें खंड-खंड बांटि क' देखबाक सामती मध्यकालीन मानसिकता स्पष्टे छैक। एकरा ओ समाज-स्वीकृत मूल्यक अनुरूप प्रस्तुत करैत छथि। एहिमे हुनकर निजी कोनो विशेषता नहि, अलंकृत शब्दावली टा विशेष, से मुदा लोक मे सेहो मनोरंजक के मान्यता रखैत। किरण जी ठीक लिखलनि अछि जे ज्योतिरीश्वरक सदृश प्रकाण्ड संस्कृत मैथिलीक विद्वान कविक कृति मे सल्हेसक गीतगान त्रुटि किएक अबैत ?[42] सल्हेस रचना छल निरक्षर भट्टाचार्य लोकनिक, ई थिक कविशेखराचार्यक। ओहिठाम अनुप्रास मिलेबाक यथासाध्य चेष्टा अवश्य छैक्, मुदा असल बात छैक लोक, पाछू छूटल लोक, के जीवन मे ताकबाक, ओकर सौन्दर्य-दृष्टि, ओकर जीवन-संघर्ष कें लय देबाक, ओकरा समीप भ' क'। एहि वस्तु कें जे अपनेबाक यथासाध्य चेष्ट जयोतिरीश्वर कयलनि, से हुनकर निजी विशेषता छियनि। ओरनी बजबैत जखन लोकगायक वर्णरत्नाकरक गीत (वर्ण) गायब शुरू करैत छल होयत, किरण जी कहैत छथि, श्रोता सभ भूमि उठैत छल होयत आ ओकरा सभक मन उजगुजा उठैत छल होयतैक।[43]

वर्णरत्नाकरक एक अन्य विशेषता इहो थिक जे लोक-शैलीक ओ अनेक विधिक उपयोग अपन एक्के कृति मे कयलनि अछि। लोकगाथा गायन क मिथिला मे प्रचलित शैली छैक—भगैत। ओ अपन एक खास लय मे, सहयोगी गायक-वृन्दक सहयोगें चलैत रहैत अछि। लय महत्व आ महाकाव्यात्मक कथाविस्तार के ओहि ठाम तते महत्व छैक जे गद्य आ पद्यक कोनो अन्तर नहि रहि जाइत अछि।

गद्य हो कि पद्य, सब गाओले जाइत अछि। तहिना कथात्मकता आ वर्णनात्मकताक अनुपातक कोनो चिन्ता नहि रहैत छैक, लोक-रुचि प्रधान भेने कथा स्वयं अपन परिदृश्य आ स्वरूप गढ़ि लैत अछि। कतहु विवरणात्मक कतहु गणनात्मक। ज्योतिरीश्वर अपन एहि कृति मे एकर भरपूर उपयोग कयलनि अछि। सब रंग एनमेन ओहिना एतहु देखार पड़त। मुदा, एहि कृति मे आनो चीज छैक। ताहि सब लेल एकर विशेषता बेसी विशेष।

हमरा लोकनि अवगत छी जे मैथिलीक जातीय साहित्य, जे कि मौखिक होइत छल, ओहि मे सँ बहुतो चीज आइ विलुप्त भ' गेल अछि। विद्वान लोकनि कें ओकर सभक विलुप्त होयबा पर अपसोच भने होउन, लोक-साहित्यक ई सहज स्वभाव रहल। जखन ओकर प्रयोक्ता नहि रहल, विलुप्त भ' गेल। कोनो दोसर आबि क' ओकर स्थान ल' लेलक। आइ हमरा लोकनि धरि केवल वैह टा वस्तु पहुँचैत अछि, जकर क्यो ने क्यो प्रयोक्ता, ओकर दस्तावेजीकरण-काल धरि बचल रहि गेल। दोसर दिस छैक जे कोनो शैली कें अपन निबंधक 1880 मे भेटि गेलैक, जेना सल्हेस आ दीनाभद्री कें ग्रियर्सन जखन कि कोनो दोसर कें 2010 के नाद आबि क' भेटलैक। के ठठि सकल, तकर अपन निज बहादुरीक अकबाल छैक।

वर्णरत्नाकर मे हमरा लोकनि कैकटा विलुप्त भेल शैलीक असर पाबैत छी। रोचक बात ई छैक जे ओ एहि सभक नाम सेहो गनौलनि अछि। ओहि नाम सब मे सँ एक लोरिक नाच टा हमरा लोकनि धरि पहुँचि पाओल अछि। मुदा हमर प्रश्न शैलीक असर पर अछि। एकर उदाहरण हमरा लोकनि नैका बनिजाराक शैली मे पाबि सकैत छी। एकरा विलुप्त भ' चुकल बुझल जाय। एकर प्रयोक्ता जे मणिपद्म जी कें भेटल रहनि, से अधिक रसिक छलाह, विश्वेश्वर बाबूक प्रयोक्ता औसत रहनि। सारांशीकरण तँ ओकरो कान-कपार छोपि लेलकैक। ओकर शैली भगैत (धार्मिक गीतगायन शैली) सँ बिल्कुल भिप छैक, जखक कि नांच शैली सेहो नहि छिऐक। ओ एक टा तेसर चीज छी। ओकर झलक हमरा लोकनि कें वर्णरत्नाकर मे भेटैत अनुमान होइत अछि।

ज्योतिरीश्वर जखन सुविधा मे रहैत छथि तँ एक्के वस्तुक र्वान बारंबार भिप-भिप शैली मे करैत छथि। 'आउर कइसन देषहुअ।' ओकर बाद ओकर वर्णनक तौर-तरीका, ढ़ांचा-शिल्प सब बदलि जाइत छैक। ओ असल मे एक टा नव शिल्प-आस्थान मे प्रवेश करबाक समान थिक। नैका बनिजारा प्रेमकाव्य थिक, ओहिमे मर्म गँहीर छैक, ताही मोताबिक शैली लेल गेलैक अछि। शब्दावली धरि पर ओहि लय के प्रभाव छैक। ज्योतिरीश्वर कतहु-कतहु घोर मार्मिक बात कहि जाइत छथि— जेना श्मसानक वर्णन करैत कहैत छथि—'पुनु कइसन ? अकीर्त्तिक विश्राम अइसन।

अधर्मक फल अइसन। तृषाक जनक अइसन। उद्वेगक बान्धव अइसन'[44]—ध्यान सँ देखल जाय तँ ओहिठाम हुनकर शैली बदलल-बदलल, बेसी अंतरंग, मार्मिक, अपेक्षाकृत पैघ आर्यसत्य संग निबद्ध, भ' जाइत छनि। ई एक टा तेसर शैली थिक, जे मूल उपलब्ध भेने पहचान मे आबि जाइत। रोचक बात ई छैक जे वर्णरत्नाकर केवल वर्णनक रत्नाकर नहि थिक, ई वर्ण (गीत, गीत-क्रम, गीत-शैली)क सेहो रत्नाकर थिक।

ओरनी बजबैत लोकगायक द्वारा मस्त भ' क' वर्णरत्नाकर गयबाक दृश्य जे किरणजी कवचित कयलनि छि, ओकर दृष्टान्त-स्वरूप देल गेल पाँती शुद्ध गणनात्मक छैक। ने कोनो काव्यात्मकताक उड़ान, ने मार्मिकताक झड़ी, जयोतिरीश्वर ओहिठाम नाम-गणना मात्र कयने छथि। मोन रखबाक चाही जे सुनीति बाबू प्रभृति विद्वान एहने अंश सभक कारणें वर्णरत्नाकर कें स्वयं मे कोनो काव्य नहि मानैत छथि, अपितु मात्र काव्योपयोगी मानैत छथि। किरणजी ओहि प्रस्तुति-शैलीक झांकी देखबैत कहैत छथि जे ओरनी बजबैत गायक जखन इहो पाँती गबैत छल होयत तँ रस मे लीन श्रोता लोकनिक मोन उजगुजा जाइत होयत। दृष्टान्त मे नदीक नाम-गणना देखल जाय—

गंगा गोमती गोदावरी
गंडकी, रेवती, वितस्ता
विपासा, विदिशा, वेत्रवती
तापी, तमसा, ताम्रपर्णी
चन्द्रभागा, चित्र, चित्रकूटा
नर्मदा, सरयू, सरस्वती
करतोया, क्षिप्रा, पारा
कौशिकी, तुंगभद्रा
कावेरी, कर्मनाशा
सारावती, वाग्वती, देवनदी, देविका
त्रिस्रोता, मधुश्रवा प्रभृति अनेक नदी देषुअह।

मैथिली लोकक विद्यानुराग कहल जाय कि संगीत-रसिकता, एहि नाम सब कें मोन रखैक लेल ओ आतुर भ' उठैत छल होयत।[45] निछच्छ नाम-गणना सेहो मात्र एक सांख्यिकीय आंकड़ा नहि रहैत छैक, ओकर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, चयन-विवेक आ लेखन एवं प्रस्तुति मे प्रयुक्त शैली ओकरा मे कलात्मकता आनि दैत छैक। ओ केवल काव्योपयोगी नहि रहैछ, स्वयं काव्य भ' जाइछ, से किरणजीक आशय छनि।

किरण जी एक टा आओर संभावित प्रश्नक चर्चा अपन पुस्तक मे कयलनि अछि। मानि ली जे वर्णरत्नाकर सेहो सल्हेस जकां गाओल जाइत छल, तँ जनसमाज मे सल्हेस-गीत जकां एहि कृति कें कतहु गाओल जाइत कहाँ पाओल गेल अछि? उतारा दैत कहैत छथि—''एकर उत्तर सोझे अछि। कविशेखरक कृति कें जनकंठ मे पहुँचौनिहार के छल? द्विजेतर वर्ण तँ मूर्खे टा नहि, निरक्षरो छल। साक्षर ब्राह्मण एकरा स्वयं धोखि लीतथि आ ओकरा सब कें सुनबितथिन तखने ओ सब सिखि सकैत छल। से नीक जकां (पीढ़ी-दर-पीढ़ी) नहि भ' सकल होयत। तथापि यदि प्रचार नहि भेल तँ पूर्णियां जिलाक मनिकर (वर्णरत्नाकरक लिपिकार) कें एकर प्रति कोनो भेटलनि? छओ सय वर्ष भेलैक। जखन हिमालय सँ उत्पप कतेक धार एहि अवधि मे मरनय भ' गेल तँ कोनो काव्यक प्रचारहीनता कोन आश्चर्यक विषय?'[46] मात्र सौ वर्ष पहिने मिथिला मे कृष्णजन्मक घर-घर मे कतेक प्रचार छल, किन्तु आइ एक्को व्यक्ति एहन नहि भेटैत अछि जकरा सौंसे कृष्णजन्मक अभ्यास होइक!

उचिते विद्वान लोकनि वर्णरत्नाकर कें विश्वकोशक महत्ता देलनि अछि। मुदा केवल कोश नहि रहि क' एकरा जे काव्य बना दैत छैक से थिक विशेखरक चयन-विवेक। रोचक थिक जे ब्राह्मणधर्मी मनोनिर्मितिक अछैत हुनकर दृष्टि बहुत हद धरि यथार्थवादी अछि, ने कि आदर्शवादी। ओ गणना मे तँ जीवन-जगत (भौतिक आ अधिभौतिक) सब कें शामिल करैत छथि मुदा हुनकर मोन रमैत छनि यथार्थ मे, जकर वस्तुवादी वर्णन करबा मे ओ अपन शास्त्रीय ज्ञानक सीमा सँ बहरेबाक जतन करैत देखल जाइत छथि। एहन वर्णन सब लंबा चलैत अछि। हुनकर रचना-भूमि छियनि शहर, जकर अपन स्पष्ट गतिशीलता छैक। डॉ. हेतुकर झा अपन एक लेख मे देखौलनि अछि जे ज्योतिरीश्वरक नगर-वर्णन ओहि उच्च स्तरक बनि पाओल अछि, जेहन कि कौटिल्यक अर्थशास्त्र मे आएल नगर-वर्णन। हेतुकर झाक अध्ययनक सार प्रस्तुत करैत मोहन भारद्वाज लिखने छथि—'वर्णरत्नाकर दू दृष्टिकोण सँ महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल, ई समाजशास्त्रीय आधार पर सामाजिक सर्वेक्षणक कृति थिक। दोसर, जहिया पश्चिमी देश मे सामाजिक सर्वेक्षणक नाम पर आवादीक खास संवर्गक सामाजिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करबाक परिपाटी छल तहिये भारत मे कोनो खास क्षेत्रक आवादीक सभ संवर्गक सामाजिक विवरण देबाक प्रयास कयल गेल। समाजशास्त्रक क्षेत्र मे ई वर्णरत्नाकरक ऐतिहासिक अवदान अछि। ज्योतिरीश्वरक युगबोधक अन्यतम उपलब्धि अछि।'[47] पश्चिमी देशक समाजशास्त्रे तहिया एहि बहुलता धरि नहि पहुँचि सकल छल, ओ खास प्रभुवर्ग धरिक सीमा मे घेराएल छल। भारत मे तँ समाजशास्त्रक जन्मे नहि भेल छल होयत, मिथिलाक स्थितिक

सहजे अनुमान क' सकैत छी। हमरा लगैत अछि जे अपना समय सँ आगू ओ एहि दुआरे जा सकलाह जे ओ मूलत: पाण्डित्य-क्षेत्रक व्यक्ति नहि, रंग-कर्म क्षेत्रक व्यक्ति छलाह। मात्र कवि रहने मात्र ओ पाण्डित्य-सीमा सँ एते आगू धरि नहि जा पबितथि, रंग-कर्म हुनका मे लोकवादी संस्कार भरलक। हुनकर उपलब्ध रचना जे सब अछि, ओ कि तँ स्वयं नाटक अछि अथवा ई ध्यान देबाक बात थिक।

मैथिलीक लोककाव्य (जातीय कविता) सँ प्रेरित भ' क' ओकरे सदृश कृतिक रूप मे ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकर लिखलनि, तकर पक्ष मे किरण जी आरो किछु तथ्य सामने रखैत छथि। जेना कि पहिनहि कहल गेल, छन्दक निविष्ट ज्ञाता भेलाक बादो ज्योतिरीश्वर अपन एहि कृति मे छन्दक आश्रय नहि लेलनि। तकर कारण अछि। ऊपर जेना नदी सभक नाम लेल गेल, एकरा यदि छंद मे कहल जाइत तँ एक तँ एकर रोचकता घटि जयतैक, जातीयक बदला मे विजातीय भ' जायत, से अलग। दोसर जे ओकरा स्मरण राखब आयास-साध्य भ' जाएत, जे कि लक्षित श्रोता-पाठकक दृष्टियें कोनहु तरहें उपयुक्त नहि होयत, ने ई कृति ओ लक्ष्य पाबि सकत जे एकर साध्य थिक। किरणजी कहैत छथि जे संस्कृत काव्य सीमित विद्वत् समाजक हेतु लिखल जाइछ तें छन्दक रक्षाक हेतु कतेको अर्थहीन अव्यय प्रयुक्त क' क' पादपूरण क' देल जाइछ। पढ़निहार विद्वान अर्थहीन अव्यय कें छांटि क' पढ़ि अर्थ ग्रहण क' लैत छलाह। जातीय काव्य मे एक तँ एहन अर्थहीन अव्यय सब अछियो नहि, ने ओकर प्रयोजने पड़ैछ। 'लोकभाषा-काव्य मे व्यापक समाजक जीवनक स्पन्दन रहैत छैक तें एकर काव्य सहज स्वाभाविक गतियें प्रवाहित होबय लगैत अछि।'[48]

वर्णरत्नाकरक पाण्डुलिपि जाहि तरहें लिपिबद्ध भेल भेटल अछि, ताहू पर किरण जीक ध्यान गेलनि अछि। अनेक प्रसंग एहन अछि जतय हरेक शब्दक बाद विन्दु अछि, जखन कि कतेको ठाम एहन अछि जे वाक्य-समाप्तिये पर जा क' विन्दु भेटैत अछि। एहि सभक विस्तृत उदाहरण ओ अपन पुस्तक मे देने छथि। हुनक मान्यता छनि जे ई विन्दु निरर्थक नहि अछि, अपितु स्वराघातक संकेत थिक।' ई स्वराघाते एहि प्रकारक गीत कें पद्यात्मकता प्रदान करैत छैक।'[49] एहि स्वराघातक महिमा हमरा लोकनि भगैत शैलीक गाथा-गायन मे भरपूर देखि सकैत छी।

मैथिलीक जातीय साहित्य-परंपराक चर्च करैत मोहन भारद्वाज लिखने छथि—मैथिली मे साहित्य-रचना पहिनहि सँ होइत छल। ओ मौखिक परंपराक साहित्य छल। श्रुत साहित्य छल। पद्य साहित्य छल। संस्कृतक पद्य-साहित्य लेल छन्द अनिवार्य रहय। छन्दक अर्थ थिक छान। कविक आवेग आ वेग कें छान-पगहा लगाएब संस्कृत काव्यशास्त्री कें आवश्यक बुझयलनि आ तें काव्य-रचना मे छन्दक

बन्धन अनिवार्य भ' गेल। मुदा, जनसामान्य द्वारा निर्मित काव्य मे भावनाक उड़ान, अनियंत्रित उड़ान, एक टा महत्त्वपूर्ण गुण आ लक्षण बनि क' आएल। जयोतिरीश्वर वर्णरत्नाकरक लेखन मे एहि तत्व कें ग्रहण कयलनि। ओ जनसाधारणक भाषाक संगहि ओकर काव्यक शिल्प कें सेहो अपनौलनि।'[50]

आइ मैथिलीक मुख्यधाराक जे कविता अछि से छन्दहीन अछि। आचार्य लोकनि एहि कविता कें विजातीय कहि क' वर्जित करबाक प्रयत्न करैत रहला अछि। मुदा किरणजी प्रश्न उठबैत छथि—'आइकाल्हिक जे कविता-संग्रह कहबैत अछि, ताहि मे आ वर्णरत्नाकर मे की अन्तर छैक ?[51] हुनक तात्पर्य जे कोनो अन्तर नहि छैक। छन्दहीन मुदा लयात्मक कविता मैथिलीक जातीय कविता थिक आ आजुक कविता कोपहु तरहें विजातीय वस्तु नहि थिक। बरु आधुनिक कविता एक प्रगति ई केलक अछि जे पहिने लय केवल कविताक संरचना मे रहैत छल, आब कि तँ संरचना मे अथवा विचार मे, दू मे सँ कोपहुं ठाम रहि सकैत अछि। निश्चय थिक जे एहि सँ काव्यात्मकताक क्षति नहि होइत छैक।

वर्णरत्नाकर मे आठ अध्याय अछि, जकरा 'कल्लोल' (समुद्रक जवार) कहल गेल अछि, जे कि रत्नाकर (समुद्र) ग्रन्थनामक दृष्टि सँ एकदम सटीक अछि। ग्रन्थ कें देखने स्पष्ट होइत अछि जे लिपिकार मनिकर कें एहि पुस्तकक दू गोट हस्तलेख उपलब्ध भेल रहनि। पहिल ठीक-ठाक हस्तलेख छल तकरा ओ 'आदर्शग्रन्थ' कहलनि अछि। ओहिमे सात कल्लोल छलैक। वर्णरत्नाकरक प्रकाशित पाठ मे सातम कल्लोलक अंत मे मनिकरक ई टिप्पणी भेटैत अछि—'इत्या आदर्शग्रनथमेकं समाप्तम्। द्वितीयस्य कतिपय लिखितव्यमस्ति तल्लिख्यते।' आदर्शग्रन्थ एतबे अछि। दोसर हस्तलेख मे सँ जे लिखबा योग्य लागल तकरा आगू लिखैत छी। वैह अंश आठम कल्लोल थिक। विद्वान लोकनि कें उचिते एहि मे कहले बात कें पुन: कहल गेल देखाइत छनि। आन सब कल्लोलक अंत मे जेना अध्याय-समाप्ति सूचक आदिक विवरण भेटैत अछि, तेना आठम कल्लोलक अंत मे नहि अछि। अंत मे केवल एतबे सूचना देल गेल अछि जे सौरिया गाम मे मनिकर ल ? सं. 388 (1507 ई.) मे एहि पुस्तक कें उतारलनि। तें विद्वान ोकनि कें जँ ई लगैत छनि जे ज्योतिरीश्वर लिखित मूल वर्णरत्नाकर मे साते टा कल्लोल रहल होयत, तँ सेहो उचिते। डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा लिखने छथि—'मूलत: एहि मे साते टा कल्लोल रहल होयत। ओना तँ एहि सातो कल्लोल मे सेहो विषयक्रम अनियोजित अछि। कतिपय वर्णन अपन उचित स्थान सँ विमुक्त भ' यत्र-तत्र बिखरल प्रतीत होइत अछि। ज्योतिरीश्वरक मूल प्रति मे एहि प्रकारक वि शृंखलता नहि रहल होयत।'[52]

ध्यान देबाक बात थिक जे आठम कल्लोलक वर्णन सब अनियोजित,

विश्रृंखलित आ कथितकथन सँ युक्त भने लगैत हो, मुदा कतहु पूर्व वर्णनक अक्षरश: प्रतिलिपि नहि देखाइत अछि। एहि कल्लोल मे यद्यपि एहनो वर्णन अछि जकर एक पाठ (एक शैलीक पाठ) पहिने आबि चुकल हो, मुदा संगहि एहनो वर्णन सब अछि जे पहिने कतहु नहि आएल अछि। मनिकर भने अल्पशिक्षित होथु मुदा ई निर्णय लेबा मे जे कोन अंश 'लिखितव्यमस्ति' गलती नहि कयलनि अछि। स्थान-विच्युत आ अनियोजित भेलाक कारण पाठ सब अबूह लगैत हो, से भिप बात। 1340 ई. जँ एहि ग्रन्थक लेखन-काल मानल जाय, जेना कि रमानाथ झा मानलनि अछि, तँ 1507 मे मनिकरक एहि प्रतिलिपि लिखबाक समय धरि मात्र 167 वर्ष बीतल छल। मनिकर अल्पशिक्षित भने होथु मदा रंगकर्म आदि मे रुचि अवश्य रखैत होता, से हम सब अनुमान क' सकैत छी, कारण बिनु विशेष रुचि रखने एहि पुस्तकक दू-दू प्रति ताकब आ तकरा उतारब, संभव नहि भ' सकैत छल।

एहि सब सँ हमरा लोकनिक समक्ष किछु स्थिति बनैत अछि—(1) पंडितेतर अशिक्षित अल्पशिक्षित समाज मे वर्णरत्नाकरक प्रचार, आकर्षण अवश्य छल। (2) ज्योतिरीश्वरक मूल पाठ एतबा समय बितैत-बितैत अनियोजित आ वि शृंखलित भ' चुकल छल। (3) जाहि व्यक्ति कें हस्तलेख उतारबाक होइनि से अपना रुचि आ आवश्यकताक उतारथि। (4) कोन कल्लोल मे कोन-कोन वर्णना यथास्थान रहक चाही, तकर ठीक-ठीक स्मृति एहि काल धरि नहि बचल छल। (5) मनिकरक हस्तलेख मे जे वर्णना सब मात्र नामगणनात्मक अछि, ओकरा संगे कोनो काव्यात्मक वर्णन नहि अछि, संभव अछि जे मूल पांडुलिपि मे ओहू वर्णन सब मे 'पुनु कइसन देषुअह' अथवा अपर: प्रकार: ' लगा क' सुविस्तृत वर्णन रहल हो, मुदा प्रतिलिपिकार ओकर रुचिहीनताक कारण उतारब छोड़ि देने होथि आ स्मरणार्थ नामगणना टा उतारि लेने होथु। एहना स्थिति में ई कहब कठिन अछि जे ज्योतिरीश्वर जाहि वर्णरत्नाकरक रचना कयने छलाह आ हमरा लोकनि धरि एकर जे पाठ पहुँचल अछि, ताहिमे वास्तव मे कतेक अन्तर अछि। एहि काव्यक लोकोपयोगी होयबाक ई एक पैघ लक्षण थिक, कारण ई प्रवृत्ति लोक-काव्येक संग पाओल जा सकैत छैक।

वर्णरत्नाकर मे वर्णित भेल विषय पर एक दृष्टि देल जाय तँ आगू किछु आर बात कयल जा सकैत अछि। पहिनहु कहल गेल जे एकर हस्तलेखक आरंभिक नव गोट पात अनुपलब्ध अछि तें हमरा लोकनि कें नहि बूझल अछि जे ग्रन्थारम्भ ओ कोन तरहें कयने होयताह। जतय सँ पात भेटब आरंभ होइछ, पहिले वाक्य थिक—दुनू कइसन देषु—नगर-वर्णनक अंश थिक। कल्लोलक अन्त मे सूचनो देल गेल अछि—'इति कविशेखराचार्य श्रीज्योतिरीश्वर विरचिते वर्णरत्नाकरे नगरवर्णनो नाम प्रथम: कल्लोल:।' आरंभ मन्द (नीच) जातिक नाम-गणना सँ होइत छैक,

जे नगर मे बसैत अछि। तखन पेुछैत छथि—'से कइसनाह जन'—ई लोक सब कोन प्रवृत्तिक होइछ? स्वभावजन्य दुर्वृत्ति सँ भरल। 'अवर कइसन देषु'। एहि लोक सब कें 'असदर्थ अनुचीती' कहैत ओ असामाजिक तत्व सभक नाम गना जाइत छथि। तकर आश्रय देषु कइसन? कुवस्तु आ कुवासर सभक विवरण दैत छथि। तखन अनेको प्रकारक भिक्षाजीवी वर्गक विवरण दैत छथि। मुदा, कवि कें अनकटल लगने ओहि लोक सब कें कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक। ओ लोकनि अपनहि मे मस्त छथि आ नाना प्रकारक वाद्ययंत्र बजबैत, नचैत, गबैत प्रसप छथि। ओ लोकनि जे गबैत छथि ताहि मे विरहा आ लगनी अछि, नचैत छथि ताहि मे लोरिक नाच अछि। बजबैत छथि ताहिमे डमरू, मजीरा, कठताल, चुटकुल अछि। नगरक बजार मे जे बरोबरि अनघोल होइत रहैत छैक तकर किछु दृष्टान्त आ अन्त मे नशेड़ी सभक मद्यपान आ दुरवस्थाक वर्णन अछि।

द्वितीय कल्लोलक नाम नायिका-वर्णना अछि, यद्यपि कि एकर आरम्भ नायक-वर्णन सँ भेल अछि। कुलीन, धनुर्वेदक ज्ञाता, 8 उपसिद्धि 8 प्राकृत सिद्धि, 8 महासिद्धि, 36 पानायुध आ दण्डायुध, अनेक विद्या मे निपुण, 84 राजनीतिक तत्वक ज्ञाता, दया-दाक्षिण्य आदि समस्त शिष्टगुण सँ युक्त , उपनायकक जे 13 टा गुण ताहू सँ युक्त आदि-आदि। समस्त प्रकार-उपप्रकारक नाम-गणना सेहो संग-संग करैत गेलाह अछि। डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा ठीक लिखलनि अछि जे 'ई सब टा वर्णन परम्परागत तथा ग्रन्थकारक शास्त्रीय ज्ञानक परिबोधक अछि।'

आगां नायिका नायिकाक सखी तथा ओकर हास्यक वर्णन अछि जे पूर्णत: शास्त्रीय रूढ़ि सँ भरल अछि। तेसर कल्लोल स्थान वा आस्थान वर्णना थिक जाहि मे राजसभाक वर्णन भेल अछि। राजाक दरबार मे के सब कोना आसन पबैत अछि। तकर विस्तृत विवरण। तदुपरान्त राजाक मालिश आ स्नान करेबाक, पूजा, भोजन, शयन आदिक वर्णन अछि। एकरा संग-संग एहि कल्लोल मे मध्याह्न वर्णन, सन्ध्यावर्णन, वर्षारात्रिवर्णन, अन्धकारवर्णन तथा मेघ-वर्णन सेहो शामिल अछि, जखन कि एकर स्थान ऋतुवर्णना नामक चारिम कल्लोल मे हेबाक उचित छल। ऋतुवर्णना नामक तेसर कल्लोल मे वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर ऋतुक वर्णनक उपरान्त 64 कला, 16 महादान, 18 रत्न, 32 उपमणि, 30 प्रकारक रेशमी तथा अनेक प्रकारक देशी वस्त्रक वर्णन अछि। एहि क्रम मे निर्भूषण वस्त्र तथा 14 जातिक नेत (वस्त्र-विशेष)क वर्णन भेल अछि। एकर बाद राज कुमारक अभिषेकक वर्णन शुरू भ' जाइछ। एहि कल्लोल मे आन विषय सब अछि—वस्त्रगृहवर्णना, ज्योतिर्विद्वर्णना, द्यूतवर्णना, वेश्यावर्णना, कुट्टनीवर्णना तथा कामावस्था वर्णना।

पांचम कल्लोल प्रयाणक वर्णना थिक, जाहि मे विजयाभियान हेतु अथवा आखेट हेतु राजाक प्रस्थानक वर्णन अछि। प्रसंगानुसार वन, उपवन, सरोवर, पोखरा, पर्वत तथा टृष्याश्रमक वर्णन भेल अछि। छठम कल्लोल भद्रादिवर्णना थिक। भाटक विसतृत वर्णन करबाक पछाति मल्लयुद्धवर्णना, विद्यावन्तवर्णना, नृत्यवर्णना, पात्रनृत्यवर्णना, प्रेरणनृत्यवर्णना एवं वीणावर्णना अछि। सातम कल्लोलक नाम श्मसानवर्णना थिक जाहिमे श्मसानक विस्तृत वर्णन अछि। एकरा अतिरिक्त एहिमे मरुस्थलवर्णना, समुद्रवर्णना, तीर्थवर्णना, नदीवर्णना, ऋषिवर्णना, पर्वतवर्णना, चौरासी सिद्धवर्णना, दशावतारवर्णना, नवग्रहवर्णना, अष्टवसु, एकादशरुद्र, विश्वेदेव, उनचास पवन, द्वादश आदित्य, अष्टदिग्गज, रामायण, महाभारत, अष्ट दिक्पाल, 18 पुराण, उपपुराण, 18 स्मृति, 14 आगम, राजपुत्रकुलवर्णना, 36 दण्डायुध वर्णना, देशवर्णना, वहित्र (जहाजक बेड़ा) वर्णना आदि आएल अछि। आठम कल्लोलक कोनो नाम नहि अछि। एहिमे राज्यवर्णना, विवाहवर्णना, द्वादशयत्रवर्णना, वणिकयुत्रवर्णना, चौरवर्णना, दुर्गवर्णना, नौकावर्णना, वैद्यवर्णना, वोहित (जहाजक बेड़ा) वर्णना, पुनर्व्योजन (रात्रिकालीन भोजन) वर्णना आएल। ग्रन्थसमापन श्लोक सातम कल्लोलक बाद अछि तथा आठम कल्लोलक बाद सेहो ओकरे दोहराओल गेल अछि। श्लोक मनिकर जाहि रूप मे लिखलनि अछि ताहिमे बहुंत अशुद्धि अछि जकर पाठशुद्धि करैत किरण जी एहि तरहें प्रस्तुत कयलनि अछि -

यावन्नीरधिनन्दिनी मुररिपोर्वक्षस्थलं गाहते
याविपर्जर सिन्धुसंगमसुखं रत्नाकरो विन्दति।
यावत् पंकजबान्धवस्य भुवनान्युद्योतयन्ते करा:
काव्यं श्री कविशेखरस्य सुधिय: तावत् कृषीष्टोत्सवम्।।

[जाधरि लक्ष्मी विष्णुक वक्षस्थल पर विराजमान छथि, जाधरि समुद्र गंगा-संगमक सुख पबैत छथि आ जाधरि सूर्यक किरण भुवन कें प्रकाशित करैत छथि, ताधरि कविशेखरक ई काव्य उत्सव कें प्राप्त करओ।][54]

वर्णरत्नाकरक सृजन-संरचना कें देखैत एहि बात दिस ध्यान जाइत अछि जे कल्लोलक नामकरण कोनो एक प्रमुख वर्णनाक नाम पर कयल गेल अछि, समेकित रूपें कोनो प्रसंग-सम्मत अभिधान बनाक' नहि। दोसर, कल्लोल मे आएल प्रत्येक वर्णनाक अलग-अलग नामकरण कयल गेल अछि। सोचि क' देखी तँ ई एक आधुनिक प्रवृत्ति थिक। आइ जे कवि लोकनि कविता लिखैत छथि, हरेक कविताक एक शीर्षक देल जाइत अछि। तहिना, अध्यायक नाम सेहो एक प्रसंग-विशेष कें आधार बना क' द' देल जाइछ। प्राचीन काल मे एना नहि छल। स्वयं विद्यापतिक कविता सब मे कोनो शीर्षक नहि अछि। रागक जे नामोल्लेख भेल छैक से सांगीतिक उपयोगक वास्ते प्राय: आनक देल, ओकरा कोनहु तरहें शीर्षक नहि कहल जा

सकैछ। संस्कृत मे जे श्लोक रहैत अछि तकरो कोनो शीर्षक नहि रहैत अछि। संकलयिता लोकनि प्रसंगानुसार ओकरा वर्गीकृत क' लेथि से भिप बात भेलैक।

किछु विद्वान, यथा डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा,क मान्यता भेलनि जे वर्णरत्नाकरक केन्द्र मे राजा छथि आ, हुनके चतुर्दिक संसारक तमाम वर्णन एहि मे आएल छैक। किछु आन विद्वान, यथा डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण एहि सँ असहमत छथि। हुनका मतें राजा केन्द्र मे नहि छथि, ओहो ओहिना एक विषय छथि जेना आन आन, वेश्या आ श्मसान पर्यन्त एक विषय थिक। असल मे, जिनका लोकनि कें एहि ग्रन्थक केन्द्र मे ककरो होयब आवश्यक लगैत छनि, ओ एकरा प्रबन्धात्मक कृतिक रूप मे देखवाक आग्रही छथि, जखन कि वास्तविकता से एकदम नहि अछि। वास्तविकता ई थिक जे नाना वर्णनक ई संकलन ठीक ओहिना अछि जेना आधुनिक युगक कोनो काव्य संकलन होइत छैक। वर्णरत्नाकरक उपलब्ध पाठ मे जे हमरा लोकनि कें कैक वर्णन स्थान-च्युत आ विश्रृंखल भेल देखाइत अछि, तकर यैह कारण थिक।

वर्णरत्नाकर कें विद्वान लोकनि कवि-परिपाटीक संकलन-ग्रंथ कहलनि। परिपाटी भेल रूढ़ि। कोनहु स्तुक वर्णन मे कतय कोन उपमान व्यवहार करबाक चाही, तकर परिज्ञान। कहब आवश्यक नहि जे ई काज ज्योतिरीश्वर अपन एहि कृति मे खूब कयलनि अछि। जखन ओ युवतीक शरीर कें 'कामदेवक नगर अइसन' कहैत छथि, आ कि ओकर नितम्ब कें 'कूर्म्म पृष्ठाकार', भौह कें 'काजरक कल्लोल अइसन', हाथ कें 'पारिजातक पल्लव अइसन' कहैत छथि, तँ यैह काज करैत छथि। एहिना कहल जाइत रहल अछि, यैह कवि-परिपाटी थिक। मुदा, जखन ओ युंवतीक जांघ कें 'कटहरक को अइसन' कहैत छथि, अथवा ओकर स्तन कें 'छोलंग छोलल अइसन पयोधर' कहैत छथि तँ नव काज करैत छथि। एहन कहबाक परिपाटी नहि रहल अछि। ई खासमखास ज्योतिरीश्वरक कवि-दृष्टि छियनि। चन्द्रमाक वर्णन करैत ओ ओकरा 'दीक्षितक कमण्डलु अइसन' कहि जाइत छथि। सन्यास मे दीक्षित व्यक्ति तँ अपन समस्त वस्त्रभूषण त्यागि दैत अछि, एक टा कौपीन मात्र देह मे रहि जाइछ। मुदा ओकरा हाथ मे रहैत छैक धातुक कमंडल, जाहिमे चमकबाक गुण होइत छैक। अन्हार आसमान मे उगल चन्द्रमा कें दीक्षितक कमण्डल सन देखब, बेहद काव्यात्मक थिक जे कि खास तौर पर हुनकर युग कें सेहो रेखांकित करैत छैक। ई दीक्षित एकैसम सदीक हाइटेक दीक्षित नहि भ' सकैत अछि जेना हजार करोड़क पूजीपति रामदेव आ कि आसाराम। तहिना जखन ओ चन्द्रमा कें 'तारकाक सार्थवाह आइसन' कहैत छथि तँ देखबा योग्य अछि। तारा बेचारा सब गरीब, टिमटिमाइत, आ ताहि मांझ महाजन सन धनिक पूजीपति, जकर इ जोत दूरे सँ जगमगाइत। आधुनिक कविक काव्य-विषय सन ई लगैत अछि जे बेचारा गरीब

तारा सब कें जखन टृण-पैंचक खगता पड़ैत होयत तँ ककरा लग हाथ पसारय जाइत होयत? वैह महाजन चन्द्रमा थिक। एहन प्रयोग सब वर्णरत्नाकर मे भरल अछि। भोजनकाल मे दही परसल जाइछ तँ तकर छओ केहन लगैत अछि—'जानि पद्मिनीक पत्र शंख सुताओल अइसन छेओव।' जेना कमलक पात पर शंख कें सुता क' राखि देल गेल हो। दहीक गुणवत्ता देखायब इष्ट। ग्रीष्मक मध्याह्न मे जलाशय केहन भ' गेल अछि? 'उन्मूलल विपक्ष अइसन जलाशये भए गेल अछि।' एकरा देखने आजुक प्रचंड लोकतंत्र-युगक विपक्ष मानू आँखिक आगू ठाढ़ भ' जाइछ। एहन गरमी मे सूर्य केहन लगैत अछि? योगी केवल योग केनिहार नहि होइछ, अपन स्वार्थपूर्त्ति मे बाधा अबैत देखि क' जखन किटाइत अछि तँ ग्रीष्मक मध्याह्नक सूर्ये सन दु:सह भ' जाइत अछि। किरणजी उचिते लिखलनि अछि—'आजुक कवि एक आध नव उपमान दय अपना कें प्रयोगवादी घोषित कय दैत छथि, परंच ज्योतिरीश्वर अभिनव उपमान सँ वर्णरत्नाकर कें चमत्कृत कय देने छथि। निर्विवाद जे एहि उपमान सभक कारणे हुनक काव्य साधारण लोकक हृदयक संग आत्मीयता स्थापित कयने होयत।'[55]

वर्णरत्नाकर बहुलता विचारक अद्‌भुत पैरोकार थिक। एक देश एक धर्म, अथवा एक देश एक जाति सन संकीर्ण अवधारणाक ई सख्त खिलाफ अछि। सर्वजातीय, सर्वसम्प्रदायक, सर्वधर्मक सह-अस्तित्व एहिठाम देखल जा सकैत अछि। तें एतय हम सब देखैत छी जे राजा आ वणिकपुत्र छथि तँ श्रमिक, विवेकी, दलित वर्ग सेहो समान रूप सँ अछि। सभक विद्या, सभक कला, सभक संस्कृतिक चित्र आएल अछि। बहुलताक ई विचारे हुनका रचना मे ई संभावना ल' क' प्रकट भ' सकल अछि जे सकल राष्ट्र एक थिक। ई बहुलता कैक प्रकारक मेला, समागम लगबैत अछि। शैलीक बहुलताक चर्चा हम ऊपर क' आएल छी। तहिना, काल, स्थान आ पात्रक बहुलता अछि। वैदिक काल, महाभारत काल आएल अछि तँ निज ओहो काल जाहिमे ज्योतिरीश्वर ई रचना रचि रहल छथि, सेहो तहिना आएल अछि। कहबाक चाही जे ई काल, रचना-काल बेसी जगजगार भ' क' चटख भ' आएल अछि। एहि रचना कें अति महत्त्वपूर्ण बनेबा मे एहि रचना-समय के बहुत योगदान छैक।

ज्योतिरीश्वरक व्यापक बहुलता-विचार वर्णरत्नाकरक कविता मे कोना मूर्त्त भ' उठल अछि तकरा देखबा लेल हमरा लोकनि हुनका द्वारा उपयोग कएल गेल उपमान सब पर एक नजरि द' सकैत छी। हुनकर उपमान मुख्यत: चारि प्रकारक छनि। पहिल तँ अनुसरणात्मक काव्यरूढ़ि बला उपमान जेना 'पूर्णिमाक चान्द अइसन मुह' आ कि 'विकसित स्थलपद्म अइसन चरण' आदि। पहिने कवि हेबाक लेल इहो देख जाइत छल जे अहाँ कें अपन पूर्ववर्ती कवि लोकनिक प्रसिद्ध उपमान-

प्रयोग अवगत अछि कि नहि। कोनो उपमान कालिदासक प्रसिद्ध छनि तँ कोनो भारविक। ताहि ज्ञानक जानकारी पाठक कें अहाँ द्वारा ओकर पुनर्प्रयोग सँ भेटि सकैत अछि। एकरा चौर्य नहि मानल जाइत छल, शास्त्र ज्ञान मानल जाइत छल। कविरूढ़ि स्वयं कविक वास्ते एक शास्त्र छलनि। ज्योतिरीश्वर एकर ज्ञाता छला, से परिचय कविता सँ भेटैत छैक आ एतबे नहि, आचार्य लोकनि हुनक एही गुण कें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानैत छथि।

वास्तविकता ई थिक जे ज्योतिरीश्वरक उपमान के चारि अंश मे सँ मात्र ई एक अंश थिक।

एकर चर्चा पूर्व मे भ' चुकल अछि जे ज्योतिरीश्वर 'लोक' के प्रेमी छला, आ ओकर मर्म कें छूबाक हृदय रखैत छलाह। तदनुरूपे हुनका लोक के बहुत गँहीर ज्ञान रहल होयतनि। लोक के दुनिया कवि वा शास्त्रकारक दुनिया सँ अलगे अलग चलैत छैक। दुनू अधिकतर एक दोसरक तथ्य सँ अपरिचिते रहैत अछि। ज्योतिरीश्वर अपन एहि पुस्तक मे अनेक शास्त्रक बहुतो बहुत बात अनलनि तकर सब विद्वान लोकनि प्रशंसा कयलनि। यैह वस्तु मुदा, हुनकर कृति कें काव्यहीन बनबैत छैक, एतय धरि कहि देलनि। मुदा एकर दोसर दिस, 'लोक' मे जे व्याप्त छल मुदा शास्त्र ओकरा सँ अर्वथा अनजान छल, एहन बहुतो रास तथ्य ओ अपना कृति मे अनलनि। हुनकर एहन उपमान सब दू प्रकारक अछि। एक तँ ओ शास्त्र सँ लेलनि मुदा तेना लोकीकरण क' देलथिन जे ओकर बगय-बानि बदलि गेल। दोसर, लोक मे जे प्रसिद्ध छल मुदा शास्त्रक लेल नवीन छल। 'लोक लोचनक रसायन अइसन चन्द्रमा', 'कालरात्रिक जिह्वा अइसन तरवारि' आदि जँ एक प्रकारक कोटि थिक तँ दोसर कोटिक अछि—'कंसारिक भाल पजरल अइसन मुह', 'हथिकनाक पात अइसन कान', 'दुन्दोरि झाललि अइसनि चुमची' आदि। कंसारक झाड़ एखनहु होइत अछि, जकरा भाल कहल गेल अछि। 'हथिकना' क अर्थ पं. गोविन्द झा मेनाक पात लगौलनि, संभव जे लिपिकारक कलाकारी हो जिनका पैघ कानक उपमान हेतु हाथीक कान स्मरण आबि गेलनि, मेनाक पातक खियालो नहि आएल हो, से संभव। राक्षसीक स्तनक वर्णन अछि—दुन्दोरि झालनि। ई कथी भेल तकर अर्थ गोविन्द बाबू कें सेहो नहि लगलनि अछि। ध्यान देब' बला शब्द चुमची थिक, जकर प्रयोग प्रयोगवादियो लोकनि एते अकुंठ भावें साइते क' सकल होथि। एहिमे पण्डित लोकनि कें अश्लीलताक गंध अबितनि, प्राय: तें। साहित्य मे मात्र एक शब्दक अकुंठ प्रयोग पछिला छव सौ वर्षक उत्थन-पतन कें कोना अभिव्यक्त क' दैत अछि, एतय देखल जा सकैए।

चतुर्थ कल्लोलक द्यूतवर्णना दिस विद्वान लोकनिक ध्यान गेलनि अछि आ

वर्णनक महीनीक प्रशंसा ओ लोकनि कयलनि अछि। द्यूतशाला कें ज्योतिरीश्वर अपूर्व चेण्टसार कहलनि अछि। सुनीति बाबू कें चेण्टसार क कोनो अर्थ नहि लगलनि तँ ओ प्रश्नवाचकक संग 'टेण्टसार' शब्द प्रस्तावित कयलनि, जखन कि हमरा लोकनि चटसार वा चटिसार शब्द सँ बखूबी परिचित छी। जूआ कते प्रकारक होइछ, ओकर खेलक प्रकार कैटा, के सब जुआ खेलय अबैत—राजपुत्र, शिष्टपुत्र, साधुपुत्र, कुलपुत्र, भट्टपुत्र आ वैदेशिक—एहन नहि शिष्ट-साधु-कुलीन लोकनिक बालक आधुनिकता अयलाक बादे बुड़ियाएल होथि—आदि-आदि। जूआ खेल काल मे आसपास लोक के रहैत अछि? सहियार, खेलवार, दण्डसाह आ द्रष्टा। जुआरी लोकनि धर्म-व्यवहार की होइछ? सुनन, भूलन, चुकन, उपठुकन। जुआधर मे अव्यवस्था कोन-कोन प्रकारक होइछ? जुआरीक दुर्गति की सब होइत छैक? आदि-आदि। रोचक अछि जे ई समस्त पारिभाषिक शब्द ठेंठ लोकभाषाक थिक, जे सीधे लोक-व्यवहार लेल गेल अछि।

लोक पर ज्योतिरीश्वरक कतेक आस्था छनि, तकरा लेल एक दृष्टांत के देखि लेब पर्याप्त होयत। बौद्ध धर्मक नाम ल' क' ज्योतिरीश्वर कहैत छथि जे ई धर्म 'आपातभीषण' (अत्यन्त अधलाहक अर्थ मे) थिक। मुदा बौद्ध धर्मक अनुयायी जे 84 सिद्ध, तिनकर नाम अपन ग्रनथ मे शामिल कयलनि अछि। तहिना त्रिशक्तितारा, वज्रतारा, उग्रतारा, कुरुकुला, जांगुलि आदि देवी बौद्ध लोकनिक देवी छथिन मुदा तिनकर नाम प्रमुखतापूर्वक लेलनि अछि। एहि सँ जँ एक दिस मध्यकालीन इतिहास-बोधक सीमा देखार होइत अछि तँ दोसर दिस 'लोक' कें प्रमाण मानबाक ज्योतिरीश्वरक मंशा कें सेहो स्पष्ट बूझल जा सकैत अछि। देवी अथवा सिद्ध भने बौद्ध लोकनिक होइनि, मुदा लोक-समाज मे ओ लोकनि पूजित छथि। बौद्धधर्म अधलाह होइछ से तँ सुनल बात भेल, मुदा देवी-सिद्ध लोकनि जे पूजित छथि से तँ आँखिक देखल थिक। यद्यपि अपन सनातन धर्म कें ल' क' ज्योतिरीश्वर आग्रही छथि (हं, ओतबो दुराग्रही नहि जते किरण जी अपन पुस्तक मे ठाम-ठाम देखौलनि अछि), मुदा लोक-व्यवहारक प्रामाणिकता पर हुनका कनेको संदेह नहि छनि। चौरासी सिद्ध मे वास्तविक रूप सँ के सब छलाह, एकर सूची मे भिपता पाओल जाइत रहल अछि। फर्स्ट हैन्ड सूचनाक आधार पर राहुल सांकृत्यायन 84 सिद्धक सूची सेहो प्रकाशित कयने छथि।56 मुदा प्राचीन स्त्रेत सब मे भिपता पर्याप्त अछि। एकर कारणो छैक। कोन इलाकाक लोक कोन शताब्दी मे किनका किनका सिद्ध लोकनि मे स्थान दैत छथि, ई स्पष्टत: ओहि इलाका मे प्रतापी पूजित होयबा पर निर्भर छैक। ज्योतिरीश्वरक सूची देखी तँ किछु नाम भेटैत अछि—नेवक, भीलो, पहिल, पासल आदि। ई सब नाम मिथिलाक पछड़ल समाज मे एखनो राखल जाइत छैक। आन

ठामक सूची मे ई सब नाम किनसाइते भेटत। एहन प्रतीत होछ जे ई लोकनि मैथिल छला। स्थानीयता एहिठाम सार्वत्रिकता पर भारी पड़ि रहलैक अछि से हमरा लोकनि स्पष्ट देखि सकैत छी। आ अनेक प्रसंग मे दर्जनो एहन स्थल छैक जतय हमरा लोकनि ई चीज देखि सकैत छी।

तेसर प्रकारक जे उपमान ज्योतिरीश्वर प्रयोग कयने छथि से तँ आर अद्‌भुत अछि। एहन उपमान कें किरण जी 'इन्द्रियगोचर वस्तु कें भावात्मक उपमानक संग तुलनायुक्त' कहलनि अछि।[57] अनेको ठाम ओ एहन कयलनि अछि जे भाववाचक विषय कें उपमान बना क' इन्द्रियगोचर वस्तु कें उपमेय बना देने छथि, जखन कि शमान्य चलन एकर विपरीत रहल अछि। वर्णरत्नाकर मे एहना ठाम उपमान यदि कतहु प्रत्यक्ष विषयक आयलो अछि तँ ओकर सामान्य-धर्म अतीन्द्रिय अछि, जकर आनन्दक अनुभूति इन्द्रियक माध्यम सँ नहि वरं ज्ञान ओ विवेकक माध्यम सँ होयतैक। ज्योतिरीश्वरक ई प्रयोग सब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एहन प्रयोग आनठाम कम भेटैत अछि। ई ओ क' सकलाह तकरो पाछू लोक-व्यवहारे अछि। एहि सब मे लोक-समाजक मान्यता आएल अछि। किछु प्रयोग देखल जाय—अंधकारक वर्णन करैत छथि—कुमन्त्र अइसन निफल, अज्ञान अइसन सम्मोहक, अहंकार अइसन उपत, पाप अइसन मलिन, स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य। दुर्लक्ष्य तँ पुरुषोक चरित्र ततबे छल मुदा हुनका युग धरि एहि बात कें एक तँ शास्त्र-स्वीकृति नहि छल, दोसर सामंत लोकनि एकर मानि कोना दीतथि! चोरक वर्णन करैत छथि—आपद अइसन दुखदायक, पाखण्ड अइसन परलोकनिस्पृह, विद्युत अइसन दुष्ट। विद्युत आजुक बिजली नहि, तहियाक ठनका, जे पलभरि मे प्राण ल' लियय। धन ल' जाएब प्राणे लेबा तुल्य, तें दुष्ट। श्मसानक वर्णनप्रसंग मे कहैत छथि—स्त्रीक चरित्र अइसन दारुण, अविवेक अइसन आतंकमय, सब दुखक आश्रयभूत तें हेतु नरक। तहिना, मरुस्थलक वर्णन करैत छथि—अधर्मक फल अइसन, अकीर्तिक विश्राम अइसन, आतपक मित्र अइसन, परिश्रमक बन्धु अइसनक, तृषाक जनक अइसन, उद्वेगक बान्धव आइसन। कुट्टनी स्त्रीक वर्णन करैत कहैत छथि—लोभक बेटी अइसनि, बुद्धिक माउंसी अइसनि, नारदक सहोदर अइसनि घटक। मेघक वर्णन मे कहैत छथि—गगनमण्डलक तमाल अइसन, इन्द्रनीलक प्रतिबिम्ब अइसन। ई दुनू मिथक थिक, जे कि भावात्मक होइतहि अछि। जखन ओ कुट्टनी कें 'विष्णुमाया अइसनि संघटक' कहैत छथि तँ तखनहु यैह बात अछि। सरोवरक वर्णन मे कहैत छथि—'मंगलक उदय अइसन लोचन, दुर्जनक बुद्धि अइसनि कंधवारि। प्रमाणक वर्णना मे युद्धक प्रयोजन स्पष्ट करैत एक पाँती आएल अछि—'परक लक्ष्मी जिनएक ममर्थाह।' युद्ध सदा दोसरक लक्ष्मी कें अपन बना लेबाक लिप्सा मे लड़ल जाइछ,

भाव तेहन सन। आखेट-प्रसंग मे शिकारी कुकुरक वर्णन करैत छथि—दुर्जन अइसने व्यापारे, मुखर अइसने ग्रहे। दुर्जन कें अधलाह मानि दूरी रखबाक जे आप्तवचन अछि से ओहिना नहि।

कुमन्त्र भेल गलत मार्गदर्शन, जाहि सँ कार्यसिद्धि असंभव। परिणाम अंधकार। जकरा कम ज्ञान रहैत छैक से घमंड मे रहैत अछि, कारण अज्ञानक स्वभावे छिऐक आत्ममुग्धता। अंधकार कें अज्ञान सन सम्मोहक बताओल गेल अछि। अविवेक मे कयल गेल काज आतंककारी परिणाम अनैत अछि, तें ओकर उपमेय मे श्मसान कें राखल गेल अछि। चोर कें जखन ओ 'पाखंड अइसन परलोकनिस्पृह' कहैत छथि तँ हमरा रोमांच भ' उठैत अछि। परलोक (स्वर्ग, नरक) पर तँ हमरा विश्वास नहि अछि मुदा ई अवश्य मानै छी जे मनुष्यक जीवन कें ओकर जीवनायु-काल सँ पैघ हेबाक चाही, ओकरा विदा भ' गेलाक बादो धरि ओकर कयल किछु काज जीवित लोकक स्मृति मे बचि जेबाक चाही। जे व्यक्ति एहि आकांक्षा सँ शून्य होइत छथि तकरा ज्योतिरीश्वर चोर कहलनि। अपन चतुर्दिक देखि सकैत छी हमरा लोकनि—एजे जे बैमानी-शैतानी, मारकाट, घात-पंजा पसरल अछि, परलोक निस्पृहतेक परिणाम थिक। पदक्रमें आइयो ओ महाराज होथि वा महामत्तक—ज्योतिरीश्वरक हुनक मौलिक परिचय 'चोर' कहि क' देलनि अछि।

पंचम कल्लोल मे टृष्याश्रम-वर्णनक प्रसंग में महामुनिक वर्णन करैत छथि—श्रद्धाक पुंज अइसन, संतोषक राशि अइसन, संयमक प्रतिबिम्ब अइसन, ज्ञानक सखा अइसन, ममत्वक शत्रु अइसन, लोभक कृतान्त अइसन। एहिठाम स्पष्ट होइत अछि जे लोक-मान्यता मे विधेय आ काम्य आ श्रद्धेय ककरा आ किएक बुझल जाइत छैक।

ज्योतिरीश्वरक चारिम प्रकारक उपमान-प्रयोग अछि जतय ओ ऐतिहासिक व्यक्ति, घटना आदिक उल्लेख उपमेयक गुण-दर्शन लेल करैत छथि। एहन स्थल यद्यपि कम अछि, मुदा एहि विशिष्ट सभक प्रति लोक-मान्यताक स्पष्ट विवरण दैत अछि। राजनीतिक व्यक्ति वा घटना सँ नहि, एहन उपमान सब संस्कृति आ ज्ञानक क्षेत्र सँ अछि, इहो एक विशेष्ज्ञता। सरोवरक वर्णन करैत कहैत छथि—बोद्धपक्ष अइसन आपात भीषण, उदयनक सिद्धान्त अइसन प्रसप, योगीक चित्र अइसन सौम्य, हरिश्चन्द्रक त्याग अइसन अगाध। एहि सँ पता लगैत अछि जे एहि सब जनक प्रति तत्कालीन समाजक की मान्यता रहैक। जतय ओ बौद्धपक्ष कें आपातभीषण कहलनि, ठीक तकर लगले उदयनक सिद्धान्त अइसन प्रसप कहलनि, कारण उदयनाचार्य बौद्धपक्षक खंडन कयने छलाह, जकर चर्चा ज्योतिरीश्वर-युग धरि खूब प्रचलित छल। ई दुनू गुण एक्कहि सरोवर मे एहि दुआरे विद्यमान अछि

जे अथाह जल हेबाक कारण ओहिमे ढुकबाक हिम्मत लोक नहि क' सकैत अछि, तें आपातभीषण, मुदा ओहिठामक पर्यावरण जे दृश्य बनबैत अछि से प्रसप कदेबा योग्य अछि। जेना ब्राह्मणधर्मक लोकक लेल उदयनक सिद्धान्त। योगी (योग-साधक) कें उच्च श्रद्धा प्राप्त छलनि आ तहिना हरिश्चन्द्रक यश उच्च छल, से पता चलैत अछि। सरोवर-वर्णनक उपरान्त पोखरावर्णन छैक। पोखराक मनोहरताक मादे कहैत छथि—कालिदासक कवित्व अइसन मनोहर। ओकर निर्मलताक बारे मे—रामक यश अइसन निर्मल। आ ओकर अगाधताक बारे मे—बालिक त्याग अइसन अगाध। कवि लोकनि मे कालिदासक ख्याति सर्वाधिक छनि। भाट-वर्णनक क्रम मे ओ किछु आर कवि-साहित्यकार आ काव्यशास्त्री लोकनिक उल्लेख कयलनि अछि। बाणभट्टक दुनू कृति कादम्बरी आ हर्षचरितक उल्लेख अछि। वासवदत्ता, शालभिमजका,ूर्परमंजरी, काव्यप्रकाश, दशरूपक, शृंगारतिलक, सरस्वतीकण्ठाभरण, काव्यतिलक, वृत्तरत्नाकर आदि ग्रन्थक चर्चा भेल अछि। वामन, दण्डी, रुद्रट आदि काव्यशास्त्रीक नाम लेल गेलनि अछि।

सारांशतः वर्णरत्नाकरक बारे मे निम्नलिखित बिन्दु दृष्टिपटल पर अबैत अछि—

1. वर्णरत्नाकर सुनिश्चित रूप सँ एक काव्यपुस्तक थिक जे मैथिलीक जातीय कविता-परंपरा मे प्रथम-प्रथम लिपिबद्ध कयल गेल छल।
2. काव्य रहितहु एहि मे गद्यात्मकताक समावेश मैथिलीक जातीय कविताक अनुरूप ठीक तहिना अछि जेना मैथिलीक लोकगाथा लोरिक, सल्हेस आदि मे होइत अछि।
3. लोकगाथे जकां एकर गायन सार्वजनिक रूप सँ होइत छल होयत, तकर पूर्ण संभावना कुझाइत अछि आ मध्यकाल मे सैह एकर लोकप्रियताक कारण रहल।
4. जेना कि सुनीति बाबू आदि विद्वान लोकनि कहैत छथि, वर्णरत्नाकरक रचना कथावाचकक उपयोगार्थ नहि भेल छल, कारण मिथिलाक कर्मकाण्डी समाज मे ओहि रूपक कथावाचनक परंपरे नहि छल जेना बंगाल मे छल। एतय लोकगाथा, लोकनाट्यक परंपरा छल, जकर प्रस्तोता निरक्षर वर्गक लोक होइत रहथि। हिनके लोकनिक उपयोगार्थ एहि ग्रन्थक रचना कयल गेल।
5. एक काव्यपुस्तकक रूप मे एहि ग्रन्थक सब सँ पैघ विशेषता थिक अपन समय तथा अपना समयक समाज कें ठीक-ठीक काव्य मे रूपान्तरित करब। ई एक आधुनिक मूल्य थिक जकर अवगति ज्योतिरीश्वर कें नीके नां रहनि।
6. साधारण जनक उपेक्षित मौखिक भाषा मे प्रथम-प्रथम काव्यपुस्तकक रचना करब एक क्रान्तिकारी डेग छल, जकर प्रेरणा ज्योतिरीश्वर कें अपन गँहीर सामाजिक सरोकार सँ तथा लोक-व्यवहारक हुनकर गंभीर परिज्ञान सँ प्राप्त भेलनि।
7. एहि पुस्तकक ऐतिहासिक आ समाजशास्त्रीय मूल्य बहुत अछि। एहि विषय पर अध्येता लोकनि द्वारा काजो बहुत कयल गेल अछि। किन्तु मूलतः जाहि अनुशासन, काव्य साहित्यक ई कृति थिक तकरा दृष्टि पर रखैत कयल गेल काज एखनहु प्रतीक्षिते अछि।

निष्कर्षतः यैह कहल जा सकैत अछि जे वर्णरत्नाकर मिथिलाक जातीय महाकाव्यक रचना-शैली मे लिखल एक काव्यपुस्तक थिक, जाहि मे गद्यक समावेश ठीक ओही प्रकारें भेल अछि जेना मैथिली लोकगाथा सब मे। एकर काव्यगत विशेषता सब, अपन सीमाक संग, ततेक स्पष्ट छैक जे एकरा अकाव्य कहब उचित नहि थिक, खास क' क' एहि स्थिति मे जखन कि कविशेखर ज्योतिरीश्वर स्वयं एकरा काव्य कहने छथि।

सन्दर्भ

1. आचार्य रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 57
2. प्रस्तावना/ वर्णरत्नाकर/ मैथिली अकादमी/ पृ. 2 पर उद्धृत
3. प्रो. आननंद मिश्र-पं. गोविन्द झा/ प्रस्तावना/ वर्णरत्नाकर/ पृ. 3
4. डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा/ ज्योतिरीश्वर/ मै.अका./ पृ. 14
5. उपर्युक्त/ पृ. 15
6. आचार्य रमानाथ झाक ई लेख हुनकर रचनावलीक खंड दू मे संकलित छनि।
7. पं. बबुआ मिश्र/ भूमिका/ वर्णरत्नाकर/ साहित्य अकादेमी/ पृ. 5
8. उपर्युक्त/ पृ. 6
9. विशेष विवरण लेल देखी—मैथिली अकादमी सँ प्रकाशित वर्णरतनाकरक प्रस्तावना।
10. डॉ. जयकान्त मिश्र/ मैथिली साहित्यक इतिहास/ पृ. 612
11. डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता/ वर्णरत्नाकर मे चित्रित पूर्वमध्ययुगीन भात/ मैथिली अकादमी/ पृ. 37
12. डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण/ वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 40
13. आचार्य रमानाथ झा/ रचनावली/ पृ. 65
14. प्रस्तावना/ वर्णरत्नाकर/ मै.अका./ पृ. 8
15. डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण/ वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 91

16. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी/ भूमिका/ वर्णरत्नाकर/ साहित्य अकादेमी/ पृ. XXII
17. प्रस्तावना/ वर्णरत्नाकर/ मैथिली अकादमी मे उद्धृत/ पृ. 2
18. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी/ भूमिका/ वर्णरत्नाकर/ पृ. XXII
19. डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण/ वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 68
20. मोहन भारद्वाज/ वर्णरत्नाकर: आलोचना-प्रत्यालोचना/ काव्यपाठ/ पृ. 14
21. उपर्युक्त/ पृ. 14
22. राहुल सांकृत्यायन लिखलनि अछि—'चौरासी सिद्धों मे से कितनों हीं पर बंगाली विद्वानों ने प्रकाश डाला है। किन्तु एक तो मूल तिब्बती सामग्री उनके पास पर्याप्त नहीं है, अनुवाद भी पुराने और अधूरे हैं, दूसरे सबसे बड़ा दोष उनका प्रान्तीय पक्षपात है, जिससे वहाँ के बड़े विद्वान भी बरी नहीं हैं। जिस प्रकार अभी कल तक विद्यापति सोलहो आने बंगाली माने जाते थे, वैसे हीं आजकल चौरासी सिद्ध भी बांग्ला भाषा के आदिकवि समझे जा रहे हैं, यद्यपि उनसे सम्बद्ध पीठ नालंदा और विक्रमशिला का ही ख्याल किया गया होता, तो मालूम हो जाता कि उनपर बंगाल से अधिक दावा बिहार का हो सकता है।' (चौरासी सिद्ध/ राहुल निबंधावली/ पृ. 91)
23. डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण/ वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 68
24. मोहन भारद्वाज/ काव्यपाठ/ पृ. 14
25. पं. बबुआ मिश्र/ भूमिका/ वर्णरत्नाकर/ 1940क प्रथम संस्करण/ पृ. 4
26. उपर्युक्त/ पृ. 7
27. उपर्युक्त/ पृ. 6-7
28. उपर्युक्त/ पृ. 7
29. डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण/ वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 97
30. उपर्युक्त/ पृ. 98
31. उपर्युक्त/ पृ. 99
32. उपर्युक्त/ पृ. 99
33. उपर्युक्त/ पृ. 97
34. उपर्युक्त/ पृ. 97
35. उपर्युक्त/ पृ. 95
36. आचार्य रमानाथ झा/ रचनावली/ खंड-2/ पृ. 55-56
37. मोहन भारद्वाज/ काव्यपाठ/ पृ. 15
38. डॉ. काञ्चीनाथ झा किरण/ वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 113
39. मैथिली क्रिस्टोमैथी एंड वोकेबलरी/ कल्याणी फाउंडेशन संस्करण (2009)/ पृ. 9
40. उपर्युक्त/ पृ. 6
41. वर्णरत्नाकर/ साहित्य अकादेमी/ पृ. 1
42. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 101
43. उपर्युक्त/ पृ. 89
44. वर्णरत्नाकर/ साहित्य अकादेमी/ पृ. 55

45. विशेष विवरण लेल देखी—वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 89-90 एवं आगां।
46. उपर्युक्त/ पृ. 114
47. मोहन भारद्वाज/ काव्यपाठ/ पृ. 19
48. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 113
49. उपर्युक्त/ पृ. 109
50. मोहन भारद्वाज/ काव्यपाठ/ पृ. 16
51. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 78
52. डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा/ ज्योतिरीश्वर/ पृ. 22
53. उपर्युक्त/ पृ. 23
54. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 90-91
55. उपर्युक्त/ पृ. 199
56. ई सूची राहुल सांकृत्यायनक पुस्तक पुरातत्व निबंधावली मे प्रकाशित अछि। ओहि ठाम तिब्बती स्रोतक आधार पर चौरासियो सिद्धक चित्र सेहो देल गेल अछि।
57. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन/ पृ. 196